Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ya Samaj Foundation Chennai

BHUGOL 1931 G.K.V.

Domain. Gurukul Kangri Colle

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri 113729

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

Stock Verification-2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईरान-अंक

Bhugol—May, June, July, 1931 [Regd. No A. 1333

COMPILED

वर्ष ८] मई, जून, जुलाई १९३१ [संख्या १, २, ३

भूगोलविषयक हिन्दी का एक-मात्र सचित्र मासिक पत्र

भूगोल अनुभव हेतु यह "भूगोल" पत्र अमोल है।
"भूगोल" कहता है निरख, भू गोल है भूगोल है॥

सम्पादक—रामनारायण मिश्र, बी० ए०

वार्षिक मूल्य ३) इस प्रति का १)

ईविंग क्रिश्चियन कालेज प्रयाग से संरक्षित।

Yearly Subscriptions :
Indian Rs. 3
Foreign Rs. 5

[*Re. 1 per copy.*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल" का स्थायी साहित्य

१—**भारतवर्ष का भूगोल**—यह पुस्तक सारे भारतवर्ष, ब्रह्मा और लंका की यात्रा के बाद लिखी गई है। इसमें सन् १९३१ की मनुष्य-गणना के अंक दिये गये हैं। पुस्तक में २ तिरंगे, ४ चित्रमय नक़शे और १०० से ऊपर एक रंगे नक़शे और चित्र हैं। अब तक भारतवर्ष का कोई भूगोल ऐसी विस्तृत यात्रा के आधार पर नहीं लिखा गया। न कोई भूगोल इतने मौलिक नक़शों और चित्रों से सुसज्जित है। मूल्य केवल २) रु० डाक व्यय ।=)

२—**भारतीय भाषाएँ**—मूल्य ।), इसमें भारतवर्ष की सभी भाषाओं का विशद वर्णन है।

३—**संसार-शासन**—मूल्य ।), इसमें संसार के प्रमुख देशों की शासन-पद्धति का विवरण है।

४—**अफ़ग़ानिस्तान**—मूल्य १), इस अंक को पढ़ने से अफ़ग़ानिस्तान का एक संक्षिप्त चित्र आँखों के सामने खिँच जाता है—प्रताप, कानपुर

५—**टर्की**—मूल्य १), इस अंक में टर्की की प्रायः सभी भौगोलिक और ऐतिहासिक स्थितियों का बड़ा सुन्दर और रोचक संकलन है।

६—**ईरान**—इस अंक में ईरान देश की स्थिति, भू-रचना, जलवायु, उपज, व्यापार, मार्ग, निवासी, इतिहास, साहित्य, वर्तमान परिस्थिति आदि फारस देश के सभी अंगों पर पूरा पूरा प्रकाश डाला गया है। यह अंक सुन्दर चित्रों और बड़े नक़शों से सुसज्जित है। मूल्य केवल १) रु०।

७—**Geographical Questions (For High School Examination)**—मूल्य ~)॥, इसमें १० वर्षों के हाई स्कूल के प्रश्न-पत्र छपे हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक महाद्वीप, भारतवर्ष और प्राकृतिक भूगोल पर प्रसिद्ध भूगोल, विशारदों के चुने हुए प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रति का डाक-व्यय आध आना अलग है।

८—**वर्नाक्यूलर फाइनल परीक्षा के भूगोल-प्रश्न पत्र और उनके आदर्श उत्तर**—मूल्य ॥), इसमें १९२० से १९३१ ई० तक के प्रश्न-पत्र और आदर्श उत्तर दिये गये हैं। परीक्षार्थियों के सुभीते के लिए हर सन् का पूरा पत्र आरम्भ में छापा गया है। इसके बाद प्रश्नों का उत्तर उसी ढंग से दिया गया है जो परीक्षकों को पसन्द है। इस पुस्तक को पढ़कर विद्यार्थी लोग उत्तम श्रेणी के नम्बर सहज ही में प्राप्त कर सकते हैं।

मैनेजर "भूगोल"

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113729
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
COMPILED
113729

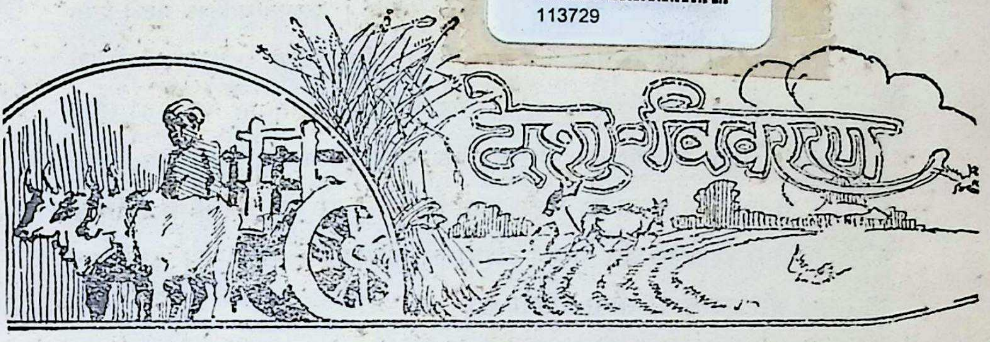

विस्तार और स्थिति

फ़ारस की स्थिति:——पूर्व में सिन्धु और पश्चिम में दजला नदियों की घाटियों के बीच में ईरान का पठार फैला हुआ है। इस पठार के पश्चिमी भाग में फ़ारस और पूर्वी भाग में अफ़गानिस्तान और बिलोचिस्तान स्थित हैं। यह देश चारों ओर विशाल पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ है जो उत्तर और पश्चिम में अधिकाधिक ऊँची हैं। अधिक भीतरी भाग दो मुख्य बेसिनो में बँटा है। पश्चिमी बेसिन, जिसमें फ़ारस का $\frac{3}{4}$ भाग सम्मिलित है, और जो अन्य अनेक छोटे छोटे बेसिनो में विभाजित हैं, पूर्वी बेसिन से (जिसको सीस्तान का बेसिन कहते हैं) सीस्तान प्रान्त के पास ही मिल जाता है पूर्वी बेसिन की मुख्य नदी हलमन्द है। इस हिस्से में और भी छोटी छोटी नदियां हैं जिनमें से अधिकांश सीस्तान की झील में गिरती हैं।

जहाँ तक उचाई का सम्बन्ध है करमान के पास पठार की उचाई ५००० फुट से ज़्यादा है। शीराज़ में यह उंचाई ४००० फुट, तेहरान और मशद में ३००० फुट और तबरेज़ में जो धुर उत्तर में स्थित है ४००० फुट से भी ज्यादा है। मध्यवर्त्ती प्रवेश के नगरों में इस्फहान की ऊचाई ५००० फुट से और यज़्द की ४००० फुट में भी अधिक है।

पठार के इन स्थानों को छोड़कर रेगिस्तान की भी ऊचाई कहीं भी २००० फुट से कम नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमायें और सूबेः– खुरासान का पूर्वी सूबा उत्तर की ओर उन श्रेणियों से घिरा है जो तुर्किस्तान के स्टेपीज़ तक फैली हुई हैं। कलात-नादिरी नामी पर्वत पर चढ़कर उत्तर की ओर देखने से एक बड़ा विस्तृत पीला मैदान दीख पड़ता है जो टुन्ड्रा और उत्तरी ध्रुव तक फैला हुआ है। यह श्रेणी सब स्थान पर फारस की सीमा नहीं बनाती है लेकिन कोपट दाग़ और लघु वाल्कान का नाम धारण कर उत्तर-पश्चिम की दिशा में कास्पियन सागर को चली जाती है। थोड़ी दूर और पश्चिम में ईरान की सीमा के भीतर ही अत्रक और गुरगन नदियों की घाटिया हैं। अत्रक नदी का निचला भाग रूस और फ़ारस की सीमा बनाता है।

कुचन नामी जिला जो अत्रक नदी के दोनों किनारे पर बसा हुआ है इस सूबे का सबसे अधिक समृद्ध प्रदेश है। यहाँ के निवासी खुर्द हैं जिनको शाह अब्बास मिरज़ा ने यहाँ बसाया था। गुरगन की घाटी भी उपजाऊ है—भूमि उपजाऊ है और पानी पर्याप्त मात्रा में गिरता है। लेकिन इस समय तुर्कमान नामी खाना बदोशों के कुछ हज़ार कुटुम्ब ही यहाँ के विशेष निवासी हैं। गुरगन का जिला ही प्राचीन 'हीरकैनिया और अवस्ता का वहरकैनो है। स्ट्रैबो ने इसके विषय में लिखा है "यह कहा जाता है हीरकैनिया के प्रत्येक अङ्गूर की बेल से सात गैलन शराब और प्रत्येक अजीर के वृक्ष से ६० बुशल फल निकलते हैं। वृक्षों में मधु मक्खियों का छाता है और मधु यहाँ के पेड़ों की पत्तियों से गिरता रहता है।"

उत्तरी सरहद के केन्द्रीय भाग में मज़न्दरान और जिलान के धनी सूबे अलबुर्ज़ पर्वत और कास्पियन सागर के बीच में स्थित हैं। जलवायु के मोतदिल और बारिश की ज्यादती होने के कारण ये सूबे फारस के अन्य सूबों से बिल्कुल भिन्न हैं—जिलान के पश्चिम में फ़ारस फिर रूस के साथ साथ चलता है—तुर्की मनचई की सन्धि के अनुसार, इनकी सीमा अस्तारा से लेकर सीधी उत्तर आरास नदी तक खिची हुई है। उत्तर-पश्चिम के कोने में अरारात पर्वत स्थित है जहाँ रूस टर्की और फारस के साम्राज्य मिलते हैं।

फ़ारस का उत्तरी-पश्चिमी सूबा अज़रबैजान है—इसकी राजधानी तबरेज़ है जो फ़ारस का सबसे बड़ा नगर है और जहाँ वासफ़ोरस और त्रविज़न्द से आने वाली प्रसिद्ध सड़कें काकेशश और दजला नदी की घाटी से आने वाली सड़कों से मिलती हैं। फ़ारस और मध्य एशिया को जाने वाली ग्रेट ट्रंक रोड भी यहाँ से होकर जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्व की ओर स्थित प्रदेशों से यहाँ पानी भी अधिक बरसता है और सूबा बहुत उपजाऊ है। फ़ारस के इतिहास-निर्माण में इस प्रान्त का सवदा बड़ा हाथ रहा है।

दजला और फ़रात नदियों की घाटियाँ फ़ारस की पश्चिमी सीमा बनाती हैं। इस किनारे पर पहाड़ों की समान्तर श्रेणियाँ, जिनको प्राचीन काल में ज़ाग्रोस के नाम से सम्बोधित करते थे, इरानी पठार को मैदान से अलग करती हैं। मीडिया और फ़ारस के प्राचीन साम्राज्य इन्हीं वल बर्द्धक मैदान में स्थित थे। पहाड़ी प्रान्तों में यहाँ पानी अच्छा बरसता है पर कूम, कशाम और इस्फ़हान नाम के भीतरी ज़िले निर्जल और शुष्क हैं"।

इस सीमा के दक्षिणी पश्चिम भाग में कारून की समृद्ध घाटी स्थित है जिसे आजकल अरविस्तान का सूबा कहते हैं। यही भाग अलम के नाम से सबसे पहले, (आर्य्यों के आने के बहुत पूर्व) सभ्य हुआ था। दक्षिण की तरफ़ पठार फैला है जिसमें फ़ार्स और करमान के सूबे सम्मिलित हैं— फ़ार्स का सूबा बहुत शुष्क है और फलतः पूर्व में पश्चिम की अपेक्षा कम उपजाऊ है। भीतरी यज़्द का जिला एक प्रकार का रेगिस्तान है। करमान का सूबा भी केवल उँचाई के कारण ही कुछ कुछ सजल है। करमान और फ़ारसी विलोचिस्तान का अधिकांश भाग आधा रेगिस्तान और उजाड़ है।

फ़ारसी विलोचिस्तान में पर्वत-श्रेणियाँ समुद्र-तट के समानान्तर हैं अतएव सागर से गमनागमन बड़ा ही कठिन है। इस सूबे के उत्तर में सीस्तान का सूबा है जो हलमन्द नदी का डेल्टा है।

इसके और उत्तर में एक रेगिस्तान फ़ारस को अफ़गानिस्तान से उस बिन्दु तक अलग करता है जहाँ से हरीरूद नामी नदी पश्चिम से बिलकुल उत्तर की ओर घूम जाती है। यह नदी, जिसको इसके निम्न भाग में तजन के नाम से पुकारते हैं, ज़ुलफ़िकार दर्रे तक इन दोनों देशों की सीमा बनाती है। ज़ुलफ़िकार दर्रे के पास दो खम्भे गड़े हुये हैं—यहीं अफ़ग़ानिस्तान के राज्य का अन्त हो जाता है। फारस की इस सीमा को पार करती हुई तजन नदी सराख्स तक जाती है जो ईरान के उत्तर-पूर्व में स्थित है और कलाते-नादिरी से थोड़ी ही दूर है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि फ़ारस का पठार उत्तर में, उस स्थान के अतिरिक्त जहाँ कि तज़न नदी तुर्किस्तान के रेगिस्तान में घुस जाती है, सभी जगह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहाड़ों की श्रेणियों से सुरक्षित है। पश्चिमी सरहद पर ये श्रेणियाँ और भी घनी हो गई हैं और गमनागमन का एकमात्र मार्ग कसरे शीरीं करमानशाह और हमदान हो कर है।

इससे और दक्षिण में आधुनिक अरबिस्तान नामी सूबा है यह कारून की समृद्ध घाटी में बसा है। उन दुर्गम श्रेणियों के कारण जो इसको फ़ार्स नामी सूबे से अलग करती हैं यह ईरान के वश में पूर्ण रूप से अब तक नहीं आ सका है। ईरान की खाड़ी के किनारे बसे हुए ज़िले भी सर्वदा मुख्य पठार से अलग ही रहे हैं। अरबिस्तान की भाँति इसमें अनार्यों को बस्ती है। ईरानी बिलोचिस्तान भी मुख्य पठार से पूर एक रेतीला प्रदेश है जहाँ 'शाह' की शक्ति कुछ भी नहीं है। पूर्व की ओर ब्रिटिश बिलोचिस्तान है जो बहुत ही सूखा है और जिसमें हो कर गमनागमन नितान्त कठिन है। लेकिन उत्तर-पश्चिम में अफ़ग़ानिस्तान की ओर मार्ग सहज और विस्तृत हैं और यही कारण है कि निकट भूतकाल तक अफ़ग़ानिस्तान फ़ारस का एक सूबा था।

ईरान और फ़ारस शब्दों का अर्थः— फ़ारस निवासी अपने देश को 'ईरान' कहते हैं जिसका अर्थ होता है आर्यों का निवास स्थान। फ़ारस या परशिया शब्द प्राचीन 'परसिस' से निकला है।

'परसिस' शब्द 'पारस' प्रदेश को सूचित करता था जो आधुनिक 'फ़ार्स' नामी सूबा है जहाँ 'अचीमेनियन' खानदान के शासक उत्पन्न हुए थे। आजकल भी फ़ार्स का सूबा पूरे ईरान प्रदेश में सबसे आदर्श—फ़ारसी सूबा गिना जाता है। ईरानी अपनी भाषा को फ़ारसी कहते हैं परन्तु 'फ़ारसी' शब्द का व्यवहार जब किसी एक व्यक्ति के लिये होता है तो उसका अर्थ 'फ़ारस' सूबे का निवासी होता है। भारतीय 'पारसी' पारसी इसलिये कहे जाते हैं कि वे 'पारसी धर्म्म को मानते हैं'। 'पारसी' शब्द फ़ारसी है और 'फ़ार्सी' अरबी है क्योंकि अरबी भाषा में 'प' नहीं होता।

ईरान और स्पेन की समानता:— अनेक बातों में ईरान और स्पेन मिलते जुलते हैं। फ्रान्स छोड़ने के बाद 'पिरेनीज़' पर्वत के पार स्पेन का 'प्लेटो' मिलता है जो २००० से ३००० फ़ुट तक ऊँचा है, और जो पर्वतों की समानान्तर श्रेणियों से, जिन्हें वहाँ की भाषा में 'सियरा' कहते हैं, विभाजित है। यह प्रान्त उजाड़ और वृक्षहीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है—४०० मील के इस प्लेटो को पार करने के बाद 'ग्रन्डालुशिया' का 'उष्ण प्रान्त मिलता है जो ईरान के निचले समुद्री किनारे के प्रान्तों के समान है।

उत्तर की ओर विस्के की खाड़ी की सीमा पर स्थित प्रान्तों में ग्रौर 'स्पेन के सूखे पठार में उतना ही ग्रन्तर है जितना कास्पियन-सागर-तट के प्रान्तों ग्रौर फ़ारस में है। ईरानियों को 'पूर्व के फ्रांसीसी' कहते हैं परन्तु उनको 'स्पेनवासी' कहना ही ग्रधिक उचित होगा, क्योंकि स्पेनवासियों की रस्म-रिवाज़ ग्रौर चाल-ढाल ईरानियों से बहुत कुछ मिलती है। इसका कारण कुछ तो दोनों देशों की प्राकृतिक समानता है। परन्तु स्पेन निवासी उन इरानियों के वंशज भी हैं जो ग्ररबी-विजेताग्रों के साथ स्पेन में जाकर बस गये थे। इन्होंने स्पेन में "शीराज़" नामी एक प्रान्त ग्राबाद किया ग्रौर वहाँ शराब बनाई जिसको ग्राजकल भी 'शेरी' कहते हैं जो फ़ारसी शब्द है।

मध्य-एशिया की शुष्कता:—मध्य-एशिया जिसका ईरान केवल एक टुकड़ा है; रेगिस्तानों का एक समूह है। यह कास्पियन सागर ग्रौर तुरफ़ान के बेसिन ग्रौर पामीर तथा तिब्बत के बीच में स्थित है। इसके विभिन्न स्थानों की ऊँचाई में बहुत ग्रधिक ग्रन्तर है (कास्पियनसागर समुद्रतट से भी नीचे है ग्रौर पामीर का प्लेटो समुद्रतट से १०,००० फुट ऊंचा है) तथापि पर्वतों को छोड़कर तुर्किस्तान, फ़ारस ग्रौर ग्रफ़ग़ानिस्तान बिलोचिस्तान ग्रौर तिब्बत सभी सूखे हैं।

इस शुष्कता के कारण जिसका कारण ग्रल्प वर्षा है, नादियाँ बहुत छोटी ग्रौर निर्बल होती हैं ग्रौर समुद्रतट पर पहुँचने के पहले ही सूख जाती हैं। इसके कारण पूर्व से पश्चिम तक फैला हुग्रा लगभग ३००० मील का विस्तृत मैदान उन ग्रन्तः प्रवाही प्रदेशों का एक संग्रह मात्र रह गया है जहाँ से कोई नदी समुद्र तक पहुँच नहीं पाती है। जिसमें से किसी में भी कोई नदी वर्तमान नहीं है ग्रौर फिर भी ग्रल्प वर्षा के कारण सारा प्रदेश या तो पूरा रेगिस्तान है या ग्रर्द्ध रेगिस्तान है जिसमें कुछ मरुद्वीप वर्तमान हैं। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि हम लोग एक ऐसे प्रान्त का वर्णन करने बैठे हैं जिसमें खेती के योग्य ग्रौर घने बसे हुए प्रदेश बहुत ही कम हैं। ग्रगर इन विस्तृत रेतीले प्रदेशों को हटा दिया जाय तो उपजाऊ प्रान्त मिलकर एक बहुत छोटे से भाग की रचना कर सकते हैं। भारत के निवासी (जहां उजाड़ प्रान्त कम हैं) यहा की दशा को ठीक नहीं समझ सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईरान को जलवायु

ईरान और मध्य-एशिया की जलवायु अत्यन्त खुश्क है।

वर्षा—१० बरस तक के लिये हुये माप के द्वारा निम्नाङ्कित तालिका दी हुई है जो वार्षिक वर्षा को सूचित करती है।

जास्क	४·१७ ई०	वार्षिक
बूशहर	१·१०७ ,,	,,
इस्फहान	४·७४ ,,	
तेहरान	९·३० ,,	,,
मशद	९·३७ ,,	,,

अक्षांश और सूर्य्य की गरमी को ध्यान में रखते हुये यहां की दिल्ली प्रान्त के भी मुकाबिले में बहुत कम है।

जहां तक वर्षा का संबन्ध है बनावट और स्थिति दोनों के विचार से ईरान एक अभागा प्रांत है। भाप से लदे हुए बादलों को पहाड़ों की श्रेणियाँ बीच में पड़कर रोक लेती हैं। अतएव पानी कास्पियन प्रदेश में ही बरस जाता है और अलबुर्ज़ पर्वत को पार नहीं करने पाता। इस पर्वत के उत्तरी भाग तो हरे भरे खेतों और जंगलों से परिपूर्ण हैं पर दक्षिणी भाग बिल्कुल सूखा रह गया है परन्तु भाग्यवश यहां की पर्वतश्रेणियों में बरफ इकट्ठी रहती है। जो जाड़े और वसन्त को ऋतुओं में पिघल कर नदियों में आ जाती है। जिससे सिंचाई होतो है। वास्तव में इन ऊँची श्रेणियों के बिना पूरा फ़ारस देश एक रेगिस्तानमात्र रह जाता। इसीलिये नगरों और गांवों की जनसंख्या भी श्रेणियों की ऊँचाई और चौड़ाई पर निर्भर रहती है। ईरान की भांति विस्तृत देश में विभिन्न स्थानों की मात्रा में कमी वेशी होना निश्चित है। मध्य, दक्षिणी-पूर्वी और पूर्वी फ़ारस में पानी कम बरसता है। उदाहरणार्थ खुरासान में मेंह के पानी से ६२ प्रतिशत अन्न की सिंचाई होती है और दक्षिणी पूर्वी ईरान में सिंचाई बिल्कुल नदियों से ही होती है।

कास्पियन सागर के अस्तराबाद, मज़न्दरान और जिलान के सूबों की दशा फ़ारस के अन्य प्रान्तों से सर्वथा भिन्न हैं। वृक्ष विहीन और शुष्क प्रान्त की जगह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह देश इतने घने जंगलों से ढका हुआ है कि उनको पार करना भी एक कठिन कार्य्य है यहाँ ४० इंच से भी अधिक पानी गिरता है और हवा इतनी नम है कि पठार के निवासियों को अनुकूल नहीं पड़ती है।

तापक्रम:—फ़ारस की जलवायु विकराल है तथापि वायुमंडल बड़ा ही आनन्द-दायक और शक्ति वर्द्धक है।

जाड़े के दिनों में भी तापक्रम पहाड़ों में अक्सर और मैदानों में कभी कभी शून्य अंश से भी नीचे गिर जाता है। अगर मौसम अच्छा हुआ तो जाड़ा कष्ट-प्रद नहीं होता और खुले मैदान में पूरा दिन व्यतीत करना बड़ा ही आनंददायक होता है। लेकिन जब जाड़ा अपना प्रचंड रूप धारण कर लेता है तो कभी कभी आदमी और पशु तो सरदी के कारण मर तक जाते हैं घर से दूर होने पर और ऐसा प्रत्येक वर्ष होता है। प्लेटो पर कभी चार पाँच महीने तक बरफ पड़ी रहती है। खेती का काम रुक जाता है और पशुओं की मृत्यु के कारण बड़ा नुक़सान हो जाता है। साधारणतः फारस में जाड़ा ख़ूब पड़ता है। और अगर कभी कभी यात्री को इसलिये पैदल सफ़र करना पड़ता है कि घोड़े पर चढ़ने में सर्दी अधिक सताती है। पैदल यात्रा के बाद उसे बड़ी चुस्ती और प्रसन्नता मालूम पड़ती है।

फारस देश में अरबिस्तान सबसे अधिक गरम सूबा है और इसकी राजधानी शूस्तर दुनियाँ में सबसे गरम जगह है। जून के महीने में तो वहाँ तापक्रम १२६ अंश से कभी भी कम नहीं रहता और लू के झोकों से बड़ी बुरी हालत हो जाती है। फ़ारस की खाड़ी दुनिया के प्रत्येक समुद्री भाग से अधिक गर्म है। पठार का हाल भिन्न है। वहां गरमी में दिन अधिक कष्टप्रद नहीं होता है। पर रात्रि भी बहुधा ठंडी होती है। वास्तव में मशद में रात्रि का सबसे अधिक तापक्रम ७४ अंश रहता है और दिन का सबसे अधिक १०२ है। (यह मात्रा सन् १९२१ की है)।

बाहर खुले मैदान में दिन की गरमी और विशेषतः लू की लपटें असहनीय होती है और कारवाँ रात को चला करते हैं। सभी स्थानों पर श्रेणियों के समीप होने के कारण गरमी के महीनों में ठंढे पहाड़ी-विश्राम-स्थान बड़ी सरलता से मिल जाते है। तेहरान-मशद और करमान में थोड़ी ही दूरी पर ऐसे बड़े अच्छे स्थान हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवा:— यह एक विचित्र बात है कि ईरान में हवा सर्वदा या तो उत्तर-पश्चिम या दक्षिण-पूर्व से चलती है। इसका कारण यह है कि अटलांटिक महासागर भूमध्य सागर और काला सागर देश के ओर एक ओर हिन्द महासागर उसके दूसरी ओर स्थित हैं। वसन्तऋतु और ग्रीष्मऋतु में दक्षिणी-पूर्वी और शिशिर और हेमन्त-ऋतु (जाड़े) में उत्तरी-पश्चिमी हवा चलती है। वृक्ष-विहीन मैदान में सूर्य की गरमी से हवा गरम होकर ऊपर को उठती है और उसकी जगह लेने को उत्तर-पश्चिम से ठंडी हवा आजाती है। पहाड़ी-श्रेणियों के पास स्थिति होने और उनके निम्नभाग में वृक्षविहीन निचले मैदान की स्थित के कारण हवा का ज़ोर बढ़ जाता है और वास्तव में कुछ प्रान्त ऐसे अभागे हैं जहाँ बारह महीने आँधी चला करती है। करमान की घाटी की भी यही दशा है। लेकिन सीस्तान से यह आँधी बड़ी ही भीषण हो उठती है। वहाँ पर एक सौ बीस दिन की प्रसिद्ध आँधी चलती है जिसकी चाल औसत से ७२ मील प्रति घंटा है। हिरात में इस आँधी को हिरात की आँधी के नाम से सम्बोधित करते हैं।

यह आँधी शायद पामीर से प्रारम्भ होती है और फारस और अफ़ग़ानिस्तान की सीमा से होती हुई सीस्तान के दक्षिण में जाकर समाप्त हो जाती है। लाश जुवइन के समीप जो अफ़ग़ानी सीस्तान में स्थित हैं यह आँधी प्रचंडतम हो जाती है। सिस्तान में १९०५ में ऐसी ही एक आँधी का वेग एक सौ इक्कीस १२१ मील प्रति घंटा था। यही कारण है कि अरबियों के आक्रमण के बहुत पहले ईरान-निवासी हवाई चक्की के व्यवहार में सिद्धहस्त थे। मसूदी ने लिखा है कि वह ईरानी दास जिसने 'उमर' की हत्या की थी हवाई चक्की चलाने में होशियार था—यानी यूरोप में आविष्कार इसका होने के बहुत पहले यह कला ईरानियों को मालूम थी।

प्राचीन ईरान की जलवायु:— जलवायु का प्रभाव किसी देश की बनावट उसकी जनता उसके शासन और उसके इतिहास पर इतना अधिक पड़ता है कि इस बात का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है कि ऐतिहासिक काल से अब तक उसमें (जलवायु) में क्या क्या परिवर्तन हुए हैं।

प्राचीन ईरान की जलवायु पर हंटिंग्टन ने बड़े गवेषणापूर्ण विचार प्रकट किये हैं—उनका कहना है कि लाप, तुरफ़ान और सीस्तान की घाटियों की शुष्कता बढ़ गई है। सिकन्दर महान की यात्रा के समय से २२०० वर्ष पूर्व ईरानी विलोचिस्तान और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करमान के प्रान्त आज से अधिक उपजाऊ रहे होंगे। उदाहरणार्थ सिकन्दर की एक महान यात्रा को ले लीजिये जो उसने फ़ारसी बिलोचिस्तान में स्थित बामपुर से करमान सूबे में बसे हुये रुदवार जिले तक की थी। आजकल बामपुर से रुदवार तक १५० मील की दूरी से एक भी गाँव नहीं है और यह केवल ख़ानाबदोशों के रहने का स्थान रह गया है—परन्तु सिकन्दर के समकालीन इतिहासकारों के अनुसार बामपुर की घाटी पहुँचने पर पूरी सेना के खाने के लिये दो महीने तक का सामान मिल सका। इसके बाद बड़े आराम से उसकी सारी सेना दक्षिणी ईरान से होकर चली गई जिधर से जाने में आजकल काफ़ी तकलीफ़ होती है। हंटिंगटन का कहना है कि ईरान की शुष्कता बढ़ रही है। इसको उन्होंने अनेक उदाहरणों से साबित किया है। आधुनिक ख़ुरासान के विषय में (जिसका प्राचीन नाम कोहिस्तान है) अवस्ता में लिखा है कि वहाँ का एक बन था। परन्तु उसकी पत्ती भी आज देखने को नहीं मिल सकती। परन्तु अगर यहां वर्षा हों तो पुनः जंगल उग आयँगे। मुहम्मद इब्राहीम के इतिहास में जिरुफ़्त के सरदार ने कहा है कि पहाड़ियों और घने जंगलों के कारण वह करमान के धावे से बिल्कुल सुरक्षित है यह ११ वी ईस्वी की बात हैं और आज उपरोक्त करमान के दक्षिण के पर्वतों में जंगल का नाम भी नहीं है केवल थोड़े से ठूंठ रह गये हैं जो फिर उग नहीं रहे हैं।

निसन्देह लड़ाइयों और बुरे शासन के कारण ईरान की आबादी बहुत कम हो गई है। प्लेग और भूकम्प के कारण भी बड़े नगर नष्ट भ्रष्ट हो गये हैं। परन्तु इनमें से कोई कारण भी लाप-बेसिन पर लागू नहीं होते जो मध्यकाल में एक बहुत घना आबाद प्रान्त था। और जहाँ एक नदी से सिंचाई होती थी जो आजकल सूख गई है। तुरफान बेसिन की भी यही हालत हुई है।

फ़ारसी-बिलोचिस्तान की सरहद पर पंजगुर से कोटा तक सारा देश रेगिस्तान है परन्तु कभी यह खूब आबाद था और यहाँ वर्षा अच्छी होती थी। आजकल यहाँ कुए भी कठिनता से दीख पड़ते हैं जिनका पानी अपेय है। यहां की आबादी को नष्ट हुये भी बहुत अधिक दिन नहीं हुए वहाँ के प्राप्त मिट्टी के बरतनों से सिद्ध होता है १३ वीं शताब्दी तक यह प्रान्त आबाद था। सारे मध्य एशिया का यही हाल है। तेहरान में भी ऐसे ही सूखे रेगिस्तान हैं जो पहले हरे भरे मैदान थे। ये उदाहरण इस बात को सिद्ध करते हैं कि मध्य एशिया में शुष्कता बढ़ गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनसंख्या

ईरान की आधुनिक जनसंख्या एक करोड़ के लगभग है। और सम्भवतः २५ लाख ईरानी अपने देश के बाहर रूस, तुर्किस्तान और हिन्दुस्तान में भी रहते हैं। समुद्री व्यापार के फैलने से पहिले ईरान के नगर आजकल के शहरों की अपेक्षा बड़े और समृद्ध थे। पानी भी अधिक बरसता था और देश में खेती भी अधिक हो सकती थी। अस्तराबाद की तरह कुछ जिले खाना-बदोशों के धावों से बर्बाद हो रहे हैं। परन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि उस समय ईरान की आबादी वर्तमान योरूप के समान सघन थी। ईरान हमेशा से विरल बसा है और हम उन राष्ट्रों के राज्य मार्ग से होकर गुजरने वाले बहुत बड़े (व्यापार) का भी ध्यान में रखते हुए यह कह सकते हैं कि ईरान की आबादी उस समय डेढ़ करोड़ से अधिक नही थी।

ईरानी पठार के पर्वत:—साधारणता लोगों का ख्याल है कि फारस एक चौड़ा मैदान है जो चारों दिशाओं में पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ है परन्तु वास्तव में बात ऐसी नहीं है। मुख्य पर्वतों से पूरी पर्वत श्रेणियां सामानन्तर चारों तरफ़ देश में फैली हुई हैं जिनके बीच बीच में औसतसे २० मील चौड़ी घाटियाँ हैं। और अगर एक यात्री इन पहाड़ियों के रुख से समकोण बनाता हुआ यात्रा करे तो उसे सर्वदा यही क्रम मिलेगा—

उत्तर के अलबुर्ज पर्वत से दक्षिण की (बिलोचिस्तान की श्रेणियों में चूने का पत्थर सब कहीं दिखाई देता है। लेकिन इसके अतिरिक्त—नमक, बालू, कांप, कंकड़ आदि और भी अनेक पदार्थ मिलते हैं।

मध्यवर्ती पहाड़ियां बहुधा लाल बलुये पत्थर और चट्टानों की बनी हुई हैं। पर चूने का पत्थर यहां भी अधिक है।

नमकीन पदार्थ बरफ के पिघलने पर घुल जाता है और नीचे मैदान में वह आता है वहीं नमकीन तहें अधिकता से धरातल के ऊपर पाई जाती हैं। निशापुर ऐसे ही विकराल नमकीन प्रदेश के पास बसा हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंकरीले ढाल यहाँ की खास चीज़ है, वह ढाल जो अलबुर्ज की ओर निकलता है बहुत बड़ा है। उसकी चौड़ाई करीब १६ मील और गहराई भी बहुत अधिक है। तेहरान एक ढालू पाताल तोड़ कुएँ पर बसा है। इस ढाल पर एक बार खोदने की कोशिश के बाद देखा गया कि ५०० फ़ीट गहराई तक कंकड़ मिलता ही गया।

उत्तरी श्रेणियां:—उत्तरी श्रेणियाँ पामीर से प्रारम्भ होती हैं—पामीर को फ़ारसी में बामें-दुनियाँ यानी 'संसार की छत' कहते हैं। वहाँ से ये श्रेणियाँ हिन्दूकुश, कोहेबाबा और अन्य नामों से पूरे अफ़ग़ानिस्तान में फैली हुई हैं और हिरात के पास जाकर ये लहरदार मैदान में बदलजाती हैं तजन नदी के पश्चिमी किनारे पर जाकर ये श्रेणियाँ फिर अपनी प्रारंभिक ऊँचाई धारण कर लेती हैं और अलबुर्न के नाम से सम्बोधित होती हैं। यहाँ से ये पश्चिम की ओर झुकती हुई सैकड़ों मील आगे बढ़ जाती हैं। कास्पियन सागर के दक्षिण में 'दमावन्द' नाम का ज़्वालामुखी पर्वत स्थित है इसकी चोटी की ऊँचाई १९,००० फुट है और हिमालय के पश्चिम, एशिया का सबसे ऊँचा पर्वत है—ऐतिहासिक अरारात की ऊँचाई केवल १७,०००फुट ही है। यहाँ से, जब ये श्रेणियाँ कास्पियन सागर के दक्षिण से होकर गुजरती हैं तो इनका रुख पश्चिम से उत्तर को हो जाता है। फ़ारस की सबसे बड़ी नदी किज़िल-उज़न से कट जाने के बाद अरारात के प्रसिद्ध पर्वत के पास जाकर इनका अन्त हो जाता है।

वान झील के ऊँचे बेसिन में, अरमीनिया पठार के पर्वत जिनका रुख़ पश्चिम से पूर्व को है, फ़ारस की पर्वत-प्राणली से मिल जाते हैं। इनकी समानान्तर श्रेणियां उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व को जाती हैं।

ध्यान में रखने की बात यह है कि उत्तरी श्रेणी सबसे अधिक ऊँची है। पर वह बहुत संकुचित है। और ज़ाग्रोस पर्वत की समानान्तर श्रेणियों के समान पर्वतीय कटिबंध नहीं बनाती है। इसी से दाक्षिणी ढाल बहुत शुष्क है। पूर्वी भाग और भी अधिक शुष्क है—इधर उधर बिखरे हुए मरुद्वीपों (नखलिस्तान) को भी पर्याप्त जल नहीं प्राप्त होता है। कभी कभी रेगिस्तान पर्वत के बिलकुल समीप तक आ गया है।

दक्षिणी श्रेणियां:—पामीर से प्रारम्भ होकर दक्षिणी श्रेणी अनेक नाम धारण कर दक्षिण-पश्चिम की ओर बढ़ती हुई अफ़ग़ानिस्तान और बिलोचिस्तान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर अरब सागर को जाती है। यहाँ पर इसकी ऊँचाई कम हो जाती है। और समुद्र तट के समातान्तर सैकड़ों मील तक पश्चिम की ओर जाती हुई करमान के दक्षिण-पूर्व तक जाती है। यहाँ से फ़ारस की खाड़ी के समानान्तर उत्तर-पश्चिम का रुख धारण कर लेती है। यह श्रेणी जहाँ पर फारस के मध्य में पहुँचती है। यहाँ कोहे-हजार और (कोहे लालाजार) नामी उँची चोटियाँ निकली हुई हैं। जिनकी ऊँचाई १३,००० फ़ीट तक है। फ़ारस की पश्चिमी सीमा पर भी पहाड़ियों की ऊँचाई अधिक है। अन्त में ये समानान्तर श्रेणियाँ अरारात के पास उत्तरी श्रेणियों से मिल जाती हैं।

भीतरी श्रेणियाँ पठार की श्रेणियों के मुकाबिले में अधिक ऊँची हैं पर वे इतनी प्रसिद्ध नहीं हैं कोहे तफतन बड़ी विलक्षण चोटी है। यह एक ज्वाला मुखी की चोटी है और बलोची सीमा के पास १३,००० फुट ऊँची है। अधिक पश्चिम में कोहे वज़मन रेगिस्तान के मध्य में स्थित है। यह शान्त ज्वाला मुखी है। इसकी सुन्दर चोटी ११,००० फुट ऊँची है। ईरान के पश्चिम में अलवन्द पर्वत ज़ाग्रोस की एक शाखा है। और हवादान के ऊपर उठा है। फारस का यह पर्वत पूर्वी पर्वतों से कही अधिक प्रसिद्ध है। दूसरी और भी कई श्रेणियां हैं। जिनसे पानी की असंख्य छोटी छोटी धाराये निकलती हैं और सिंचाई के काम आती हैं इस प्रकार फारस में एक एक करके कई श्रेणियां हैं वे एक दूसरे की सामानान्तर हैं और ऊँचाई में एक दूसरे से टक्कर लेती हैं।

फारस के सम्बन्ध में एक अनोखी बात यह है कि यहाँ ऊँचे से ऊँचे पर्वतों पर भी हिमागारों 'ग्लेशियर' का अभाव है किसी पर्वत पर ग्रीष्म ऋतु में बरफ़ नहीं रहती। केवल उत्तरी सपाट घाटिओं में कहीं कहीं कुछ बरफ़ मिलती है इस प्रकार चौदह हज़ार फुट ऊँचे कोहे लालाज़ार पर जुलाई मास में कुछ न कुछ बरफ रहती है। 'दमावन्द' का ज्वालामुखी भी बरफ से भरा हुआ है। खुरासान में ६,००० फुट की ऊँचाई पर ही कहीं कहीं बरफ़ मिलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेगिस्तान, नदियाँ, वनस्पति, पशु और खनिज पदार्थ

रेगिस्तान

लूत—फारस का महान रेगिस्तानः—ईरान के इस महान रेगिस्तान ने वहाँ के निवासियों की चाल ढ़ाल, रस्म, रिवाज़ और धार्मिक विचारों पर बड़ा प्रभाव डाला है। इस विस्तृत बालुकामय प्रदेश को 'लूत' कहते हैं। जिसमें और भी अनेक नमकीन उजाड़खंड हैं जिनको कवीर कहते हैं। उत्तर में जहां पानी अधिक बरसता है, ऐसे उजाड़खंड और भी अधिक हैं। ईरान के इस महान रेगिस्तान के लिये 'लूत' का नाम ही अधिक प्रयोग में लाया जा रहा है यद्यपि नमकीन रेगिस्तान को 'कवीर' के नाम से सम्बोधित करते हैं। 'कवीर' सूखे और पानी से भरे हुए दोनों तरह के रेगिस्तान के लिये प्रयुक्त होता है। ये ऊपर से देखने में भिन्न भिन्न रूप के दीख पड़ते हैं। कहीं कहीं तो इनका धरातल सफ़ेद, समतल और बरफ़ की तरह कड़ा होता है। और कहीं कहीं पर यह ज़मीन की सतह से उठे हुए, होते हैं जिनको पार करना असम्भव होता है। इनको पार करने का प्रयत्न करना अपने को दलदल में फसाना है। इनमें यह अन्तर जल के परिमाण पर निर्भर है। और इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है कि अगर 'कवीर' विल्कुल निर्जल हो जावै तो वे 'लूत' में परिणित हो जावेंगे।

वास्तव में 'लूत' ईरान की 'शुष्कता' का फल है। ईरान अपनी मध्यवर्ती स्थिति के कारण मध्य-एशिया के अपने आस पास और सूखे देशों से भी अधिक सूखा है। इस स्थिति के कारण न तो इसमें वर्षा ही होती है और न यह पर्वतों से पानी ही प्राप्त कर सकता है। यही कारण है कि यहां कि नदियाँ इतनी छोटी होती हैं कि समुद्र के किनारे पहुचने के पहिले ही वे ख़तम हो जाती हैं इन उथली नदियों का जल अपेय है क्योंकि उनके पानी में नमक की मात्रा अधिक रहती है। इन रेगिस्तानों में विस्तृत कंकरीले ढाल हैं। कहीं कहीं नमक की खारी झीलें मिलती हैं। स्थान स्थान पर बालूदार पत्थरों की पहाड़ियां हैं। इन रेगिस्तानों का दृश्य बड़ा भयङ्करमालूम पड़ता है।

इस लूत को पार करना बड़ा ही कठिन कार्य है। अगर यात्रा के समय आपको सब प्रकार की सुविधा रही तो भी खारी जल पीने और अपनी आवश्यकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की वस्तुओं के ढोने के कष्ट से आप बच नहीं सकते हैं। और अगर दैववश यात्रा खराब हुई तो तूफान में फंस कर प्राण से हाथ धोना पड़ता है। ये तूफान गरमी और जाड़े (दोनों मौसिमों) में बराबर भयानक होते हैं। इसके अतिरिक्त इन रेगिस्तानों की यात्रा बड़ी खर्चीली होती है। यहाँ यात्रियों और पशुओं दोनों पर बहुत ही अधिक कर लगाया जाता है। चाहे वे बेचारे दलदलों में फँस कर अपना प्राण गवावें या तूफान के गर्भ में सदैव के लिये विलीन हो जावें।

धरती के घिसने और तूफानी हवाओं के चलने से ही रेगिस्तान इतने भयानक हो गये हैं।

आर्द्र प्रान्तों में जहाँ की भूमि तृणादि से आच्छादित रहती है हवा धरातल को विशेष नुकसान नहीं पहुँचा सकती। परन्तु इन सूखे मैदानों में कुछ थोड़े डंठुल ही उग सकते है, हवा का वेग बहुत बढ़ जाता है और फलतः, बालू के 'चलते फिरते पर्वत' मनुष्यों को हमेशा खतरें में डाले रहते हैं।

धरती बहुत ही शीघ्र घिसती है। और तापक्रम की विकरालता के कारण हवा और पानी बड़ी शीघ्रता से इन रेतीली पहाड़ियों को तोड़ देते हैं।

ईरान के इस महान रेगिस्तान ने वहाँ के निवासियों के जीवन पर बड़ा प्रभाव डाला है। इसने विकराल पर्वतों और अथाह समुद्रों से भी बढ़कर उत्तर से दक्षिण को और पूर्व से पश्चिम को अलग कर रक्खा है। इस विस्तृत रेगिस्तान के सुव्यवस्थित शासन-पद्धत्ति में अनेकों गड़बड़ी उपस्थित की हैं। बाग़ी सरदार हारने पर इसमें बड़ी सफलता पूर्वक आश्रय ग्रहण कर सकते थे। और केन्द्रीय सरकार को विवश होकर उसका पीछा छोड़ना पड़ता था। इसके अतिरिक्त ईरानियों के धर्म्म, चाल-ढाल और रस्म रिवाज़ तक पर भी इसने असर डाला है। यह उत्तर में तेहरान और मशद से पश्चिम में कुम और कशान तक और दक्षिण में यज़्द और करमान से लेकर पूर्व में कैन और ब्रिजन्द तक फैला है। वास्तव में यह रेगिस्तान ईरान का निर्जीव-हृदय है।

नदियाँ:—कम वर्षा और ऊँची श्रेणियों के कारण जो पठार को चारो ओर से घेरे हुए हैं, सिन्धु नदी से शत्तुल अरब नदी के बीच वाले विस्तृत तटीय-प्रान्त में कोई भी प्रसिद्ध नदी नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरे ईरान साम्राज्य में कारुन ही ऐसी नदी है जिसमें नावें चल सकती हैं ईरान के पश्चिमी बेसिन में सबसे प्रसिद्ध नदी ज़िन्दा-रुद है। यह कारुन नदी के समीप ही बख़्तियारी पर्वत से निकल कर इस्फ़हान के ज़िले में बहती है। इसके बाद यह 'गौख़ाना' नामी दलदल में जाकर मिल जाती है। इसके और उत्तर अरास नदी है जिसका प्राचीन नाम रगू-ब्सीज़ था। कुछ दूर तक यह रूस और ईरान की सीमा बनाती है। यह भी एक प्रसिद्ध नदी है और अरारात के बाहर तक बहती है। पूर्व की ओर जाने पर ईरान की सबसे बड़ी नदी क़िज़िल यजुन मिलती हैं। यह उर्मिया की झील के पास से निकलती है और अलबुर्ज़ पर्वत को पार करती हुई साफ़ीशाह का नाम धारण कर कास्पियन सागर में गिर जाती है—यही प्राचीन अमारलीज है और कुछ लोग इसको जोरोस्तर 'कानून की नदी' भी कहते हैं। और भी पूरब वजन है। यह विशेष गहरी नहीं हैं और इसका जल भी अपेय है। जहाँ तक ईरान का सम्बन्ध है यह नदी विशेष काम की नहीं परन्तु हरीरूद के नाम से यह हिरात की उपजाऊ घाटी को सींचती है।

पूर्वी ईरान में ऐतिहासिक हलमन्द के अतिरिक्त और कोई नदी नहीं मिलती है। परन्तु इसको हम ईरान की सम्पत्ति नहीं कह सकते क्योंकि यह अफ़ग़ानिस्तान में ही निकलती है और सीस्तान तक आकर सीस्तान की झील में गिर जाती है। पर यह अफ़ग़ानिस्तान और ईरान दोनों को सींचती है।

वसन्त ऋतु के अतिरिक्त अन्य ऋतुओं में अगर यात्री ईरान के पठार को पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक पार करें तो उन्हें कोई भी नदी नहीं मिलेगी। अगर उन्हें एकआध नाले भी मिलें तो उनके पानी में इतना नमक मिला रहता है कि वे व्यर्थ दीख पड़ते हैं।

आक्सस नदी:—आज कल यह नदी ईरान से दूर है परन्तु बहुत समय तक आक्सस ने फ़ारस की पूर्वी सीमा बनाई है। अतएव इसका वर्णन असामयिक न होगा। यह पामीर से निकलती है और बदख़्शाँ को घेरती हुई उत्तर-पश्चिम की दिशा में बहती हुई आजकल अरल-सागर में गिरती है। पाँचवीं शताब्दी में इसका वर्णन करते हुये हरोडोटस ने लिखा है कि यह कास्पियन सागर में गिरती है। इसके एक शताब्दी पूर्व अरिस्टाटलस के वर्णन से भी यही ज्ञात होता है कि यह कास्पियन सागर में ही गिरती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिकन्दर महान के धावे के समय भी यह नदी कास्पियन सागर में ही गिरती थी। लेकिन न मालूम कब इसका पथ बदल गया और आजकल यह अरलसागर में गिरती है। क्यों और कब इसका रुख बदल गया है यह ठीक मालूम नहीं है । पर सबसे प्रथम यूरोपियन यात्री ए० जोकिन्सन ने १५५८ ईस्वी में यह लिखा है कि यह 'किथे की झील' में गिरती है। उसने भी अरल सागर को किथे की झील लिखा है। यह ईरान की सबसे बड़ी ऐतिहासिक नदी है।

झीलः—ईरानी पठार पहले वास्तव में एक उथला समुद्र था। परन्तु पठार के उठ जाने के बाद समुद्र का अन्त हो गया। उरमियाँ की झील शीराज़ की खारी झील, सीस्तान की हामूं झील, जाज़ मीरियन और अन्य पानी के टुकड़े उसी समुद्र के बचे हुये हिस्से हैं। समुद्र वास्तव में आधुनिक लूत में परिणित हो गया है इन तमाम झीलों का पानी खारी है। ईरान की उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर तीन सबसे प्रसिद्ध झीलें फैली हैं। इनमें से वान की झील टर्की में और गोचा रूसी अर्मीनिया में है।

तीसरी झील उरमिया है। यह ईरान की सबसे बड़ी झील है और समुद्र तट से ४१०० फुट की ऊँचाई पर पर स्थित है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी लम्बाई ८० मील और पूर्व से पश्चिम २० मील है। इसका पानी इतना खारी है कि मरा-सागर भी इसके आगे तुच्छ है।

इस झील के पश्चिम में और बीस मील की दूरी पर उरमिया नामक गाँव में ईरानी पैग़म्बर ज़ोरास्तर पैदा हुये थे।

दरियाये महालू दूसरी झील है। यह शीराज़ के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। यह उथली है और इसका पानी खारा है। इसके बाद सीस्तान की प्रसिद्ध झील हामूँ पड़ती है। हलमन्द नदी इसमें पहाड़ों से पानी लाती है। अतएव यह झील जाड़े में आधी सूख जाती है परन्तु वसन्त ऋतु में यह खूब बढ़ जाती है। जिस साल पानी बहुत बढ़ जाता है उस साल एक नहर से जिसका नाम 'शला' है पानी 'गावदी गिरद' में चला आता है जो १०० गज़ लम्बा और ३० गज़ चौड़ा है। १९११ ईस्वी 'शला' २०० गज़ चौड़ी और ३० गज़ गहरी थी। एक दूसरी हामूँ जाज़ मोरियन है जो बामपुर और हालिल नदी के लाये हुये पानी से बनती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

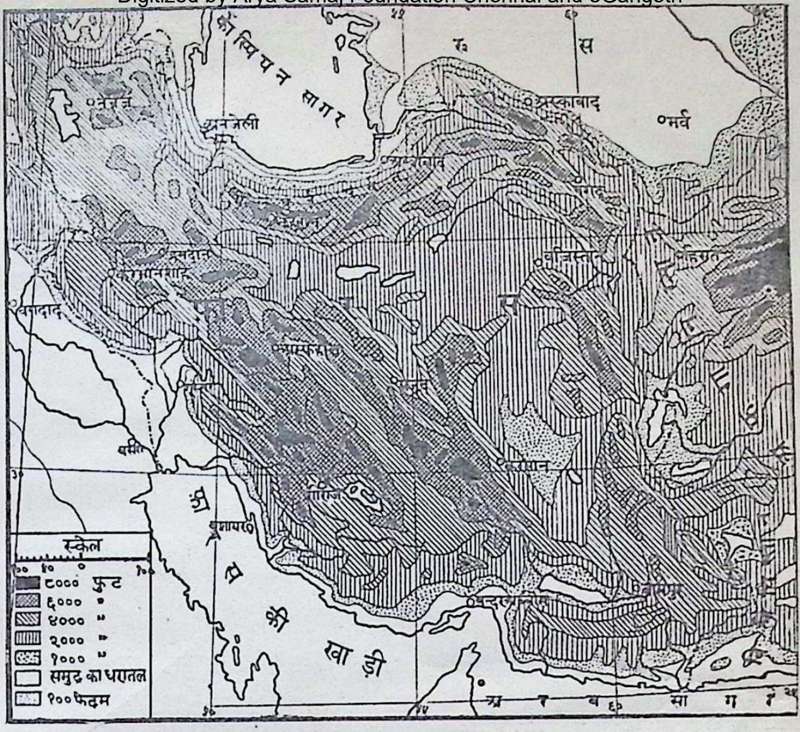

फ़ारस—प्राकृतिक

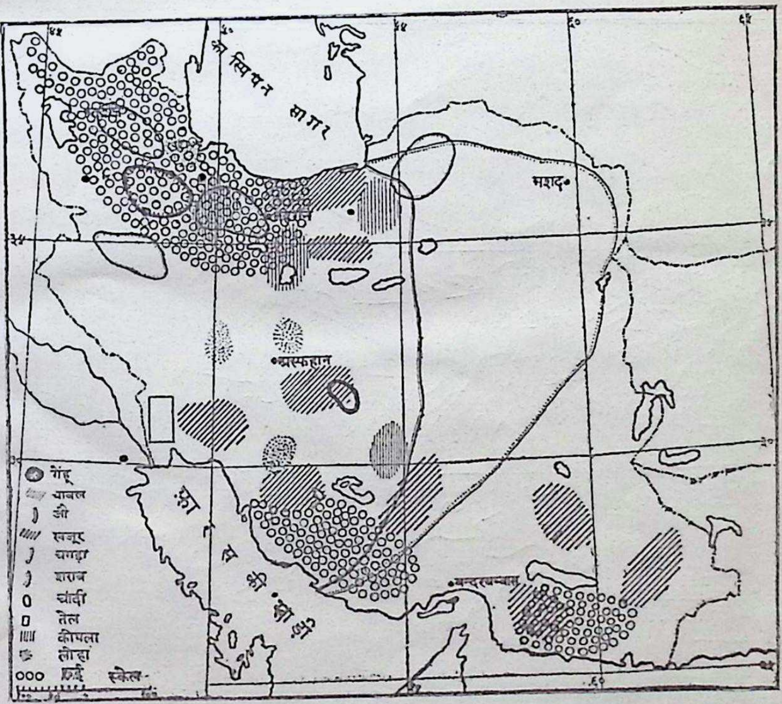

फ़ारस की उपज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

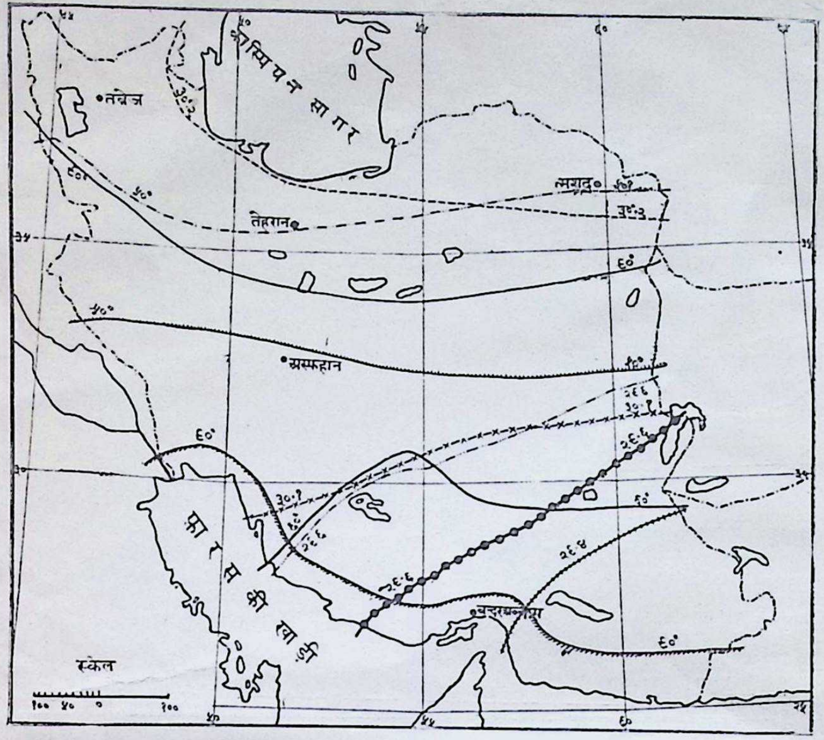

फ़ारस—जलवायु

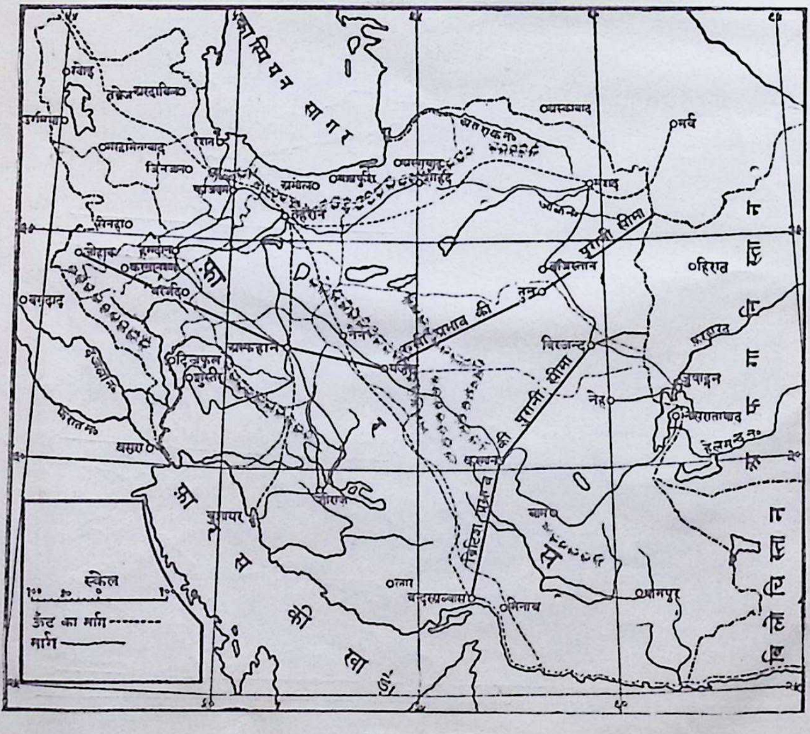

फ़ारस—आने जाने के मार्ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईरान की खाड़ी:—ईरान के दक्षिण में फारस की खाड़ी फैली है। यह चारों तरफ स्थल से घिरी है। यह १०० मील लम्बी और ३०० मील से १५० मील तक चौड़ी है। अरब सागर से इसमें आने का द्वार होरमुज़ का जल-संयोगक है। यहां इसकी चौड़ाई केवल ३५ मील है। यह उथली है और क्रमशः ऊपर उठ रही है। इसमें कई छोटे छोटे द्वीप हैं। बहरेन द्वीप के पास बहुत सी मूँगे की दीवारें हैं पहले इस खाड़ी को नारमारातुम यानी कडवी नदी और पूर्वी सागर इरीथिरीयन सागर कहते थे। आजकल यह फ़ारस की खाड़ी के नाम से प्रसिद्ध है।

इसमें यात्री को चाँदनी रात में यात्रा करने में ही सुविधा होती है। ईरान के किनारे देखने पर पहाड़ों की सूखी श्रेणियां समुद्र के किनारे के समानान्तर चलती हुई दिखलाई पड़ती हैं। अरब का समुद्र तट भी सूखा है। अतएव इसमें से जल्दी निकल जाने की यात्री की इच्छा होती है। लेकिन इस सूखे दृश्य के अतिरिक्त जब हम इस बात का ध्यान करते हैं कि इस खाड़ी के पास ही सर्व प्रथम संसार ने सभ्यता का पाठ पढ़ा था और इसी झील में सर्व प्रथम मनुष्य ने नाव चलाना प्रारम्भ किया था तो नसों का रुधिर तीव्र गति से प्रवाहित होने लगता है। ऐतिहासिक काल में 'सनाचरित' नामी इतिहासकार के अनुसार समुद्री व्यापार का यहाँ प्रचार किया गया था। प्रसिद्ध मल्लाह सिन्दबाद के समय में बसरा से चीन तक समुद्रिक व्यापार होता था इसके बाद एक नया युग आरम्भ होता है। जिसमें यूरोप निवासियों के जहाज़ यहाँ दिखलाई पड़ने लगे।

कास्पियन सागरः—कास्पियन सागर फ़ारस के उत्तरी तटीय सूबों की सीमा बनाता है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी लम्बाई लगभग ६०० मील है। उत्तरी हिस्से में यह १०० मील चौड़ा है परन्तु दक्षिणी भाग में चौड़ाई बहुत कम है। यह तीन बेसिनों में विभाजित हो सकता है।

उत्तरी बेसिन उथला है—बीच वाला गहरा है परन्तु पूर्व से पश्चिम तक इसमें भी एक उथली लाइन है जो केवल ६० गज़ ही गहरी है। दक्षिणी बेसिन सबसे अधिक गहरा है। इसके बन्दरगाह बहुत खराब हैं।

किसी समुद्र के इतने अधिक नामकरण नहीं हुए होंगे जितने इसके हुए हैं। इसका हर एक नाम ऐतिहासिक घटनाओं से सम्बन्ध रखता है। ज़ोरास्तर के समय में इसका नाम ज़रया रूकाश था जिसका अर्थ—विस्तृत खाड़ियों का समुद्र होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्ता में इसका वर्णन करते समय इसे जल संग्रह सर्व-जलोपरि के नाम से सम्बोधित किया गया है। वास्तव में तत्कालीन आर्य्य निवासियों के दृष्टि में यह सबसे बड़ा समुद्र था। यूरोप-निवासी इसे कास्पियन कहते हैं। यह शब्द कास्पी नामी कबीलो से बना है जो इसके किनारे रहते थे। ईरानी इसको बहर-उल ख़जार के नाम से संबोधित करते है। ख़जार नाम का साम्राज्य माध्यमिक काल के प्रथम भाग में इसके उत्तर में स्थित था। भिन्न भिन्न अवसरों पर इसको 'हीरकैनिया का समुद्र' और 'जिलान का समुद्र' के नाम से लिखा गया है।

हेरोडोटस के समय के पूर्व के उलेखों से पता चलता है कि ईरानियों का विश्वास था कि यह सागर सारी दुनियाँ को घेरे हुये है। इससे मालूम पड़ता है कि उन लोगों का संसार कितना छोटा था।

कास्पियन सागर के समुद्र तट की ऊँचाई में बड़ा परिवर्तन हुआ है। आज कल समुद्र तट काला सगार के तट से ८५ फुट नीचे है।

हंटिंगटन के अनुसार पहले इसका तट आधुनिक तट से ६०० फुट ऊँचा था पर इसको हम पूर्ण-सत्य नहीं मान सकते। हाँ, इतना तो निश्चय है कि इसकी ऊँचाई में बड़ा परिवर्तन हुआ है। हंटिंगटन ने यह दिखलाया है कि सिकन्दर महान के काल में आज कल से इसकी ऊँचाई १५० फुट अधिक थी। उन्होंने क्रास्नोवोडस्क् से पूर्व दो ऐसे तट देखे हैं जो वर्तमान समुद्र तट से क्रमशः २५०, और १५० फुट ऊँचे थे। अगर कभी कास्पियन सागर और अरल सागर दोनों एक ही रहे हों तो इसमें आश्चर्य नहीं है। हम लोग जानते हैं कि आक्सस नदी के किनारे वाला मार्ग पहली शताब्दी में छोड़ दिया गया था। इसका कारण यह था कि कास्पियन सागर के धरातल में परिवर्तन होगया। भारतवर्ष और पश्चिमी देशों के बीच का राजमार्ग अवसकुन नगर की ओर मुड़ गया। नगर गुरगान नदी के मुहाने के समीप कास्पियन सागर के दक्षिणी पूर्वी कोने पर स्थित है। गुमेश तप्पा के निकट अवसकुन की स्थिति है।

यहाँ से प्रसिद्ध लाल दीवार या सिकंन्दर की दीवार प्रारम्भ होती है। इस दीवार के चिह्न सर्वथा वर्तमान हैं और उनका अन्त समुद्र में जाकर हो जाता है। एक दूसरी दीवार भी समुद्र में बिलीन हो गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन बातों से इसका पर्याप्त प्रमाण मिल जाता है कि समुद्र का तट बहुत बढ़ गया है।

परन्तु आज कल कास्पियन सागर का पानी घट ही रहा है।

गमनागमनः—जिस मार्ग का सबसे पहले वर्णन मिलता है वह राजमार्ग बेविलोन से करमानशाह होता हुआ हमदान यानी प्राचीन एकवतन तक जाता था। अकेमेनियन साम्राज्य के अधीन यह सारदज़ से एकवतन को जाता था। यहाँ से यह राजस होकर अलबुर्ज़ के दक्षिणी ढाल से होता हुआ बैक्टिरिया को चला जाता था। सिकन्दर से पराजित होकर दारा इसी राज मार्ग से भागा था। बहुत प्राचीन काल से पूर्व और पश्चिम में गमनागमन का यही मुख्य मार्ग था। माध्यमिक काल में यूरोप के व्यापारियों का मार्ग तबरेज़ से होकर जाता था जिसको मार्को पोलो नामी यात्री ने तौरिस के नाम से लिखा है। उसके समय में यात्रियों का लक्ष्य चीन या भारत वर्ष हुआ करता था और बेनिस के सौदागर यज़्द और कामान से उर्मुज़ तक जाने वाली समानान्तर श्रेणियों के बीच से जाया करते थे।

ईरान की खाड़ी की ओर से फ़ारस में प्रवेश करना कठिन है क्योंकि बूशहर शीराज़ नामी मार्ग बहुत ही बुरा और कष्टकर है। उत्तर की ओर कास्पियन सागर पश्चिम की ओर अरब और पूर्व की ओर बिलोचिस्तान से भी ईरान में प्रवेश करना कठिन ही है। यों तो फ़ारस स्वतः एक उजाड़ खंड है और उस पर भी लूत रेगिस्तान ने इसको और भी छोटे छोटे सूबों में विभाजित कर दिया है जिनमें आपस का गमनागमन बड़ा ही कठिन है। सबसे सहज मार्ग उत्तर-पश्चिम से है जहाँ तबरेज़ में त्रिविजन्द और टिफ़्लिस से आने वाले मार्ग मिलते हैं। दक्षिण-पूर्व मार्ग भी खुला हुआ है। हिरात तक कोई कष्ट नहीं होता है। सड़क से एक मील तक दोनों ओर बड़ी आसानी से गाड़ियाँ दौड़ सकती हैं।

गमनागमन में ईरान ने कुछ विशेष उन्नति नहीं की है। यात्रा का एक मात्र सहारा खच्चर है। व्यापार भी अब तक खच्चरों और ऊँटों पर ही होता है। गाड़ियों का आविष्कार आज से २००० वर्ष पहले हुआ था अब भी वही व्यवहार में लाई जाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनस्पति

जहाँ तक वनस्पति का सम्बन्ध है ईरान का पठार एक गरीब प्रान्त है। उन स्थानों के अतिरिक्त जहाँ सिचाई हो सकती है सारा प्रान्त वृक्ष-विहीन और बालुकामय है। मुट्ठी भर दलदलो को छोड़कर तृणाच्छादित भूमि दर्शन को भी नहीं मिलती है और झाड़ियाँ तो कहीं दीख भी नहीं पड़तीं। वास्तव में यहाँ शुष्कता की ही प्रधानता है। बसन्त ऋतु में कुछ समय के लिये झाड़ियाँ फूलने लगती हैं और पहाड़ियों में हजारों पौधे उत्पन्न हो जाते हैं। परन्तु ग्रीष्म ऋतु के प्रथम झोंके से ही प्रत्येक चीज़ सूख जाती हैं। पहाड़ियाँ भी वृक्ष विहीन ही हैं पर इन पर कुछ थोड़े से पहाड़ी छोटे वृक्ष होते हैं जिनसे बहुमूल्य गोंद मिलता है।

कुछ ऐसे भी स्थान हैं जहाँ जङ्गली वेलि उगती है। परन्तु ये बड़ी शीघ्रता से कम हो रही है। ज़ाग्रोस पर्वत के किनारे किनारे शीराज़ से प्रारम्भ होकर छोटे छोटे सुन्दर वृक्षों का एक जंगल है जो २०० मील लम्बा और कई स्थानों पर १०० मील तक चौड़ा है। इसके अतिरिक्त पठार पर और जगह या तो वृक्ष सींच कर उगाये जाते हैं या नदियों के किनारे पाये जाते हैं।

सबसे अधिक प्रसिद्ध वृक्ष चिनार है। इसके अतिरिक्त झाऊ अखरोट, देवदारु और सर्व के वृक्ष भी होते हैं।

चिनार मकान बनाने के काम में आता है। अस्पिन के दरवाज़े और राम के हल बनते हैं। और अन्य वृक्ष ईंधन के काम आते हैं। सर्व और राम को उद्यान-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113229

सजाने के काम में लाते है। राम बड़ा छाया दार होता है—फुलवारियों में नरगिस और लाल गुलाब ही अधिकांश दीख पड़ते हैं। पहाड़ी घाटियों में हाथार्न खूब मिलता है। यहाँ जूड़ाज़ नामी दरख्त भी खूब मिलते हैं जो डलियाँ बुनने के काम आते हैं। आज से ४०० वर्ष पूर्व भी यहाँ यही बनस्पति पायी जाती थी।

जहाँ तक फलों का सम्बन्ध हैं ईरान एक सम्पन्न देश है। यहाँ फलों की उपज खूब होती है। सेव, नाश पाती, अनार, अखरोट, काले और पीले बेर काली और सफ़ेद भरबेरियां बहुतायत से सब जगह पैदा होती है। गरम प्रदेशों में अंजीर अनार, बादाम और पिस्ता खूब होते हैं। और भी गरम स्थानों में छुहारे नारंगी और नीबू पैदा होते हैं। फारस के अंगूर और तरबूज़ बहुत प्रसिद्ध हैं।

फ़ारस की मुख्य फसल गेहूँ और जौ हैं। ज्वार, बाजरा, अरहर, मटर, मूँग, उरद, कपास, अफ़ीम और तम्बाकू की खेती खूब होती है। तिलहन भी सब जगह उत्पन्न होती है सलजम, सकरकन्द, प्याज़ और लहसून भी बोया जाता है। कास्पियन के सूबो में और गरम प्रान्तों में धान और मकई की खेती होती है। तरकारियों में आलू, गोभी, करमकल्ला, टमाटर, ककड़ी और मूली मुख्य तरकारियाँ हैं। परन्तु इनमें भी सभों की खेती सर्वदा नियमित रूप से नहीं होती है।

ईरान के पहाड़ों पर कांटेदार पौधे और बड़े कुकुरमुत्ता होते हैं। यहीं मन्ना जिसको ईरानी बहुत चाहते हैं बहुत पैदा होता है ऊंटकटारा भी मिलता है। करमान में (करावे) बीज मिलते हैं। सुगंधित हींग का हिन्दुस्तान में बड़ा प्रचार है। कास्पियन सागर के समीपस्थ सूबों की दशा बिलकुल भिन्न है। यहाँ के बन बड़े सघन हैं। दरख्त खूब लम्बे चौड़े और घने होते हैं। एम, बीच, सिन्दूर, मैपल, एश और नीबू खूब फैले हैं। बन के दरख्तों पर फैली हुई अङ्गूर की बेलि का दृश्य बड़ा ही सुन्दर मालूम पड़ता है। भूमि घास और पौधे से (स्नोड्राप) पूर्णतः अच्छादित रहती है और ऐसा ज्ञात होता है। मानो हरे मखमल का फर्श बिछा है। फूलों में वाइलेट और प्राइमरोज़ खूब होते हैं। बनस्पति उष्णकटिबंधी नहीं है बरन् दक्षिणी यूरोप के जाति के हैं।

छुहारे फारस की खाड़ी की जलवायु सूखी और गरम है और तथा ताड़ ही मुख्य उपज है। बन्दरअब्बास के करीब इनके खेत के खेत लगाये गये हैं और सूखे रेगिस्तान में इसकी हरियाली आखों को बड़ी सुखप्रद ज्ञात होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फारस में फ़लों की खेती ख़ूब होती है। लोगों को बगीचे और उद्यान लगाने का खास शौक़ है। बगीचों से घिरे हुए गाँव फ़ारस के एक मुख्य दृश्य हैं।

पशु:—कास्पियन सागर के सूबो में चीते बहुतायत से मिलते हैं और दक्षिणी-पश्चिमी सूबे अपने शेरों के लिये प्रसिद्ध हैं। उत्तर और दक्षिण में भालू भी मिलते हैं परन्तु ये संख्या में कम हैं। भेड़िया, तेंदुआ, लकड़बग्घा, जंगली बिल्ली, सियार और लोमड़ियाँ चारो तरफ़ मिलती हैं। कास्पियन सागर के सूबों में बड़े सुन्दर बारहसिंघा और हिरन विचरते रहते हैं। मेसोपोटामियाँ और ज़ाग्रोस की पहाड़ियों में भी चितकबरे हिरन पाये जाते हैं। लेकिन फारस के खास पशु जो सब जगह पाये जाते हैं जंगली भेड़ और हिरन हैं। जंगली सुअर शिकार का खास जानवर है परन्तु ईरानी इसका शिकार करना हराम समझते हैं। यह कास्पियन सूबों के जंगलों और सर्वत्र नदियों के किनारे पाये जाते हैं। मैदानों में बारहसिंघे पाये जाते हैं दलदलों के पास जंगली गदहे पाये जाते हैं। खरगोश कम मिलते हैं।

पालतू पशुः—फारस या प्राचीन मिडिया घोड़ों के लिये प्रसिद्ध था। कुछ छोटे छोटे जानवर पाले जाते हैं। कास्पियन और सीस्तान सूबों में कूवड़ वाले जानवर मिलते हैं। कास्पियन सूबों और अरबिस्तान में भैंसा पाया जाता है परन्तु यह पठार पर नहीं मिलता है। ईरान में दुम्मा भेड़ पाई जाती है—इसकी पूछ मोटी होती है जिसका वज़न ६ सेर तक होता है। वज़न वसन्त ऋतु में बढ़ जाता है। परन्तु ज्यों ज्यों सरदी बढ़तो जाती है वजन भी घटता जाता है। एक प्रकार की बकरियाँ भी मिलती हैं जिनके बाल बड़े ही सुन्दर और कोमल होते हैं जिनसे शाल आदि बनते हैं। खुरासान का एक कूबड़ वाला ऊँट अपनी मज़बूती के लिये मशहूर है। बिलोचिस्तान में साँड़िनी पाई जाती है जो अपनी तेज़ चाल के लिये प्रसिद्ध है। कास्पियन का दो कूबड़ों वाला ऊँट भी कभी कभी कारवां में दिखलाई पड़ जाता है।

शिकार के पक्षी:—पहाड़ों में ६००० फुट की ऊँचाई पर कुछ पहाड़ी-मुर्गे पाये जाते हैं। भिन्न भिन्न जाति के फाख्ता भी मिलते हैं। पठार का ख़ास पक्षी तीतर होता है जिनकी दो क़िस्मे होती हैं। एक तीसरे प्रकार का तीतर केवल दक्षिण में ही मिलता है। गरम प्रान्तों और जिरूफ़्त की घाटी में पक्षो बहुतायत से पाए जाते हैं। रेत के पक्षी भो तीन प्रकार के होते हैं पर पठार पर अधिकतर सर्वोत्तम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पक्षी मिलता है। बत्तख और कुछ अन्य पक्षी जाड़ों में आ जाते हैं और बसन्त ऋतु में ही जाल में फसाए जाते हैं। कबूतर सर्वत्र पाये जाते हैं।

विना शिकार वाले पक्षियों में चील्ह बाज और गिद्ध खूब पाये जाते हैं। ग्रीष्म और बसन्त ऋतु में बीईटर होपो कजूजे चहका करते हैं कौवे, लवा, गौरा बुलबुल आदि पक्षी बहुत मिलते हैं। बुलबुलों को पकड़ कर पालते हैं। कास्पियन सूबों में और सीरतान में पानी में रहने वाले पक्षी मिलते हैं। पन-डुब्बिया, हंस और राज-हंस इसके उदाहरण हैं।

खनिज पर्दाथः—ईरान में खनिज पर्दाथ विशेष नहीं पाए जाते। और गमनागमन की कठिनता के कारण वर्तमान काल में भी सभी खानो में काम नहीं होता। प्राचीन समय में दशा इसके विरुद्ध थी। अलार साम्राज्य के पर्वतों में तांवा खूब होता था मध्य एशिया भी अपने पशुओं के लिये प्रासिद्ध प्राचीन धातु-काल में अनेक खानों में काम होता था जिसका अब पुनः आविष्कार नहीं हुआ है। धातु काल में लोग बेबीलोन में ताम्बा व्यवहार में लाते थे कांसा नहीं। वह पत्थर जिसका शिलालेखों में अधिकांश वर्णन आता है बहुमूल्य है जो दमावन्द के पर्वत में मिलता था। लेकिन इस खान का अब पता नहीं है। प्राचीन काल के और धातु, लोहा, रांगा सोना और चाँदी हैं। बहुमूल्य पत्थरों में हीरा, पन्ना, पुखराज, नीलमणि पाये जाते थे। इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि प्राचीन काल में खानों में लड़ाई में पकड़े गये दास काम करते थे जिनके जीवन का कोई सूल्य ही नहीं था।

शाह अब्बास ने ईरान की खानों में काम कराना प्रारम्भ किया था परन्तु इसमें बड़ा घाटा था। १७ वीं शताब्दी का यात्री टैवरनियर लिखता है "कि ईरान की चाँदी की खानों में दस रुपये की पूँजी लगाकर ६) ही मिल सकते हैं"। वास्तव में गमनागमन की कठिनता के कारण लाभ के साथ इन खानों में काम नहीं हो सकता।

आज कल भिन्न भिन्न स्थानों पर लोहा, ताँवा, रांगा, पारा, कोयला, चाँदी, सोना, सुहागा तथा मिट्टी का तेल पाया जाता है। आज कल लोहा की खुदाई नहीं होती। परन्तु सब्जवार के पीछे और लूत के पूर्वी किनारे का तांवों को खानों से लावा निकाला जाता है। इन खानों का वर्णन मुसलमान इतिहासकारों ने नहीं किया है। इन खानो की रक्षा करने वाली चहार दिवारियाँ पुरानी नहीं मालूम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ती हैं रांगा, पारा, चाँदी और सोना तथा मैगनीशिया और सोहागे की कुछ खानों में काम होता है। परन्तु तेहरान और मशद कोयले की खानों में बराबर काम होता है।

मिट्टी का तेल:—१६०७ से शस्तर के ३० मील पूर्व मिट्टी का तेल निकाला जाता है। लोगों का ऐसा विचार है कि मिट्टी के तेल यह कटिबंध काकेशस से ईरान की खाड़ी तक फैला है। ईरान की खाड़ी में किश्म दीप में मिट्टी का तेल निकलता है। किश्म में नमक भी मिलता है।

"साइकूस के आधार पर

बंशीधार श्रीवास्तव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईरान के बालक

भारतवर्ष की भाँति ईरान में भी बालकों का विशेष रूप से आदर होता है। जब किसी के घर में बालक का जन्म होता है तब उसके यहाँ उत्सवों की बाढ़ सी आ जाती है। बालक के माता पिता अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों को दावतें देते हैं और ग़रीब दुखियों और कंगालों को भी यथाशक्ति भोजन वस्त्र देकर सन्तुष्ट करते हैं। इसके अतिरिक्त घर में नाच गान आदि भी तरह तरह के उत्सव होते हैं।

बालक के पृथिवी पर पैर रखते ही उसे एक विचित्र ढंग का क़ीमती और कामदार चोंगा पहना देते हैं और रेशमी वस्त्रों से सजाये हुए पालने पर लेटाते हैं। तब दाई पुरस्कार की आशा से उस बालक को पिता के पास ले जाती है। पिता बालक को चूम कर कृतकृत्य हो जाता है और दाई भी समुचित रूप से पुरस्कृत होकर सन्तोष का अनुभव करती है।

ईरान में एक कहावत प्रसिद्ध है कि जिसके घर में बालक नहीं है उसकी आंखों में रोशनी नहीं है। इस दशा में पुत्र का मुँह देखकर माता पिता का आल्हादित होना स्वाभाविक है। परन्तु दुःख का विषय है कि ईरान में भी बेचारी बालिकायें उपेक्षा की ही पात्र समझी जाती है उनके जन्म से न तो घर में किसी तरह की चहल पहल होती है और न कोई उनका स्वागत ही करता है।

ईरान में बालक के जन्म लेते ही उसे सुन्दर और बहुमूल्य वस्त्रों की लादी में जो लपेट देते हैं उसका एक कारण है। वे चाहते हैं कि बालक की रूप रेखा भलीभांति देखकर किसी को उसकी सुन्दरता की प्रशंसा करने का अवसर न मिले। यदि कोई यह कह ही बैठे कि देखा, कैसा सुन्दर यह बालक है तो साथ ही साथ यह कहना भी आवश्यक मान जाता है—माशल्ला अर्थात् ईश्वर सर्वशक्तिमान है। अन्यथा लोग बालक के लिए अशुभ मानते हैं।

ईरान के स्कूलों में बालकों को ढेर की ढेर पुस्तकें पढ़ने की आवश्यकता नहीं पड़ती। उन्हें कुरान भर रटाया जाता है उसका अर्थ समझना आवश्यक नहीं माना ज़ाता है। यहाँ तक कि कितने ही ईरानी अध्यापक भी कुरान का अर्थ भलीभांति नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझते है। बात यह है कि कुरान अरबी भाषा में लिखा है जो ईरान की भाषा से भिन्न और कठिन है।

ईरानी बालकों को अपने अक्षर सुधारने के लिए बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। कारण यह है कि ईरानियों को अपनी लिखावट की सुन्दरता का सदा से ही अभिमान रहा है और वे अपने हस्त लिखित ग्रन्थों को चित्रों की भाँति सजाकर बड़े शौक़ से रखते हैं।

ईरान में स्लेट नहीं होते। वहाँ के बालक किल्क या मुश्कबेद की क़लम से चमकीले काग़ज़ पर खूब बना बना कर लिखते हैं। लिखते समय वे अपनी कापी दाहिने घुटने पर रख कर बैठते हैं और जब कभी कोई अक्षर अशुद्ध हो जाता है तब ज़बान से चाट कर उसे मिटा देते हैं और उस स्थान पर शुद्ध अक्षर लिख देते हैं। ईरान के बालक अपना हस्ताक्षर नहीं करते। वे अपने अपने नाम की मोहरें बनवा कर रख छोड़ते हैं और जब कभी हस्ताक्षर करने की आवश्यकता पड़ती है तब उस मोहर में ज़रा सी स्याही डाल कर छाप देतें हैं, बस, इसी से उनका हस्ताक्षर करने का काम चल जाता है।

ईरानी बालकों की पोशाक भी अद्भुत होती है। अपने पिता के ही समान वे लम्बे और ढीले ढाले चोगे पहनते हैं और मस्तक पर आस्तरखान कुलह रख लेते हैं। बात चीत करने में ये बालक आरम्भ से ही चतुर होते हैं। इन्हें इस बात का सदा भय रहता है कि कहीं किसी के प्रति किसी अनुचित शब्द का प्रयोग न हो जाय।

ईरानी बालकों को भोजन करने का ढंग भी सावधानी से सीखना पड़ता है वहाँ न तो अंगरेज़ों की तरह भोजन की सामग्री मेज़ पर रख कर छूरी काँटे से खाने की प्रथा है और न ईरान के लोग हिन्दुओं की तरह पाटे पर बैठ कर थाली में ही खाते हैं। वे लोग अपने सामने चमड़े का एक चद्दर बिछा कर भोजन करने बैठ जाते हैं और बंधने में से थोड़ा सा भात हथेली पर रख कर उँगलियों की सहायता से मुठिया सी बना कर खा लेते हैं। जब तक वह मुठिया ठीक नहीं बन जाती और भात खूब अच्छी तरह सन नहीं जाता, तब तक वैसे ही उँगलियों से दबाते रहते हैं इन लोगों के भोजन में विशेषता यह है कि मुट्ठी से एक भी चावल चद्दर पर नहीं गिरने पाता। इसके अतिरिक्त भोजन करने में बायें हाथ का उपयोग वे लोग किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी दशा में नहीं करते। एक हाथ से चावल का इस तरह सान लेना वास्तव में कोई आसान काम नहीं है। रोटी के टुकड़ों से ही वे लोग थारी कटोरी का भी काम चला लेते हैं।

ईरान के भिन्न भिन्न स्थानों की दरियाँ अपने अपने स्थान की ख़ास विशेषता रखती हैं। परन्तु उन रंग बिरंगी और सुन्दर सुन्दर दरियों के बनाने का श्रेय वहाँ के बालकों को ही होता है। उस्ताद बैठ कर केवल उन्हें ज़रा सा रंग आदि के सम्बन्ध में इशारा भर करता जाता है और वे सारा काम अपने आप ठीक कर लेते हैं।

ईरान के किसी प्रदेश में रेलगाड़ियाँ नहीं चलती किन्तु वहाँ भी बहुत से अच्छे अच्छे नगर हैं। अतएव व्यापारियों तथा अन्यान्य व्यक्तियों को पैदल ही दुर्गम बनों में होकर बहुत सा रास्ता तय करना पड़ता है। उस दशा में यात्रियों के धन तथा प्राण का बड़ा भय रहता है और कभी कभी बड़ी साहसपूर्ण घटनायें हुआ करती हैं। ईरानी बालक ऐसी घटनाओं का वर्णन बड़े चाव से सुना करते हैं। इन वीरता-पूर्ण कहानियों का हाल सुन सुन कर वे आनन्द से फूल उठते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईरान का स्त्री समाज

ईरान का स्त्री समाज क़रीब क़रीब वैसा ही है जैसा हमारे भारतवर्ष का। ईरान में बाल-विवाह वृद्ध-विवाह वहु-विवाह पर्दा आदि बातों का हमारे यहाँ से भी अधिक प्रचार है। स्त्रियों की शिक्षा आदि की कोई बात नहीं है। छोटी बच्चियों को बचपन ही में कुरान रटा दिया जाता है। बस यही सब कुछ है।

स्त्रियों का अधिक समय घरों के भीतर ही व्यतीत होता है। अमीर घरों की स्त्रियाँ तो शायद ही कभी बाहर निकलती हों। घरों में वे खाना बनाती हैं, बच्चों की देखरेख करती हैं, गृहस्थी के अन्य कार्य्य करती हैं और फ़ुर्सत पाती हैं—फ़ुर्सत हो अधिक रहती है—तो आपस में ग़पशप करती हैं या लड़ती हैं।

पति जैसे हमारे देश में परमेश्वर समझा जाता है वैसे ही ईरान में भी। इसमें सन्देह नहीं कि बहु-विवाह की प्रथा हमारे देश में कम नहीं है, पर ईरान में बहुत ही अधिक है। कुरान में एक पुरुष की चार शादियाँ तक करने की बात लिखी है। इसके अनुसार प्रायः सभी लोग जो कमा कर खिला सकते हैं, चार शादियाँ करते हैं। कम शादियाँ करना अधिकांश लोग अपनी शान के खिलाफ़ समझते हैं। स्त्रियों को सदैव इस बात का प्रयत्न करना पड़ता है कि पति उनसे प्रसन्न रहे। इससे उनमें आपस में बड़ी प्रतिद्वन्दिता रहती है। इसके लिए वे नाना प्रकार के शृंगार करती हैं। ईरान में बड़ी बड़ी आँखें और घनी भौं वाली बड़ी सुन्दर समझी जाती हैं। इससे बेचारी स्त्रियों को कज्जल आदि से अपनी भौं को रँगना पड़ता है। अगर सड़क पर चलती हुई किसी स्त्री का बुरक़ा इत्तफ़ाक से उठ जाय और आप उसकी तरफ़ देखें तो बड़ी बड़ी आँखें और काली विशाल भौंहें देखने को मिलेंगी। ईरानियों के गीत में इन भौंहों का बड़ा ज़िक्र आता है इनके लिए बड़ी बड़ी उपमाएँ सोची जाती हैं। ईरानियों का एक ग्राम्य गीत बहुत दिन हुए मैंने सुना था। उसका भावार्थ यह है—"मियाँ नमाज़ बहुत पढ़ते हो। रोज़ा बहुत रखते हो। अल्लाह अल्लाह बहुत करते हो? क्यों? क्योंकि तुमने काली भौंहें नहीं देखीं। तुम्हारी आँखों के सामने कोई घूँघट नहीं उठा। जिस घड़ी उठ जायगा। बस उसी घड़ी नमाज़ भूल जाओगे। रोज़ा खोल दोगे और शरबत माँगने लगोगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरबत ईरान की ख़ास चीज़ है। तरह तरह के शरबत बनते है और ख़ूब पिये जाते हैं। सुन्दरी स्त्रियों की शरबत से भी उपमा दी जाती है। जिन स्त्रियों की भौंहें बड़ी काली होती हैं और जो विविध प्रकार के शरबतों का बनाना भी जानती रहती हैं उनका बड़ा मान होता है। स्त्रियाँ अपनी सौतों का परभाव करने के लिए नाना प्रकार के तंत्र मंत्र का भी प्रयोग करती रहती हैं। वे पुरुषों के लिए जितनी कोमल और प्रिय होती हैं स्त्रियों के लिए उतनी ही कठोर और अप्रिय होती हैं।

इधर ईरान में शिक्षा की वृद्धि हो रही है। इसाई मिश्नरियों ने इस दिशा में बड़ा कार्य्य किया है। अब ईरान की सरकार भी इसमें दिलचस्पी ले रही है। स्त्रियों के अनेक स्कूल और कालेज खुलाये हैं और बहुत सी पत्रिकाएँ भी निकलने लगी हैं। मातृ-भाषा फ़ारसी है पर अब बहुत सी स्त्रियाँ शौकिया अँगरेज़ी पढ़ती हैं और बहुत सी विलायत आदि भी हो आईं हैं और जाने वाली स्त्रियों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है।

कहा जाता है कि आधुनिक युग स्त्रियों का युग है। स्त्रियों की जागृति के चारों ओर से समाचार आ रहे हैं। ईरान की स्त्रियाँ भी जगी हैं और जिस गति से वे बढ़ रही हैं यदि वही क्रम जारी रहा तो वह दिन निकट है जब ईरान की काया पलट हो जायगी। घरों के अन्दर ईरान की स्त्रियों की पोशाक बड़ी भद्दी होती है। चूड़ीदार तंग पैजामा, तंग कुर्ता और लम्बी चोटियाँ। बहुत सी स्त्रियाँ तो चोटी बढ़ाने के लिए घोड़ों के बाल लपेट लेती थीं। पर अब इन बातों का रिवाज़ उठ गया है। अब वे योरोपियन पोशाक को अपना रही हैं। और सामाजिक कुरीतियों के प्रति घृणा का भाव भी उनमें पैदा हो गया है। अनेक स्त्री संस्थाओं ने बहु-विवाह, पर्दा, दहेज आदि के विरुद्ध प्रस्ताव पास किये हैं। अनेक ने अपने पतिओं से बग़ावत की है और अब वे उस सड़क पर आ गई हैं जिसके ऊपर से समस्त संसार का सभ्य स्त्री समाज गुज़र रहा है। संसार कुछ दिन और उनकी भौंहें और शरबत का गीत गा ले।

श्रीनाथसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

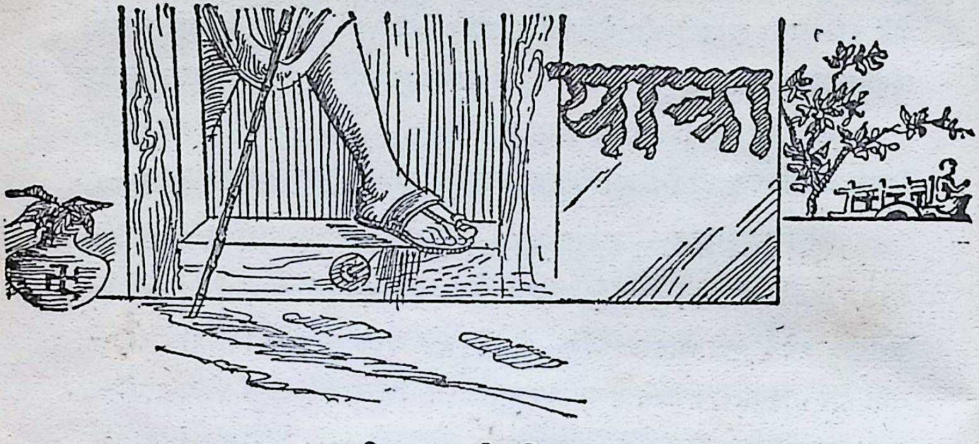

पुरानी डायरी के कुछ पृष्ठ

सन् १८३८ ईस्वी के अक्टूबर महीने में मैंने तबरेज़ से जिलान के लिये प्रस्थान किया। अपनी इस यात्रा के लिए फ़ारसी खुर्दिस्तान और खामसह होकर जाने वाले लम्बे और टेढ़े मार्ग का मैंने अवलम्बन किया। इस यात्रा द्वारा मैं मिडिया की प्राचीन राजधानी एकबतन नगर का पता लगाना चाहता था। इस नगर की प्राचीन सत्ता में मुझे पूरा विश्वास था। परन्तु दक्षिणी अज़रबैज़ान के भौगोलिक ज्ञान के बिना यह निश्चित करना असम्भव था कि उस प्राचीनतम नगर की वर्तमान स्थिति कहां पर है। घोड़े पर सात मील की यात्रा करके मैं अक्टूबर १६ को तबरेज़ से सिरदारूद पहुँचा जो तबरेज़ के दक्षिण पश्चिमी कोने पर स्थित है, तबरेज़ से २ मील चलने के बाद मुझे रास्ते में लाला नामक छोटा गांव मिला जिस में गरमी की ऋतु में रहने के लिए एक मकान बना था। तबरेज़ निवासी गरमी के दिनों में यहीं आश्रय ग्रहण करते हैं, और नाना प्रकार के नाच गानों में अपना समय व्यतीत करते हैं। यहां एक गरम पानी का चश्मा भी है, जिसका पानी औषधि की भांति गुणकारक है। इस चश्मे के आसपास की भूमि ज़मीन की सतह से ऊँची है और उस पर चढ़ कर देखने से तबरेज़ गर की पूरी छटा भली भांति दृष्टि गोचर हो जाती है। कम से कम तीस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मील के बगीचों से घिरा हुआ तबरेज़ नगर काफी विस्तृत दिखलाई पड़ता है। तबरेज़ नगर की दक्षिणी सीमा बनाने वाली नीची पहाड़ियों के बाईं ओर तबरेज़ से सिरदारूद जाने वाला मार्ग है और उनके दाहिने ओर एक विस्तृत मैदान है जो खारी झील के किनारे तक फैला हुआ है। सिरदारूद एक सम्पन्न स्थान है, जो सिरदारूद नामक नदी के किनारे ही बसा है। यह चारों ओर से बड़े सुन्दर और विस्तृत बगीचों से घिरा हुआ है।

सिरदारूद से चलकर बाईस मील की यात्रा करने के बाद मैं गोगान नामक गांव में ठहरा, मेरे मार्ग के समीप वाले मैदान में खेती खूब होती है, और उसके दोनों तरफ छोटे-छोटे अनेकों गांव बसे हैं। इनमें से एक का नाम खुसरूशाह है जो सिरदारूद से करीब ८ मील के फ़ासले पर स्थित है। यह काफी बड़ा है, और यहां की जलवायु भी नदी के तट पर स्थित अनेक अन्य स्थानों की भांति बड़ी ही मनोरम है। उपज भी अच्छी होती है, जहां तक दृष्टि जाती है, खुसरोशाह की घाटी, बगीचों और उपवनों की एक सुन्दर सीढ़ी सी दीख पड़ती है। प्रकृति-सौन्दर्य्य इतना चित्ताकर्षक है कि फ़ारसी कवियों ने फारस के अन्य 'चार स्वर्गों' के साथ इसे भी स्थान दिया है। प्राचीन काल में यह बहुत सम्पन्न और विख्यात नगर था सिरदारूद से बारह मील पर इज़खोज़ी नामक ग्राम है। यहां से एक मील के बाद रास्ता, छोटी-छोटी पहाड़ियों के बीच में होकर गुजरता है। आगे दक्षिण पश्चिम में गोगान गांव तक चपटा और खुला हुआ चमन है, जो नौ मील तक फैला हुआ है गोगान नामक गाव दकरगान के अधीन है, जिससे पांच मील की दूरी पर वह स्थित है। इस प्रदेश के अन्य स्थानों की भांति यह भी बगीचों से घिरा हुआ है, और गांव के मकानों में पहुँचने के लिए यात्री को इन बगीचों से होकर करीब नौ मील ऊपर चढ़ना पड़ता है। बाढ़ से इसे बड़ा नुकसान हुआ है पिछले दो वर्षों में इस गांव के बीच से बहने वाली नदी में दो बार बाढ़ आ चुकी है। परन्तु फिर भी गांव पुनः समृद्ध हो चला है। इसका मुख्य कारण है, यहां के बगीचों की उपज। फलों की खेती के लिए यहां की मिट्टी बड़ी ही उत्तम और उपजाऊ है। यहां की जनता खूब मन लगा कर फलों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेती करती है। मुख्य फल सेव, अंगूर, अनार, बेर और नाना प्रकार की झरबेरियां हैं। तवरेज़ को यहां और दकरगान के अधीन और गावों से फल और लकड़ी जाती है। इस ज़िले के लगभग सभी बगीचे तवरेज़ के रहने वाले महाजन और बनियों के कब्ज़े में हैं—वे ही इनके मालिक हैं और गांव वाले खेतों में या तो मज़दूरी या उपज का पांचवां हिस्सा लेकर काम करते हैं। अठारह वर्गगज़ चौड़े खेत के लिए उन्हें सरकार को ६ शिलिंग (लगभग ४ रु०) मालगुज़ारी देनी पड़ती है। इन पर अनाज की खेती करने वाले किसानों की अपेक्षा अधिक टैक्स भी लगता है। कारण यह है कि फलों का व्यापार अधिक लाभ प्रद होता है। गोगान स्वतः तो प्राचीन ग्राम नहीं है परन्तु देकरगान जो ज़िले का मुख्य नगर है बड़ा प्राचीन है। गोगान से एक मील चलने के बाद सड़क पहाड़ियों की श्रेणी में घुस जाती है, और तीन मील चलने के बाद फिर उस राज मार्ग से मिल जाती है, जो कि लूंजी बुरनी के पास बाईं ओर मुड़ गया है पहाड़ी में लगभग ६ मील चलने के पश्चात् यात्री संगमरमर की खानों के पास पहुँच जाता है। ये सड़क के बाईं ओर करीब १०० गज़ की दूरी पर स्थित है, ये खाने भूगर्भ विद्या विशारदों के अध्ययन की वस्तु हैं, ये लगभग आध मील के घेरे में फैली हुई हैं। इनका आकार छोटा और विषम है जिनकी गहराई दस या बारह फुट से अधिक नहीं मालूम पड़ती है। इन गड्ढों में से सदैव, छोटी-छोटी पानी की धारायें ऊपर को उबला सी करती हैं। गैस के निकल जाने के बाद चूने के कर्बनेत की एक तह सी बच जाती है जिससे चश्मों के किनारे लगभग एक फुट ज़मीन की सतह से ऊपर उठ जाता है।

संगमरमर की इस खान में आज कल कोई काम नहीं हो रहा था लेकिन मैंने पत्थर के कटे हुये हज़ारों टुकड़े देखे जो वहां से हटाये जाने वाले थे। यहां का संगमरमर लगभग पारदर्शक होता है और खिड़कियां बनाने के काम में आता है। मकान का फर्श भी बहुधा इससे जड़ा जाता है। तेहरान के दीवानखाना का प्रसिद्ध सिंहासन भी शायद इसी से बना है। यहां से सड़क छोटे मैदान में होती हुई सीधी दक्षिण लगभग दो मील तक जाती है फिर नीची पहाड़ियों में घुस जाती है, आठ मील के बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पुनः उस बड़े मैदान से जा मिलती है जो झील के दक्षिणी-पूर्वी किनारे पर आबाद है। इस स्थान पर फिर सड़कों के दो भाग हो जाते हैं एक, कारवा से जाने का बड़ा मार्ग है जो पहाड़ियों से जाता है,झील और पहाड़ियों के बीच का यह भाग बहुत उपजाऊ है और गांवों से ढका हुआ है पानी बहुतायत से बरसता है और जलवायु इतनी अच्छी है कि पूरे फ़ारस देश में ऐसे स्थान कम हैं। मुख्य स्थान शीराज़ हैं कभी तो पूरे ज़िलों को भी शीराज के नाम से सम्बोधित करते हैं। यह प्रदेश शाही जायदाद है। इस प्रदेश में केवल शीशवां ही इस जागीर से बरी है। यह मालिक कासिम मिरज़ा की जो भूतपूर्व फ़ारस के बादशाह के राजकुमार हैं, सम्पत्ति है, जिन्होंने यहां पर योरोपीय ढङ्ग का बङ्गला बनवा रक्खा है। राजकुमार पश्चिमी सभ्यता के पुजारी हैं और देखने से शीशवां एक पाश्चात्य नगर सा दिखलाई पड़ता है। उनकी जागीर से उन्हें लगभग दस हज़ार से लेकर बारह हज़ार पौंड तक की आमदनी हो जाती है। उन्हें जहाज़ बनवाने का खास व्यसन है। उरमिया की झील उनके बङ्गले के एक मील की दूरी पर है। इस झील पर भी उन्हीं का अनन्य अधिकार है। पुराने ढङ्ग की नावों को तुड़वा कर उन्होंने नये ढङ्ग की नावें, रूस के कारीगरों से बनवाली हैं। उन्होंने बड़े परिश्रम के पश्चात् एक बड़ा जहाज़ भी बनवा लिया है जो पालों से चलता है। परन्तु उनकी प्रबल इच्छा है कि वे इस झील में स्टीमर में घूमें। पर इनमें व्यसन उरमिया झील के भौगोलिक वर्णन की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि पाठक गण उससे भली भांति परिचित हैं। इसकी अधिक से अधिक गहराई आठ गज़ है। इसके पानी में नमक का हिस्सा बहुत है। जिससे पानी का वज़न बहुत भारी हो जाता है। और इस कारण आंधियों का इस पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। आंधी का प्रचंड झोंका भी पानी को धरातल से कुछ ही ऊँचा उठा सकता है। लोगों का कथन है कि झील की लम्बाई चौड़ाई बढ़ गई है जो उथले किनारे पहिले स्थल थे अब वे जल के भीतर हैं इसका प्रधान कारण जागातू और तताऊ नामक नदियों का झील में गिरना है जो पहले मियान दाग के मैदान को सींचने के काम में लाई जाती थीं। झील

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में छोटे-छोटे कई द्वीप भी हैं परन्तु अब तक वे बिलकुल सूने पड़े थे अभी हाल में मालिक कासिम मिरज़ा ने उनमें से सबसे बड़े को आबाद करना प्रारम्भ कर दिया है कि जिसका नाम उन्होंने 'मराले' रक्खा है (इस फ़ारसी शब्द का अर्थ जङ्गली हिरन है) क्योंकि सर्व प्रथम राजकुमार ने इस उजाड़ द्वीप में मराल का एक जोड़ा देखा था जो इस समय उस द्वीप के एक मात्र निवासी थे। आज मैं शीशवां ही में रह गया मुझे यहां रह कर ऐसा आभास हुआ कि एक मात्र सामाजिक उन्नति से ही मनुष्य की नैतिक उन्नति हो सकती है। शीशवा से तेरह मील का मार्ग समाप्त कर मैं बिनाब पहुँचा जो शीशवां से दक्षिण-पूर्व को है। अजब शहर और खानियान नामक गांव शिशवां से क्रमशः आधा और डेढ़ मील की दूरी पर रास्ते के बाईं ओर छूट जाते हैं। खानियान खलीफा के विश्राम का ख़ास स्थान है। शीशवां के दो मील की दूरी पर मैंने दज्जियारूद नामक नदी को पार किया दज्जियारूद जिस मैदान से होकर बहती है उसे किसान इसी से छोटी छोटी नहर निकाल कर सींचते हैं। इस मैदान की खास पैदावार कपास, गेहूं, जौ और चावल है। नदी के दो मील के बाद सड़क उपजाऊ मैदान को छोड़ देती है और एक ऊसर प्रदेश से होकर जाती है जो पहाड़ियों और उरमिया झील के बीच में स्थित है इस उजाड़ प्रदेश को पार कर यह नमक के एक दलदल से होकर जाती है। जब झील का पानी बहुत अधिक बढ़ जाता है तो पानी दलदल के ऊपर आ जाता है। इस दलदल के समीप पहुंच कर मारगाह जाने वाला मार्ग बाईं ओर मुड़ जाता है और पहाड़ियों के दामन से होता हुआ प्रसिद्ध सूर्य्य कन्दराओं के नीचे होकर गुजरता है। बिनाब जाने के रास्ते में नमक के दलदल से गुजरता है इसलिए बरसात के दिनोंमें इनका पार करना असम्भव हो जाता है। बिनाब एक बड़ा नगर है जिसमें लगभग १५०० मकान हैं। चारों तरफ यह बगीचों और अंगूर की बेलों से घिरा है। आबोहवा के मातदिल होने से यहाँ अंगूर बहुतायत से होते हैं। धरातल के नीचे थोड़े ही दूर पर पानी अधिकता से इकट्ठा रहता है। अतएव अंगूरों के लिए काफी मात्रा में जल मिल जाता है। अंगूर तबरेज़ को भेजे जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानी की धारायें शहर के अधिकांश मार्गों से होकर बहती हैं। अतएव फारस के साफ़ शहरों में बिनाब का दूसरा नम्बर है। विनाब मरगाह के ही आधीन है और लगभग चार हज़ार पौंड लगान सरकार को देता है अज़र वैज़ान की सेना में इसे ४०० आदमी का एक रिसाला भी देना पड़ता है। सोफीचई नामक नदी बगीचों की दक्षिणी सीमा पर बहती है जिससे अनेकों नहर निकाल कर नगर और अंगूर को सींचने के काम के लिए पानी निकाला जाता है। 'विनाब' प्राचीन नगर नहीं है। विनाब से चलकर ९० मील की सफर के बाद मैं चिलिक नामक गांव में पहुंचा जो मालिक कासिम के कब्जे में ताताऊ नदी पर बसा हुआ है। बिनाब के बगीचों को पार करके मैंने सोफीचई नदी को एक अच्छे पुल से पार किया और दो मील तक एक उपजाऊ मैदान में चलने के बाद उस पहाड़ी के पास पहुंचा जो कि विस्तृत मियान दाव मैदान के उत्तरी सीमा पर स्थित है। यहां पर हमने आम रास्ता छोड़ दिया और एक पगडंडी पकड़ कर जो वहां से दक्षिण-पश्चिम की ओर जाती है, चिलिक गया। ५ मील और चलने के बाद मैंने उथली नदी (जगातू) को पार किया, जिसमें इस समय केवल एक फुट गहरा पानी था। और यहाँ से ३ मील और चलकर कर्मांचक नामक गांव में कलेवा करने के लिए घोड़े से उतर पड़ा। मियान दाव वास्तव में जो मियान दो आव का अपभ्रंश है जगातू और ताताऊ नदियों के बीच में बसे हुये प्रदेश को कहते हैं लेकिन मियान दाव में वास्तव में इस प्रदेश के अलावा जगातू नदी के उत्तर और ताताऊ नदी के दक्षिण के प्रदेश भी सम्मिलित हैं। इस प्रदेश की मिट्टी हर जगह उपजाऊ है। लेकिन मैदान के उत्तरी भाग में ही जहां पहाड़ से छोटी मोटी अनेक नदियां निकलती हैं और जहां उपरोक्त दोनों नदियों से भी नहर निकाल कर सिंचाई हो सकती है खेती होती है। लेकिन ज्यों ज्यों यह मैदान झील की तरफ ढालू होता जाता है त्यों त्यों नदियां तेज़ और पतली होती जाती है और सिंचाई के काम की बिलकुल नहीं रह जाती हैं। अतएव झील के समीप वाला ढालू मैदान उजाड़ रह जाता है। उसमें खेती नहीं हो सकती। वह केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरागाहों के काम में आसकता है। दोनों नदियों के सामने एक बड़ा बांध बना कर नदियों के पानी को ऊपर उठाकर उसे नहर में परिणित कर सकते हैं। पर यह काम अधिक खर्चीला है। कमाचिक से आठ मील चलकर मैं ताताऊ नदी के किनारे पहुंचा और उसको एक उथले स्थान पर पार करके चिलिक गांव में पहुँच गया। चिलिक भी मिरज़ा कासिम के ही आधीन है और इस समय उन्नत दशा में है। चिलिक में आठ घंटा विश्राम करने के पश्चात् ही मैं एक प्राचीन शिलालेख की तलाश में चल पड़ा जो पास ही था और जिसके अक्षर, बाण के शिर के आकार के हैं जिसे ताशतपह का शिलालेख कहते हैं, शिलालेख की नकल करके मैं शाम तक पुनः चिलिक लौट आया। एक दूसरे शिलालेख की नकल करने के लिए मेरा उशनेई जाना आवश्यक था। चिलिक से चलते समय मैने अपने साथ एक पथप्रदर्शक लिया। दस मील तक दक्षिण-पश्चिम की ओर मुझे कियानदाव का मैदान पार करना पड़ा। मैदान सरकंडों और बड़ी बड़ी घास से आच्छादित था जिनको चीरकर आगे चलने में भी काफी कठिनाई उठानी पड़ती थी। बसन्तु ऋतु में यह मैदान दलदल में परिणत हो जाता है। मियानदाव के मैदान को पार कर हम लोगों को छोटी पहाड़ियों में घुसना पड़ा जो झील तक चली गई हैं।

यहां की भूमि काफी उपजाऊ है। गावा में मिकारी नामी कबीले के लोग रहते हैं। पहाड़ियों में एक मील चलने के बाद हम लोग सोलडुज़ के मैदान में पहुंच गये। मैदान में आकर हम लोग पश्चिम-दक्षिण की ओर मुड़ गये, और तीन घंटे की यात्रा के बाद गदर नदी के किनारे बसे हुये अलीबगली नामक गांव में जाकर ठहर गये। अज़रबैजान के नकशे में हम लोग सोलडुज़ नाम का एक शहर देखते हैं पर यह बात बिल्कुल ग़लत है। सोलडुज़ वास्तव में पूरे ज़िले का नाम है, जिसका मैदान पूर्व-पश्चिम, झील के समानान्तर लगभग २० मील तक फैला हुआ है मैदान की चौड़ाई कुल ५ मील है। सोलडुज़ का यह मैदान अजरबैज़ान का सबसे अधिक उपजाऊ मैदान है। अगर इसे र फ़ारस का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब से अच्छा और उपजाऊ भाग कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। इस मैदान के बीच में गदर नाम की नदी बहती है और इसमें से अपनी इच्छानुसार नहर निकालकर किसान खेतों को सींचते हैं।

आज कल यह 'कारा पाया' नामी कबीले के कब्जे में है। आखिरी रूसी लड़ाई के समय में अब्बास मिरज़ा ने इस ज़िले को इन्हें जागीर की तौर पर दे दिया था जिसके बदले में इन्हें फ़ारस की सरकार को ४०० घुड़सवारों का रिसाला देना पड़ता है। कारापाया लोग बड़े अच्छे घुड़सवार और लड़ाके हैं। कारापाया उस समय कुल ८०० कुटुम्ब के साथ बसे थे। सोलदुज़ में उस समय करीब ५००० घर के मिकरी मेंमिश और ज़रज़ा नामी कबीले की किसान रिआया आबाद थी। इस समय कारा बड़े ही उन्नति दशा में हैं और फ़ारस का और कोई दूसरा कबीला इतना पाया सम्पन्न नहीं है। परन्तु यहाँ के किसानों की दशा में कोई सुधार नहीं हुआ है। वे अब भी अपढ़ और ग़रीब हैं। और भारतीय कृषकों की भाँति "कोउ नृप होइ हमें का हानी। चेरी छोड़ि न होवै रानी" 'वाली कहावत को अक्षरशः चरितार्थ करते हैं। दिनरात घोर परिश्रम करने के बाद भी कठिनता से वे अपने बच्चों का पेट भर सकते हैं। चिथड़े से ढके हुये इन ग़रीब क़िसानों की दशा बड़ी दुखदाई है वास्तव में सारे फ़ारस के क़िसानों पर टैक्स का इतना बोझा लाद दिया जाता है कि वे जीवन पथ को बड़ी कठिनाई से पारकर सकते हैं। कुछ भी हो एक यात्री को सोलदुज़ का ज़िला बड़ा उन्नत दिखलाई पड़ता है। धान के लहराते हुये हरे खेतों, सुन्दर चरागाहों और कार्य्य-ग्रस्त किसानों को देखकर यह फ़ारस का सब से सम्मृद्धि प्रान्त दीख पड़ता है। इसकी राजधानी नाखुदा है। सारे प्रान्त में लगभग ६० गाँव हैं जिनमें से प्रत्येक पड़ोस के ज़िले के गाँवो से दे० फ० में कई गुने अधिक बढ़े हैं।

आज मैं अलीबेगली से उशनेई को रवाना हुआ। १० मील तक रास्ता उस पहाड़ी के किनारे क़िनारे हो कर जाता हैं जो सोलदुज़ मैदान की दक्षिणी सीमा बनाती है। १० मील चलने के पश्चात् एक टीले पर चढ़ कर देखने से उशनेई का पूरा दृश्य भली भाँति दीख पड़ता है। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखने से एक बड़ी ही नेत्र—रंजक छटा दिखलाई पड़ती है। उशनेई प्रदेश की पश्चिमी सीमा पर खुर्दिस्तान पर्वत जिसके सामने अन्य पहाड़ियाँ तुच्छ जान पड़ती हैं, छाती फुलाये खड़ा है। पर्वत की हिमाच्छादित चोटियाँ स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो जाती हैं। और इसके चरणों में उशनेई का सुन्दर छोटा नगर अपनी निकटवर्ती वाटिकाओं से क्रीड़ा करता हुआ मन्द मन्द मुसकान करता रहता है। यहाँ से अभी नगर १० मील दूर था। यहाँ से उत्तर की ओर मैदान में होता हुआ जब मैं नगर को चला तो मुझे साफ़ मालूम हो गया कि अब मैं खुर्दिस्तान प्रदेश में भ्रमण कर रहा हूँ। खुर्दिस्तान निवासी तुर्कों की रहन सहन फ़ारसी किसानो से भिन्न है। तुर्क पुराने फेल्ट और चमड़े की टोपी पहिनते हैं, खुर्द रंगीन धारीदार पगड़ी बाँधते हैं। तुर्क परसा बांधते हैं खुर्द तलवार लगाते है। अगर घोड़े पर सवार हों तो बरछा लिए रहते हैं। अज़रवैजान के तुर्क देखने में सुस्त और मनहूस दिखलाई पड़ते हैं।

खुर्द तेज़ फुर्तीले और प्रसन्न चित रहते हैं। उशनेई पहुँच कर मैं वहां के गवर्नर गफ़ूर खां से न मिल सका पर उनके परिवार ने मेरा समुचित आदर किया।

उशनेई प्रान्त में यूरोपियन बहुत कम आये हैं। यह खुर्दिस्तान पर्वत के निचले भाग में बसा हुआ चारों तरफ पहाड़ियों से घिरा हुआ यह एक अच्छा उपजाऊ प्रान्त है। इसके मैदान के ठीक बीचो वीच होकर गदर नामक नदी बहती है। इसके अतिरिक्त पानी की अन्य और भी छोटी छोटी धारायें हैं। जिनसे सिंचाई का काम होता है। मैदान की बनावट ऊँची नींची है इस प्रान्त में लगभग कुल चालीस गांव हैं जिनके निवासी खुर्द हैं। प्लेग आने के पहिले इनकी कुल ४००० या ५००० के लगभग घरों की संख्या थी पर अब कुल ८०० रह गई है।

उशनेई, उरमियां सरकार के अधीन है और करीब ४००० पौंड सरकारी माल गुज़ारी सरकार को देते हैं। ज़रजाज़ अच्छे लड़ाकू हैं और खुर्दिस्तान पर्वत के सीमान्त प्रदेश में रहनेवाली जंगली जातिओं से हमेशा लड़ा करते हैं। उशनेई, अज़रवैजान का एक पुराना ईसाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपनिवेश है। नेस्टोरियन गिर्जा के पादड़ियों का प्रधान अड्डा है। खुर्दों का विश्वास है कि उशनेई ही प्राचीन प्रसिद्ध शारे सवा है। जहां से सवा की महारानी पूर्व के प्रसिद्ध सम्राट सुलेमान से मिलने के लिए तख्त सुलेमान को गई थी। उनका कहना है कि उस समय नगर का क्षेत्रफल अधिक बड़ा था। लेकिन प्राचीन भूगोल में इस नगर का वर्णन १४ वीं शताब्दी के पहिले कहीं भी नहीं मिलता है।

उशनेई नगर छोड़ कर आज केवल ७ मील का ही सफ़र कर मैं उस स्थान पर पहुँचा जहाँ गफ़ूर ख़ाँ किला बनवा रहे थे यहीं से प्रसिद्ध सड़क खुर्दिस्तान के मैदान को जाती है। यह स्थान उशनेई से दक्षिण-पश्चिम की ओर है तीन मील जाने के बाद मैं कलेवा करने के लिए सिरगन नामक गांव में घोड़े से उतरा था, जो कि टूटी फूटी झोपड़ियों का एक छोटा सा समूह है। मेरा विश्वास है कि यह वही स्थान है जिसे थियोफिलेस नामी इतिहास रचियता ने सरगना नाम से लिखा है और जहां खूसरो परवेज़ अपनी रोम की सहयोगी सेना के साथ अनीसीन के देश को पार करने के पश्चात् विश्राम करने के लिए ठहरा था। सिरगन से दो मील चल कर मैंने गदर नदी को पार किया। जो यहां पानी की एक उथली तेज़ धार मात्र रह जाती है। यहां से दो मील की चढ़ाई के पश्चात् मैं गफूर ख़ां के किले पर पहुँच गया। यहां के जरज़ाज़ नामी कबीलों से प्रायः अन्य सभी कबीलों से दुश्मनी है। बिल्वा तथा रोअन्दीज नामी कबीलों के हमले से बचाने के लिए गफूर ख़ां ने इस किले को बनवाना प्रारम्भ किया है। मौसिम ख़राब हो जाने से दो दिन तक मैं किले में ही पड़ा रहा। तीसरे दिन आसमान साफ़ होने पर मैंने प्रस्थान करने का निश्चय कर लिया। ऊँचाई अधिक होने से वहां जाने का सब से उत्तम समय अक्टूबर के पहिले पक्ष और मार्च के अन्तिम पक्ष में ही है। मैं लगभग १० दिन तक देर करके पहुंचा था अतएव बर्फ काफ़ी मात्रा में पड़नी आरम्भ हो गई थी। परन्तु शिलालेख को देखने की प्रबल इच्छा को दबाना असम्भव था और मैंने दो और पथप्रदर्शक घुड़सवारों को साथ लेकर प्रस्थान कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। ५ मील तक चढ़ाई आसान थी परन्तु ५ मील के बाद बर्फ़ से गुजरना पड़ा। कहीं कहीं तो बरफ़ ने मार्ग को इतना आकीर्ण कर लिया था कि हम लोग उसमें फंसते फंसते बचे। समयानुसार पैदल और घोड़े की पीठ पर ज्यों त्यों चढ़कर एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जो कुछ खुला था। और वहां से तेज़ी से चलकर पहाड़ की चोटी पर ऊंचे लक्ष्य स्थान पर पहुँच गये। उशनेई से यह स्थान दक्षिण-पश्चिम में था। यहां पर पहिली बार मैंने प्रसिद्ध केलीशिन (नील स्तम्भ) का दर्शन किया जो दर्रे के सबसे ऊंचे भाग पर स्थित है। इस दर्रे को पार करना कठिन है इसका कारण बर्फ़ की गहराई नहीं है। परन्तु यहां आंधी के बड़े भयंकर और ख़ूंखार झोंके सर्वदा चला करते हैं। परन्तु केलीशिन नामी दर्रा ही फ़ारस और रोआन्दिन के बीच में गमनागमन एकमात्र मार्ग है। अतएव यात्रियों को प्रत्येक ऋतुओं में इससे होकर जाना ही पड़ता है। परन्तु फलतः हर साल कितने ही अभागे इसकी बर्फ़ीली कब्र में सदैव के लिए सो जाते हैं। केलीशिन नीले पत्थरों का एक स्तम्भ है जिसकी लम्बाई चौड़ाई और मोटाई क्रमशः ६ फुट, २ फुट और १ फुट है। इसका सिरा और कोने गोल हैं। ये स्तम्भ एक दूसरे (५ फुट लम्बे चौड़े और ४ फुट गहरे) पत्थर के थाले में धसा दिये गये हैं। इसके चौड़े सिरे पर पूर्व की ओर कुल एक तालीस पक्तियों की एक लिपि है। इनके अक्षर बाण की नोक के आकार के हैं। मैं लिपि की नक़ल करने को तयार होकर आया था, परन्तु अक्षरों के बुरी तरह लुप्त हो जाने के कारण मुझे निराश हो जाना पड़ा। अक्षर बिलकुल नष्ट-भ्रष्ट हो गये थे और बड़ी कठिनता से मैंने केवल कुछ अक्षरों को इसलिए नक़ल कर लिया कि इन अक्षरों के समय का पता लग सके।

हवा धीरे-धीरे ज़ोर पकड़ रही थी अतएव घबड़ा कर हम लोग बड़ी तेज़ी से घर की तरफ़ भागे और आंधी आने के पहले बरफ़ से बाहर आ गये।

इस केली शिन के विषय में यहां पाठकों को कुछ थोड़ा बतला देना असामयिक न होगा। अभी मैं जिस दर्रे पर गया था। उससे लगभग ५ घंटे के रास्ते पर इसी प्रकार का एक और दूसरा स्तम्भ है। इसको भी केली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिन ही कहते हैं। सुनने में आया है कि इस उपरोक्त स्तम्भ से वह अच्छी दशा में है। इन दोनों प्राचीन एतिहासिक स्तम्भों का एक ख़ास भौगोलिक अर्थ है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि ये दोनों स्तम्भ प्राचीन काल के एक मुख्य मार्ग की सूचना देते हैं। यह मार्ग प्राचीन काल के दो साम्राज्यों को मिलाने के लिए बनाया गया होगा। और ये साम्राज्य अवश्य निनवा और एकवतन रहे होंगे। इस मार्ग की सत्ता का प्राचीन इतिहास में भी पर्याप्त प्रमाण मिल जाता है और इस प्रमाण की पुष्टि वर्तमान प्रयोग से भी हो जाती है। आज कल के ईसाई पादरी उशनिया जाते समय इसी मार्ग का अवलम्बन करते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि १३ वीं शताब्दी में असिरिया और अज़रवैजान के गिर्जों में आना जाना इसी मार्ग से हुआ है बैजन्टाइन के इतिहास लेखकों के वृत्तान्त में भी हेराक्लियस और खुसरू परवेज़, निनवा से अजर बैजान जाते समय इसी मार्ग से होकर गये थे। इससे भी प्राचीनतर काल में जेनो.फ.न ने इसी मार्ग का वर्णन किया होगा जब वह कारडुशियन पर्वत के किनारे किनारे पूर्व की दिशा एक वतन को जा रहा था। सम्भवतः इस समय से थोड़े पहिले ही इस मार्ग का निर्माण भी हुआ होगा जब कि निनवा साम्राज्य के नाश होने पर मीडिया साम्राज्य की नीव डाली गई थी। समीपस्थ केली शिन का स्तम्भ लेख भी मीडियन लिपि में है, जो इस बात का ज़बरदस्त प्रमाण है।

स्तम्भ की आकृति भी कम रहस्यमय नहीं है। थाले में धसाये हुये ये स्तम्भ दो महान प्राचीन धर्म लिङ्गम् और योनि के आदर्शों की सूचना देते है। इस विचार की पुष्टि इस बात से और भी हो जाती है कि स्तम्भ के पूर्व दिशा में ही अक्षर खोदे गये हैं। धार्मिक प्रचार के लिए ऐसे स्तम्भ को व्यौहार में लाना तो प्राचीन प्रथा ही थी। रोआन्दिज़ के मीर के जीवनकाल में उशनेई से दजला नदी तक का प्रदेश उसी के अधिकार में था जिसने रोअन्दिज़ प्रान्त में प्रचार पांच सौ वर्ष से अधिक कर लिया था। और तब से यह बराबर उसी के कब्ज़े में था। रोअन्दिज़ के निवासी रोअन्दिज़ हैं जिन्हें सोहरान कबीले का दास बनकर रहना पड़ता है। रोअन्दिज़ की राजधानी रोअन्दिज़ है जो बड़ी ज़ाब के दक्षिणी किनारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर आबाद है इसमें करीब २००० घर हैं। ज़ाब नदी यहां पर बहुत पतली और तेज़ है।

सिदक एक पहाड़ी प्रान्त है जो रोअन्दिज़ और उशनेई के बीच में स्थित है। इसमें करीब चालीस छोटे छोटे गांव हैं जो पहाड़ी की घाटिओं में फैले हैं उशनेई के पश्चिम में पर्वत के पार कनिरश नाम का प्रान्त है जो सिदक के उत्तरी सीमापर स्थित है। इसमें बरदस्त नाम के कबीले रहते हैं। इसी प्रान्त में बलिक नाम के कबीले रहते हैं जिनका खुर्दिस्तान के प्राचीन या मध्य कालीन इतिहास में कोई वर्णन नहीं है इनकी कुटुम्ब संख्या लगभग दस हज़ार हैं। इस प्रान्त की राजधानी रयात है। बलिकियों का कबीला बड़ा बहादुर है ये अच्छे घुड़सवार हैं।

रोअन्दिज़ के मीर के शासन च्युत हो जाने के पश्चात् से रोअन्दिज़ नाम के कबीले वान्कीज़ के साथ हस्तक्षेप करने लगे हैं परन्तु ये स्वतंत्र प्रकृति के हैं और किसी के भी शासन में रहना स्वीकार नहीं करते। रयात देखने की मेरी प्रबल आकांक्षा थी परन्तु गफूर खाँ के बिना वहाँ जाना आपत्तियों से खाली नहीं था।

खुर्दिस्तान का भूगोल और प्राचीन इतिहास अब भी स्पष्ट नहीं है खुर्दिस्तान में यात्रा करना आसान नहीं है। देश पहाड़ी है और निवासी जगंली हैं। यात्रा करने का सब से आसान तरीक़ा यह है कि पहिले एक सरहद्दी सरदार से मिलें फारसी अथवा तुर्की सरकार के अधीन होने के कारण ये सरदार उन योरोपियन यात्रियों की रक्षा करना स्वीकार करते हैं जिनको सरकार उनकी संरक्षता में सौंप देती है। एक सरहद्दी सरदार का दूसरे सरहद्दी सरदार से सम्बन्ध होने के कारण वह उस यात्री की संरक्षता का भार अपने पड़ोसी के ऊपर छोड़ देता है और ज़मानत के तौर पर उस कवीले के कुछ सरदारों को अपने पास रोकलेता है इसी प्रकार वह यात्री पूरे खुर्दिस्तान में सलामती से घूम सकता है।

आज मेरा मार्ग उस पहाड़ी के बीच होकर गुज़रा जो केलीशिन नाम दर्रे से अलग हुई थी। और दक्षिण-पूर्व की दिशा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८ मील चलने के बाद एक दर्रे की चोटी पर पहुँचा जहाँ से सोदज बालक की छोटी घाटी साफ दिखलाई पड़ती है वहां से सोदज़वालक नाम नगर का बड़ा अच्छा दृश्य दिखलाई पड़ता था। वह वहां से केवल २½ मील पर था मुहम्मद शाह से चलने के बाद तुरन्त ही मैं मिकरी नामी कबीले के देश में पहुँच गया जिसकी राजधानी सोदज वालक है। यह पहाड़ी की घाटी में स्थित है और एक वर्तमान उपनिवेश है जिसे आबाद हुये सौ वर्ष से ज़्यादा नहीं हुये। इसमें १०० घर यहूदी, कुछ इसाई और शेष मिकरी खुर्द हैं। जिस नदी के तट पर यह शहर वसा है उसके वायें किनारे पर गुलाब के फूलों के खेत और बगीचें हैं अंगूर की भी यहां खेती होती है। जङ्गली फल बहुतायत से पैदा होते हैं।

तवरेज़ से वग़दाद जाने वाले, कांरवा के जाने का एक बड़ा मांग सोदज बालक से होकर गुज़रता है अतएव यह काफ़ी कारवारी शहर है। मैं सोदज बालक में दो दिन तक ठहर गया। यहाँ मैंने एक नगर का अजीब वृतान्त सुना जो लहियान के ज़िले में स्थित है इसका नाम खोरंज है। मुझे यह बतलाया गया है कि यहाँ पर भी केलीशिन की तरह स्तम्भ है। स्थान के इतने समीप होने के कारण मैं अपनी आकांक्षा के वेग को न रोक सका।

सोदज बालक से दो मील चला मैं उन दो धाराओं के संगम पर पहुँचा जिससे सोदजबालक नदी बनी है। फिर वहां से दाहिनी ओर वाली धारा के किनारे किनारे धीरे धीरे ऊपर चढ़ता हुआ, ७ मील का रास्ता तै करके मैं उस पहाड़ी के नीचे पहुँच गया जो सारे सोदज़बोलक मैदान में फैली हुई है। नदी का मांग छोड़कर तीन मील ऊपर चढ़ने के बाद मै एक दर्रे की चोटी पर पहुँच गया। सोउजबोलक वहां से सीधा पूर्व की ओर है। लहियान का मैदान उत्तर-पश्चिम पड़ता है जो पहाड़ी के नीचे से लेकर खुर्दिस्तान पर्वत तक फैला हुआ है। यहां ५ मील की दूरी पर दर्रे के सिरे पर लगीबन नाम का ग्राम है। खोरज का प्रसिद्ध नगर यहां से ३ मील दहिनी तरफ़ स्थित है। वास्तव में यह एक लम्बी नीची पहाड़ी के सिवाय कुछ है ही नहीं। पहाड़ी का अन्तिम उभड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ भाग अनेकों प्रकार के पत्थर के टुकड़ों से परिपूर्ण है जो चारों ओर अस्त व्यस्त रूप से बिखरे हुये हैं। इन्ही नाना प्रकार के टुकड़ों को यहां के खुर्दों ने आदमी और जानवरों की शिलान्वित मूर्तियां मान लिया है। वास्तव में यहाँ कला से सम्बन्ध रखने वाली कोई वस्तु है ही नहीं। यहां से दो मील की दूरी पर केली सिफ़न नामक स्तम्भ है। जिसका हिन्दी अर्थ श्वेत स्तम्भ होगा। अवश्य यह स्तम्भ भी केलीशिन की श्रेणी के ही हैं परन्तु इस पर कोई शिलालेख इत्यादि नहीं है स्तम्भ की लम्बाई चौड़ाई और मोटाई क्रमशः १२, ३ और १½ फुट है। यह भी एक थाले में जड़ा हुआ है इसका रुख (पश्चिम-उत्तर-पश्चिम) है इसके ऊपर घोड़े के खुर की कुछ आकृतियां खुदी हुई हैं जिसको यहां के निवासियों ने लिपि मान लिया है।

इस स्तम्भ और लगविन के बीच में केलीसिफन नामक एक दूसरा और स्तम्भ है। लहियान का मैदान खुला हुआ और सुन्दर है। भूमि उपजाऊ और खेती के काम के लिए बहुत अच्छी है। मुख्य नदी छोटी जाब है जो लगबिन की घाटी से निकल कर लहियान के मैदान में बहती हुई असिरिया के मैदान में घुस जाती है।

शाम तक मैं लहियान लौट आया। वहाँ से पहिले वाले रास्ते से ही सोदज़ ालक लौटा यह क़बीला पूरे फ़ारस में सब से बहादुर कबीला है। इसमें लगभग १२०० कुटुम्ब हैं। और लगभग ४० मील लम्बे और ५० मील चौड़े प्रान्त में फैले हुये हैं। जो उत्तर दक्षिण मियान दाब मैदान से खुर्दिस्तान पर्वत तक और पूर्व पश्चिम जगातू नदी की घटी से लेकर पर्वत के पास तक फैला हुआ है। मिकरी पहिले खाना बदोश थे परन्तु जब इन्होने खाना बदोशी छोड़ दिया है। और गाँव में निश्चित रूप से बस गये हैं परन्तु अब भी गर्मियों में पुरानी आदत के अनुसार खेमा डाल कर गांव के बाहर पड़े रहते हैं। फ़ारस की सरकार ने इन पर बहुत कम टैक्स लगा रक्खा है वास्तव में यह राजनीतिक चाल है। क्योंकि सुन्नी या खुर्द के नाते धार्मिक और साम्प्रदायिक विभिन्नता होने के कारण फ़ारस की केन्द्रीय सरकार इनको अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास पात्र नहीं बना सकती है। मिकरियों ने भी जहां उनके सुन्नी विचारों ने बाधा नहीं डाली, राष्ट्रीय कार्यो में ४००० या ५००० तक घुड़सवार केन्द्रीय सरकार को दिये। इतने देने के बाद भी उनके देश में इतने काफ़ी आदमी बच रहते हैं कि खेती वग़ैरह का काम देखसकें या अगर दुश्मन इधर उधर से चढ़ाई भी करें तो अपनी रक्षा करसकें आज उपरोक्त पूरे प्रान्त का मालिक एक ही कुटुम्ब है. जो बाबा अमीर के नाम से प्रसिद्ध है। यह पुराने मिकरी सरदार अमीर पाशा की सन्तान हैं। मिकरी सरदार और वहां के किसानो का व्यवहार बहुत अच्छा है। खुर्द किसान अपने मालिकों के बिना उन्हें एक दो भेड़ बकरे आदि भेंट नहीं मिल सकते हैं और मालिक भी उनको पीट पीट कर एक एक पैसा वसूल करने की कोशिश करते हैं। परन्तु मिकरी सरदार और वहां के किसानो में मेल और विश्वास है।

सोउज़बालक से २५ मील सफ़र करके आज मैं मरहमताबाद पहुँचा जो मियान दाव मैदान में बसा हुआ है। यहां से एक मील के ही पश्चात् कुछ प्राचीन विचित्र स्थान हैं उसमें से एक शैतानाबाद नामी उजाड़ चट्टान है। इसका मुँह अनेक स्थानों पर रुखानी से चिकना किया गया है। और इसके बीच से होकर रास्ता खोदा गया है। यहां से कुछ ही सौ गज़ की दूरी पर एक दूसरी चट्टान है जिसको सादन्द कहते हैं। इस चट्टान के नीचे का भाग जिसका रुख नदी की ओर है बड़ी कारीगरी के साथ चिकना किया गया है और इसके ऊपरी त्रिभुजाकार धरातल का अधिकतर भाग सीढ़ियों से काट दिया गया है जिनसे चढ़ कर आदमी चोटी पर स्थित एक चबूतरे पर पहुँच सकता है। इसके चारों कोने पर चार छेद थे जो शायद खम्भों के लगाने के लिए बनाये गये थे इस चट्टान में भी एक रास्ता खोदा गया है। मैं अपने हाथ और पांव के बल इस रास्ते के ऊपर होकर कुछ दूर चलने के बाद एक छोटे भवन में पहुँचा। बहुत ध्यान देकर ढूढ़ने पर भी कहीं मुझे शिला लेख या मूर्ति वगैरह के झुंड मुझे कहीं भी नहीं मिली।

मेरा अनुमान है कि यह कोई प्राचीन अग्नि मन्दिर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसको देखने के बाद मैं नदी को पार करके इन्द्रकुश गांव में पहुँचा और यहां से एक पथ प्रदर्शक को साथ लेकर फखरख को प्रस्थान किया, जहां खुदों के कथनानुसार मैंने समझ लिया था कि कोई प्राचीन मकबरा है। यह इन्द्रकुश से केवल एक मील दूर है। अन्य स्थानों की भांति यहां भी एक ढालू चट्टान के सिरे पर खोदाई का काम किया गया है। पहिले बिल्ली की तरह मेरा पथ प्रदर्शक मिकरी उस चट्टान के सिरे पर चढ़ गया और बाद को रस्सी के सहारे मैं भी चढ़ गया। उसकी ऊँचाई केवल ३० फुट होगी। चट्टान काट कर निकाली हुई बाहरी कोठरी की चौड़ाई और गहराई केवल ८ पग थी और उसकी ऊँचाई चार गज़ थी। बाहरी कोठरी से एक पग उठी हुई एक गुफा थी। यह गुफा दो मज़बूत खम्भों पर बधी हुई थी ये खम्भे ठोस चट्टान से काट कर बनाये गये थे और सिरे तथा धरातल पर गोल थे। इसके भीतर दो पग की ऊँचाई पर एक छोटी और गुफा थी जो खम्भों पर सधी हुई थी। शपदों स्थानों का विस्तार इससे कम था। तीनों की गहराई लगभग २ फुट थी जो खम्भों पर सधी हुई थी इसके भीतरी सिरे पर शव के रखने के लिए तीन स्थान थे।

यह मकबरा अवश्य किसी प्राचीन सम्राट और उनके दो बालकों के लिए बनवाया गया होगा। परन्तु दीवारों पर किसी प्रकार कोई पत्थर की मूर्ति नहीं है। हाँ दीवारों पर जहां यात्री साधारणता अपना नाम लिख दिया करते हैं कुछ अक्षर अवश्य वर्तमान थे जो स्याही या उसी प्रकार के किसी और अन्य पदार्थ से लिखे गये थे। उन अक्षरों को देख कर मैंने उनके प्राचीन होने का ख्याल नहीं किया, परन्तु ध्यान से देखने पर यह जान कर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि ये अक्षर उस समय लिखे गये थे जब चट्टान की दीवारें बिल्कुल चिकनी थी। अक्षरों की पंक्तियों का क्रम बिलकुल ठीक है परन्तु जहां पर दीवार टूट या घिस गई हैं वहां यह क्रम भी नष्ट हो गया है। अगर ये अक्षर दीवार के टूटने या घिसने के बाद लिखे गये होते तो टूटे हुये भागों में भी इनका क्रम न टूटता। परन्तु बात ऐसी नहीं है जहां चट्टान की दीवार चिकनी है पंक्तियों का क्रम बिलकुल ठीक है। परन्तु जहां भी दीवार बीच से टूट गई है पंक्तियों का क्रम भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टूट गया है। इससे इन अक्षरों की प्राचीनता सिद्ध हो जाती है मेरा विश्वास है कि इस्लाम के प्रचार के पहिले के यात्रियों के ये अक्षर हैं। अक्षर प्राचीन पहलवी लिपि से बहुत कुछ मिलते हैं। इन भग्नावशेषों की सत्ता इस बात की घोषणा करती है कि कभी यहां पर कोई नगर विद्यमान था परन्तु मैं निश्चय पूर्वक उसके विषय में यहां कुछ भी बतलाने में असमर्थ हूँ।

खुर्दी जनश्रुति के अनुसार इस तराई में शारी बरन नाम का एक प्रसिद्ध नगर था परन्तु इस नगर का मैं कोई विशेष परिचय नहीं दे सकता।

फरवरख से मैं नीची पहाड़ियों को पार करता हुआ सोदज़बालक की घाटी को अपने बाँये छोड़ता हुआ पूर्व से उत्तर की ओर ८ मील चलने के पश्चात् फिर मरहमताबाद पहुँचा। मियानदाबमैदान के निवासी अधिकतर ख़ुर्द हैं। इनमें से कुछ तो गांवों में बस गये हैं परन्तु अधिकांश अब भी खानाबदोशों की भांति खेमे में रहते हैं। मैदान की भूमि उपजाऊ है। लैलन नदी से सिंचाई होती है और धान यहां की मुख्य उपज है।

मियान दाब से आज मैं प्रातःकाल लैलन के खंडहरों को देखने गया इनको कर्नल मानस्टीथ ने अपने नकशे में प्राचीन कंजका (एक) नगर का भग्नावशेष बतलाया है मरहतांबाद से आधे मील जगातू नदी के पार ६ मील की दूरी पर उत्तर पूर्व की ओर ये भग्नावशेष फैले हुये हैं। खंडहर कुल ¾ मील की लम्बाई और उसके आधी चौड़ाई में फैले हुये हैं। इसमें ४० से ५० फीट ऊँचे टीलों की पंक्तियां खड़ी हैं। निःसन्देह ये खंडहर प्राचीन नगर के सूचक हैं परन्तु इतना मैं निश्चय रूप से कह सकता हूँ वह प्राचीन नगर कंजका नहीं है।

ललन से दक्षिण पूर्व की दिशा से ७ मील चल कर मैंने जगातू नदी को पार किया यहाँ सैसेईकलह जाने वाले राज मार्ग को पार कर पुनः मिकरी प्रदेश में दाखिल हो गया। यहां से ७ मील की चढ़ाई लेकर मैं आमई बोलाकी नामक गांव में पहुँचा जो एक सुन्दर पहाड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घाटी में बसा है। इस प्रान्त को बेई कहते हैं यहाँ के निवासी आजकल भिकरी ही हैं।

आज अपने पथप्रदर्शक के विशेष आग्रह से मैंने मुहम्मदज़िक जाना ही निश्चित किया जो चरदौरी सरदार का निवास स्थान है। जगातू नदी के उस पार अज़री नाम का ज़िला है जिसकी राजधानी कसबर है।

जगातू नदी के घाटी में एक फरसख चलने के बाद मैं साईकलह से होकर गुज़रा जो कि एक कृत्रिम टीले पर आबाद है जिसकी चोटी पर एक मज़बूत किला बना हुआ है। य. आज कल अफसर नामी कबीले के अधिकार में था। सेईकलह के टीले को देखने से ही उसकी प्राचीनता में विश्वास हो जाता है। यह मुख्य मार्ग छोड़ दिया जो यहां बाईं ओर पहाड़ों में घुस जाता है। और नदी के किनारे किनारे थोड़ी दूर तक चलने के बाद जगातू नदी पर बँधे हुये किंज कोपरी नामक पुल के भग्नावशेष के पास पहुँचा। यह पुल मेरे लिए बड़ा उत्तम आविष्कार सिद्ध हुआ क्योंकि इसके कारण कंजका जाने वाले पश्चिमी मार्ग का मुझे पता लग गया।

मेरा विश्वास है कि यह सेसेनियन काल की बनी हुई है और इसी से होकर निनवा से कनजका को मार्ग जाता है पास ही पहाड़ी पर एक सेसेनियन दुर्ग के भग्नावशेष का भी मुझे पता लगा, परन्तु समय की कमी के कारण मैं वहां न जा सका। यहां से चल कर मेरा मार्ग अब चौड़ी पहाड़ियों में स्थित है। १० मील की कठिन चढ़ाई के बाद मैं पहाड़ियों के सब से ऊँचे भाग पर पहुँच सका जहां से मुहम्मद ज़िक और सेईकलह उत्तर-पश्चिम की दिशा में स्थित है। इस भाग की पहाड़ियां उजाड़ और ढालू हैं। वहां से एक ऊँचे पठार से धीरे धीरे नीचे आकर साईकलह में आने वाले आम रास्ते को पकड़ लिया। दक्षिण-पूर्व की ओर ६ मील चलने के बाद मैं हिसार नामक गांव में पहुँच गया।

पहले हिसार आबाद था परन्तु आजकल तो वह लगभग उजाड़ सा हो गया है हिसार पहुँच कर फिर मैं खुर्दों के मध्य में था। हिसार के समीप सेईकलह से आने वाला मार्ग दो भागों में विभाजित हो जाता है। एक तो दाहिनी ओर सहना को जाता है जो अरदलान की राजधानी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और दूसरा बाँई ओर हमदान को जाता है। हिसार में मैं विख्यात गुफाओं को देखने की लालसा से आया था। लेकिन पहाड़ी मार्ग की कठिनता के कारण आज ही जाकर वहां से लौटना नितान्त असम्भव था। अतएव हिसार से एक फरसख चलने के बाद हमदान वाले मार्ग का अवलम्बन करके पुनः एक फरसख जाने के बाद दाहिनी ओर एक पहाड़ी पगडंडी ग्रहण करके थुकली गांव पहुँचा। यह गांव हिसार से १२½ मील दूर है रास्ते में घुमाव के कारण हिसार के ठीक दिशा निश्चित करना कठिन था। परन्तु जहां तक मैं समझता हूं यहां से यह पूर्व—कुछ झुकते हुए दक्षिण की दिशा में बसा है। यहां कलहूर की आबादी है। दूसरी तारीख को कुछ कलहूर घुड़सवारो को साथ लेकर मैं करफ़तू के गुफाओं को देखने चला जो फ़ारस में एक सबसे विचित्र स्थान है। दक्षिण पश्चिम की ओर ७ मील चलने के बाद मैं सरुक नदी के किनारे पहुँचा जो चार धारों के संगम से बनी है। ये चार धारायें तख्ते सुलेनाम के जिले से निकलती हैं। सरुक नदी सफकन्द के पास जाकर जगातू से मिलजाती है सरुक नदी अज़रवैजान और खुर्दिस्तान की साधारणतया सीमा नहीं बनाती है। नदी से सात मील की दूरी पर उपरोक्त दिशा में ही करफतू के गुफा स्थित हैं।

आर० के०. पोर्टर ने इन गुफ़ाओं की ख़ुदाई का बड़ा ही विस्तृत और उत्तम वर्णन किया है और उसकी पुनरावृति की यहां कोई आवश्यकता नहीं है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि वे (मिथा) मित्र यानी सूर्य्य की उपासना के निमित्त ही निर्मित्त हुये थे। मिडियन राजधानी के पड़ोस में इसकी स्थिति इस बात और भी सिद्ध करती है। पोर्टर ने पर्वत के अगम्य भाग में एक जादू के फौव्वारा का वर्णन किया है जहां वह पहुँच न सका। सैकड़ों प्रयत्नों के बाद मैं वहां तक पहुँचने में समर्थ हो सका। वास्तव में यह फौव्वारा एक चश्मे के सिवा और कुछ भी नहीं है जो मीठे पानी से भरा हुआ है। पोर्टर ने गुफ़ा का वर्णन करते हुये अतिशयोक्ति का आश्रय ग्रहण किया है।

मैं प्रत्येक भीतरी मार्ग के अन्तिम सिरे तक चढ़ा परन्तु कोई भी फौव्वारे से ऊँचा नहीं था। वह वेदी जिसका पोर्टर ने वर्णन किया है एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खम्भे का थाला है। परन्तु उसका वर्णन मुख्यतः सुन्दर और बोधप्रद है। करफतू में ६ घंटे ठहरने के बाद वहां से हम लोग लौटे परन्तु कुछ जंगली जानवरों के पीछा करने के कारण जहां सवेरे मैंने सरूक नाली को पार किया था वहां से कुछ आगे निकल गया। देश में इस सारे भाग को चुल कहते हैं जिसका अर्थ उजाड़ है। करफतू की पहाड़ी अज़रबैज़ान और खुर्दस्तान की सीमा बनाती है। शाम को मैं तिकन तपह में ठहरा जो करफतू की ग़ुफाओं से १७ मील की दूरी पर बसा है इसका नामकरण उस टीले के नाम पर किया गया है जिस पर यह बसा है। सुनने में आया है कि इसके पड़ोस में कुछ प्राचीन ख़ुदाई के काम हैं।

आज मैं तिकन तपह से उत्तर-पूर्व जानेवाले मार्ग से १२ मील का मार्ग तय करके सरूक नदी से धुर दक्षिण वाली घाटी में पहुँच गया। इस स्थान में एक अच्छा सा गांव आबाद है जिसका नाम कारानिज़ है। इस जगह से थोड़ी दूर पर एक दर्शनीय स्थान है। इस स्थान पर नदी एक झील में विलीन होती सी दिखलाई पड़ती है। इसी झील में पानी पर तैरता हुआ एक द्वीप है। यह द्वीप साधारणतया एक ओर बंधा रहता है परन्तु लट्ठों से इसे झील के प्रत्येक भाग में ठेल सकते हैं। मेरे पथ-प्रदर्शक ने इस स्थान को देखने का मुझसे आग्रह किया परन्तु तख़्त सुलेमान को देखने की आकांक्षा इतनी प्रबल हो उठी थी कि मैंने वहां तक जाना अस्वीकार कर दिया। अस्तु, नदी से चलने पर मुझे एक उजाड़ पहाड़ी प्रान्त से होकर जाना पड़ा और ५ मील का मार्ग समाप्त करने के बाद पहाड़ी की चोटी पर पहुँचा जहां से तख़्त सुलेमान के भग्नावशेष दिखलाई पड़ते हैं।

वास्तव में तख़्त सुलेमान का प्रथम दृश्य बड़ा ही मनोहर है। इस प्रान्त का वह भाग जो कि पर्वत के निम्नतम भाग में फैला हुआ है ख़ूब खुला हुआ है। उर्मिया झील का किनारा छोड़ने के पश्चात् इतना खुला हुआ प्रान्त मैंने अभी नहीं देखा था। इस प्रान्त को वहां की भाषा में तख़्त सुलेमान का 'सहरा' यानी मैदान कहते हैं। इस पहाड़ी की चोटी पर तख़्त सुलेमान के भग्नावशेष हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर से देखने पर ये खंड़हर गिरी हुई दीवारों और मकानों की ढेरी से दिखलाई पड़ते हैं। जिनके बीच में चारों तरफ से घिरी हुई एक पाता की झील है। समीप से देखने पर दृष्य कुछ कम चित्ताकर्षक हो जाता है। परन्तु मुझे तो पग पग पर यह बोध हो रहा था कि मैं मिडिया के प्राचीन तम नगर में भ्रमण कर रहा हूँ।

पहाड़के दक्षिणी-पाश्चमी काने पर पहाड़ी की ऊँचाई १५० फुट और दीवार की ३० फीट है। इस प्रकार कुल ऊँचाई १८० होती है और इतनी ही ऊँचाई और तीनों तरफ़ है। पहाड़ी की चोटी पर एक दीवार बनी हुई है जिसका सब से अच्छा देश दक्षिण की तरफ़ और सब से टूटा हुआ भाग पश्चिम की तरफ़ है। दीवार का घेरा लगभग ३/४ मील है। दक्षिण-पूर्व की तरफ़ जहाँ फाटक के समीप दीवार अच्छी है, कारीगरी बड़ी सुन्दर दीख पड़ती है। दीवार की चौड़ाई १२ फुट है जिसका बाहिरी भाग १४ इंच मोटे और तराशे हुये पत्थर के टुकड़ों से बना है। इनके बीच बीच में पतले पत्थर से जड़े हुए है। भीतर का भाग वेतराशे हुए पत्थर के टुकड़ों से भर दिया गया है जो चूने से जोड़ दिये गये हैं। यह पत्थर के समान कड़ा हो गया है। दक्षिण-पूर्व का फाटक बड़ी अच्छी दशा में है इस पर एक मेहराब बनी हुई है जिसकी ऊचाई और चौड़ाई क्रमशः १२ और १० फुट है। यह भी बिना तराशे हुए पत्थरों से बना हुआ है। इसी फाटक से घुसने पर मैं शहर के भीतर पहुँचा। सब से पहिली चीज, जो आँखों को अपनी ओर खींचती है झील है यह झील पहाड़ी के बस से ऊँचे स्थान पर स्थित है। इसका घेरा कुल ३०० पग है। इसके पथरीले किनारे चूने के कर्बनेत से बने हैं जो पर्याप्त यात्रा में झील के पानी में मिला हुआ है। आरके पोर्टर महाशय का विश्वास है कि पूरी पहाड़ी इसी प्रकार पानी के लाये हुए चूने के कर्बनेत से बना है। झील की गहराई भी अभी हाल की नाप के अनुसार उतनी ही है जितनी पहाड़ी की कुल उँचाई है। पुराने लोगों का ख़्याल है कि झील का पानी उथला है। परन्तु अभी हाल की नाम के अनुसार इसकी कुल गहराई लगभग १५० फुट सावित हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों का यह कहना है कि झील से पानी चाहे जितना भी निकाल लिया जाय उसका पानी अपनी सतह से नहीं घटता और अगर पाना निकलने वा सब रास्ता बन्द कर दिया जात तो इससे भी पानी का सतह ऊँची नहीं उठती। फ़ारस के निवासी इसे जादू का काम समझते हैं। परन्तु मेरा ख़्याल है कि झील का निम्नतम भाग किसी दूसरी झील से मिला हुआ है और इसी कारण से पानी की सतह में घटबढ़ नहीं होती।।लोगों का कथन है कि आज के ५० वर्ष पहिले झील का पानी निकालने के लिए कोई रास्ता नहीं बनाया गया था। पहिले पहल शाहसेवेन्द नामी कबील ने सिंचाई के लिए दो रास्ते झील से निकाले थे।

परन्तु मेरा विचार है कि १५ वीं या १६ वीं शताब्दी, में जब शहर बिल्कुल नष्ट भ्रष्ट हो गया तो पश्चिम की ओर पानी निकालने का एक मार्ग अवश्य वर्तमान था। क्योंकि उस झील और पाहड़ों की चोटी के बीच पूरे भाग में बाढ़ के चिन्ह मैजूद हैं। आजकल पाना निकलने के दो र्माग वर्तमान हैं एक उत्तर-पूर्व के कोने में और एक फाटक के समीप। झील के निकटतम किनारे पर किसी प्रकार के भग्नाशेषों का कोई चिन्ह नहीं है। परन्तु थोड़ी दूटी पर हुई हुई इमारतों के कुछ भग्नावशेष हैं जो मुसलमानी काल के हैं। शायद यह वही महल है जिसे मुग़ल सम्राट अबकै खां ने बनवाया था। यहां एक शिलालेख है जिसको मैने नक़ल कर लिया। इसी के उत्तर और खंडहर है जिसको पोर्टर ने हम्माम बतलाया है लेकिन थोड़ी देर ध्यान पूर्वक देखने के बाद मुझे विश्वास हो गया कि यह अजरबैजान प्रान्त का प्रसिद्ध अग्नि-मन्दिर है जो इस्लाम के प्रचार के पहिले फारस का सब से पवित्र स्थान था।

कुछ देर तक की परीक्षा के बाद मैंने निश्चित किया कि इसका क्षेत्रफल ५५ वर्ग फुट रहा होगा मंदिर एक वर्गाकार भवन था जिसकी प्रत्येक भुजा ५५ फीट रहीं होगी। यह ईंटों से बना था जो एक मज़बूत गारा से जोड़ी गईं थीं।

बाहर के दीवारों की मुटाई १५ फुट है। इस दीवार के भितर एक और मकान बना था जिसके चारो ओर एक गोल रास्ता बना था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी मकान में पवित्र अग्नि के रखने का स्थान था। इसकी दीवारें १५ फुट मोटी हैं इसकी छत गोला कार हैं। इस घर की बनावट निसन्देह फारस-देश के अन्य स्थानों में मिलने वाले अन्य अग्निमन्दिरों के समान है। महराब के भीतरी हिस्से पर धूएं की एक काली तह जमाई गई है जो इस बात को सिद्ध करती है कि यह स्थान वास्ताव में एक प्राचीन अग्नि मदिर हैं। केन्द्रीय गृह अब भी अच्छी दशा में है किले की सीमा के भीतर एक और पुराना खंडहर है जो दक्षिण-पश्चिम के कोने में स्थित है इसको दीवार भी वैसेही वेतराशे पत्थरों से बनी हुई है जिनका रंग लाल है। गहरे लाल रंग के पत्थर किले को और किसी दिवाल में नहीं लगे हैं। इस मकान के प्रत्येक स्थान में किसी लाल पत्थर का प्रयोग हुआ है। शायद यह स्थान इसी के रहने के लिए बनवाया गया था।

साधारणत: लोगों का विचार है कि इस तख़्ते सुलेमान के निर्माता दाऊद के पुत्र प्रसिद्ध सुलेमान हैं। लोगों का विश्वास है कि वहां पर उनकी कचहरी लगतो थी और उन्होंने यहाँ शेवा की महरानी मिलने के लिए आमंत्रित किया था। तख़्ते सुलेमान के उत्तर-पूर्व की दिशा में स्थित पर्वत की चोटी पर एक दूसरा खंडहर दिखलाई पड़ता है जिसे तख्ते वलकिज़ कहते हैं। इस समय पर्वत वर्फ से आच्छादित था। यह भी वेतराशें पत्थरों से बना हुआ है। और शायद कोई प्राचीन किला है जहां से सारे निकटवर्ती प्रान्त और उरमिया झील तक दीखपड़ता है। यहा अन्य प्रसिद्ध स्थानों में "अज़दहा' जो वास्तव में पहाड़ों का एक उभाड़ा हुआ हिस्सा है लोगों का कहना है कि सुलेमान ने जादू से एक अजदहे को पत्थर में परिणत कर दिया था।

यहा सब से अधिक आश्चर्यजनक वस्तु जिन्दाने सुलेमान है। तख़्त से १½ मील की दूरी पर उत्तर पश्चिम की दिशा में यह एक त्रिभुजाकार गढ्ढा है जिसका घेरा लगभग ४० फुट है। यहां से जमीन की सतह ३७० फुट नीचे है।

वास्तव में तख्त सुलेमान की झील की तरह यह भी पहले कोई झील थी जो अब सूख गई है। तख्त सुलेमान की झील की भी यही दशा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सकती है। इस पहाड़ी के नीचे छोटे छोटे कई चश्मे हैं जिनके पानी में नाना प्रकार के द्रव खनिज पदार्थ भरे हैं।

तख़्त सुलेमान का प्रदेश बड़ा रमणीक प्रान्त है वसन्त ऋतु में तो यह साक्षात स्वर्ग ही हो जाता है जङ्गली फूलों की सुगंध से वायु सुगंधित हो उठती है पूरे फ़ारस देश में इतनी सुन्दर गरमी की ऋतु के लिए चरागाह कहीं भी नहीं है। और गरमी के दिन में खामरूइ का शाशक यहीं निवास करता है।

तख़्त को भली भांति देखने के बाद मैं जेन्ज़ोन चला आया। तख़्त से ५ मील उत्तर-पर्व चलने के बाद मैं अगोरा के जिले में था। प्रान्त बिलकुल पर्वताकीर्ण है। उभड़ी हुई पहाड़ियों के पेटे में गांव बसे हुये हैं जो बगीचों से घिरे हुये हैं इसमें कुल ५५ गाँव हैं और केन्द्रीय सरकार को ३००० पौं कर देते हैं और फौज़ के लिए २०० सैनिक देते हैं। अगोरा और पड़ोस के उरियादि नामी ज़िले में धातु की अनेक खाने हैं। इन खानों में अब भी काम होता है। रांगा यहाँ का मुख्य खनिज प्रदार्थ है।

जेन्ज़ोन में ३ दिन ठहरने के बाद तरून वाले मार्ग से मैंने गिलन के लिए प्रस्थान किया। जो प्रारम्भ ही से मेरा मंजिले मक़सूद था।

जेन्ज़ोन से उत्तर-पूर्व चलने के बाद मैं पहाड़ियों के नीचे पहुँच गया। जहां से १ फ़रसख की चढ़ाई के बाद पूर्व-उत्तर की दिशा से २ मील और दूर रोम नामी गांव बसा है जो काफ़ी बड़ा है और दो पहाड़ियों के बीच में बसा है।

रोम से उत्तर पूर्व ४ मील की चढ़ाई के बाद मैं पहाड़ो के सब से ऊँचे स्थान पर पहुँच गया। समुद्र-तट से इसकी ऊँचाई ७००० या ८१०० फुट होगी यहां पर हवा बड़ी ठंडी थी और कई फुट गहरी बरफ़ पड़ी थी यहां से 'गिलम' पर्वत बहुत छोटे दिखलाई पड़ते थे। यहां से मिडिया के पठार से उस मैदान की ऊँचाई आरम्भ होती है। जो कास्पियन सागर तक फैला हुआ है। तरूम दो जिलाओं में बिभाजित है। उत्तरी मैदान जो सेफीरून नदी के दायें किनारे पर स्थित है तरूमी खेलखाल के नाम से प्रसिद्ध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और निचला मैदान जो ज्यादा चौरस है, तरूमी-—पाइन बोला जाता है। नदी के बायें किनारे वाला हैं जिला पुस्तीकुह कहा जाता है। तरूमी खेलखाल में करीब १०० गांव हैं। आबोहवा गरम है और पानी खूब बरसता है और रूई की खेती खूब होती है। बगीचे खूब हैं फलों की पैदावार खूब होती है पहाड़ियों में नमक और फिटकरी की खाने हैं। मुख्य गांव बेनीसर्द है नदी को पार करके मैं पुस्तीकुह पहुँचा। ५ मील चलने के बाद बाईं ओर मुड़ने वाली एक पगडंडी पकड़ कर मैं एक मील के बाद कावकन्द नामी गांव में रह गया।

पुस्तीकुह में कुल २५ गांव हैं और यहां पानी भी कम बरसता है। दरम खास स्थान है जो उस सड़क पर बसा है जो आईं से सीधे गिलन को जाती है। पुस्तीकुह के निवासी अधिकर खुर्द हैं।

कौकन्द से १४ मील चलने के बाद मैं गिलवान पहुँचा। मार्ग सेफी रूद नदी के किनारे किनारे जाता है। गिलवान से ३ मील दूर दरवन्द नामी स्थान है जो तरूमी खेलखाल और तरूमी पाइन की सीमा बनाता है। यहां से ६० मील के बाद सदवार का दर्रा मिलता है जहां सेफीरूद शाहरूद से मिलकर गिलन प्रान्त को वह जाती है।

वंशीधर श्रीवास्तव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईरान की प्राचीन भाषा

अवस्ता या ज़न्दा—अवस्ता ईरान की प्राचीन भाषा है। पारसी लोगों के धर्म ग्रन्थों का निर्माण इसी भाषा में हुआ है। ज़रदश्त के अनुयायी पारसी लोगों की दृष्टि में ज़न्द—अवस्ता का वही स्थान है जो ऋग्वेद का भारतीय आर्यों की दृष्टि में हैं। सिकन्दर की विजय के पहले पारसी धर्म का सिक्का समस्त पश्चिमी एशिया में फैल गया था। दारा आदि फारस के पराक्रमी राजा इसी धर्म के मानने वाले थे। पर विजयी मुसलमानों ने इस धर्म पर भारी आघात किया। ज़रदश्त के अनुयाइयों को क़ुरान मानने के लिये बाध्य किया गया। बहुत से पारसी बचे हुए अपने प्यारे धर्म ग्रन्थों को लेकर भारतवर्ष भाग आये। कुछ फ़ारस में ही बने रहे। उन्होंने सभी तरह की मुसीबतें झेलीं पर उन्होंने अपने धर्म को न छोड़ा। इन वीर लोगों की संख्या सारे फ़ारस में केवल १० हज़ार है। भारत में बसे हुए पारसियों की संख्या लगभग १ लाख है।

इन एक लाख मनुष्यों ने एक बड़े प्राचीन धर्म और सभ्यता को अब तक जीवित रक्खा है। इस धर्म और सभ्यता के भीतर प्रवेश करने के लिये अवस्ता भाषा ही एकमात्र कुंजी है।

अवस्ता और संस्कृत में घनिष्ट सम्बन्ध है। गत शताब्दी के आरम्भ में डेनमार्क के प्रसिद्ध विद्वान रास्क महाशय ने संस्कृत और अवस्ता भाषाओं की समानता की ओर संसार का ध्यान आकर्षित किया रास्क महाशय कोपेन हेगन के पुस्तकालय में अवस्ता और पहलवी भाषाओं के कई अमूल्य हस्तालिखित ग्रन्थ ले आये। पर पन्द्रहवीं शताब्दी में अवस्ता का अनुवाद संस्कृत में हो चुका था। इस अनुवाद से अवस्ता के समझने में बड़ी सुगमता हो हुई। अवस्ता के उपलब्ध ग्रन्थ निम्न हैं:—

१ यस्न [यज्ञ] और गाथा। २ विस्परद। ३ यष्ट। ४ नायीश, गाह आदि, ५ वेन्दीदाद। ६ हादोख़्त नास्क आदि।

यस्न में यज्ञ और गाथा में प्रार्थना सम्बन्धी साहित्य है। यज्ञ में जिस प्रकार भारतवर्ष में सोमपान की प्रथा थी उसी प्रकार अवस्ता में होमरस पीने की चाल थी। गाथा पद्य में हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनका मुख्य उद्देश्य स्तुति है। विस्परद यज्ञसम्बन्धी और यष्ट स्तुति सम्बन्धी हैं। न्यायीश आदि में विशेष, अवसरों के लिये संक्षिप्त प्रार्थनाएँ हैं। वेन्दीदाद में [विदेव दैत] में सृष्टि, यम आदि विविध विषयों का समावेश है।

इन सब धर्म ग्रन्थों के संग्रह को अवस्ता कहते हैं। भाष्य सहित होने से उन्हें ज़न्द—अवस्ता भी कहते हैं। अवस्ता भाषा की लिपि कुछ कम पुरानी है और दाहिनी ओर से बाईं ओर को लिखी जाती है।

इस भाषा की वर्णमाला स्वर और व्यंजन संस्कृत के आधार पर है। शब्दों के उच्चारण में भी समानता है। पर पाली भाषा की तरह अवस्ता के अधिकांश शब्द संस्कृत के अपभ्रंश है। बहुत से शब्द ज्यों के त्यों लिये गये हैं।

नीचे दिये हुए १ शब्दों से दोनों भाषाओं की समानता का पता सहज ही में लग सकता है :—

अवस्ता	संस्कृत
हिचति	सिंचति = वहसींचता है
जीव्यम	जीव्यम
उत	उत
दारू	दारू = लकड़ी
भूमिम्	भूमिम्
नना	नाना = तरह तरह के
बाजिन	भाजन = बरतन
द्वारिम	द्वारम
उर्वरणम	उर्वराणाम
आयु	आयु
यज़ामैदे	यजामहे
अवज़ैति	आवहति
विस्पम्	विश्वम्
आज़ुति	आहुति
पतिम्	पतिम्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्ता	संस्कृत
हेना	सेना
नारी	नारी
दह्यु	दस्यु
अहुर	असुर
कुथ्र	कुत्र
येसु	येषु
अन्तर	अन्तर
यिम्	यम् (जिसको)
अज़म्	अहम्
अनरत्य	अनृत्य असत्य
मरत्यु	मृत्यु
रज़तम्	रजतम (चाँद)
ऐतत	एतत
वैद	वेद
गव:	गावः
औजो	ओजस
रौदन्ति	रोहन्ति
मथ्रै:	मन्त्रै:
इसवो	इषवः
द्व	द्वि
थ्रि	त्रि
चतुर	चतुर
पंच	पंच
सस	षष्ट
सप्त	सप्त
अष्ट	अष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्ता	संस्कृत
नव	नव
दस	दश
विशति	विंशति
त्रिसत	त्रिशत
चथ्वरसत	चत्वारिंशत
पंचसत	पंचशत
स्वस्ति	षष्टि
हप्तति	सप्तति
अस्तति	अशीति
नवति	नवति
सत	शत

शब्दों की यह समानता किसी अकस्मात कारण से नहीं है। अवस्ता का सारा व्याकरण संस्कृत के व्याकरण के ही ढाँचे पर ढला है। अवस्ता में सन्धि के नियम वहीं है जो संस्कृत में है जिस प्रकार संस्कृत में एक वचन, द्विवचन और बहुवचन हैं उसी प्रकार अवस्ता में है। पुलिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग भी दोनों में समान है। विभक्ति कारक, समास अव्यय संज्ञा सर्वनाम और क्रिया के नियम दोनों भाषाओं में एक हैं।

उच्चारण का कहीं कहीं अन्तर उसी प्रकार है जिस प्रकार विहार प्रान्त और जैपुर की हिन्दी में है। जिस प्रकार उपनिवेशों में बसे हुए अंग्रेज़ों की अंग्रेज़ी उनके देशवासियों की अंग्रेज़ी भाषा से भिन्न है उसी प्रकार का मामूली अन्तर अवस्ता और संस्कृत भाषाओं में हो गया। कई विद्वानों का अनुमान है कि भारतवर्ष के आजन्म कैदी ईरान (यमलोक) भेजे जाते थे। जिस तरह से अंग्रेज़ी कैदी आरम्भ में आस्ट्रेलिया को भेजे जाते थे पर जिस प्रकार अब आस्ट्रेलिया एक स्वतन्त्र अंग्रेजी उपनिवेश है इसी प्रकार ईरान देश भारतीय आर्यों का एक उपनिवेश बन गया था। दोनों में व्यापार आदि के घनिष्ट सम्बन्ध थे। इसी से आपत्ति के समय में पारसी लोगों ने भारतवर्ष में शरण ली थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस छोटे से लेख में इन सब महत्व पूर्ण बातों को विस्तार देना कठिन है। पर मुझे आशा है पुरातत्व पंडित लोग इस ओर अन्वेषण करके प्राचीन भारत के गौरव का सच्चा स्वरूप संसार के सामने रक्खेंगे।

अवस्ता के दो मन्त्र देकर यह लेख यहीं समाप्त किया जाता है।

१—अत प्रवस्या नु गुशोदुम नु स्रौत

अब मैं भाषण करूंगा आप ध्यान देकर सुनें।

यैच अस्नात् यैच दूरात इसथा

जो यहाँ दूर और समीप से आये हो

नु इम विस्प चिथ्र जी मज़द हो दम

इसलिये इन सब बातों को मन में स्पष्ट रख लो

नो इत दैवितिम दुस्सस्तिस् अहुम मरा स्यात्

न दुरात्माओं से अपना दूसरा जीवन नष्ट कराओं

अक वरणा दगवो हिज़वो आवरतो

[जो] झूठे वचनों से तुम्हारी वाणी को पापी बनाते हैं।

२—यिम हे सथ्रे औरवाहे

ऐश्वर्यवान यम के राज्य में

नो इत औतम आहा, ना इत गरमिम्

न यहाँ जाड़ा था, न गरमी।

नो इन ज़ौर्वा आहा नो इत मरथ्यु:

न जरा [बुढ़ापा] न मृत्यु थी।

नो इत अरस्को दैवो दातो,

न रोग, न दैत्यों के दुष्कर्म।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचदश भ्राचहो पे

पन्द्रह वर्ष की अवस्था वालों की तरह।

पिता पुम्रस्च रौदैस्व

पिता और पुत्र विचरते थे।

यवत स्योइत हापवो

यिम्रो विवस्वतो पुम्रो

सुन्दर चरवाहे की तरह विवस्वत के पुत्र यम ने राज्य किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धार्मिक उत्सव

फ़ारस वालों के कुछ उत्सव तो अजीब ढङ्ग के हैं और कुछ ऐसे हैं जिनसे बाहर वालों, और विशेषकर योरप वालों, को बड़ी चिढ़ लगती है। उनके वर्ष का पहला दिन नवरोज़ कहलाता है। इस दिन यहाँ के लोग आपस में मिलते जुलते हैं और छोटे लोग बड़ों के यहाँ इनाम माँगते फिरते हैं। इस महीने में नौकर दूनी तनख्वाह लेते हैं। इनाम माँगने का ढङ्ग भी बड़ा अच्छा है। इनाम माँगने वाले पहिले रङ्गी हुई मिठाइयाँ और छोटे मोटे शीशे के वर्तन वग़ैरह बड़ों को नज़र करते हैं। और उसके बदले में नगद इनाम चाहते हैं। बहुत से अङ्गरेज़ इन इनामों से अपना पिंड छुड़ाने के लिये यह कह दिया करते हैं कि हमको, भेंट लेने और इनाम देने का गवर्नमेंट से हुक्म नहीं हैं। इस उत्सव में गरीब और अमीर सब को कुछ न कुछ खरच करना पड़ता है; और नहीं तो संध्या के समय आतिशवाजी छुड़ाना तो सब के लिये ज़रूरी है ही।

लेकिन नवरोज़ में खुशी ही खुशी रहती है। इसलिये यह त्योहार किसी को खलता नहीं, पर रमज़ान जो कि व्रत और उपवास का महीना है बड़ा दुखदाई होता है। इस महीने में लोग सूर्यास्त और सूर्योदय के बीच ही खाना, पानी पीना और हुक्के का इस्तेमाल कर सकते हैं दिन में नहीं। रात भर लोग खाने पीने और इधर उधर के काम में लगे रहते हैं .इसलिये दिन में कोई काम वे ठीक तौर पर नहीं कर सकते। जब रोज़ा खोलने का वक्त आता है शहर में चारो ओर तोपें दाग दी जाती हैं जिससे ठीक वक्त का सब को पता चल जाता है। अगर कोई घर से दूर हुआ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक वक्त पर घर नहीं पहुँच सका तो वह रास्ते में ही रोज़ा खोला लेता है नहीं तो सब लोग घर पर इकट्ठे होकर रोज़ा खोलते हैं। महीना खतम होने पर जिस दिन चाँद दिखलाई पड़ता उस दिन की खुशी बयान नहीं की जा सकती। सारा देश प्रसन्नता से भर जाता हैं और तरह तरह की खुशियाँ मनाई जाती हैं।

सब से भयानक महीना मुहर्रम का होता है। फ़ारस के रहने वाले धर्म के नाम पर अपने को बलिदान करने वाले हसन और हुसेन की स्मृति में यह समवेदना-सूचक उत्सव मनाते हैं। जिस दिन जलूस उठता है हज़ारों मज़हब के दिवाने चाकू और जंजीरों से अपना सिर और छाती फोड़ डालते हैं। उनका सारा बदन लोहू से तर हो जाता है। सड़कों पर लोहू की धारा बहने लगती है।

प्रति वर्ष एक ऊँट अल्लाह के नाम पर बलिदान किया जाता है। इब्राहीम ने जो बलिदान किया था उसी की स्मृति में यह प्रथा अब तक प्रचलित है। इस बलिदान के लिये सफेद ऊँट बहुत खोज कर पाला जाता है। एक अफसर शाह की ओर से इस बलि के लिये नियुक्त किया जाता है जो इस ऊँट के साथ एक विशेष स्थान पर जाता है जहाँ सारे शहर के लोग इकट्ठा होते हैं। बलिदान हो जाने पर भीड़ के लोग ऊँट के गोश्त के लिये टूट पड़ते हैं। पहिले अफसर लोग अपने अपने हिस्से के लिये बड़ा शोर गुल मचते हैं। बहुत से लोग यहाँ गिरे हुए रक्त से अपने वस्त्र का कोई हिस्सा रङ्ग कर ही संतुष्ट हो जाते हैं। रमज़ान के अखीर में यह त्योहार मनाया जाता है। इसी अवसर पर लोग अपने अपने घरों में बकरे का बलिदान करते हैं।

"ए प्स इन्टू परशिया" के अधार पर।

रामलखन शुक्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा और अस्पताल

लड़के बचपन में बहुत दिन तक नौकरानियों की निग़रानी में रहते हैं जिनका प्रभाव बहुत बुरा पड़ता है, किन्तु अब कुछ दिनों से वे घर से दूर बोर्डिङ्ग हाउसों में रहने के लिये भेजे जाने लगे हैं। अमेरिकन मिशन के कुछ बोर्डिङ्ग स्कूल बड़ी सफलता से काम कर रहे हैं। वहाँ लड़के सब प्रबंध स्वयं करते हैं और अपनी ही कमाई से पढ़ते है। कभी कभी ये लड़के अपनी कमाई से कुछ धन बचा कर गरीबों की रक्षा भी करते हैं।

इन स्कूलों में अरबी और फ़ारसी की शिक्षा अनिवार्य रक्खी गई है। अन्य विषयों के अतिरिक्त लड़के अङ्गरेज़ी और फ्रेंच भाषा का भी अध्ययन करते हैं। इन मिशन स्कूलों में एक नियम यह भी है कि स्कूल चहारदीवारी के भीतर किसी धर्म पर किसी प्रकार का आक्षेप म किया जाय। स्कूलों में हर धर्म और हरेक जाति के लड़के पढ़ सकते हैं। पहिले तो मुसलमानी लड़कियाँ पढ़ने न आती थीं पर अब धीरे धीरे आने लगी है और उनकी संख्या बढ़ती जा रही है। इस समय तेहरान में सैकड़ों निसवाँ स्कूल हैं जो वहाँ की सरकार की देखरेख में शिक्षा का कार्य करते हैं। इन स्कूलों में मुसलमानी मज़हब की शिक्षा भी अनिवार्य है। मिशनस्कूलों में धार्मिक शिक्षा अनिवार्य नहीं रक्खों गई है।

सन् १९०६ ई० में ईरानी सरकार की अनुमति से जर्मनी ने एक स्कूल लड़कों के लिये खोला। यहाँ के अध्यापक कुछ ईरानी हैं और कुछ जर्मन। शिक्षा जर्मन स्कूलों के ढङ्ग पर होती है, पर यहाँ भी अरबी और फ़ारसी अनिवार्य विषय हैं।

सन् १९०६ ई० ही में रिचर्ड खाँ नामी एक फ्रांसीसी मुसलमान ने एक प्राइ-वेट स्कूल लड़कियी के लिये खोला। इस स्कूल में हर उम्र की लड़कियाँ तालीम पाती हैं। पहिले तो वे बुर्का ओढ़कर स्कूल जाया करती थीं। पर धीरे धीरे वे ढीठ हो चली है और चेहरा खोल कर पढ़ने जाती हैं। यह स्कूल अच्छी उन्नति कर रहा है और इससे देश की स्त्रियाँ सुशिक्षिता हो रही हैं।

तेहरान में एक टेक्निकल स्कूल भी है जिसमें डाक्टरी और इन्जीनियरी की शक्षा दी जाती है। डाक्टरी की तो कुछ उन्नति हो रही है पर इन्जीनियरी का काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभो कुछ ढीला सा है। डाक्टरी की पढ़ाई का कोर्स ५ वर्ष का है। डाक्टरी पढ़ने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। यद्यपि परीक्षा की कड़ाई से बहुत लोग निरुत्साहित होकर इसे छोड़ देते हैं। इस स्कूल में अस्पताल नहीं है जिससे विद्यार्थी को दूर दूर के अस्पतालों में जाने का कष्ट उठाना पड़ता है।

इस समय तेहरान में कई योरोपियन अस्पताल हैं, इन सब का काम अच्छा चल रहा है। सरकारी अस्पताल में सदा से जर्मनों की देख रेख में काम होता रहा है।

देश की स्वास्थ्य रक्षा के लिये एक समिति बनी है जिसके सदस्य सरकारी अफसरों के अतिरिक्त इन अस्पतालों के डाक्टर भी होते हैं। कुछ दिन से देशी हकीम भी इसमें सम्मिलित होने लगे हैं। यह समिति अच्छा काम कर रही है।

"पीप्ल इन्टू परशिया" के आधार पर
रामलखन शुक्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़हक और फ़रीदुन

प्राचीन कथाओं के अनुसार जमशेद फ़ारस के बादशाहों में सबसे बड़ा था। उसके विषय में शाहनामा में बहुत सी अद्भुत कहानियाँ कही गई हैं। उसने सात सौ साल तक शासन किया। उसकी शक्ति दिन प्रति दिन बढ़ती ही गई। यहाँ तक कि अपने शासन के अन्तिम वर्षों में वह अपने आपको देवता समझने लगा और अपनी मूर्तियां बनवा कर साम्राज्य के समस्त प्रान्तों में भेज देता ताकि उसकी प्रजा उनकी पूजा कर सके।

इस अपवित्र कार्य के कारण ईश्वर उससे बड़ा क्रुद्ध हुआ। उसकी प्रजा उसके विरुद्ध हो गई और इसको नष्ट करने के लिये एक पड़ोसी बादशाह को सहायता दी। ज़हक ने जमशेद से फ़ारस का सिंहासन छीन लिया और एक सहस्र वर्ष तक उस देश पर शासन किया।

फ़ारस वालों को शीघ्र ही अपने इस कार्य के लिये पश्चात्ताप करना पड़ा क्योंकि नवीन सम्राट बड़ा ही क्रूर और निर्दयी निकला।

कहते हैं कि उसने जब शैतान को अपने कंधों को चूम लेने की आज्ञा देदी तो उनमें से दो सांप उत्पन्न हुए जो उसे सदैव पीड़ा पहुँचाते थे। शैतान ने उससे कहा कि यदि ये सांप मनुष्य का मस्तिष्क खाने को पावें तो तुम्हें कष्ट देना बन्द कर दें। इस वास्ते वह प्रति जिन अपनी एक प्रजा को क़त्ल करवाता था जिससे सांपों के भोजन दिया जा सके। इतिहासकारों ने इस कथा का अर्थ समझाने की चेष्टा करते हुए लिखा है कि बादशाह के कंधों में सम्भवतः नहसूर के कारण पीड़ा होती थी जिसे दूर करने के लिये वह मानव—मस्तिष्क की पुलटिसें प्रयोग में लाता था। परंतु हम लोग नहीं कह सकते कि इसका यथार्थ तात्पर्य क्या है।

अन्त में ज़हक ने कावा नामी इस्फ़ान के एक लोहार के इकलौते पुत्र को पकड़वाया और उसे मार कर उन सांपों को भोजनदेने का निश्चय किया। कावा ने अपने एक मात्र पुत्र के छोड़ दिये जाने के लिये बादशाह से बड़ी प्रार्थना की किन्तु जब ज़हक ने उसकी एक न सुनो तो वह बागी हो गया और अपने चमड़े के वस्त्र को एक लट्ठे में बांध कर बागियों के आगे आगे उसे झंडे की भांति लेकर चला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फारस के प्राचीन राजवंश में उत्पन्न एक राजकुमार उस समय भी जीवित था। किन्तु वह एलबुर्ज़ के पहाड़ों में छिपा हुआ था; क्योंकि ज़हक को स्वप्न में आगाह किया गया था कि एक राजकुमार तुम्हारे विरुद्ध खड़ा होगा और तुम्हें सिंहासन से हटा देगा, और इस वास्ते ज़हक उसकी खूब तलाश कर रहा था। इस राजकुमार ने, जिसका नाम फ़रीदुन था, कावा का साथ दिया। प्रजा, ज़हक के अत्याचारों से तङ्ग आ गई थी, इसलिये वह फ़रीदुन की सेना में सम्मिलित हो गई।

युद्ध में फ़रीदून ने ज़हक के शिर में अपनी गदा से प्रहार किया और उसे मार डालने ही को था कि इतने में एक आवाज़ ने उसे आगाह किया कि अत्याचारी की अन्तिम घड़ी अभी नहीं आई। इस वास्ते वह ज़हक को तेहरान के पास दामावन्द पहाड़ के निकट ले गया और पहाड़ के नीचे एक अगाध गुफा में चमड़े के तस्मे से बांध दिया। लोगों का विश्वास है कि अन्यायी ज़हक अभी तक जीवित है और उसी प्रकार लटका हुआ अपने अकथनीय अत्याचारों का फल भोग रहा है।

इसके पश्चात फ़रीदुन फ़ारस के सिंहासन पर बिराजमान हुआ और पांच सौ वर्षों तक शासन किया, और उस लोहार का चमड़े का जब वह टुकड़ा फ़ारस के बादशाहों का झंडा बना। क्रमशः एक के बाद दूसरे बादशाह ने उसे जवाहिरात में खूब सजाया और कहते हैं, अन्तिम बार वह दमावन्द के युद्ध में ले जाया गया था जिसमें फ़ारस के प्राचीन राजवंश का अन्तिम बादशाह याज़्दागर्द, अरब के निवासियों द्वारा पराजित हुआ था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारस का नामकरण

ले० पं० बालगोविन्द शर्मा आयुर्वेदाध्यापक जो० म० गो० म०
विद्यालय वाराणसी

२—पारस यह देश हिन्दी साहित्य में अत्यन्त प्रसिद्ध है जिसको यवन भाषा में परशिया कहा करते हैं। इसको संस्कृत के विद्वान् पारसीक 'पारसीका घनापुजाः' इस अमर कोश के प्रमाण से कहा करते है। परन्तु 'पारसीक' शब्द को वाचस्पत्यभिमान कोश के निर्माता ने अरबी भाषा का शब्द स्वीकार किया है। इस दशा में अमरकोश की अशुद्धि प्रतीत होती है। संस्कृत भाषा में प्राकृत भाषा के शब्द अत्यन्त प्रविष्ट हो गये हैं इस लिये यह पारसीक शब्द अरबी भाषा का नहीं है किन्तु कापिशी का अपभ्रंश साम्प्रतिक हिन्दी भाषा का शब्द जानना चाहिये।

२—चाणक्य ने अर्थशास्त्र के सुराध्यक्ष प्रकरण में लिखा है कि 'द्राक्षा रसो मधु, तस्य स्वदेशो व्याख्यानं कापिशायनं हारहूरकम्' इति सो 'स्वदेशो व्याख्यानम्' इस वाक्य से कापिशायन और हारहूरक नाम का मद्य जिस देश में बनाया जाता है उस देश के नाम से अपने नाम को प्राप्त किया है यह निश्चित है। इसकी पुष्टि के लिये मैं भगवान पाणिनि के सूत्र को उद्धृत करता हूँ जो कि चाणक्य के साथ सर्वथा अनुकूल है। वह सूत्र यह है 'कापिश्याष्फक्' [४।२।९९] 'कापिश्यां जातादि कापिशायनं मधु द्राक्षा' इति यह वाक्य सिद्धान्त कौमुदी का है, कापिशी देश में जो उत्पन्न हो वह कापिशायन कहा जाता है जैसे अंगूर और अंगूर का मद्य।

३—यदि यहाँ विचार करते हैं कि कापिशी देश कौन सा है तो कापिशायन शब्द से द्राक्षा का मद्य और द्राक्षा ली जाती है। द्राक्षा का अर्थ है 'अंगूर' यह फल अत्यन्त प्रसिद्ध है। इसलिये कापिशी शब्द उस देश को ग्रहण कराता है जहाँ कि द्राक्षा [अंगूर] और द्राक्षा मद्य उत्पन्न होता है। अंगूर के लिये संस्कृत साहित्य में कपिला, कापिशायनी, और हारहूरा ये तीनि शब्द विशेष रूप से पाये जाते हैं। जैसे कि 'अन्या कपिलद्राक्षा, परिता च हारहूरा' इत्यादि राजनिघण्टु [वर्ग ११। श्लो० ७६। ७७ को] देखो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४—जिस प्रकार से कापिशायन शब्द से देश ज्ञान होता है उसी प्रकार माग-धी से [मगध] द्राविड़ी-पूला से [द्रविड़देश] इत्यादि ज्ञान होता है इसलिये विचार करना है कि कापिशायन शब्द से कौन सा देश गृहीत होता है। तथा कपिला और हारहूरा से कौन सा। 'कपिश, कपिल ये दोनों शब्द पाटलवर्ण के वाचक हैं। संस्कृतज्ञ विद्वानों ने लक्षण वृति का सहारा लेकर जैसे गन्धर्वदेश [अरब] के बसरा का नाम करण तथा काश्यपा [अफ्रिका] का सहारा डिज़र्ट का नाम करण किया है [इसका वर्णन अफ्रीका के लेख में होगा] पाटलवर्ण विशिष्ट-विशिष्ट पुरुष के लिये किया है। जैसे कि [योरोपियनों की 'गोरा' यह यह संज्ञा वर्ण प्रयुक्त होती है उसी प्रकार कपिश-कपिल शब्द भी पाटलवर्ण विशिष्ट पुरुषों के लिये प्रयुक्त हुआ। हारहूरा का वर्णन रूस देश के वर्णन के साथ होगा। संस्कृत के शब्द अपभ्रंश रूप में देशान्तरों में पाये जाते हैं इसलिये इनका अपभ्रंश देखिये।

५—अपभ्रंश बनाने का प्रधान कोई नियम नहीं तथापि प्राकृत व्याकरण में बहुत से नियम हैं। 'व्यत्ययश्च' इस प्राकृत सूत्र से पदव्यत्यय वर्णव्यत्यय दोनों किया जाता है जैसे कि संस्कृत का 'कपाट' शब्द फाटक, फटका, केवाड़, केवाड़ी इत्यादि रूप धारण करता है उसी प्रकार 'कापिशी-पिशीका-पाशीका-पारशीका-पारशीया-परशिया' यह रूप धारण करता है। ऐसा अपभ्रंश करने में मुझे चाणक्य और पाणिनि के साथ साथ कैशपियन सी जो कापिशायन का अपभ्रंश प्रतीत होता है, सहायक होता है 'कैश-पियन सी' का अर्थ यही प्रतीत होता है कि 'कापिशी देश का समुद्र' यह शब्द भूगोल में प्रसिद्ध है चाणक्य की टिप्पणी करते हुये एक महाशय लिखते हैं कि:—

कापिशायन और हारहूरक ये विदेशी मद्य के नाम हैं जो कदाचित् पर्शिया और ग्रीस से आते हैं।

६—यहाँ पर्शिया का कहना ठीक है पर ग्रीस की जगह रूस होना चाहिये। 'पारसी कांस्ततो जेतुम्, इस कालिदास के 'पारसीक' शब्द को अरबी का शब्द बतलाते हुये वाचस्पत्यकार ने अशुद्ध ठहराया है किन्तु 'कापिशीका' का अपभ्रंश पारसीका है यह शब्द शास्त्रों में जहाँ पाया जाता है प्राकृत का है।

७—'नन्दलाल डे' ने अपने कोश में लिखा है कि 'काबुल में कपिशा नदी के किनारे कपिशा नाम की नगरी है इसी को पाणिनि कापिशी कहते हैं सो कहना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्यन्त अशुद्ध है क्योंकि टाबन्त कापिशा यदि पाणिनी को स्वीकृत होता तो 'कपिशायाः ष्फक्' ऐसा सूत्र होता पर डीबन्त कापिशी शब्द से 'कापिश्याः ष्फक्' ऐसा सूत्र होने से काबुल की कपिशा दूसरी और वनायु की कापिशी दूसरी समझनी चाहिये इस प्रकार नन्दलाल डे के अनुयायी पाण्ड्यकवाट [ट्रावंकोर] के गणपति शास्त्री भी खण्डित हो जाते हैं ।

यद्यपि कापिशी-पर्शिया इस अर्थ में ईरिण वा इरण शब्द जिसका अर्थ लोग ईरान करते हैं संस्कृत साहित्य में देश विशेष के लिये नहीं पाया जाता तथापि 'न ह्यमूला प्रसिद्धिः' इस न्याय से पर्शिया के लिये ईरान का प्रयोग बहुत काल से हो रहा है सो अच्छा है, पर उससे भी अच्छा कापिशी का प्रयोग है जो शास्त्रों में उपलब्ध होता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फारस और महायुद्ध १९१४-१६

कोई भी देश, संसार व्यापी महा समर से होने वाली हानि से नहीं बचा पर उससे आ पड़ने वाले भार उठाने में फारस बहुत ही कम तयार था। इसी से किसी देश ने अपनी सीमा तथा प्रजा की रक्षा करने में फारस की तरह असमर्थता नहीं दिखाई। साधारण दृष्टि से देखने वालों को तो यह एक सम्भव सी बात जान पड़ती थी कि फ़ारस जैसा दूर स्थित देश भी इस महान् युद्ध की चपेट में आ पड़ेगा। फ़ारस के कई सूबों पर हथियार बन्द आदमियों के धावे हुये। जिससे विशेष हानि हुई क्योंकि वहाँ की सरकार अपनी तटस्थता की घोषणा को क़ायम न रख सकी। उत्तरी-पश्चिमी फ़ारस के अज़रवैजान प्रान्त को ही लीजिये। यहाँ पर लड़ाई से पहले ही तुर्क और रूसी अपनी अपनी रक्षा के निमित्त फ़ारस के ही मत्थे अपनी माफ़िक़ जगहों में फौज रखते थे। जो फौज़ इस सूबे को पार करके धावा करती है वह सिर्फ़ उस पर्वत श्रेणी को पार करने से छुटकारा ही नहीं पाती बल्कि अपने दुश्मन की फ़ौज को घेर लेने में सफल होती है। इसीलिये लड़ाई छिड़ जाने पर जब रूसी सेना ने अज़रवैजान के उत्तरी भाग को पार करके तुर्कों को वान नदी के किनारे तक पीछे खदेड़ दिया तो किसी को आश्चर्य नहीं हुआ। खुर्द लोग अपने मुसलमान भाइयों की तरफ़ मिल गये। लेकिन तब्रेज़ छीन लेने के बाद रूसी फ़ौज ने उनको हरा दिया।

जिस स्थान से रूसी सेना कार्स नगर की रक्षा कर रही थी उस पर तुर्कों ज़ोरों से धावा मारा। इस धावे के कारण दोनों पक्ष की सेनाओं को अज़रवैजान प्रान्त में घुसने के लिये विवश होना पड़ा। उरमियाँ नामी मुख्य नागर तथा उसके आस-पास की भूमि रूसियों के हाथ में आ गई और जब तक कि रूसियों का पैर पूरी तरह से १९१७ ई० में नहीं उखड़ा इन्हीं के हाथ में बराबर रही।

अब हम लोगों को फ़ारस के दक्षिणी-पश्चिमी भाग को ओर दृष्टि डालनी चाहिये। महा युद्ध के छिड़ते ही यह भाग रण-क्षेत्र बन गया। भारतीय सरकार ने पहले ही के रंग ढंग से यह भाँप लिया था कि समर छिड़ जाने की सम्भावना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिये उसने एक छोटी सी फौज़ बहरिन टापू में पहले ही से भेज दी थी और एक अँग्रेज़ी जङ्गी जहाज़ शत्तले-अरब में गश्त लगाने लगा था। अँग्रेज़ों को अपने बहुमूल्य और आसानी से बर्बाद होने वाले [ऐङ्गलों पर्शियन आयल कम्पनी के] मट्टी के तेल के कारखाने और उसकी मशीन इत्यादि के विषय में विशेष चिन्ता थी। यह कम्पनी आबदान टापू पर थी। यह टापू मोहमरा स्थान से चन्द मील नीचे है। मोहमरा स्थान पर कारूं नदी शत में गिरती है। अंग्रेज़ों की फुर्ती बाज़ी से बसरा पर उनका अधिकार हो गया। इसलिये आयल कम्पनी के कारख़ाने और उसकी मशीन इत्यादि की रक्षा की चिन्ता तो दूर हो गई। किन्तु बख्तियारी पहाड़ के नीचे स्थित मैदाने नुफ़तुम के मिट्टी के तेल के कुंओं और तेल की १५० मील लम्बी पाइप-लाइन की चिन्ता भी अंग्रेज़ों के सर पर सवार थी क्योंकि दुश्मन की आँख इन पर भी लगी थी। जर्मनों के बहकाने से वहाँ की हठ धर्म्मी जातियो ने पाइप-लाइन में दो तीन जगह छेद कर दिया था। तेल के कुंओं और पाइप-लाइन की रक्षा के लिये एक फ़ौज अहवाज़ में में भेज दी गई। इस फ़ौज़ ने एक भारी तुर्की फ़ौज का मुक़ाबिला किया इतने में बाहरवीं डिवीज़न ने इस तुर्की फ़ौज को एक दम फ़ारस से निकाल दिया अँग्रेज़ों ने अपनी स्थिति अहवाज़ में क़ायम रक्खी, पाइप लाइन की मरम्मत कर दी गई और बहुमूल्य मिट्टी का तेल पश्चिम में भूमध्य सागर के जङ्गी बेड़े के लिये भेजा गया।

पश्चिमोत्तर में रूसी और दक्षिण-पूर्व में अंग्रेज़ थे। इन दोनों के दर्मियान होकर फ़ारस देश में बग़दाद शहर से एक सदर रास्ता दो समानान्तर पहाड़ियों को तै करता हुआ पठार तक जाता है। इस रास्ते का उपयोग दुश्मन लोग पूर्ण स्वतन्त्रता से कर सक्ते थे। सन् १९१५ के अप्रैल में तुर्कों की एक छोटी फ़ौज अंग्रेज़ों और रूसी कान्सलों को पराजित करती हुई करमानशाह की तरफ़ आगे को बढ़ी। फ़ारस का भीतरी भाग जर्मनों और आस्ट्रियनों से पददलित हो गया। ये जर्मन और आस्ट्रियन लोग हथियारों से सुसज्जित थे और इन लोगों के पास सन् १८७२ के अंग्रेज़ी सावेरेन (मुहरें) भी थीं जिनको इन लोगों ने प्रत्यक्ष रूप से प्रसिद्ध स्पेन्डो टावर से लिया था ये लोग रंगरूटों को भरती करते हुए दक्षिण और मध्य फ़ारस को तै करके अंग्रेज़ और रूसी वाशिन्दों को वहाँ से भगाते जाते थे। ख़ून करने में भी इन लोगों को ज़रा भी हिचकिचाहट न थी। एक पत्र में, एक जर्मन अफ़सर अपने एक आक्रमण के बारे में जो कि उसने इस्फहान में एक घायल अंग्रेज़ी कान्सल-जनरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर किया था बड़ी डींग मारी थी। इस कान्सल-जनरल से भी भाग्य हीन एक रूसी कान्सल था। वह जान से मार डाला गया। प्रचार का काम सर्वत्र ज़ोरों से शुरू हुआ और फ़ारस के भोले भाले आदमियों को विश्वास कराया गया कि सब जर्मन लोगों ने इस्लाम धर्म को ग्रहण कर लिया और उनका बादशाह कैसर मक्के की यात्रा कर रहा है जो हाजी विलयम के नाम से पुकारा जाने लगा सबसे अधिक प्रसिद्ध कर्मचारी बसमस था। जर्मनों के नाम से उसने बूशायर बन्दर के पीछे के देश में एक बहुत मज़बूत पार्टी तैयार की जिसकी वजह से अंग्रेज़ लोग उस बन्दर पर अपनी फ़ौज़ बढ़ाने के लिये मजबूर हुये। उसने शीराज़ के अंग्रेज़ी वाशिन्दों को पकड़ लेने और उनको बूशायर के पास कैद रखने का भी प्रबन्ध किया शीराज़ का अंग्रेज़ी कान्सल जान से मार डाला गया। सन् १६१५ के आखिर तक कोई भी अंग्रेज़ी अफ़सर या सौदागर फ़ारस के मध्य और दक्षिण देश में न बच रहा। ये लोग केवल बन्दर गाहों पर ही जमे हुये थे।

उत्तर की हालत सन्तोष जनक थी। रूसी फ़ौज़ जाड़े के मौसिम में मध्य वर्ती प्रदेश की शक्तियों का मुक़ाबिल' करने की गरज़ से अनज़ेली बन्दर में उतरी। यह रूसी फ़ौज़ जब तेहरान शहर की तरफ़ बढ़ी तो दुश्मन के मंत्री लोग राजधानो को छोड़कर पीछे हट गये। ये लोग उम्मेद करते थे कि फ़ारस को भी तुर्की की तरह इस युद्ध में अपनी तरफ़ कर लेंगे। १५वीं नवम्बर को ज़ोर अज़माइश हुई। दुश्मन के मंत्रियों ने बादशाह से यह कहा कि रूसी फ़ौज तेहरान शहर को उड़ा देगी और आपको मारेगी नहीं, तो पकड़ अवश्य लेगी। इसलिये वे उन्हें एक गांव को जो ६ मील पर था भाग जाने की सलाह दी। वहीं पर ये लोग अपनी एक छोटी फ़ौज इकट्ठी किये थे। केबिनट या मन्त्री मंडल के खास सदस्य इनके अधीन थे इसलिये इनको उम्मेद थी कि बादशाह उन लोगों का कहना मान जायेंगे। लेकिन रूसी और अंग्रेज़ी मंत्री ने बादशाह को समझाया कि अगर आप निष्पक्षता छोड़ कर अपने को मध्य प्रदेशीय शक्तियों के क़ब्जे में देंगे तो गद्दी से हाथ धोने का ख़तरा है और यह विश्वास दिलाया की रूसी तेहरान पर धावा न करेंगे। आख़िर में बादशाह असली बात समझ गये और उन्होंने राजधानी में ही रहने का निश्चय किया। बाद को रूसी फ़ौज ने दुश्मनों की फ़ौज को जो इधर उधर धावा कर रही थी भगा दिया और साल के आख़िर तक कासक लोगों ने कशान को कब्ज़े में कर लिया। इस्फहान को भी जिससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत ख़तरा और जो नई बनी हुई जर्मन बख्तियारी कौम के कब्जे में था, कब्ज़ा कर लिया।

पश्चिमी फ़ारस के इस ऐतिहासिक रास्ते के ऊपर नीचे सन् १९१६ में छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी लड़ाइयाँ हुईं। पहले तो तुर्कों की ही विजय हुई ये लोग टेसिफन की लड़ाई के बाद ही जब अंग्रेज़ कुतल अमारा को हट गये फ़ारस में हमदान के आस पास तक चले गये थे।

रूसी अर्ज़रूम की लड़ाई की सफलता के कारण उत्साहित होकर आगे बढ़े और दुश्मनों को पठार से पीछे हटा दिया। कूट की हार से युद्ध का पहलू ही बदल गया। करीब १८००० तुर्क ४५ मशीनगन सहित स्वतन्त्र हो गये जिससे फ़ारस पर धावा करने में उनको सहायता हो गई। उन लोगों ने एक छोटी सी रूसी फ़ौज़ को हरा कर करमानशाह को और फिर बाद हमदान को छीन लिया रूसी लोग उत्तर में दुश्मनों की उस फ़ौज के मुक़ाबिले में जो तेहरान पर धावा कर रही थी जमे हुए थे। यह हालत सितम्बर महीने की है और साल के आख़िर तक कोई खास बात नहीं हुई।

दक्षिण में अंग्रेज़ लोग पिछली साल की बिगड़ी हुई हालत सुधार रहे थे। सन् १९१६ ई० में मैं तीन अफ़सरों के साथ दक्षिण-फ़ारस-राइफिल नाम की एक फ़ौज तैयार करने के लिये बन्दर अब्बास भेजा गया। वहाँ पर अंग्रेज़ों की शाख़ बिगड़ चुकी थी और कूट शहर की हार की वजह से शाख और भी ख़राब हो गई थी लेकिन फिर हालत दिनों दिन सुधरती गई।

अंग्रेज़ी बस्ती की गिरफ़्तारी की हलचल के जमाने में कबामुल मुल्क जो शीराज़ शहर के खान्दानी मेयर थे और उस प्रान्त की अरबी जाति के मुखिया थे वहाँ से भगा दिये गये थे। कबामुल मुल्क से दुश्मनों ने जेन्डर मेरी की मदद से शीराज़ को अपने कब्ज़े में कर लिया। ये जेन्डर मेरी ने जो स्वीडेन देश के अफ़सर थे जर्मनों से मिलकर उनकी बड़ी मदद की। इसके बाद कवाम सर परसी साइक्स से मिले जो वहाँ के अंग्रेज़ी रेजिडेन्ट थे उन्होंने उनको कुछ तुर्की बन्दूक़ें दीं और मैंने भी उनकी बन्दूक़ और बारूद से मदद की। यह छोटी सी मदद अंग्रेज़ सिपाहियों सहित इतनी ताक़त वर साबित हुई की कबाम के दुश्मन काबू में आ गये। बदक़िस्मती से कबाम घोड़े से गिर कर मर गये लेकिन उनके लड़के ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीराज में फ़ारस सरकार का प्रभुत्व जमा लिया। दो महीने तक मैं बन्दर अब्बास में रहा इस अर्से में रंगरूटों की भरती से एक काफ़ी बड़ी फ़ौज़ की तैयारी हो गई। मैं ५०० बन्दूक़ और बलूचियों की एक पैदल टुकड़ी लेकर अन्दर करमान की तरफ़ जो १८० मील पर था वहाँ की हालत सुधारने के लिये पहुँचा।

दुश्मनों की मध्य प्रदेशीय शक्तियाँ जौ करमान और बम में थी डर कर पीछे फार्स प्रान्त में हट गईं जहाँ कि कवाम ने उनको गिरफ़्तार कर लिया। मेरी फौज करमान पहुँच गई वहाँ के सब लोग खुशी से मिले क्योंकि मैं यहीं बहुत दिनों तक कान्सल था। फौज पहुँचने पर तार और बंक विभाग के अफसरों ने अपना अपना काम शुरू कर दिया। दुश्मनों के भाग जाने से जिनकी वजह से जान और माल का खतरा था करमान में फिर से अमन कायम हो गया। दक्षिण-फारस राइफिल के लिये भरती जारी हो गई। वहाँ के जमींदारों की सराहनीय मदद से जो इस सुधार को काफी तौर से समझते थे धीरे धीरे करमान ब्रिगेड तैयार हो गई।

छः हफ़्ते ठहरने के बाद मेरी फौज अगस्त महीने में यज़द की तरफ़ बढ़ी यह शहर २२० मील दूर था पहिले सीधे शीराज को जाने का ख्याल था क्योंकि यही दक्षिण फारस में लड़ाई का केन्द्र था। किन्तु उधर तुर्क इस्फहान की तरफ़ आगे बढ़ रहे थे। तुर्कों की एक फौज मशीन गन के साथ इस्फहान की तरफ़ बढ़ो जहाँ सिफ ६०० रूसी कासक़ सिपाही थे। उनकी मदद करने के लिये मुझसे जोरों की अपील की गई और मुझे मदद करने का हुक्म मिला। मैंने जल्दी जल्दी १६० मील के रास्ते को तै किया क्योंकि रास्ते में मुझे खतरनाक खबरें मिलती रहीं। सचमुच में तुर्क लोग इस्फ़हान से ८० मील दूर एक गांव तक पहुँच चुके थे लेकिन वहाँ से आगे न बढ़ सके। उन्हें मेरी फौज की ताकत का अन्दाज़ न लगा वे समझे की मेरी फौज उनके लिये एक बहुत बड़ा खतरा साबित होगी। इस्फहान के लोग, अरमिनियन वाशिन्दों सहित हम लोगों से बहुत खुशी से मिले। क्योंकि तुर्कों का इस्फ़हान पर क़ब्ज़ा होने पर अरमिनियन आमेनियन वाशिंदे भाग जाते नहीं तो उनकी जान खतरे में पड़ती। अङ्गरेज़ी और रूसी बाशिन्दे भी जो हाल ही में लौटे थे एक बार फिर मारे मारे फिरते थे। इस्फ़हान में ठहरने के जमाने में हीं वह तिजारती रास्ता जो वहाँ से अह्वाज़ को जाता है और जिसे डाकुओं ने बन्द कर दिया था खुल गया। इन डाकुओं में से बहुत से मारे गये। मेरी फौज के लिये नये कपड़े यहाँ बनवाये गये क्योंकि फौज के सब कपड़े चिथड़े हो गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। उन दिनों कोई ज़रिया आमद दरफ़्त का हम लोगों के पास न था हर बात के लिये हम लोग उसी देश के मुहताज थे। उसी जाड़े के अक्टूबर महीने में हम लोग शीराज को जो ३२७ मील दूर था चल दिये। कारवानों का आना जाना इस रास्ते पर बन्द हो गया था जिससे इस पर के गांवों की तिजारत बिल्कुल बन्द थी। हम लोग हर जगह ख़ानावदोशो के हमलों का हाल सुनते थे। ये ख़ानावदोश बदइन्तिज़ामी का फायदा उठा कर खूब लूट मार करते थे। इन दिनों ये लोग इस ऊँचे ठंढे मुल्क को छोड़ कर नीचे के गरम मुल्कों को चले गये थे। इस वजह से कुछ दिनों के लिये ये हमले बन्द थे। हम लोगों की फौज नवम्बर महीने में फारस देश के अन्दर १,००० मील का फासला तै करके आखिरकार शीराज में पहुँची।

फार्स—प्रान्त में पहुँचने पर मैंने उन स्थानों का निरीक्षण किया जो स्वीडिश जेन्डरमेरी के क़ब्जे में थे। ये लोग भूखों मर रहे थे, महीनों की तनख्वाहें इन लोगों को नहीं मिली थी जिससे ये लोग बिल्कुल अशान्ति की हालत में। थे। इरानी अफसरों की हालत मुझे उतनी खराब नहीं मालूम होती थी लेकिन इस जेन्डर मेरी के जर्मनों की तरफ से काम करने की वजह से हालत मुश्किल थी।

फारस की सरकार की तरफ से मुझे इन २००० आदमियों को अपने हाथ में ले लेने का कोई हुक्म न था तो भी मेरे ऐसा करने से उन्हें कोई उजर नथा क्योंकि फारस सरकार न तो इन्हें तनख्वाह दे सकती थी और न इन्हें शान्ति से रख ही सकतीथी, कब्जे में रखने के लिये काफी अफसर न थे लेकिन अगर इन्हें मैं अपने हाथ में न लेता तो ये तितर बितर होकर डाकुओं के साथ शामिल होकर शान्त प्रजा के ऊपर हमले करते। जाँच करने पर इस बात की काफी मिसालें मिलीं। फार्स प्रान्त में २० वर्ष के अन्दर ऊँटों और भेड़ों की तदाद चौथाई हो गई थी और आबादी भी करीब १५, या ०० फी सदी कम हो गई थी। कभी कभी सख्ती भी बुद्धिमानी साबित होती है। मैंने इरानी अफसरों को बुलाया और उन्हें समझाया कि मैं फारस की सरकार के लिये यह दक्षिण-फारस राइफिल नाम की फौज तैयार कर रहा हूँ। और जेन्डरमेरी को अपने हाथ में लेने का निश्चय कर रहा हूँ। बहुत से लोग मेरे इस इन्तिज़ाम से खुश तो जरूर थे क्योंकि वे समझते थे कि जेन्डरमेरी को राशन, कपड़ा देना और उनके साथ माफिक़ सलूक करना ही अच्छा है लेकिन थोड़े से लोग इसके बड़े ख़िलाफ़ थे। अभाग्य वश इन लोगों में बहुत से कारबारी अफ़सर भी थे। सन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९१७ ई० के बसन्त ऋतु में मेरे पास बहुत से अफसर पहुँच गये। अङ्गरेजी अफसरों ने जिस तरीके के काम करना शुरू किया वह काबिल तारीफ था। उनमें हर एक समझता था कि पूरी जिम्मेदारी, मेरी ही है।

हम लोगों के सामने बहुत से सवालों में एक सवाल शीराज में कैद हुये जर्मन और आस्ट्रियन अफसरों का आया। इन लोगों की इरानियों और हम लोगों के दुश्मनों से मिल जाने के उम्मेद थी। फारस के अफसर लोग भी इनसे घबड़ाते थे। आखिरकार कुछ सिपाहियों के साथ इन लोगों को इस्फहान में भेज दिया गया। ऐसा करने से मेरी छोटी सी फौज दो हिस्सों में बंट गई। रूसी लोगों ने इन जर्मन और आस्ट्रियन अफसरों को बाकू में भेज दिया। लोगों के पास जो कागज़ात बरामद हुये थे उनमें से एक खाकी था जिसमें फारस के लोग सुअर, लोमड़, खरहा और गिद्ध की औलाद बनाये गये थे। एक टूटे हुये अंडे के अन्दर एक फारसी की तस्वीर दिखाई गई थी।

सबसे बड़ा सवाल उस वक्त हम लोगों के सामने फार्स प्रान्त में काशगइज़, अरब और दूसरे खानावदोश जातियों के सम्बन्ध में था। उन लोगों की तादाद और ताकत बहुत बड़ी थी काशगइज़ लोग करीब १३,०००० और अरब लोग ७०,००० थे। जब बसन्त ऋतु में ये लोग फारस की खाड़ी के पास के नीचे मैदानों से फार्स प्रान्त की ऊँची ज़मीन पर चढ़ते या जाड़े में वहाँ से फारस की खाड़ी के पास नीची ज़मीन को उतरते थे तो प्रान्त का कोई भी भाग इनसे नही छूटता था और कोई भी गाँव ऐसा न था जो इनके धावे से बच जाता था। ये जातियाँ हम लोगों की दुश्मन थीं क्योंकि ये लोग लूट मार को अपना जायज़ पेशा समझते थे और हम लोगों को इसमें एक रुकावट समझते थे। सौलतउद्दौला, काशगइज़ जाति का मुखिया शीराज का बिलाताज का बादशाह था। अगर कोई गवर्नर-जनरल उससे दुश्मनी करता था तो वह शीराज शहर में बाहर से माला आना बन्द कर देगा पर इस तरह वहाँ अकाल पड़ने के कारण झगड़े शुरू हो जाते थे। और वहाँ का गवर्नर-जनरल बदनाम हो कर निकाल दिया जाता था। सौलत अपनी जातिवालों से तमाम माल-गुज़ारी वसूल कर लेता था लेकिन एक पैसा भी उसके हाथ से खर्च न होता था। जिससे वह बहुत धनी हो गया। हम लोगों के भाग्य वश वह एक नीच तबीयत का आदमी था। कवाम, अरब जाति का मुखिया था। वह शीराज का एक पढ़ा लिखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदमी था और इस तरह की लूट मार को बन्द करना चाहता था। जो मजबूरन कुछ हद तक इसमें उसकी रज़ामन्दी जरूर रहती थी! इसके खिलाफ सौलत अपने ही जाति के साथ रहता था वह घमंडी, शकी और जल्द बदल जाने वाला आदमी था। कवाम के साथ हम लोगों का दोस्ताना बर्ताव था कई दिन उसके साथ हम लोग शिकार खेले। सौलत से सिर्फ एक रोज की मुलाक़ात थी वह जानता था कि एक न एक दिन हम लोगों से उसकी दुश्मनी हो जायगी। जो कुछ भी हो, सन् १९१७ ई० में जिस वक्त हम लोग बन्दर अब्बास से आमदरफ्त का रास्ता खोल रहे थे, दक्षिण फारस-राइफिल नामक फौज का सङ्गठन कर रहे थे और डाकुओं को दबा रहे थे उस वक्त सौलत कुछ न बोला। ऐसी माफिक़ हालत में हम लोगों ने लूट मार के अपराधियों को सज़ा दी और सन् १९१७ ई० के आख़िर तक इस रास्ते पर डकैती को बन्द कर दीं। ईरानी ज़मींदार कहने लगे कि ऐसी शान्ति दस वर्ष के अन्दर कभी न थी।

दुर्भाग्य वश हम लोगों की कामयाबी सिर्फ थोड़े समय के लिये थी। क्योंकि सन् १९१८ की बसन्त ऋतु में जिस समय अंग्रेज़ और फ्रान्सीसी फ़ौजे हार कर पीछे लौट रही थी और ऐसा मालूम होने लगा था कि विजय जर्मनी को मिलने ही वाली है उसी समय काश गई सर्दार एक गोल बना कर उसका मुखिया बन गया। इस गोल का उद्देश्य ब्रिटिश शक्ति को उखाड़ देने का था। फ़ारस सरकार फ्रान्स की हालत सुनकर दुश्मनों की तरफ़ झुक गई और बख्तियारी क़ौम का मुखिया साफ़ तौर से सौलत को हिम्मत दिलाने लगा। सौलत को यह विश्वास था कि वह फ़ारस सरकार की रज़ामन्दी से वह काम कर रहा है जो एक समय में करीब करीब उसकी ही थी। भाग्य वश शीराज़ की अंग्रेज़ी फ़ौज़ को २,२०० आदमियों की मदद मिल गई लेकिन इन में से एक तिहाई रंगरूट थे। लूटी हुई बन्दूकें इसी समय बड़े मौक़े से मिल गई जिनके इस्तेमाल से हालत सुधर गई। सौलत के पास ६,०००बहादुर सिपाही थे और पीछे से आदमियों की मदद मिल गई जिससे इस लड़ाई के तमाम ज़माने में उसके पास ८,००० सिपाही मौज़ूद थे। दक्षिणी फ़ारस राइफ़िल वास्तव में तदाद में शीराज़ की फ़ौज़ से कुछ ही ज़्यादा थी। चूँकि फ़ारस सरकार ने उस फ़ौज़ को फ़ारस की आज़ादी का ख़तरा घोषित कर दिया था इसका बिलकुल विश्वास जाता रहा और हम लोगों के लिये कुछ समय के लिये ख़तरा हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवाम के पास शीराज के इर्द गिर्द करीव २,००० अरवी थे। वे लोग अगर लड़ाई का नतीजा मालूम होने के पहले न शामिल होते तो हारने वालों पर हमला करने के लिये तैयार थे। जो कुछ भी हो इन लोगों की वजह से हम लोगों की चिन्ता बढ़ गई और यह लोग हम लोगों का राशन धीरे धीरे ख़ाली कर रहे थे। शीराज़ी हम लोगो के दुश्मन थे। कभी कभी मुल्ला लोग जहाद करने की शिक्षा दे रहे थे। रात में हम लोगों को मारने के लिये बहुत साइन बोर्ड चिपकाये गये थे।

राशन का सवाल हम लोगों को बरावर परेशान करता था। फसल पक चुकी थी, कटी नहीं थी। चारे की बड़ी भारी दिक्क़त थी। हम लोग किसी तरह अपने घोड़ों और खच्चरों को खिलाने का बन्दोबस्त करते थे क्योंकि चारे का स्टाक हम लोगों के पास बहुत काम था।

हम लोग बहुत से बग़ीचों पर क़ब्ज़ा कर चुके थे जो कच्ची दीवारों से घिरा था और जिन पर गोलियों का असर नहीं हो सकता। कुंए वग़ैरह खोदकर, अन्दर आने जाने के रास्ते बना कर, और मीनारे तामीर करके हम लोगों ने इस छावनी को मज़बूत बना लिया थे।

मई के शुरू में ही दुश्मनी शुरू हुई। इस दुश्मनी की शुरुआत खनेह जिनियन से हुई जो शिराज से २६ मील पश्चिम है। जहाँ से लुटेरे लोग तार के कुछ सामान को लूट ले गये। लुटेरे पकड़े गये इस पर उनके कलन्दर [मुखिया] ने धमकी दी कि अगर लुटेरे छोड़े न जायँगे तो छावनी पर धावा बोल देंगे। और उसने ऐसा ही किया लेकिन शीराज़ से एक छोटी फ़ौज़ उस जगह भेजी गई जिसने थोड़ी सी मार काट के बाद उस छावनी के इर्द गिर्द से इन लोगों को हटा दिया। सौलत ने बड़ी गर्म लिखा पढ़ी के बाद यह कहकर कि फ़ारस सरकार की तरफ़ से फ़ार्स प्रान्त से अंग्रेज़ों के निकाल देने का मुझे हुकुम मिला है हम लोगों से लड़ाई छेड़ दी। हम लोगों की बहुत सी फ़ौज़ उन लुटेरों को सज़ा देने के लिये बाहर चली गई थी जो हमारे दुश्मन से मिल जाने के लिये राज़ी थे। लेकिन वहाँ से लौटने के बाद ही वे काशगई जाति पर चढ़ गये। वे लोग इनको डेहशाहख पर जो १६ मील शीराज़ से पश्चिम है लाये और लगातार १४ घंटे तक वहादुर हिन्दुस्तानी सिपाही कशगईयों को पीछे हटाते रहे। बीच बीच में उनके भयानक हमलों का लूई बन्दूक़ से मुक़ाबिला करते थे। शाम के करीब दुश्मन लोग जिनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत सा नुकसान हो चुका था लाचार हो गये और हिन्दुस्तानियों की थकी हुई फ़ौज़ ने सौलत के तम्बू पर जो कारा आग़ा नदी के किनारे था गोलाबारी करके कब्जा कर लिया लेकिन दुश्मन उस गर्द व ग़ुबार में ग़ायब हो गया। काशगईज़ कौम को हम लोगों की फ़ौज़ को पकड़ लेने का इतना विश्वास था कि उन्होंने पहले ही से मिलने वाले लूट के माल का हिस्सा लगा लिया था यहाँ तक कि बन्दूक़ लादने वाले ख़च्चर के बारे में आपस में झगड़ा भी कर चुके थे। वे लोग समझते थे कि अपने ही मैदान में वे लोग कभी भी नहीं हटाये जा सकते थे। उनमें से ७०० की मौत उनके लिये पहला सबक़ था। हम लोगों के अभाग्य वश इस क़ौम को एक बहुत बड़ी मदद मिल गई और थोड़ी ही देर बाद शीराज़ को आ घेरा और उसी वक्त़ उनके क़ैजरून के मददगार बाग़ वाले क़ार्टर पर क़ब्जा कर लिया जो घाटी के ऊपर मीलों तक फैला हुआ है। दुश्मन लोग यह पक्का इरादा कर चुके थे कि इन लोगों से फ़ौज की गैर हाज़िरी में ही हम लोगों की छावनी पर हमला कर देंगे क्योंकि उन लोगों की समझ में हमारी फ़ौज को फिर से मौक़ा देना बेवक़ूफ़ी थी इसके सिवा हमारी फ़ौज कुछ मारकाट से और कुछ बीमारी से कम हो गई थी इसलिये हम लोगों दुश्मनों को शीराज़ के करीब आने दिया ताकि हम लोग उनसे घाटी की समथल ज़मीन पर मुक़ाबला कर सकें। जैसा कि ख़्याल किया जा सकता है हम लोगों को हर तरह की धोखेबाज़ी से बचना था। हम लोग सुन चुके थे कि १७ जून को हम लोगों पर मिल कर धावे होंगे क्योंकि शीराज़ी लोग यह वादा कर चुके थे कि जब हमारी फ़ौज छावनी के बाहर लड़ने के लिये जायगी तो ये लोग छावनी पर क़ब्जा करेंगे। इसलिये हमारी फ़ौज एक दिन पहले ही घाटी में उत्तर पड़ी और उसने कज़रूनियों को जो उनके सामने थे धीरे धीरे हटा दिया।। दो पहर को फौज अहमदा बाद नामी गाँव तक पहुँची जो छावनी से ४ मील के फ़ासले पर है वहाँ से वापस आई और जैसे कि उम्मीद की जाती थी काशगईज़ लोगों ने इनके ऊपर धावा बोल दिया। लेकिन वे लोग बन्दूक़ों के शिकार हुये और हमारी फ़ौज इस दूसरी कामयाबी के बाद छावनी को लौट आई। दूसरे दिन शीराज़ में बग़ावत हुई। सौलत अपने आदमियों को इकट्ठा कर था और उन लोगों पर जो हम लोगों के दोस्त समझे जाते थे धावा कर रहा था। बाजार बन्द हो गया और सामान का अन्दर आना रुक गया। यह बात साफ़ ही थी कि मुसीबत आ गई। यह बिलकुल ग़ैरमुनासिब मालूम होता था कि हमारी छोटी सी फ़ौज इधर उधर बँट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाय क्योंकि एक काफ़ी मज़बूत टुकड़ी दक्षिण-फ़ारस राइफिल्स की लाइन को रात के समय रक्षा के लिये चाहिये थी। इसके ख़िलाफ़ शीराज़ियों का यह विश्वास था कि शीराज़ की तीन सबसे ऊँची इमारतों पर क़ब्ज़ा कर लेना ही शहर के जीत की निशानी है। इसीलिये २ बजे रात ही को इन इमारतों पर क़ब्ज़ा कर लिया गया। जिसका आशातीत फल हुआ। क्योंकि सवेरे जब शीराज़ियो ने देखा कि इन तीन इमारतों पर अंग्रेज़ों का क़ब्ज़ा हो गया तो वे समझे कि हम लोगों की जीत हो गई इसलिये उन्होंने अपनी अपनी दूकाने जल्दी से खोल दी और दुश्मन लोग छिप गये।

लड़ाई का पहलू बिलकुल बदल गया। अंग्रेज़ो ने इरानी गवर्नर जेनरल से सौलत की जगह पर उसके भाई के काशगई जाति का मुखिया बनवा कर अपनी सफलता को निश्चय कर लिया। कवाल भी अंग्रेज़ों का हो गया और बन्दिशें शुरू हुईं जिसका नतीजा यह हुआ कि काशगई क़ौम का एक हिस्सा सौलत से अलग हो गया। तब हमारी फ़ौज ने धावा बोल कर हमला किया। इस वक्त काशगई लोग बड़ी बहादुरी से लड़े लेकिन तदाद बहुत कम हो गई और वे थोड़ी ही देर में भाग निकले। काशगई जाति के नये मुखिया और क़वाम ने पीछा किया। सौलत फ़िरोज़ाबाद में जम गया लेकिन फिर भी हरा दिया गया और अपने कुछ सच्चे हिमायतियों के साथ भाग गया। तीन महीने के बाद उसने फिर एक फ़ौज तैयार की और नये मुखिया को घेर लिया लेकिन न अंग्रेज़ी फ़ौज उसके मदद के लिये पहुँची सौलत को इतनी बुरीं तरह से हरांया कि वह रोता हुआ भागा और तभी से उसका पता न चला। उसी रात दोनों तरफ़ की फ़ौज़े इन्फ्लुयन्ज़ा की बीमारी से जो कि उस वक्त फार्स प्रान्त में बड़े ज़ोरों से फैली हुई थी—पीड़ित हुईं। कम से कम १८ फी सदी हिन्दुस्तानी सिपाही थोड़े ही दिनों में मर गये और ईरानियों का नुक़सान इससे भी ज़्यादा हुआ। यह एक बहुत बड़ी घटना हुई जिसका हम लोगों को अनुभव हुआ। लेकिन ईश्वर की कृपा से बीमारी काशगई के हराने के पहले नहीं शुरू हुई।

गर्मी के मौसम में बूशायर के बन्दर पर मेजर जैनरल जे० ए० डगलस हो रहे हो। इसके बाद जाड़े के दिनों में वहाँ से शीराज़ को रास्ता खोलने का प्रबन्ध शुरू हुआ। १८० मील का फासला था। लेकिन कोई भी तिजारती रास्ता इससे ज्यादा मुश्किल नहीं था क्योंकि गर्मी के मौसम में समुद्र के किनारे बड़ी भयानक गर्मी और जाड़े के मौसम में बहुत से पहाड़ी दर्रों में बड़ी भयानक सर्दी इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रास्ते पर पड़ती है। बूशायर की फौज पर इनफ़्लूयञ्जा की बीमारी का बहुत कम असर हुआ लेकिन फिर भी काफी देर हुई। वह फौज जो इस काम में लगी हुई थी लड़ाकों। सहित करीब २०,००० थी। इसकी खास दिक्कत राशन और आमद रफ़्त के ज़रिये का था। इनके रास्ते में कोई और रुकावट नहीं हुई। एक छोटी सी रेलवे लाइन २७ मील के मैदान को तै करती हुई बोरजुन तक बनाई गई जहाँ से कि दलकी तक जो १२ मील की दूरी पर है बैल गाड़ियों की आमद रफ़्त है। इस गाँव से उस प्रान्त के एक बहुत कठिन हिस्से में घुसना पड़ा और एक बहुत अच्छा रास्ता ऊँटों के लिये बनाया गया। जनवरी में शीराज़ी फौज की मदद से केजरूँ पर कब्जा कर लिया गया। जसन् १९१९ ई० में बू शायरसे शीराज तक मोटर आने जाने का रास्ता हो गया था जो बहुत आसान नहीं था। इस काम की दिक्कत समझने के लिये इस देश की हालत जानना ज़रूरी है।

मेजर जेनरल एल० सी० डन्स्टर विली के पराक्रम की तरफ़ इशारा करने के सिवा और कुछ कहना नामुमकिन है। इस अफसर ने सन् १९१९ ई० में एक मिशन को ले कर दुश्मनों का आगा रोकने के लिये काकेशिया देश में चढ़ाई की जिससे जारिजिया तथा अरोमनिया देश के बाशिन्दे अपने अपने देश की रक्षा कर सके। सचमुच में यह मिशन तुर्कों के खिलाफ ६ हफ़्ते तक बाकू में अड़ा रहा और उसके बाद शहर के शहर खाली कर देने को मजबूर हुआ। अफ़सर को फ़ारस से मदद करने का ज़रिया बगदाद शहर से कर्मानशाह, हमदान, कज़विन होते हुये एनज़ली बन्दर तक था। डन्स्टर विली साहब ने फ़ारस में एक बहुत बड़ा काम किया क्योंकि उन्हीं की वजह से कुचिकर खाँ एक जङ्गली सर्दार जो जीलान में बहुत से आदमियों को इकट्ठा किये था तेहरान पर धावा करने से रोक दिया गया। वहाँ पहुँच कर शायद वह शाही खानदान को हटा कर फ़ारस देश को मध्य प्रदेशीय शक्तियों की तरफ़ से इस संसार व्यापी युद्ध में शामिल कर देता। अफ़सर ने अजरवैजान में तुर्कों के ऊपर भी निगाह रखी और कुछ दर्जे तक उन लोगों को दवाया जो इनके पास बहुत थोड़ी सी फौज थी।

लड़ाई के दिनों के फ़ारस के बारे में ऊपर दिये हुये बयान से साफ़ ज़ाहिर होता है कि फ़ारस देश अपनी सीमाओं की रक्षा करने में कितना असमर्थ था और उसकी इस असमर्थता की वजह से इङ्गलैण्ड और रूस के ऊपर कितना बड़ा भार था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसकी वजह से इन शक्तियों को अपनी अपनी फ़ौजें उस देश में भेजनी पड़ी नही तो दुश्कन लोग इसे जीत कर इसी रास्ते से अफ़गानिस्तान होते हुये हिन्दुस्तान पर धावा मारते। इसमें कोई शक नहीं कि फ़ारस देश के पश्चिमी और पश्चिमोत्तर प्रान्तों में इस लड़ाई के ज़माने में जान माल का बहुत नुकसान हुआ लेकिन इसके एवज़ में इन लड़ने वाली जातियों [इङ्गलैण्ड रूस, टर्की, जर्मनी वग़ैरह] का बहुत सा धन इस देश में सबके पास बँट गया। सोना जो लड़ाई के पहिले यहाँ बाजारों में बहुत ही कम दिखलाई पड़ता था इसके बाद बहुतायत से दिखाई देने लगा। इससे भी बड़ा फ़ायदा फ़ारस को आमद रफ़्त के रास्ते से हुआ जिनकी तरक्की इस लड़ाई के जमाने में बहुत हुई। करमान शाह हमदान नामी सड़क पक्की बन गई और अब इस पर ऐज़्ली बन्दर से बग़दाद तक मोटर आती जाती है। दक्षिण में जैसा कि पहले कहा गया है बूशायर और शीराज़ के बीच में एक बहुत अच्छी सड़क बन गई और मैंने खुद एक सड़क बन्दर अब्बास से सैदाबाद, निरीज और सैदाबाद होते हुये इस्पहान तक बनवाई जिसमें सिर्फ़ एक ही जगह थोड़ी सी बाकी है। इस तरह दक्षिण फ़ारस के ऊँचो नीची जमीन में करीब एक हजार मील के ऊपर सड़क बन गईं जिन पर मोटरें दौड़ती हैं। अन्त में काशगई जाति की शक्ति नाश हो जाने की वजह से फ़ारस सर्कार की हुकूमत भली भाँति स्थापित हो गई और वहाँ के किसान इस उम्मेद से जो कुछ वे बोवेंगे उसे काट कर घर ले जा सकेंगे दिनों दिन अधिक काश्त करने के लिये उत्साहित हुये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

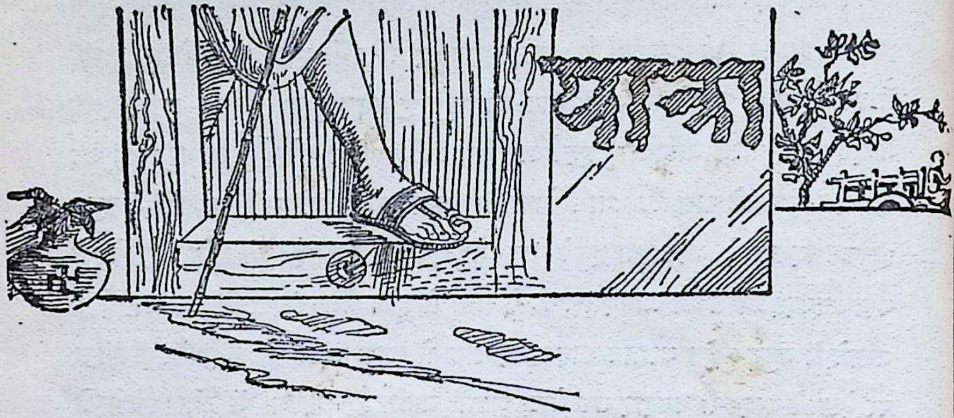

ईरान-यात्रा

ईरान की सबसे पहिली चीज़ जो किसी यात्री पर अपना प्रभाव डालती है वह स्त्री-पुरुष तथा छोटे घड़ों की सुन्दरता है। वहां के निवासी अधिकांश मुसेलमान हैं। उत्तराधिकारी भी मुसलमान ही हैं तथापि वहां भारत के समान परदा नहीं है। अमीर गरीब सभों के यहां की युवा व वृद्ध स्त्रियां बाज़ारों में निकलती हैं। सायंकाल वायु सेवन के निमित्त वे छोटे उद्यानों में जाती हैं। इन कारणों से वहां की स्त्रियों के सौन्दर्य का प्रभाव प्रत्येक यात्री पर बड़ी सुगमता से पड़ जाता है।

स्त्रियां प्रायः काला वस्त्र धारण किया करती हैं ऐसी अवस्था में उनका सौन्दर्य अधिक बढ़-चढ़ जाता है, माना साने में सुगन्ध पैदा हो गई है। अब इसके बाद उनका मधुर-स्वर भी कुछ कम प्रशसंनीय नहीं है। फ़ारसी भाषा अपनी मधुरता के निमित्त जगत-विख्यात है। अतः स्त्रियों के मुख की फ़ारसी अद्भुत प्रभावशाली होती जिसका उल्लेख वस्तुतः शब्दों में हो ही नहीं सकता।

स्त्रियों के सिवा पुरुष भी कुछ कम सुन्दर नहीं होते। अमीर-ग़रीब सभों को समान अंश मिला है। यदि कुली को भी अच्छा वस्त्र धारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करा दिया जाय तो वह अपने रूप-रंग के कारण एक अच्छा पढ़ालिखा भद्र पुरुष ही समझा जासकता है।

ईरान के मुसलमान अधिक संख्या में शिया हैं। वे लोग बड़ी धूम धाम के साथ मुहर्रम मनाते हैं। वे केवल साल में एक बार ही शोक प्रगट नहीं करते बल्कि प्रत्येक सप्ताह में थोड़ा बहुत शोक प्रगट करते रहते हैं। मुझे तो ऐसा प्रतीत हुआ कि शायद इसी कारण ईरानी स्वतंत्र होते हुये भी संसार की जातियों की दौड़ में बहुत पीछे रहे क्योंकि नित्य-प्रति शोक मनाने से वे उत्साहहीन हो गये। पर अब सारे ईरान में एक नई हलचल प्रतीत होती है। आचार-विचार और भाषा वा भेष सभों में नवीनता की झलक प्रतीत होती है। लोगों में साहस और उन्नति का अंकुर है। मेरा अपना अनुमान है कि ईरान जिस ढंग से उन्नति कर रहा है, यदि उसी प्रकार से उन्नति करता गया तो बहुत जल्द उन्नति के शिखर पर पहुंच सकेगा।

प्रत्येक देश में प्राकृतिक दृश्य हैं जो अनेक स्वदेशियों और बिदेशियों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इस दृष्टि से ईरान का दृश्य यदि किसी अन्य देश से बढ़-चढ़ कर नहीं हैं तो किसी से कम भी नहीं हैं। पर इस सम्बन्ध में जो बात मारके की है वह वहां के घरो की विशेषता है जिन में प्रकृति का एक अच्छा अंश रहता है। साधारणतयः शायद ही कोई घर ऐसा होगा जिस में एक छोटा सा उद्यान न हो और उस में पहाड़ी चश्मे की नहर न जारी हो। प्रयाग, लखनऊ अजमेर और नागपूर सरीखे स्थानों में जो बंगले लगभग १५०) मासिक किराये पर मिल सकते हैं उस श्रेणी के घर अथवा बंगले ईरान की राजधानी तेहरान को छोड़कर बाक़ी बड़े बड़े मशहद, किरमान शीराज़ व इसफ़हान आदि नगरों में ३०) मासिक में मिल सकते हैं। निदान १००) मासिक यदि कोई व्यय करे तो बड़े आनन्द के साथ रह सकता है।

मेरा तो विद्या और सहित्य प्रेम था जो मुझे ईरान ले गया। मैं कहता हूं कि जिन लोगों को फ़ारसी से प्रेम है उन को ईरान अवश्य चाहिये क्योंकि वहां मातृ-भाषा फ़ारसी है। मैं तो सन् १९२९ में गया था। हां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर्ष का विषय है कि मेरे बाद कुछ विद्या तथा साहित्य प्रेमी लोग सन् १६३० ई० और सन् १६३१ ई० में भी गये। परन्तु मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूं कि जो लोग गर्मी के दिनों में स्वास्थ अथवा दिल-बहलाव के विचार से पहाड़ों पर जाते हैं वे ईरान जावें। ईरान में अप्रल, मई, जून व जुलाई मास अच्छे होते हैं। नाम-मात्र की गर्मी पड़ती है। वहां की जल-वायु अच्छी है। थोड़ा सा खर्च कुछ अधिक हो सकता है। पर यात्रा से जितना लाभ हो सकता है उस के मुक़ाबिले में थोड़ा सा अधिक व्यय बुरा नहीं ठहरेगा।

मैं मानता हूं कि मुझे बहुत कुछ सुगमता भाषा की थी। जो लोग फ़ारसी नहीं जानते उन्हें कठिनाई अवश्य होगी पर मैं कहूंगा कि अनेक पश्चमी लोग जो फ़ारसी नहीं जानते और ईरान की यात्रा करते हैं तो कोई करण नहीं कि फ़ारसी न जानने वाला भारतीय वहां यात्रा न कर सके सच तो यह है कि साहस की आवश्यकता है। अब अन्त में यह भी बतला देना उचित समझता हूं कि जो लोग अपनी मोटर ले जाना चाहें और क्वेटा (वलोचिस्तान) के मार्ग से ईरान जावें तो वे वड़े आनन्द के साथ यात्रा कर सकते हैं। हां, जो लोग इस सम्बन्ध में कुछ और जानना चाहें वे मुझसे पूछ सकते हैं।

महेश प्रसाद मौलवी फ़ाज़िल

हिन्दू यूनीवर्सिटी वनारस,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ारस के साहित्य का संक्षिप्त वर्णन।

आर्य्य लोग जब दुनिया की छत से दुनिया को आबाद करने को उतरे तो उन्होंने भारतवर्ष में वेदों के मन्त्रों को जमा किया, ईरान में ज़िन्द या जिन्द लिख डाला। उन्होंने यूनान में हिकमत और रोम में क़ानून का उत्तम उदाहरण दिया। पुरानी फ़ारसी किताबों के देखने से पता चलता है कि ईरान में सात भाषायें बोली जाती थीं। (१) दरी, (२) पहलवी, (३) हरवी, (४) सग्ज़ी, (५) ज़ावली, (६) सग़दी, और (७) फ़ारसी। दरी किसी समय में दरबार की भाषा थी। केकाऊस और कैखुसरू शायद यही भाषा बोलते थे। पहलवी को कहा गया है कि यह जरदश्त की ज़बान है और बोस्तां इसी ज़बान में लिखी गई है। कहा जाता है कि यदि हम पहलवी ज़बान से अन्य देशों के शब्द निकाल दें तो पुरानी फ़ारसी बन जाय। मगर बहुत जांच पड़ताल के पश्चात् यह मालूम हुआ है कि फ़ारसी वह भाषा है जो इस्लाम के ईरान में आने पर बनी। बाक़ी चार भाषायें हेरात, सीस्तान, जाबुल और समरक़न्द में पैदा हुई और वहीं मिट गईं। बहुत से फ़ारस के इतिहास लेखक कहते हैं कि पुरानी जातियां कविता करती थीं। और शायद पहला मिसरा बहराम चोबी ने शेर मारने पर कहा था:—
"मनमूआँ बबर जयाँ मनद् आँ शेर प-इला"।

ज़ूकार और क़ादसिया की लड़ाई के बाद ईरान की भाषा पर अरबियत का रङ्ग खूब चढ़ा। ईरानियों ने बहुत सी किताबें अरबी भाषा भी लिख डाली। ईरानियों ने न सिर्फ़ जबान सीख ली बल्कि अरबी अक्षरों को इरानी अक्षरों की तरह लिखना शुरू किया सिर्फ़ यही नहीं बल्कि उनके क़िस्से कहानियां उनके शब्द और महावरों को, ग़रज़े की सब कुछ नक़ल कर लिया। क़ादसिया की लड़ाई से मामूरशीद के जमाने तक दो सौ वर्ष का जमाना होता है। फ़ारसी ज़बान में लिखने पढ़ने की शुरुआत मामूरशीद के जमाने में हुई। इस जमाने का सबसे पहला शायर मर्व का अबुल अब्बास है जिसने पहला शायर होने का दावा किया है। इसी ज़माने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में ताहरिया और सफ़ारियां परिवार की सरपरस्ती में बहुत से शायर हुये। सफ़ारिया ख़ान्दान के जमाने में रुबाई की बुनियाद पड़ी।

इतिहास के देखने से पता चलता है कि सफ़ारियों के बाद सामानी ताजोतख्त के मालिक हुये। उनके वक्त से दफ़्तर की कारवाई फ़ारसी में होने लगी। फ़ारसी गद्य की पहली किताब तारीख तबरी का अरबी से तरजुमा हुआ। इस किताब के बारे में शमसुल-उलमा आजाद देहलवी लिखते हैं कि "तुमने पढ़े तोते और बोलती मैना को देखा होगा।" जब तक पिंजरे में होते हैं सीखी बोलियां बोलते हैं। जब पिंजरे से छुट जाते हैं तो दरख्तों पर जाकर अपनी जङ्गली बोली बोलने लगते हैं।" इसी तरह ईरानी फिर से अपनी भूली हुई जबान को बोलने लगे। इसी ज़माने में शायरी (कविता) भी खूब जोर शोर साथ होने लगी। रोदकी और दकीक़ी इसी जमाने के मशहूर शायर हैं। सब लोग रोदकी को पहला शायर बदलते हैं जिसने दीवान बनाया और बाक़ायदा शायरी शुरू की। वह बचपन से अन्धा था। वह अमीर नस्र सामानी के दर्बार का ख़ास शायर था। जिस वक्त अमीर बादों ग़ैस में ठहरा हुआ था। वहां के सुहावने दृश्य और जलवायु के कारण अपने देश जाना न चाहता था उस वक्त सब नौकर चाकर आजिज़ आ गये और उन्होंने चाहा कि वतन लौट चलें रोदकी को इस बात पर आमादा किया कि वह अमीर को यहां से ले चले तो ५०००) अशर्फ़ियां मिलेंगी। रोदकी ने यह बात मान ली और यह शैर अमीर के सामने गाया "बूये जूये मूलियां आयद हमी। याद यारे मेहरबां आयद हमी।" अमीर के नजरों में इन शेरों को सुनते ही अपने देश का नक़शा खिंच गया और बगैर मोजे पहने घोड़े पर सवार हुआ और एक मंजिल में जा ठहरा। दक़ीकी नूह सामानी दर्बार का शायर था। उसने वह काम शुरू किया जिसको फ़िरदौसी ने पूरा किया। यही पहला शख्स है जिसने फ़ारसी को अरबी से पाक किया।

जो जबान सामानियों के जमाने में बोली और लिखी जाती थी उसकी तरक्की ग़जनी के सुलतानों के जमाने में हुई। सुलतान महमूद के दरबार का सबसे बड़ा शायर उन्सरी था। इस जमाने का सबसे मशहूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

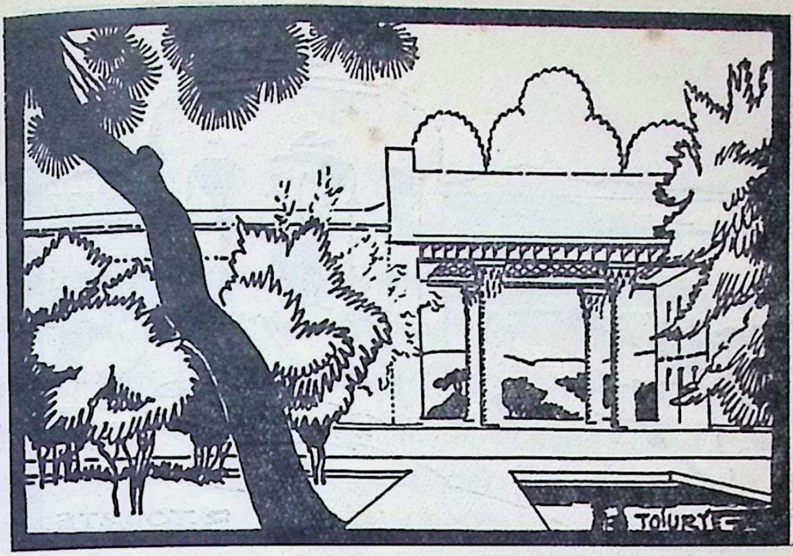

शीराजमें हाफ़िज़के मक़बरेके पास

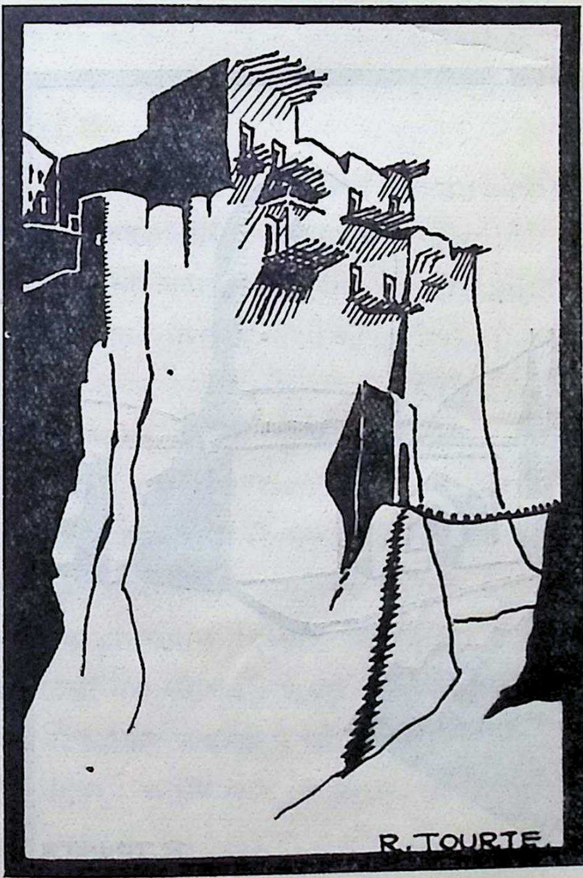

यज़्दीख़ास्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस्फहानके पास आतिश परिश्तोंका मन्दिर

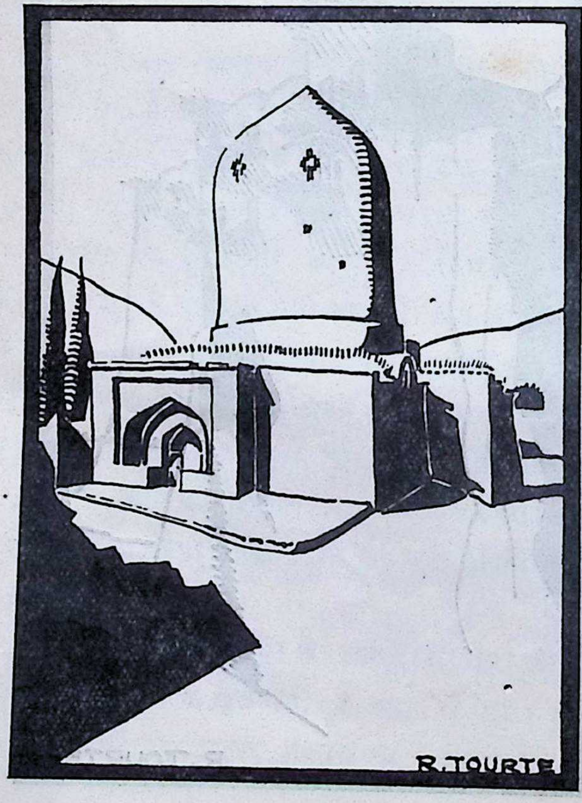

हमादनमें इजहरका मक़बरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि फ़िरदौसी है। वह तूस का रहने वाला था। सुल्तान महमूद के कहने से उसने शाहनामा लिखना शुरू किया जिसके हर शेर के एवज़ एक दीनार देने को कहा गया था। मगर जब शाहनामा ख़तम हुआ तो बजाय सोने के सिक्कों के चाँदी के सिक्के दिये गये। जिस वक्त रु० पहुँचा फ़िरदौसी नहा रहा था। उसने उन रुपयों को देखते ही लुटा दिया और कहला भेजा कि "मैंने तह खून जिगर इन सफेद दानों के लिये नहीं वहाया था।" अल्लामा इब्न असीर शाहनामा को ईरान का कुरान बताते हैं यह ऐसी किताब है जिसमें ग़ज़ल को छोड़ कर हर तरह की शायरी का नमूना है। एक जगह पर क़त्ल ख़ून की तस्वीर बहुत खूब खींची है। "बरोनबु द आँ एले अर्ज-मन्द। बशमशीरों ख़ञ्जर बगुरजों कमन्द।" दरींदो बुर्रीदो शिकस्तों बवस्त। एलाँरा सरो सीनवो पाव दस्त। "उन्सरी, फरुखा मनोचहरी सुल्तान महमूद के दरबार के बहुत अच्छे क़सीदा कहने वाले हैं। इस जमाने में फारसी गद्य की कम तरक्की हुई।

इस खान्दान के बाद सलजूक्रियों का जमाना आया। इनके जमाने में हकीम सनाई और फरीदउद्दीन अत्तार ने सूफ़ियाना शायरी की बुनियाद डाली अमर ख़याम ने अपनी रुबाईयों में इपीक्यूरस की फ़िलासफी खूब दर्शाई है। इसकी रुबाईयों का तरजुमा योरप की हर जबान में हुआ। वह भविष्य जीवन का भरोसा न करके कहता है:—' मथेम् ख़रीदार मयक्तोलो नौ वाँ गाह फ़रोशिन्दये आलम बदो जो।" "गुफ़्ती के एसज़ मर्ग कुजा ख्वाही रफ़्त १ मये पेश मन् आरो हर कुजा ख्वाही खो।" हकीम ख़ाकनिह, अनवरी, जहीर, फ़ारयाबी ने क़सीदों से दीवान भर दो है। निजामी इस जमाने का अन्तिम मशहूर शायर है। वह फारसी जबान का सुधारक कहा जाता है। नासिर खुसरू का सफ़रनामा और निज़ामी अरुजी समरकन्दी का चहार मकाला फारसी गद्य की सबसे अच्छी किताबें हैं।

इस जमाने के बाद चगेज़ के हमले ने और तातारियों की लूट मार ने इरान को बर्बाद कर दिया। तमाम मुल्क में सन्नाटा छा गया। ईंट बझ गईं। घर के घर वे चिराग़ हो गये। जब राजा ही न रहे तो उनके दरबार के शायर कहां रहते। मुसीबत का खुदा याद आ गया। भटैती यानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क़सीदा गोई रुक गयी। मौलाना रूम और शेख़ सादी वगैरह बहुत ही ईश्वर भक्त शायर हुये। उन्होंने ग़ज़ल में सच्ची मुहब्बत व उल्फ़त को ख़ूब लिखा। शेख सादी हाफ़िज़ ने तो तसव्वुफ़ और इश्क से भरी हुई ग़ज़लों का एक बहुत बड़ा दीवान लिख मारा। शेख सादी के गुलिस्ताँ और बोस्ताँ फ़ारसी ज़बान के लिये बड़ी दौलत है। तुफ़ताज़ानी कहती हैं कि अगर शेख सादी हमारी लिखी हुई किताबों को ले लें और गुलिस्तां के इस एक फ़िक़रे। अज़ बिस्तरे नरमश वख़ाक अस्तरे गरशम निशानदन्द" को दे दें तो बहुत ख़ुश हूं। मुहक़्क़िक़ तूसी ने इसी ज़माने में मायरुल अशार (व्याकरण) और इख़लाक़ नासरी (फ़िलसफ़ा) लिखी।

आख़िरकार यह ज़माना भी बदला और ईरान में सफ़ीया और हिन्दुस्तान में तैमूरिया बादशाहों का बोल बाला हुआ। हिन्दुस्तान की ज़मीन और बादशाहों ने ऐसा लुभाया और ललचाया कि ईरान के बहुत से शायरों को मसलन् उरफी नज़ीरी को अपनी तरफ खींच लिया। हिन्दुस्तान में अबुलफ़ज़्ल ने वह खत और फरमान फारसी जबान में लिखे जिसका लोहा ईरान वाले भी मान गये। फ़ैज़ी के शायरी की ऐसी धूम मची कि ईरान के शायरों ने उसको बतौर उस्ताद याद किया। वहशी, मुल्ला मुहतशम काशी और सहाबी वगैरह ईरान के चुने हुये शायर हैं। यह ज़माना ग़ज़ल की तरक़्क़ी के लिये मशहूर है। वाक़्या बयान करने में वहशी का नाम लिया जाता है। उरफी ने ऐसी आनबान के गज़ल व क़सीदे लिखे और ऐसा फ़िलसफ़ा गाया कि फिर कोई न लिख सकता। नज़ीरी ने ग़ज़ल कहने में नाम कमाया, फैज़ी ने संस्कृत के क़िताबों का तरजुमा फ़ारसी शायरी में किया और बेमिस्ल मसनवियां लिखी। सहाबी, इस्तराबादी रुबाइयों के लिये मशहूर है! क़सीदा कहने में तालिब आमली और सनाई का नामलिया जाता है। कलीम, सायब और गनी वगैरह मिसालिया शायरी के जन्मदाता हैं। शाहजहां के ज़माने में जज़ाल असीर ने ऐसी नाज़ुक शायरी शुरू की जिसको नासिर अली और बे दिल ने बिल्कुल उलझा डाला। औरङ्गज़ेब के रुक्क़ात फ़ारसी मुहावरों से भरे पड़े हैं। औरङ्गज़ेब के दरबार के पाले हुये नेमत खां आली ने ज़हूरी की तरह फ़ारसी गद्य लिखने में नाम पैदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। हज़ी ने अपने जीवन चरित्र और दीवानमें फ़ारसी जबान के कमाल को ख़ूब दिखलाया है। वर्तमान समय में हिन्दुस्तान के ग़ालिब और फ़ारस के काआनी याद रखने के लायक है। अव्वलन् ग़ालिब ने नासिर अली वे दिल का तरीक़ा अख़्तियार किया मगर बाद को लोगों के कहने पर उस्तादों का सा रङ्ग पकड़ा। काआनी की शायरी में हर ज़माने के अच्छे शायरों की ख़ूबियां पाई जाती हैं। उन्सरी की सलासत, फ़िरदौसी की फ़साहत, ख़ाक़ानी की दुरुस्तवारी उरफ़ी की नज़ाकत और फ़िलसफा हाफ़िज़ की मस्ती, सादी और हज़्री की ग़ज़ल गोई, अनवरी और ज़हीर की रवानी, सायबू के तमसीलात बहुत खूबी से उसकी शायरी में पाये जाते हैं। नासिरुद्दीन शाह काचार और मसफ़ुरुद्दीन शाह काचार ने योरुप के सफ़र किये और सफ़रनामे लिखे। सफरनामे की ज़बान बिलकुल नये तरीके की है उसमें अङ्गरेज़ी, फ्रांसीसी, और रूसी ज़बान पर योरुप का रङ्ग चढ़ रहा है। और यह कहना मुश्किल है कि किस तरफ़ जबान की तरक़्क़ी का दार मदार है। पर हरहालत में तबदीली हो रही है।

लेखक--भगवती प्रसाद सिनहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ारस के प्रोफेसर ई० जी० ब्राउन

(केम्ब्रिज में अरबी के प्रोफेसर)

लेखक—श्रीयुत सी० एफ० एण्ड्रूज़ जी

अपनी यात्रा में ईश्वर के सब उपकारों में से मैं सबसे अधिक महत्व की बात इसको मानता हूं कि मेरी केम्ब्रिज के श्री एडवर्ड ग्रेनविल ब्राउन से मित्रता हो गई। वे बहुधा फारसी ब्राउन भी कहलाते हैं। क्योंकि उनको फारसी तथा अरबी भाषा का अटूट ज्ञान था और वे पूर्वी चीजों को हृदय से प्रेम करते थे।

उनमें विचित्र संजीवन तथा आकर्षण शक्ति थी और उनका भाषा० सम्बन्धी कामों तथा अध्ययन में मग्न रहना देखकर मनुष्य को चकित होना पड़ता था। मैंने उनको पेम्ब्रोक कालिज में हाई टेबल पर कई बार भाषण देते देखा। वहां गुरु और अध्यापक लोग बैठते थे। वे चार भिन्न भिन्न भाषाओं में और साथ ही साथ अङ्गरेज़ी में भी एक ही समय बात करते थे। वे अपने मिस्री मेहमान के साथ अरबी में, फ्रांसीसी मेहमान के साथ फ्रान्सीसी में, फ़ारसी मेहमान के साथ फारसी में तथा तुर्की के साथ तुर्की भाषा में एक ही समय में बात करते रहते थे और बीच बीच में हमको अङ्गरेजी में उनकी मनोरंजक बातें भी सुनाते जाते थे।

वे मिस्र तथा तुर्की की सिगरेट पीते थे और कहवा तुर्किस्तान का। रात को खाना खाने के बाद कभी कभी उनकी बातें मुझे इतनी अच्छी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगती थी कि मैं आधी रात बीतने पर भी उनके पास बैठा उनकी बातें सुना करता था। वे मुझे पूर्वीय देशों की बातें बताते थे। और हमें अत्यन्त दुख होता था जब हम विचार करते थे कि किस प्रकार पश्चिमी देशों की सस्ती चीजों ने पूर्वीय रहन सहन तथा खान पान बदल दिया है।

उन्हें फारस की अधिक चिन्ता थी और उन्होंने योरोपीय महायुद्ध समाप्त होने से पहले एंग्लो रशियन एग्रीमेन्ट अर्थात् रूसियों और अङ्गरेजों की सन्धि पर सर एडवर्ड ग्रे के हस्ताक्षर कराने में अपनी भरसक चेष्टा की थी। उनके पूर्वीय देशों के प्रेम का प्रभाव मेरे ऊपर इतना हुआ कि इङ्गलैण्ड से इन देशों में आने की मेरी इच्छा प्रबल हो उठी।

अन्त में मुझे अवसर मिला और मैं दिल्ली आया दिल्ली से मेरा फारसी ब्राउन के साथ पत्र व्यवहार होता रहा। जब मैं १९०५ में इङ्गलैण्ड लौटा तो ब्राउन महोदय की केम्ब्रिज में काफी प्रसिद्धि थी। मैंने भारतवर्ष की जो जो बातें उन्हें बताईं उन्होंने बड़ी दिल चस्पी से सुनी। उन्होंने मुझे बताया कि वे उर्दू भी सीख चुके हैं यह सुन कर मुझे अत्यन्त हर्ष हुआ।

उनकी मृत्यु से केम्ब्रिज के सब भारतीय विद्यार्थियों को खेद हुआ। भारत वर्ष में भी बहुतों से उनकी जान पहिचान रही होगी।

मेरी निजी मित्रता उनके जीवन पर्यन्त रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रज़ाशाह

फ़ारस के भाग्यशाली पुरुष

लेखक—ए० जी० सी

कुछ समय हुआ एक युवक फटे कपड़े पहने तथा एक साधारण ऊन की टोपी, जैसी कि फ़ारस के जन साधारण पहनते हैं, लगाये और एक छोटी सी गठरी में कुछ सूखी रोटियाँ बाँधे हुये फारस की खाड़ी में मोहमरा नामक स्थान पर आया। वह तेहरान के भी आगे से आबदान तक काम करने के लिये पैदल ही आया था। आबादान में मिट्टी का तेल साफ किया जाता है यहाँ बहुत से मज़दूर काम करते हैं। भाग्यवश उसे काम मिल गया और वह बारह घंटे कठिन परिश्रम करके कुछ कमाने लगा जिससे उसे रूखी रोटी और कुछ खजूर पेट भरने को मिल जाते थे। परन्तु वह खुश था। उस समय वह अपने भावी जीवन की तैयारी कर रहा था। जा अनुभव ग़रीबी में प्राप्त होते हैं वे बहुत याद रहते हैं। ये कटु अनुभव गुलामी में फंसे हुए करोड़ों अभागे मनुष्यों के साथ सम्बन्ध जोड़ देते हैं।

कुछ समय पश्चात यही युवक बड़ा होकर उसी शक्तिशाली देश का राजा होकर आबदान में आया जहाँ खुसरो ने राज्य किया था इस समय उन्हें अपने देश की आन तथा स्वाभिमान का अधिक ध्यान था। आबदान और मोहमरा में उनके ठहरने योग्य जगह न थी फिर भी उन्होंने लार्ड इन्चकेप के व्यक्तिगत रूप से तार देने पर भी अंगरेज़ी नाव में एक रात भी ठहरना पसन्द न किया और साफ कह दिया कि "ऐसा करने के मानी यह होंगे कि मैंने बिना किसी सरकारी निमन्त्रण के विदेशी हद में पैर रखा" और कुछ ही समय बाद वह शहंशाह मामूली देहातियों के साथ मिलता जुलता देखा गया। शाम को फ़ारसी मज़दूरों की एक बृहत् सभा हुई जिसमें शाह का भाषण हुआ। उन्होंने बड़ी गम्भीरता एवं बालकों की नाईं भोली भाषा में भाषण दिया जिसका असर मज़दूरों के अन्तस्थल तक पहुँचा। उसके बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाह ने एलान किया कि मैं अब भी वही मज़दूर हूँ और मुझे अभिमान है कि किसी समय मैं उन्हीं की तरह बोझा ढोता तथा खाता पीता था और इस अभिमान की खुशी में शाह ने एक दिन उसी प्रकार की सूखी रोटी तथा खजूर खाने का निश्चय किया। उन्होंने सभा के एक आदमी से वे चीज़ें मगाई और अपने दूसरे दिन का भोजन लेकर बड़ी खुशी से उसे दाम दिया यह सब आँखों देखी है।

मज़दूर रेज़ा थोड़े ही समय में सिपाही हो गया। किस प्रकार रज़ा मामूली सिपाही से सिपहसालार बन गया यह तो इतिहासक कि अनोखी घटना है बीसवीं सदी के प्रारम्भ में रज़ाशाह वज़ीर जङ्ग थे और उन्होंने फ़ारस की सड़कों की रक्षा करने में बड़े बड़े आश्चर्य कर्म किये। यदि हम रज़ा शाह के सिपाहियों की तुलना पुराने समय के सिपाहियों से करें तो रज़ाशाह के इन नये आश्चर्य कर्मों का रहस्य कुछ समझ में आ सकता है। सब सिपाही फारस के ही करघों पर बनी एक सी वर्दी फ़ारसी पार्लियामेंट में एक कानून है जिससे कोई अफ-सर दफ़्तर तथा और काम (सरकारी) के समय विदेशी कपड़ा नहीं पहन सकता) तथा उठी हुई फ्रान्सीसी फौजी टोपी की तरह टोपी सिर पर लगाये—बाकायदे कवायद सीखे हुये और भरपूर तनख्वाह भी पाने वाले रेज़ाशाह के सिपाही अपने कमान्डर के ही समान मालूम होते हैं। इस प्रकार जब रज़ा-शाह ने पुनः अपनी फौज को संगठित कर लिया तब अपना काम शुरू किवा।

एक बार कुछ खुर्द सरदार वजीर जङ्ग के घर के सामने टहलते देखे गये। ये लोग अपनी पुरानी चाल की जांघिया, एक चुस्त बन्डी और खुर्दी टोपी पहने थे। उनके चौड़े कमरबन्द में तुर्की तलवार खुसी थी। ये लोग वज़ीर जङ्ग के मेहमान थे। आवश्यकता होने पर वज़ीर जङ्ग स्वयं फ़ारस के दुर्गम से दुर्गम स्थानों में पहुँचते थे और साधारणतः वहां के सरदारों को नेवता देकर बुला लेते थे। वे उनसे बड़ी नम्रता से मिलते थे और तेहरान भर में उनकी इज्ज़त उसी प्रकार होती थी जैसी कि वजीर जङ्ग के मेहमान की होनी चाहिये। उनको तेहरान भर में किसी जगह घूमने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की स्वतंत्रता थी परन्तु वे बाहर कदापि नहीं जा सकते थे। यदि वे लोग ज़रा भी भाग निकलने की कोशिश करते अथवा उनके ज़िलों में कोई बगावत होती तो वहां का सरदार खुले आम कचहरी में लाया जाता और उसका मुकद्दमा होता था यदि वह अपराधी पाया जाता था तो गोली से मार दिया जाता था। बागियों को दबाने की यह एक नई विधि निकाली गई थी।

(वज़ीर जङ्ग) रज़ाशाह वज़ीर आज़म चुने गये। इसमें किसी ने उनका विरोध न किया। बाद में मजलिस अर्थात् फारस की पार्लियामेंट ने उनको सारे राज्य का डिक्टेटर एकाधपति नियुक्त किया। इस प्रकार इनके भाग्य का तीसरा सितारा चमका। ऐसा कहा जाता है कि जब मजलिस ने अपना आखिरी फैसला किया कि अहमद शाह तख़्त से उतार दिया जाय (जो उस समय पेरिस में था) उस समय रज़ाशाह के हृदय में यह बात बिलकुल न थी कि वे ही शाह बनाये जांय। उनका हृदय सदा यही चाहता रहा कि वे फारस प्रजातंत्र की सेवा वज़ीर आजम रह कर ही बल्कि वजीर जङ्ग ही रह कर करें।

अस्तु रज़ा शाह के लिये यह एक कठिन परीक्षा का समय था। और इस समय उन्होंने अपनी फौजी शक्ति से भी अधिक अपने सामाजिक तथा राजनीतिक ज्ञान का परिचय दिया। जन साधारण की विचार धारा तथा उनकी तरफ से अपने ऊपर के खतरे को भली भांति जानते हुये भी उन्होंने राजा का नहीं बल्कि काटों का ताज सिर्फ़ इसलिये पहिना कि वे फारस को पुनः गिरते हुये नहीं देखना चाहिते थे। इसलिये उन्होंने अहमद शाह के तख्त से उतारे जाने के बाद कई दिन लगातार विचार किया और अन्त में अपनी उदारता का परिचय दिया।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईरान की पहली क्रान्ति

ईरान एशिया का प्राचीन इतिहास-प्रसिद्ध देश है। किसी समय यहां के शासकों का प्रभाव यूनान से लेकर पंजाब तक क़ायम हो गया था। परन्तु समय के फेर से एशिया के अन्य राज्यों की भांति उसका भी पराभव हुआ। इधर बीसवीं सदी के आरम्भ होने पर वहाँ भी नवयुग का प्रभाव पड़ना शुरू हुआ। फलतः इस समय यहाँ प्रतिनिधि-मूलक शासन-व्यवस्था क़ायम है और उसके वर्तमान शासक रज़ाशाह पहलवी उसको समुन्नत करने में विशेष यत्नवान् रहते हैं। परन्तु जिस पहली क्रान्ति की बदौलत आज ईरान उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रहा है वह अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के इतिहास में एक अनोखी घटना है। यहां हम उसी क्रान्ति का थोड़े में वर्णन करते हैं—

सन् १६०५ के अन्त में और सन् १६०६ के प्रारम्भ में तेहरान में शाह के कुशासन के विरुद्ध पहले पहले आन्दोलन शुरू हुआ। इस आन्दोलन का मुख्य कारण यह था कि तेहरान का मुल्ला-सम्प्रदाय वहां के प्रधान मन्त्री के विरुद्ध खड़ा होगया था। प्रधान मन्त्री अईनुद्दोला ख़ुद बड़ा घूंसखोर था, अतएव उसके कारण मुल्लाओं के स्वार्थ में बाधा पहुँची। न्याय का मोहकमा मुल्लाओं के हाथ में रहने से वे अब तक इच्छानुसार घूंस लेते रहे थे। परन्तु जब प्रधान मन्त्री स्वयं घूंस लेने लगा तब मुल्लाओं के स्वार्थ में विघ्न हुआ और वे उससे रुष्ट हो गये। उन्होंने प्रधान मन्त्री के विरुद्ध लोगों को भड़काना शुरू कर दिया। फलतः सन् १६०५ के अन्त में तेहरान में विकट राजनैतिक आन्दोलन उठ खड़ा हुआ।

आन्दोलन के नेताओं ने सरकार से तीन मांगें की (१) प्रधान मन्त्री को निकाल देना, (२) सरकार से स्वाधीन अदालतों का सङ्गठन और मुल्लाओं के परम्परागत अधिकारों की सुरक्षा। आन्दोलन-कारियों की यही मांगें थीं। उन्होंने न तो प्रतिनिधि-मूलक शासन सुधारों की मांग की, न और ही कोई वैसे नागरिक अधिकारों का दावा किया। उनका आन्दोलन ईरानियों की स्वाधीन भावना पर आश्रित भी नहीं था। वे ऐसी किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये सशस्त्र विद्रोह करने की इच्छा नहीं रखते थे उनके आन्दोलन की कार्यवाही सीधे सादे प्रतिवाद तक ही सीमित थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाह नासरुद्दीन को योरुप यात्रा का बड़ा शौक़ था। उनकी इन यात्राओं का ईरानियों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। शाह की यात्राओं में जाने वाले ईरानियों में से अनेक ने विदेशों से तरह तरह की आवश्यक बातों का अनुभव प्राप्त किया। यही नहीं, योरूपीय ज्ञानविज्ञान प्राप्त करने के लिए अनेक युवक योरूपीय देशों को भेजे गये। परन्तु यह सुविधा केवल धनी मानी घराने के युवकों को ही प्राप्त हो सकी। अतएव ईरान में कुछ स्कूल और कालेज भी खोले गये जिनमें पाश्चात्य शिक्षा दीक्षा की व्यवस्था की गई। इन संस्थाओं से उन घरानों के युवकों ने लाभ उठाया जो धनाभाव के कारण योरप की यात्रा नहीं करते थे। इस प्रकार बीसवीं सदी के आरम्भ होने के पहले ईरान के युवकों पर पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान का थोड़ा बहुत प्रभाव पड़ चुका था। तथापि इनमें शिक्षित में भी शासन सुधार की मांग उपस्थित करने का भाव तब तक पैदा नहीं हुआ था।

परन्तु देश के दुर्भाग्य से या सौभाग्य से सन् १८९६ में नासरूद्दीन की मृत्यु हो गई और शाह मुज़फ़्फ़रूद्दीन सिंहासन पर बैठे। नये शाह भी योरप यात्रा के प्रेमी थे। उन्होंने शीघ्र ही अपने बाप का सञ्चित धन कुछ ही समय के भीतर फूंक तापा और अपना बढ़ा हुआ ख़र्च चलाने के लिए उन्होंने पहले रूस से फिर ब्रिटेन से ऋण लिये और इस प्रकार ऋण लेकर उन्होंने यात्राओं का आनन्द दिल खोल कर भोगा। परन्तु इसका परिणाम अच्छा नहीं हुआ। राज्य की सारी चुंगी की आधी उक्त ऋण का सूद देने में चली जाने लगी। इधर राजकीय कोष शाह के अपव्यय से ख़ाली हो रहा था। यह सब होते हुए भी आन्दोलन कारियों ने इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा। कहने का मतलब यह है कि उनकी मांग शासन सुधारों का मांग नहीं थी, तथापि उन्हें शासन-सुधार और वे भी बिना रक्तपात के ही प्राप्त हो गये। यही ईरान की इस क्रान्ति की सबसे अधिक विचित्र विशेषता है। बात इस तरह हुई।

प्रारम्भ में मुल्लाओं ने सरकार के विरुद्ध प्रचार करना शुरू किया। उन्होंने मस्जिदों में व्याख्यान दे देकर जनता को उभाड़ा। फल यह हुआ कि तेहरान में हड़ताल हो गई और वहां के बाज़ार कुछ समय के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्द हो गये जो बाद को प्रधान मन्त्री की आज्ञा से खोलने पड़े। इसके बाद मुल्लाओं की शिकायतें दूर करने के लिए सभायें शुरू की गईं। ऐसी एक सभा में एक सैयद भी सैनिकों के गोली चलाने से अन्य आदमियों के साथ मारा गया तथा अन्य लोग घायल हुए। सरकार के उग्र रूप धारण करने पर आन्दोलन दब तो गया परन्तु मुल्लाओं ने दूसरा मार्ग ग्रहण किया। उन्होंने विदेशी राजदूतावासों में आश्रय लेने का निश्चय किया और ८ जुलाई सन् १६०५ को कोई ५० मुल्ला और व्यापारी अंगरेज़ी दूतावास में जा घुसे। फिर क्या था? धीरे धीरे ऐसे आश्रय ग्रहण करने वालों की संख्या बढ़ती गई। यहां तक कि २ सितम्बर तक वह चौदह हज़ार तक पहुँच गई।

परन्तु सबसे अधिक मज़े की बात यह है कि उपर्युक्त असन्तुष्टों में से एक भी ऐसा आदमी नहीं था जो शासन विधान शब्द का अर्थ जानता रहा हो। हां, दूतावास में आने पर पहले पहल ईरानियों के काम में 'शासन-विधान' शब्द काम में पड़ा। फिर क्या था। 'शासन विधान' की मांग की धूम मच गई। सभी लोग उस विषय की चर्चा करने लगे। यही समझा गया कि इस व्यवस्था के हो जाने से उनके सारे कष्ट दूर हो जायँगे।

अंगरेज़ी दूतावास के प्रधान मिस्टर ग्रांटडफ़ ने मध्यस्थता की। उनके काम में किसी तरह की कठिनाई नहीं हुई। उस समय शाह पक्षाघात रोग से पीड़ित थे। एक प्रकार से मृत्यु शैया में पड़े हुए थे। वे उस समय शान्ति ही चाहते थे, अतएव उन्होंने जनता की मांग स्वीकार करली सम्भवतः उन्होंने विधान सम्बन्धी जनता की मांग का वास्तविक रूप नहीं समझा था। उन्होंने शायद यही समझा था कि समय समय पर परामर्श करके लिए सरकार केन्द्रीय तथा प्रान्तिक मजलिसें करती रहो है वही जनता की मांग है। इसी भ्रम से शाह ने उक्त मांग को स्वीकार करके अपने असन्तुष्ट प्रजा जनों को सन्तुष्ट करना चाहा था। इस पर उन्होंने शाह के अपनी प्रतिज्ञा-पूरी करने के सम्बन्ध में अंगरेज़ों से वचन लेना चाहा। परन्तु अंगरेज़ ऐसा करने को नहीं तैयार हुए। फलतः समझौते की बातचीत बन्द हो गई। तब शाह की सरकार ने समझौता करा देने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए मिस्टर ग्रांटडफ़ से प्रार्थना की। अन्त में शाह के कर्मचारियों और आन्दोलनकारी नेताओं की एक सभा हुई। इस सभा में अगरेज़ प्रतिनिधि भी मौजूद था। इसी सभा में राष्ट्रीय मजलिस और न्याय की अदालतें क़ायम करने का एक ख़रीता लिखा गया जिसकी शाह के नाम पर घोषणा की गई। आन्दोलनकारी सन्तुष्ट होकर दूतावास से निकले और अपने अपने घर चले गये। इस प्रकार उन्होंने प्रतिनिधि मूलक शासन व्यवस्था अपने शाह से प्राप्त करली। ईरान की यह पहली क्रान्ति ऐसी ही थी।

देवीदत्त शुक्ल सरस्वती—सम्पादक

सम्पादकीय

ईश्वर की कृपा से इस अंक के साथ "भूगोल" का आठवां वर्ष आरम्भ हो रहा है। पिछली त्रुटियों के लिये क्षमा मांगते हुए हम पाठकों से प्रार्थना करते हैं कि वे "भूगोल" को अपनाने में अपनी उदरता का पूरा परिचय दें। यदि इस वर्ष प्रत्येक पाठक "भूगोल" का केवल एक नया ग्राहक बनाने की कृपा करदे तो हमारी आर्थिक कठिनाइयां दूर हो जावें। जो शक्ति आर्थिक चिन्ताओं में नष्ट होती है वह उपयोगी साहित्य के निर्माण में लगने लगे। हम नई नई यात्राओं को योजनाकर सकें। जिससे न केवल साहित्य वरन साहस की एक नई लहर देश मे फैल जावे। हमें आशा है कि प्रमी पाठक गण एक एक नया ग्राहक बनाकर हमारी सहायता करेंगे।

देरी का मुझे अत्यन्त खेद है। इस बार प्रेस से हमें अचानक धोखा हुआ। पर हम पाठकों को विश्वास दिलाते हैं कि भविष्य में ऐसी देरी यथा सम्भव होने पावेगी।

अन्त में हम अपने सहायकों और पाठकों को उनकी सहायता और कृपा के लिये धन्यवाद देते है और ईश्वर से प्रार्थना करते है कि यह नूतनवर्ष हम सबको मंगलदायी हो।

सम्पादक

मुद्रक—बाँकेलाल शर्म्मा इलहाबाद प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

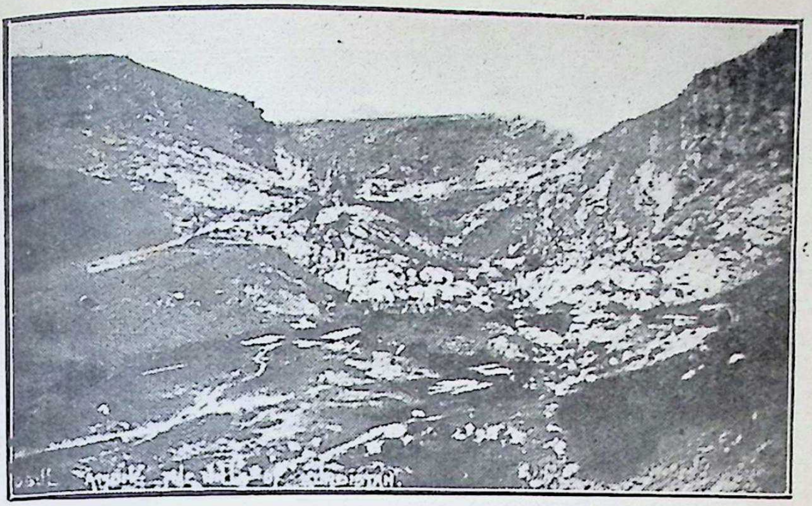

खुर्दिस्तान का भूदृश्य

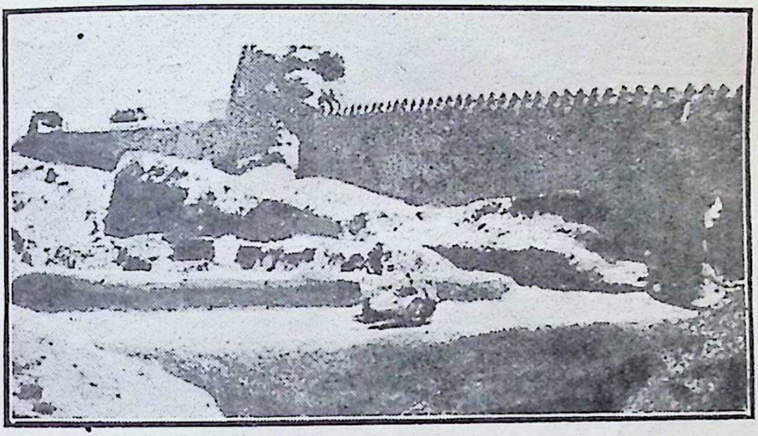

मशद की पुरानी दीवारें

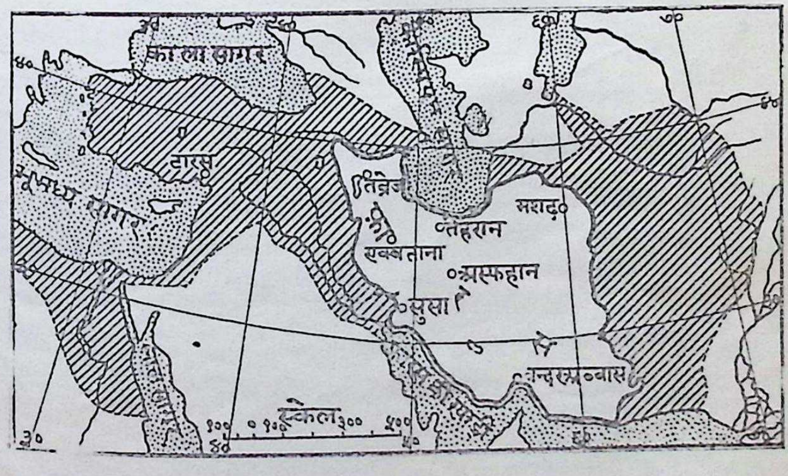

ईरान का प्राचीन विस्तार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्राचीन साम्राज्य आड़ी रेखा से दिखलाया गया है

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

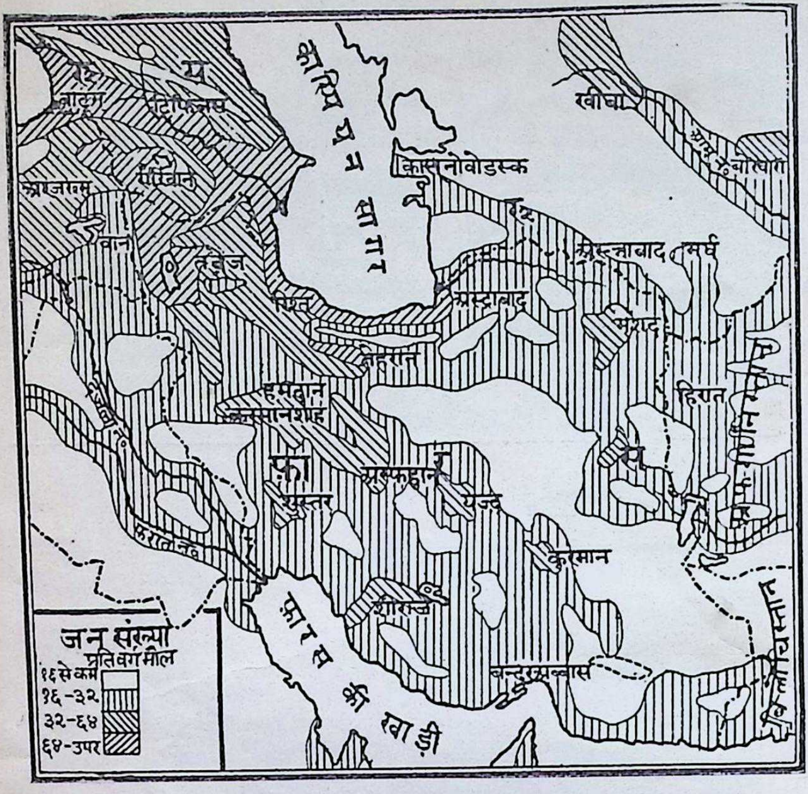

फ़ारस जन-संख्या की सघनता

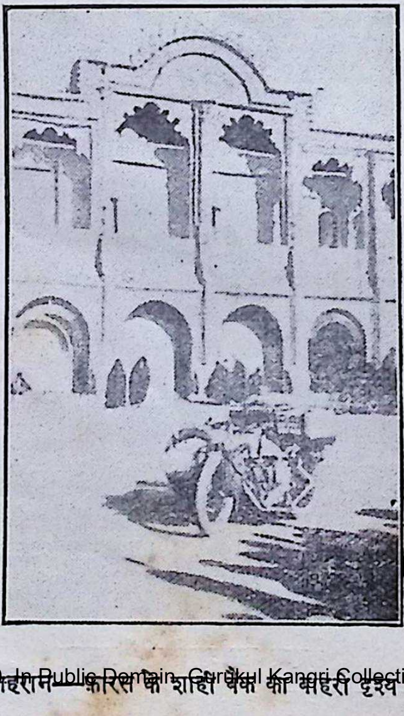

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तेहरान—फ़ारस के शाही बैंक का बाहरी दृश्य

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

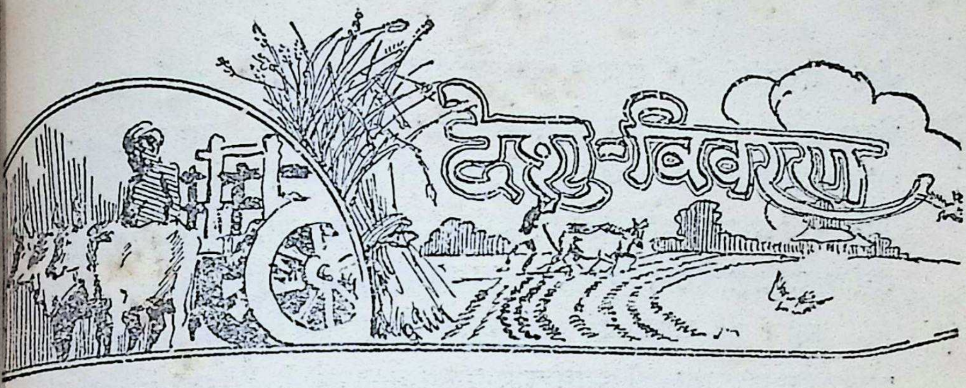

फ़ारस

लेखक—श्रीमान परशियन कांसुल, बम्बाई
(Consulat De Perse)

फारस देश फ्रांस से लगभग तिगुना है और इसकी जनसंख्या एक करोड़ से कुछ अधिक है। समस्त आबादी के $\frac{2}{3}$ लोग उस रेखा के उत्तर में बसे हैं जो करमानशाह के ठीक दक्षिण में इस्फहान और बिरजन्द (अफ़-ग़ानी सीमा के समीप) को मिलाने से बनती है। देश के इस भाग की भौगोलिक स्थिति यहां के निवासियों को रूस के साथ व्यापार करने का अचूक अवसर देती है। देश के अन्य शेषभाग फारस की खाड़ी द्वारा योरूप और संयुक्त राज्य अमरीका से सामुद्रिक-व्यापार सुगमता के साथ करते हैं।

चाय और चीनी के अतिरिक्त लगभग समस्त खाद्य-वस्तुयें फारस देश में होती हैं। दाख़, बादाम और छोहारा तथा नाना भांति के और दूसरे सुखाये हुये फल भी बहुतायत के साथ बाहर भेजे जाते हैं। देश में ऊनी और सूती कपड़ों के अलावा जूते भी बनाये जाते हैं। हाथ से कालीन बनाने का काम इतना प्राचीन है कि इसकी उत्पत्ति का पता लगाना असम्भव सा है। फारसी कालीनों की सर्वत्र संसार में इतनी अधिक प्रसिद्धि हो गई है कि इसकी मांग को पूरा करने के लिये एक ख़ास कारबार की स्थापना हुई है। संसार के विभिन्न प्रकार के कालीनों की $\frac{9}{10}$ मांग को फारस ही पूरा करता है।

इस देश की भौगोलिक और प्राकृतिक अवस्था ने इसे कृषि और पशु सम्बन्धी उपज के लिये स्वावलम्बी बना दिया है। अन्य देशों की अपेक्षा फारस का संसार से अधिक विच्छेद होने के कारण तथा पर्वत मालाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मरुभूमि की शुष्कता की अधिकता से देश के उन्नति पथ में कंटक अवश्य पड़ते हैं फिर भी ज़मीन और जलवायु की विभिन्नता से यहां संसार भर की प्रधान फसलें उगा ली जाती हैं। देशसे देसावर भेजने योग्य कृषि और पशु सम्बन्धी पदार्थ निम्न हैं:—गेहूं, जौ, चावल, फल, रुई, अफीम, तम्बाकू, रेशम, किसमिस, भेड़ की अँतड़िया और मोम।

साथ ही साथ यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि ग्रामीण फारस देश का थोड़ा ही भाग कृषि-कार्य्य में उपयोगी है। यहां पर लाखों एकड़ भूमि चरागाह के काम में लाई जाती है। पानी की कमी के कारण से भूमि उपजाऊ नहीं है। ऐसा विचारा गया है कि यह देश अपने इने गिने खेतों से जो इस समय कृषि कार्य्य में लाये जाते हैं अधिक उपयोगी और उन्नतशील यंत्रों द्वारा जोते बोये जाने पर अपनी वर्तमान आबादी से दुगने या तिगुने आदमियों का भरण पोषण कर सकता है। इस देश के फलों की अधिकता और विभिन्नता का पूर्ण विवरण कर सकना नितांत असम्भव है। कारण यह है कि यह निबन्ध सकुचित सीमा के भीतर ही है। फलों में से बादाम, अख़रोट, नाशपाती, शफतालु, अनार, अंजीर, नारंगी, अंगूर और तरबूज़ के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। कुछ प्रान्तों पिश्ता आड़ू और स्टावरी भी पाई जाती है। छोहारा और उसके विशाल-वृक्ष का (जो पूर्वीयता का एक चिन्ह है) तो कहना ही क्या है।

पेट्रोलियम के सिवाय फारस देश के अन्य खनिज-पदार्थ अचानक ही नाम मात्र को प्राप्त हुये हैं। कहा जाता है कि निशापुर और मशद नगरों के बीच के पहाड़ों में चट्टानों वाला और मिट्टी वाला सोना पाया जाता है जो कि पूर्वकाल में उपयोग में लाया गया और जिससे अच्छी ख़ाली क़ीमत भी मिली। करमान, यज़द और कशान पर्वतों के मध्य अल्बुर्ज़ और फारस के उत्तर-पूर्व के कोने में बहुत सी जगहों पर कच्चा सीसा पाया जाता है। इसमें तो कभी कभी काफ़ी मात्रा में रजत मिला रहता है और बहुधा जस्ता और तांबा भी सम्मिलित पाये गये हैं। तांबा भी अधिकता से प्राप्त होता है। कई स्थानों में तो तांबे के ढेर के ढेर पाये जाते हैं जिससे ज्ञात होता है कि गत समय में यहां पर धातु निकालने और साफ करने का कार्य्य अच्छी तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता था। लेकिन यही कहा जाता है कि केवल ऊपरी खनिज-पदार्थ निकाल लिया गया और भीतरी तो छुआ तक नहीं गया। करमान प्रदेश में तबरेज़ की उत्तर-पश्चिम दिशा में तांबा देने वाली विस्तृत शिलाएं ग्रेनाइट पत्थर के सङ्ग में पाई जाती हैं। करमान के दक्षिण-पूर्व का प्रदेश भी ताम्र-धातु से सम्पन्न है। यहां पर थोड़े में अधिक खुदाई हुई है। कशान, यज़द और करमान के मध्य के प्रदेश में भी जहां कि कच्चा सीसा पाया जाता है वहां तांबा भी अधिकता से प्राप्त होता है। तबरेज़ के दक्षिण-पूर्व में लगभग नब्वे मील की दूरी पर ज़रा-शूरान ग्राम की समीपवर्ती उपजाऊ मिट्टी से देशी पारा, कुछ सोना और सिनेबार (एक प्रकार का पारा) के सहित निकलता है। इसी प्रदेश में आरमीमेन्ट नामक एक प्रकार का खनिज-पदार्थ भी पाया जाता है जिसकी मांग आस-पास के स्थानों में अधिक होती है। स्थानाभाव से यह कहां तक सम्भव है कि खनिज-पदार्थों का पूर्ण परिचय प्राप्त कर दिया जाय। यहां इतना विवरण ही पर्याप्त होगा।

अमूल्य-मणियों में लाल और नीलम प्राप्त होते हैं। पुखराज़ तो निशापुर की उत्तर-पश्चिम की दिशा में कई सदियों तक निकाला जा चुका है। मदन नामी ग्राम में (जहां कि इसका व्यापार किया जाता है) ये काट-छांट करके बेचा जाता है।

फ़ारसी राज्य-नियम और न्याय-विधान हाल ही में नवीन सभ्यता के रंग में रंग दिये गये हैं। नवीन-न्यायालय जिसकी स्थापना छब्बीस अप्रल सन् १९२७ में हुई थी तीन भागों में बांट दिया गया है। वे निम्न हैं:—प्राइमरी कोर्ट्स, अपील कोर्ट्स और स्पेशल-कोर्ट्स। अन्य और भी हैं जैसे तिजारती कचहरी।

इन्हीं दिनों फ़ारस में जो सबसे रहस्यमयी घटना हुई वह यह है कि यहां के यात्रा-साधन नई सभ्यता में परिवर्तित हो गये। आज-कल फ़ारस-देश में छः हज़ार मील से अधिक मोटर की सड़कें हैं। पिछले पांच वर्षों में मोटर की मांग में वृद्धि हुई है। शान्ति और आन्तरिक रक्षा की वृद्धि के कारण केन्द्रीय-सरकार ने अपना ध्यान इस ओर विशेष आकर्षित किया है और फलतः प्रजा-कार्य्य का प्रोग्राम भी निकला है जिसमें रेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सड़कें भी निकलने का विचार है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि फ़ारस-देश शीघ्रता से उन्नतशाली हो रहा है। फ़ारस देश का लीग आफ़ नेशन्स की कौन्सिल में वर्तमान चुनाव का होना ही यह स्पष्ट करता है कि यह देश विकास-विप्लव की ओर द्रुतिगति से अग्रसर हो रहा है। फ़ारस देश के वर्तमान शाह बड़े ही देश भक्त और दृढ़ प्रतिज्ञ है। ईश्वर से यही प्रार्थना करनी चाहिये कि वह ऐसे सद्भावुक शाह को चिरंजीव रक्खे जिससे फ़ारस देश दिन दूना रात चौगुना फल-फूल सके। ज़िन्दा-बाद-फ़ारस! चिरंजीवी ईरान।

अनुवादक केदारनाथ अग्रवाल

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ
१—विस्तार स्थिति और प्राकृतिक विभाग	[श्री वंशीधर]	१
२—ईरान की जलवायु		६
३—जनसंख्या		१०
४—रेगिस्तान, नदियां, वनस्पति, पशु और खनिज पदार्थ रेगिस्तान		१३
५—वनस्पति		२०
६—ईरान के बालक	[श्री० ठाकुरदत्त]	२५
७—ईरान का स्त्री समाज	[ठा० श्रीनाथसिंह]	२८
८—पुरानी डायरी के कुछ पत्र		३०
९—ईरान की प्राचीनभाषा		५६
१०—धार्मिक उत्सव	[पं० रामलखन शुक्ल]	६२
११—शिक्षा और अस्पताल	[पं० रामलखन शुक्ल]	६४
१२—ज़हक और फरीदुन		६६
१३—पारस का नाम करण		६८
१४—फ़ारस और महायुद्ध		७१
१५—ईरान यात्रा	[मुन्शी महेशप्रसाद हिन्दू विश्वविद्यालय]	८४
१६—फारस का साहित्य	[श्री भगवतीप्रसाद सिनहा]	८७
१७—ईरान की पहली क्रान्ति	[पं० देवीदत्त शुक्ल, सरस्वती—सम्पादक]	८९
१८—फारस	[श्री मान परशियन कांसुल (बम्बई)] (Consulat De Perse)	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल" की नियमावली

१—"भूगोल" प्रत्येक मास की १० तारीख़ तक प्रकाशित होगा।

२—इसका अग्रिम वार्षिक मूल्य भारतवर्ष में ३) रु० और विदेशों में ५) रु० है एक प्रति का मूल्य ।–) है। नमूने की कापी के लिये आर्डर के साथ पाँच आने के टिकट भेजने चाहिए।

३—संरक्षकों से उनके सम्मानार्थ १०) रु० वार्षिक है। आजन्म संरक्षकों से केवल एक बार १००) है रु०।

४—कार्यालय से पत्रव्यवहार करते समय ग्राहकों को ग्राहक-नम्बर अवश्य लिखना चाहिए। प्रबन्ध-सम्बन्धी पत्र—मैनेजर "भूगोल," ईविङ्ग क्रिश्चियन कालेज, इलाहाबाद के पते से आने चाहिए।

५—समालोचनार्थ पुस्तकें, परिवर्तन के पत्र, और प्रकाशित होनेवाले लेख सम्पादक "भूगोल"—ई० सी० कालेज, इलाहाबाद के पते से आने चाहिए।

६—"भूगोल" का वर्ष जूलाई मास के विशेषाङ्क से आरम्भ होता है। मई और जून मास की छुट्टी रहती है। पर ग्राहक किसी मास से आरम्भ कर सकते हैं। पिछले वर्षों के सब अङ्क मौजूद नहीं हैं। जो मौजूद हैं उनमें से प्रत्येक का मूल्य ।–) है।

७—कार्यालय से "भूगोल" भली भाँति जाँच कर प्रत्येक ग्राहक के पास भेजा जाता है। फिर भी यदि किसी मास का "भूगोल" किसी ग्राहक को न मिले तो ग्राहक-महाशय पहले अपने पोस्ट आफ़िस से पूछें। जो उत्तर मिले उसे **ग्राहक-नम्बर** सहित कार्यालय में दूसरे मास की १० तारीख़ तक भेज देने से खोया अङ्क बिना मूल्य प्राप्त होगा। अन्यथा ।–) मिलने पर ही दूसरा अङ्क भेजा जायगा।

८—एक दो मास के लिए पता बदलवाना हो तो अपने पोस्ट-आफ़िस को लिखना चाहिए, अधिक समय के लिए कार्यालय को लिखना चाहिए।

९—लेख को छापने अथवा न छापने तथा उसमें काट-छाँट करने का सब अधिकार सम्पादक को प्राप्त है। "भूगोल" में प्रकाशित लेखों को कोई महाशय सम्पादक की आज्ञा बिना न छापें।

१०—सचित्र लेख के चित्रों का प्रबन्ध लेखक महाशय ही को करना होगा।

मैनेजर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BHUGOL

The only Geographical Monthly published in India

Purpose: Bhugol aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents: Articles are published on varied topics of geographical interest: Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving a file of *Bhugol* any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

An index to each volume will be supplied with the April number.

Travel Department: The Travel Department of *Bhugol* annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools: The use of Bhugol in connection with the geography instruction in high schools, normal schools, and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, Berar, the Central Provinces, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior and Jaipur, Jodhpur and Kotah States.

Correspondence: Editorial communications, exchanges, and books for review, should be addressed to: Pt. Ram Narain Misra, Editor, **Bhugol**, Geography Department of Ewing Christian College, Allahabad City.

Business communications, including subscriptions and advertisements, should be addressed to: The Manager, **Bhugol**, Ewing Christian College, Allahabad. Telegrams: 'Bhugol,' Allahabad.

Subscriptions: Prepaid annual subscription: To any place served by the Indian Post Office Department, Rs. 3. To any other country in the Universal Postal Union, Rs. 5 or 7s. 6d. or $1·50.

To addressees in India the first copy will be sent by V.-P.P., unless remittance accompanies order. V.-P.P. Fee, 2 annas.

Remittances: Make all remittances by cheque, money order or British Postal Order, payable to the Manager, **Bhugol.**

Rates for Advertisements: Ordinary full one page Rs. 10
3rd page of the cover ,, 12
4th page of the cover ,, 15

Write to the Manager,

"BHUGOL,"

EWING CHRISTIAN COLLEGE, ALLAHABAD.

Only cover Printed by K. Mittra at The Indian Press, Ltd., Allahabad.
Published by the Editor under the auspices of the Ewing Christian College, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Gurukula Library Kangri
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Bhugol—August, September 1931 [Regd. No A. 1333

वर्ष ८] अगस्त, सितम्बर १९३१ [संख्या ४, ५

भूगोलविषयक हिन्दी का एक-मात्र सचित्र मासिक पत्र

भूगोल अनुभव हेतु यह "भूगोल" पत्र अमोल है।
"भूगोल" कहता है निरख, भू गोल है भूगोल है॥

सम्पादक—रामनारायण मिश्र, बी० ए०

वार्षिक मूल्य ३) एक प्रति का।-)

ईविंग क्रिश्चियन कालेज, प्रयाग से संरक्षित

Yearly Subscriptions:
Indian Rs. 3
Foreign Rs. 5

Single Copy
5 as.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

लेख	पृष्ठ संख्या
सम्पाकीय	
१—फिनलैंड वालों का स्नान—लेखक, श्रीयुत अयोध्या प्रसाद जायसवाल	१२१
२—प्राचीन भूगोल—लेखक, श्रीयुत नारायण प्रसाद मौहनियाँ	१२४
३—तिब्बत के किसान—	१२८
४—दुनिया के इर्द गिर्द—लेखक, श्रीयुत बी० बी० मालवीय, एम० ए०, पी-यच० डी० अध्यक्ष केमिस्ट्री-विभाग, ई० सी० कालेज	१३३
५—ध्रुव प्रदेशों की खोज—लेखक, श्रीयुत शान्ति स्वरूप गुप्त	१३७
६—भारतीय बालकों का आर्तनाद—	१४०
७—जापानी जेलख़ाने—लेखक, एक जापानी महाशय	१४२
८—एबीसीनिया—लेखक, श्रीयुत शिवगोविंद लाल गुप्त	१४५
९—जापान के राजनैतिक दल—लेखक, श्रीयुत राममूर्ति सिंह	१४७
१०—भारतवर्ष के कुछ प्राचीन नाम—ले० पं० बालगोविंद शर्मा आयुर्वेदाध्यापक, गोयनका महाविद्यालय, बनारस	१५३
११—नागौर (मारवाड़) के कुछ औद्योगिक धन्धे—लेखक, श्रीयुत भगवती प्रसाद शर्मा	१५७
१२—चिल्का झील—	१६०
१३—बंगाल के कुछ भीषण चक्रवात—	१६३
१४—सितम्बर मास का आकाश-दर्शन	१६६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाबप्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिए स्वीकृत है।

वर्ष ८] श्रावण-भाद्र पद सं० १९८८, अगस्त-सितम्बर १९३१ [संख्या ४,५

सम्पादकीय

इस वर्ष जुलाई का विशेषाङ्क इतना पिछड़ गया था कि विवश होकर अगस्त और सितम्बर को मिलाकर संयुक्तांक निकालना पड़ा। हमें आशा है पाठक हमारी कठिनाइयों को ध्यान में रखकर उदारता का परिचय देंगे और अब तक जो उन्हें असुविधा रही है उसके लिये क्षमा प्रदान करेंगे। जिस प्रेस की देरी से पाठकों को इतना कष्ट हुआ उसे हमने बदल दिया। प्रस्तुत अंक ला-जर्नल प्रेस से निकल रहा है जो अपने उत्तम और समय पर छापने के लिये प्रान्त भर में प्रसिद्ध है। हमें पूरी आशा है भविष्य में "भूगोल" के पाठकों को देरी के लिये कोई शिकायत न करनी पड़ेगी। देरी हमें पाठकों से भी अधिक खटकती थी। पर हम लाचार थे।

इस बार हमने चार पुरस्कार देने का निश्चय किया है। इनका विवरण अगले पृष्ठ पर दिया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२००) रुपये का इनाम !

५०) रुपये का इनाम उसे मिलेगा जो "भूगोल" में प्रकाशित होने वाले ज्योतिष, यात्रा, व्यवसाय, स्थानीय भूगोल, पुरातत्व, आधुनिक इतिहास आदि अंगों पर तीन सर्वोत्तम लेख लिखेगा।

१००) रुपये का इनाम उसे मिलेगा जो गरमी की छुट्टियों में कम से कम खर्च से अधिक से अधिक यात्रा करेगा और सर्वोत्तम जानकारी प्राप्त करेगा।

२५) रुपये का इनाम उसे दिया जायगा जो प्राकृतिक दृश्य, प्रसिद्ध इमारत, बाज़ार, मेला और कला-कौशल, खेतीं या जीवन के और किसी विभाग से सम्बन्ध रखने वाले सर्वोत्तम १० फोटोग्राफ़ (चित्र) लेकर भेजेगा।

२५) रुपये का इनाम ३१ जनवरी सन् १९३२ तक "भूगोल" के सब से अधिक नये ग्राहक बनाने वाले को मिलेगा।

मैनेजर "भूगोल"
प्रयाग

"BHUGOL"

Competition-Prizes

A prize of Rs. 50 will be paid to the sender of three best essays on any of the topics that usually appear in "Bhugol": current History, Astronomy, Travel, exploration, Antiquities, Local Geography etc.

A prize of Rs. 100 will be awarded to one who will travel (in any interesting region in India or outside) most economically, most extensively and most profitably.

A prize of Rs. 25 will be given to the sender of 10 best photographs of life, scenery or famous buildings.

A prize of Rs. 25 will be paid to any one who secures the largest number of subscribers for "Bhugol" by 30th April 1932.

No entry-fee will be charged from the subscribers of "Bhugol". Non-subscribers will have to pay *Rupee one* only for entering the competition. Admission forms can be had free from the "Bhugol" office personally between 4 and 5 P.M. Those who want the forms to be mailed to them should send addressed and stamped envelope or one anna postage stamp,

The Manager, "BHUGOL"
E. C. College, Allahabad

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Gurukula Library
Kangri

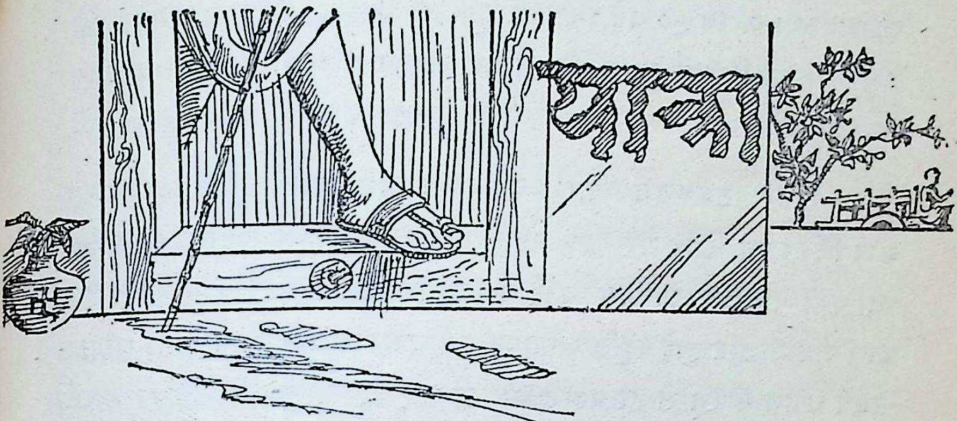

"अरवली पहाड़ का एक तीर्थ-स्थान"

भ्रमण करने से भूगोल बहुत जल्दी याद होता है, और यह ही नहीं बल्कि इतिहास की भी अनेक घटनाओं का ज्ञान होता है। अरवली पहाड़ भारतवर्ष के पहाड़ों में सब से छोटा समझा जाता है, परन्तु इसमें कई प्राचीन स्मारक हैं जो कि देखने योग्य हैं, और जिन को देखने के लिये भारतवर्ष के प्रत्येक हिस्से से प्रति वर्ष बहुत से मनुष्य आया करते हैं। हिन्दुओं का तो वह पवित्र स्थान भी है, क्योंकि श्रीरामचन्द्र जी लङ्का को इस पहाड़ के सहारे सहारे ही गये थे। चार भुजा नाम का एक स्थान इस पहाड़ के पूर्व की तरफ मेवाड़ में हैं जहां पर भादों शुदी एकादशी को एक लाख से भी अधिक मनुष्य एकत्र होते हैं। श्री रामचन्द्र जी ने लङ्का जाते समय इस स्थान पर कुछ समय तक विश्राम किया था। परन्तु यहां पर मैं केवल 'परशुराम महादेव के विषय में कुछ बतलाना चाहता हूं।

दस जनवरी को शाम के ५ बजे हम बाली कस्बा (Bali Marwar) से जहां से यह स्थान करीब १२ मील के फासले पर है रवाना हुये। रात के दस बजे हम राजपुर गांव में पहुंच गये जो कि इस पहाड़ की बिलकुल तलहटी ही में बसा हुआ है। रात को हम इसी गांव में ठहर गये। मैंने रास्ते में बहुत से आदमियों से पूछा कि यह स्थान यहां पर क्यों है, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस लिये प्रसिद्ध है? परन्तु मेरी इच्छा को पूर्ण करने वाला मुझको कोई ठीक उत्तर नहीं मिला। अन्त में इस गांव में मैंने एक आदमी से जिस की अवस्था करीब ६० वर्ष की थी पूछा तो मैं कुछ संतुष्ट हो गया और उत्तर यह था कि 'परशुराम जी ने एक राक्षस को मार कर यहां पर तपस्या की थी,

सवेरे उठकर हम फिर अपने रास्ते पर रवाना हुये। अब रास्ता बड़ा विकट था, और मेरे लिये पहाड़ पर चढ़ने का यह पहला ही अवसर था, क्यों कि अब तक मैंने कोई पहाड़ निकट जा कर के भी नहीं देखा था। जब मैं जाट हाई स्कूल लखावटी में दसवीं कक्षा में पढ़ता था उस समय नक़शे में रंग से ही पहाड़ की ऊंचाई का अनुमान किया करता था। पहाड़ का दामन चोटी, घाटी और सोते का उचित ज्ञान भी अभी हुआ क्यों कि ये चीजे तो प्रत्येक पहाड़ में पाई ही जाती हैं।

अब रास्ता इतना भीषण था' कि आदमी बड़ी कठिनता से चल सकता था, हम को थोड़े थोड़े फासले पर आराम लेना पड़ता था, क्योंकि ऊपर को चढ़ते सयय आदमीं बहुत जल्दी थक जाता है परन्तु प्रकृति की विभूती से हम सब के मन प्रफूल्लित हो रहे थे। लंगूरों (बन्दरो) का कोलाहल मन में आनन्द पैदा करता था। यहां पर अनेक प्रकार के पेड़ हैं जिनमें से बहुतों को मैं नहीं पहचानता परन्तु बेल पत्थर सीता फल (शरीफा) बेरी, बांस, बन्ना और गूगल के पेड़ बहुत हैं नागफनी भी बहुत है जोकि कहीं कहीं पर रास्ते में एक प्रकार की दुविधा है। जब हम चारों तरफ से पहाड़ों की चोटियों के मध्य में आ जाते थे तो आवाज बड़े जोर से गूँजने लगती थी, यद्यपि हम नौ थे और हमारे पास एक बन्दूक भी थी परन्तु फिर भी हम को जङ्गली पशुओं और जङ्गली भीलों से एक प्रकार का भय सा मालूम होता था।

११ बजे हम कुण्ड पर पहुँच गये, इस कुण्ड में पहाड़ के ऊपर से बारह महीनों पानी आता रहता हैं करीब १०० गज तक यह पानी एक घाटी में हो कर आता हुआ दिखाई देता है परन्तु फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं दीखता है। यह नीचे किसी दरार में होकर आता है परशुराम जी यहां से करीब १००० फीट की ऊंचाई पर और रह जाता है। इस कुण्ड पर स्नान कर के और कपड़े धो कर ऊपर जाते हैं, क्यों कि ऐसा सुनने में आया है कि जो अपवित्र ऊपर जाते हैं उनको रास्ते में भोरें काट खाते हैं। इसलिये हम सबने भी ऐसा ही किया और २ बजे हम ऊपर को चढे।

यह चढाई बहुत कठिन है। रास्ते में हम ने शहद की मक्खियों के बहुत से छत्ते देखे और जाड़े की वजह से इन छत्तों में अब मक्खियाँ भी न थीं और इन्हीं को बहुत से आदमी भोरें बतलाते हैं। ऊपर पहाड़ की चोटी में एक गुफा है और यह ही परशुराम महादेव के नाम से प्रसिद्ध है गुफा बहुत छोटी सी है यहीं पर ही परशुराम जी ने तपस्या की थी यह बात बिलकुल सत्य ज्ञात होती है, क्यों कि गुफा का कुछ भाग अन्दर धूंवें से रङ्गा हुआ है, यहां पर गुफा के अन्दर ऊपर से पानी भी टपकता है जिसको बहुत से मनुष्य कहते हैं कि पहले यहां पर दूध टपकता था

यह स्थान अवश्य ऐसा ही है जहां पर एक आदमी एकान्त में अपना जीवन व्यतीत कर सकता है। उन मनुष्यों को धन्य है, कि जिन्होंने ऐसे स्थानों पर ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त किया। हमको गौरव करना चाहिये कि हमारे पुरखा ऐसे थे। और उनकी याद रखने के लिये ऐसे स्थानों की शोभा बढानी चाहिये। यह स्थानकुल करीब (४०००) चार हज़ार फीट की ऊंचाई पर है। कुछ देर वहां रूक कर फिर हम नीचे कुण्ड को उतर आये कुण्ड पर दो छोटी २ कोठरी बनी हुई हैं। इन में से एक में तो उदयपुर रियासत का चपरासी रहता है क्योंकि यह जोधपुर और उदयपुर रियासतों की हद है और दूसरी में रात को ठहरने वाले तीर्थ यात्री रहते हैं। यहां से एक पगदंडी मेवाड़ को भी जाती है।

कुण्ड पर हमने भोजन बनाया क्योंकि सब सामान हम अपने साथ ले गये थे। भोजन बनानें और खाने में हमको सूर्य्य अस्त हो गया इस लिये रात वहीं रहना पड़ा। आग जलाने को हमने बहुत सी सूखी लकड़ियां इकट्ठा कर ली थीं इस लिये हम सब कोठरी में आग जला कर उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारों ओर बैठ गये इस कुण्ड पर बहुत से जङ्गली जानवर रात को पानी पीने को आया करते हैं। रात के बारह बजे हमको चीते की आवाज सुनाई पड़ी, और हम सब एक साथ भयभीत हो गये क्यों कि हमारे पास बन्दूक टोपीदार थी और वह भी सिर्फ भरी हुई थी और बारुद भी पास में न थी परन्तु आग से सब जङ्गली जानवर डरते हैं। इस से चीता भी पानी पी कर आवाज करता हुआ वापिस चला गया। दूसरे दिन हम सब वहां से वापिस चले आये और आराम से अपने २ ठिकाने पहुंच गये।

यदि ध्यान पूर्वक भ्रमण किया जाय तो भूगोल और इतिहास की अनेकों बातों का ज्ञान होता है।

फतहसिंह अध्यापक मिडिल स्कूल बाली (मारवाड़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

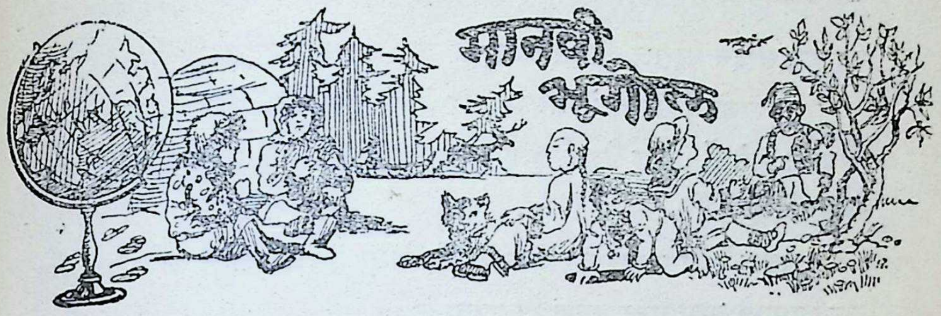

जापानी बालक

जब जापानी बच्चा पैदा होता है तब घर में बड़ी खुशी होती है उस की मां की सभी सखीसहेलियां बच्चे देखने आती हैं और उसके लिये खिलौने, सूखी मछलियां और अंडे लाती हैं।

बचपन में ही बालक की बड़ी बहिन उसको अपनी पीठ से बांध लेती है। जहां कहीं बहिन जाती है वहीं बच्चा भी पीठ पर चढ़ा हुआ पहुंचता है। जब ठंड पड़ती है तब वह कम्बल ओढ़ लेती है जिससे बच्चा भी गरम रहता है। जब धूप होती है तब वह छांह में खेलती है। खेलने कूदने के समय बच्चे को झटका अवश्य लगता है लेकिन वह उसकी परवाह नहीं करता है। वह सदा प्रसन्न रहता है। जापानी बच्चे को आप कभी रोता न पायेगें तीन वर्ष की उम्र में वह खड़ाऊ पहन कर चलने लगता है।

जापानी बच्चे पालतू जानवरों और खेल के बड़े शौकीन होते हैं। जहां कहीं बच्चा जाता है यह अपने साथ लम्बा बांस लिये रहता है। इसी से वह तरह तरह की उछल कूद करता रहता है।

हर एक जापानी बच्चा बड़ा होने पर सिपाही या मल्लाह बनना चाहता है। छोटे बालक भी झंडे, ढोल और बन्दूकों से खेला करते हैं। जब वे बड़े होते हैं तब उन्हें बहादुर होना और अपने देश के लिये मरना सिखाया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांचवे महीने का पांचवां दिन जापानी बच्चे के लिये बड़े आनन्द का दिन होता है। इस दिन झंडे का उत्सव होता है। हर एक बालक के घर में इसदिन काग़ज की बड़ी मछली हवा में उड़ती दिखाई देगी।

दुकानों में खिलौनों की भरमार होती है। खिलौनों में तरह तरह के सिपाही होते हैं। कुछ पैदल, कुछ घुड़सवार, कुछ बाजा वाले और कुछ सेनापति होते हैं।

लड़कों को लड़ाई का खेल पसन्द होता है। खिलौने की फौज देख कर जापानी बच्चा बड़ा .खुश हो जाता है।

लड़कियों का बड़ा दिन गुड़ियों का दिन होता है। इस दिन लड़कियां अपने मित्रों को गुड़ियां भेंट करती हैं। पुरानी गुड़ियां को भी नये कपड़े पहनाये जाते हैं।

जापानी लड़के पतंग भी बहुत उड़ाते हैं। डोरे में शीशा मल कर वे दूसरों की पतंगे काटते हैं। आजकल वे फुटबाल आदि और भी कई तरह के खेल खेलने लगे हैं।

लड़कियां घरों में साबुन के बबूले बनाती हैं। और शाम को जुगनू पकड़ती हैं।

गरमी के दिनों में वे खुट बढ़ई को पकड़ कर बांस के पिंजड़े में बन्द रखती हैं।

जापानी लड़के बड़े नम्र और आज्ञाकारी होते हैं। वे कमज़ोर और गरीबों की मदद करते हैं। वे बड़ी खुशी से अन्धों को रास्ते पर डाल देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिमालय प्रदेश के राजनैतिक विभाग

हिमालय अथवा हिन्दुस्तान के उत्तरी पर्वतीय प्रदेश में कई छोटे छोटे राज्य शामिल हैं। उत्तरी पश्चिमी सिरे पर काश्मीर और जम्मूराज्य है। काश्मीर के दक्षिण-पूर्व में चम्बा रियासत है जो पंजाब के काँगड़ा ज़िले के उत्तर में स्थित है। कांगड़ा ज़िले के पूर्व में कई छोटी छोटी (शिमला) रियासतें हैं। इनके पूर्व में टेहरी और गढ़वाल का राज्य है। अधिक पूर्व में कमायूं कमिश्नरी के गढ़वाल देहरादून, अलमोड़ा और नैनी-ताल के ज़िले हैं। इनके आगे ५०० मील तक नैपाल का राज्य फैला हुआ है। नैपाल के पूर्व में बंगाल प्रान्त का दार्जिलिंग का ज़िला है। दार्जिलिंग के उत्तर में शिकम का राज्य है। शिकम से आगे तिब्बत प्रदेश की तंग चुम्बी घाटी शिकम राज्य को भूटान से अलग करती है। भूटान के पूर्व में आका, डाफला, मीरी, और अभोर नाम की भयानक पहाड़ी जातियों का प्रदेश है।

काश्मीर

काश्मीर (क्षेत्रफल ८४००० वर्गमील, जन संख्या ३६ लाख) का राज्य प्रायः आयताकार है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी अधिक से चौड़ाई ३८० मील और पूर्व से पश्चिम तक सब से अधिक लम्बाई ५०० मील है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह प्रदेश ७२ और ८० अंश पूर्वी देशान्तर और ३२३२३०३० और ३७ उत्तरी अक्षांश के बीच में स्थित है। काश्मीर राज्य उत्तर में चीनीतुर्किस्तान, पूर्व में तिब्बत, पश्चिम में उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रान्त और दक्षिण पंजाब से घिरा हुआ है।

काश्मीर देश अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के लिये जगत्प्रसिद्ध है। काश्मीर का अधिकतर भाग पहाड़ी है। इस प्रदेश में हिमालय की प्रधान श्रेणियों के अतिरिक्त उत्तर पूर्व की ओर तिब्बत का पठार भी शामिल है। बीच में बर्फीली चोटियों और उपजाऊ घाटियां। हिमालय के पूर्वी भागों में प्रधान श्रेणियां बहुत ही पास पास हैं। इसलिये उनके बीच में तंग घाटियां है। पर काश्मीर में ये श्रेणियां कुछ दूर दूर हो गई हैं इसीसे इनके बीच में चौड़ी घाटियां सुन्दर झीलें और हिमागार बन गये हैं। अगर हम पंजाब के मैदान से काश्मीर में प्रवेश करें तो सब से पहले हिमालय की बाहरी श्रेणी मिलती है जो यहां पीर पंजाल कहलाती है। इस श्रेणी की औसत ऊंचाई केवल दस बारह हज़ार फुट है। यह श्रेणी पश्चिम से पूर्व को मुज़फ़्फराबाद (झेलम के किनारे) से किश्तवार (चनाब) तक चली गई और जम्बू प्रान्त को काश्मीर से अलग करती है। इस श्रेणी के आगे उत्तर में काश्मीर (झेलम) की चौड़ी घाटी है। यह घाटी प्रायः १२० मील लम्बी ६० मील चौड़ी और समुद्र तल से ६००० फुट ऊंची है। कहा जाता है कि यहां पहले एक विशाल झील थी जिसके सूखने से यह प्रायः समतल मैदान बन गया। यहां झेलम नदी में ६० मील तक नावें चल सकती हैं यह घाटी चारों ओर ऊंचे और बर्फीले पहाड़ों से घिरी हुई है। इसके उत्तर में हिमालय की प्रधान श्रेणी है जो यहां ज़ास्कर श्रेणी कहलाती है। यह श्रेणी सिन्ध नदी के मोड़ के पास गंगा पर्वत से दक्षिण-पूर्व की ओर चली गई है। यही श्रेणी सिन्ध की ऊपरी घाटी को झेलम की घाटी से अलग करती है। ज़ास्कर या प्रधान हिमालय की श्रेणी के उत्तर में सिन्ध की घाटी बड़ी विकराल है। सिन्ध नदी उत्तर में कराकोरम और दक्षिण में हिमालय से घिरी हुई है। कराकोरम पर्वत की सर्वोच्च चोटी माउंट गाडविन आस्टेन २८२५० फुट ऊंची है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका नीचे से नीचा दर्रा भी १८००० फुट ऊंचा है। यहीं पर कई विशाल हिमागार हैं। यह प्रदेश बहुत ही ऊंचा ढंडा और उजाड़ है और तिब्बत के पठार से मिलता जुलता है। शायक और गिलगिट नदियां इस प्रदेश का बर्फीला पानी सिन्ध नदी में ले आती हैं। सिन्ध नदी इस प्रदेश के एक भाग में १७००० फुट और दूसरे निचले भागमें ४००० फुट की उंचाई पर बहती है। नदी के दोनों किनारों पर कहीं कहीं दो तीन मील ऊंची पहाड़ी दीवारें हैं।

जलवायु— उंचाई के कारण गरमी का सब कहीं अभाव है ग्रीष्म काल अत्यन्त मनोहर होता है। पर शीतकाल में विकराल जाड़ा पड़ता है। उत्तरी घाटियों और हिमाच्छादित चोटियों से ठंडी हवा नीचे खिसक आती है और ठंडक बढ़ा देती है दक्षिणी घाटियों मे कुछ कम जाड़ा पड़ता है फिर भी झीलें कुछ कुछ जम जाती हैं। वर्षा कम होती है। वर्षा की यहां दो ऋतु हैं। गरमी में जून से सितम्बर तक और सरदी में दिसम्बर से अप्रैल तक पानी बरसता है। भीतर को ओर वर्षा की मात्रा और भी कम है। लेह के आस पास वर्षा और हिमापात दोनों की मात्रा साल भर में ३ इंच से अधिक नहीं होती है। इसी खुश्की के कारण दक्षिणी ढालों की अपेक्षा उत्तरी ढालों पर हिमरेखा अधिक ऊंचाई पर मिलती है।

बनस्पति—पहाड़ों के बीच के ढालों पर देवदार, सिन्दूर और चाड आदि के बन हैं। धान ७००० फुट की ऊंचाई तक उगता है। धान के सिवा मकई, कपास, तम्बाकू, ज्वार, बाजरा और दाल शीतकाल में, गेहूं जौ, सरसों, मटर आदि बसन्त ऋतु में होती हैं। पर काश्मीर की प्रसिद्ध उपज फल और मेवा है। सेव, नाशपाती शहतूत, अंगूर आड़ू, अखरोट अनार और बादाम आदि सभी फल खूब होते हैं शहतूत की अधिकता से श्रीनगर के आस पास रेशम भी बहुत तयारी किया जाता है। ढोर छोटे पर मज़बूत होते हैं। उनका रंग अक्सर काला होता है। गरमी आते ही हलके बैलों को छोड़ कर सभी जानवर पहाड़ों पर हांके दिये जाते हैं। भेड़ बकरी भी बहुत हैं। भेड़ की ऊंन से शाल, पट्टू आदि तरह तरह का ऊनी सामान बनता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काश्मीर और हिन्दुस्तान का व्यापार दिनों दिन बढ़ रहा है। हिन्दुस्तान से काश्मीर पहुँचने के लिये तीन प्रधान मार्ग हैं। सबसे दक्षिणी मार्ग जम्मू और बानाहाल दर्रे से होकर बीच का रावल पिंडी होकर और सबसे अधिक उत्तरी मार्ग हवेलियां और एबटाबाद होकर जाता है। काश्मीर में विलायती पक्का माल, शक्कर, नमक, चाय और तम्बाकू आदि सामान जाता है। वहां से ऊँनी सामान, फल और खाल हिन्दुस्तान को आता है। मध्य एशिया का व्यापार भी काश्मीर के ही मार्ग से होता है। रूसी (सोने) मुहरें रेशम और ऊन हिन्दुस्तान पहुंचाती है और सूती तथा रेशमी सामान वहां जाता है।

नगर—श्रीनगर झेलम नदी के दोनों किनारों पर बसा है। यह नगर घाटी के ऐसे भाग में स्थित है जहां पर पंजाब से आने वाला मार्ग उत्तर की ओर जाने वाले मध्य एशिया के मार्ग से मिलता है। यहां अक्सर बाढ़ आ जाती है। नगर के पास ही विशाल वुलर झील है। आना जाना अधिकतर नाव के द्वारा होता है। ज़मीन क़ीमती होने से झील में टट्टा बना कर मिट्टी छिड़क दी जाती है। इन्हीं चलताऊ खेतों पर ककड़ी और तरकारी भी उगा ली जातीं है। कभी कभी इन खेतों की चोरी भी हो जाती है। यह शहर बहुत पुराना है पर कभी कभी भूचाल आने से अधिकतर मकान लकड़ी के बने हुए हैं। पहले यहां शाल दुशाले बहुत बनते थे। आज कल यहां रेशम का एक बड़ा कारखाना भी है।

जम्मू—यह नगर बाहरी हिमालय के ढाल पर चनाब नदी की सहायक तापी नदी पर बसा हुआ है। काश्मीर में केवल एक वही नगर रेल का स्टेशन है। शीतकाल में महाराजा साहब यहीं रहते हैं। यहां से एक सुन्दर सड़क बानाहाल और इस्लामाबाद होकर पुरी नगर को गई है। इस्लामाबाद तक ही झेलम में नाव चल सकती है।

लेह नगर ११५०० फुट की ऊँचाई पर सिन्ध घाटी में बसा हुआ है। यह नगर लद्दाख की राजधानी है। यहीं से कराकोरम दर्रे में होकर चीनी तुर्किस्तान को मार्ग जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिलगिट नगर इसी नाम की नदी पर बसा है और ऊपरी सिन्ध के आगे हिन्दू कुश के मार्ग की रखवाली करता है।

इतिहास—काश्मीर का इतिहास बहुत पुराना है १४ वीं शताब्दी से यहां मुसलमानी हमला आरम्भ हुआ। १५८६ ई० में अकबर ने इसे मुगल साम्राज्य में मिला लिया मुग़ल राज्य के नष्ट होने पर काश्मीर में अफ़ग़ानों का अत्याचार रहा। पर रंजीत सिंह ने शीघ्र ही अफ़ग़ानों को मार भगाया। रंजीत सिंह के मरने पर सिक्खों और अंग्रेजों में युद्ध छिड़ गया सिक्खों की पहली लड़ाई के बाद ७५ लाख रुपये में काश्मीर का राज्य गुलाब सिंह को इस शर्त पर दिया गया कि वह दूसरी लड़ाई में सिक्खों का साथ न दे। उसके बाद तिब्बत से लद्दाख प्रदेश छीन लिया गया। इस समय काश्मीर में चित्राल आदि कई छोटे छोटे भाग शामिल हैं। काश्मीर की प्राय: ९० फीसदी जन संख्या मुसलमान है। पर शासन डोगरे राजपूतों के हाथ में है। उत्तर-पूर्व की ओर कुछ बौद्ध लोग रहते हैं

चम्बा

काश्मीर के पूर्व में चम्बा रियासत है जो लाहौर के कमीश्नर के अधिकार में है यह पहाड़ी प्रदेश २००० फुट से लेकर २२००० फुट तक ऊँचा है इसलिये केवल निचले भागों में ग्रीष्म में अधिक गरमी पड़ती है। शेष भागों की जलवायु मध्यम अथवा अत्यन्त शीत है। धान, मकई दाल, बाजरा, आदि फसलें काश्मीर के ही समान हैं। कुछ भागों में चाय और अफ़ीम भी होती है। यहां के ढोर छोटे होते हैं। भेड़ बकरी बहुत हैं। चम्बा शहर ही इस राज्य की राजधानी है। यहां कई सुन्दर मन्दिर हैं।

शिमला की पहाड़ी रियासतें

शिमला की पहाड़ी रियासतें एक ओर जालंधर और अम्बाला ज़िलों से और दूसरी ओर देहरादून और टेहरी के बीच में स्थित है यह प्रदेश अम्बाला के मैदान से आरम्भ होकर हिमालय की मध्यवर्त्ती श्रेणी तक फैला हुआ है। इसके पश्चिमी भाग का पानी व्यास और सतलज नदियों में जाता है। पूर्वी भाग का पानी यमुना नदी में आता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैपाल

नैपाल (क्षेत्रफल ५६००० वर्ग मील, जन संख्या ५६,००,०००) का राज्य प्राय: ५२० मील लम्बा और १०० मील चौड़ा है। यह राज्य ८० देशान्तर से ८८ पूर्वी देशान्तर और २६-२० से ३०-२२ उत्तरी अक्षांश तक फैला हुआ है। यह राज्य उत्तर में तिब्बत पश्चिम में कमायूं दक्षिण में संयुक्त प्रान्त और विहार पूर्व मेंदार्जिलिग और शिकम से घिरा हुआ है। नैपाल के धुर दक्षिण में तराई है। अधिक उत्तर में हिमालय की दक्षिणी और मध्यवर्त्ती श्रेणियां शामिल है। यहां की पर्वत श्रेणियों का कई घाटियों द्वाराने तोड़ दिया है। पश्चिम में प्रधान नदी घाघरा इसी की सहायक काली नदी नैपाल राज्य संयुक्त प्रान्त से अलग करती है धौलागिरि घाघरा की घाटी को गंडक की घाटी से अलग करता है। गंडक नदी नैपाल के मध्य भाग में होकर बहती है। सात सहायक नदियों के कारण इस नदी को सप्तगंडकी भी कहते हैं। पूर्वी नैपाल की प्रधान नदी कोसी या सप्तकोसी है। कोसी और गंडक के ही बीच में हिमालय का सब से ऊंची चोटी माउंट एवेरेस्ट स्थित है। नैपाल और शिकम की सीमा पर किंचिंचिगा पर्वत है जो कोसी की घाटी को तिब्त की घाटी से अलग करता है। नैपाल की घाटियां उपजाऊ और आबाद हैं। पर ये घटियों बहुत ही तंग हैं। केवल काठमांडू की घाटी २० मील लम्बी १५ मील चौड़ी समुद्रतल से प्राय: एक मील ऊंची है। इस प्रकार यह घाटी बहुत ही छोटे पैमाने पर काश्मीर घाटी से मिलती जुलती है।

जलवायु—नैपाल की तराई तथा दो तीन हज़ार फुट ऊंचे ढालों की जलवायु अच्छी नहीं है। वर्षा और गरमी की अधिकता से यहां ज्वर बहुत फैलता है। वर्षा प्राय: सब कहीं अधिक है। पश्चिमी भागों की अपेक्षा पूर्वी भागों में अधिक वर्षा होती है काठमाडू की औसत सालाना वर्षा ६० इंच है। पर ऊंचे भागों की जलवायु बड़ी अच्छीऔर स्वास्थ्य कर है।

उपज—नैपाल को साधारण उपज धान है। खेती अधिकतर हाथ से ही होती है। कुछ कुछ गेहूं, जौ और जई का खेती भी होती है। जई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोड़ों को खिलाई जाती है। हिमालय के ढालों पर साल, असैना आदि उपयोगी पेड़ों के बन है इसी प्रदेश में बाबर घास भी होती है जो रस्सा और काग़ज़ बनाने के लिये काम आती है। बांस से यहां तरह तरह की चीज़े बनती है।

व्यापार—नैपाल में खेती ही प्रधान पेशा है घरेलु काम के लिये मोटा सूती और ऊनी कपडा बुन लिया जाता है। नेवार लोग बरतन बनाने, लकड़ी खरादने और मिस्त्री का काम करते हैं। नैपाली लोग अनाज दाल तिलहन और (कागज़ बनाने के लिये) सवाई घास हिन्दुस्तान में ले आते हैं। और बदले में सूती कपड़े, पीतल, और लोहे के बरतन नमक और शक्कर अपने यहां ले जाते हैं।

नगर—नैपाल के तीन बड़े बड़े नगर घाटी में हीं बसे हैं। **काठमाँडू** शहर देश में उपजाऊ घाटी में बाघमती (गंडक की सहायक) के किनारे बसा हुआ है। यही नगर नैपाल की वर्तमान राजधानी है। दो मील दक्षिण की ओर पुरानी राजधानी **पाटन** नगर है। दोनों ही नगरों में सुन्दर मन्दिर और भवन है। चार मील दक्षिण पूर्व की ओर **भाटगांव** है नैपाली तराई के पश्चिमी भाग में कपिलवस्तु के भग्नावशेष हैं।

इतिहास—मुसलमानो हमला होने पर कुछ क्षत्री लोग नैपाल में जाकर बस गये। यही लोग आगे चल कर गुरखा कहलाने लगे। १८१४-१६ की लड़ाई में कमायू और गढ़वाल प्रान्त नैपाल से अलग कर दिये गये। पर इस लड़ाई के बाद गुरखा और अंग्रेजों में बराबर मित्रता बनी रही। इसी से गुरखा सिपाही भी अंग्रेजी फौज में भरती होते रहे हैं। गुरखा लोगों की बीरता जगत्प्रसिद्ध है। नैपाली लोग प्रायः सभी हिन्दू हैं। केवल कुछ लोग बौद्ध हैं नैपाली लोग बड़े ही स्वतन्त्रता प्रेमी होते हैं। इसी से वे अपने यहां विदेशियों का आना पसंद नहीं करते हैं और न उनके सुभीते के लिये अच्छी सड़कें बनाते हैं। नैपाल का शासन वहां के प्रधान मन्त्री के हाथ में रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिकम—(क्षेत्रफल ३००० वर्ग मील, जनसंख्या ६०,०००) का राज्य नैपाल के पूर्व में स्थित है। शिकम के उत्तरपूर्व मेंतिब्बत और दक्षिण में दार्जलिंग है। तिब्बत के लोग शिकम को देंजोंग (धान का प्रदेश) और शिकमवासियों को रोंगपा (घाटी में बसने वाले) कहते हैं। सबका सब शिकम हिमालय की बाहरी श्रेणी और मध्यवर्ती श्रेणी के बीच में स्थित है। दक्षिणी भाग समुद्र तल से केवल एक हजार से लेकर पांच हजार फुट तक ऊंचा है पर उत्तरी भाग एक दम १७ हजार फुट ऊंचा होगया है। वर्षा अधिक होती है। वार्षिक वर्षा १०० इंच से ऊपर होती है। तापक्रम ऊंचाई के अनुसार है। पांचहज़ार फुट तक उष्णकटिबन्ध की गरमी पड़ती है। ५ हज़ार से १३ हज़ार फुट तक शीतोष्ण कटिबन्ध का मध्य तापक्रम रहता है। इससे आगे कड़ाके का जाड़ा पड़ता हैं और पेड़ों का अभाव हैं। ऊँचाई के अनुसार वनस्पति भी भिन्न भिन्न है वैसे विषुवतरेखा और ध्रुव के बीच की सभी तरह की वनस्पति मिलती है मकई, धान, गेहूँ, और जौ यहां की प्रधान फसलें हैं बगीचों में केला नारंगी और दूसरे फल उगते हैं। ढोर भेड़ और याक यहां पालतू जानवर हैं। यहां के महाराजा के महल तुमलोंग और गँगटोक में बने हैं। पर अंग्रेंजी रेज़ीडेन्ट गंगटोक में रहता है।

भूटान—(क्षेत्रफल २०,००० वर्गमील, जनसंख्या ३,००,०००) का देश हिमालय की मध्य वर्ती श्रेणी और पूर्वी बंगाल और आसाम के बीच में स्थित है। पूर्व में ८८ देशान्तर से लेकर पश्चिम में ९२ देशान्तर तक भूटान की लम्बाई प्राय: १९० मील है। यह सब का सब देश तंग घाटियों और ऊंचे पर्वतों का प्रदेश है। आने के जाने के मार्ग अत्यन्त दुर्गम हैं। यहां की जलवायु और उपज शिकम की सी ही है। मकई ७००० फुट की उंचाई तक होती है। धान, गेहूं, सरसों और जौ भी उगाये जाते हैं। पर सबसे अधिक आमदनी दारचीनी से होती है। ज़ीनेदार खेतों में सिंचाई की जरूरत होती है। पर ग़रीब भूटानी लोग सिंचाई पर अधिक नहीं खर्च कर सकते हैं। कुछ रेशम भी तयार किया जाता है। भूटान से लकड़ी;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारंगी, मोम और ऊन हिन्दुस्तान को आती है। विलायती कपड़ा और पान तम्बाकू वहां पहुँचती है।

इतिहास—भूटानी लोग अधिकतर बौद्ध हैं ये लोग पेनलोप या शासक, पुजारी और किसान हैं। १७७२ ई० में जब भूटानी लोगों ने कूचबिहार पर हमला किया तब से उनका अंग्रेज़ों से सम्बन्ध हुआ। १८६५ ई० भूटान के साथ एक सन्धि हुई तब से भूटानी लोग ५०१००० रु० वार्षिक मिलने लगे। १६१० ई० से भूटान को १ लाख रु० सालाना मिलता है लेकिन बाहरी मामलों में उन्हें ब्रिटिश सरकार की सम्मति के अनुसार काम करना पड़ता है। शीतकाल में पुनखा यहां की राजधानी रहती है। ताशीसूदन गरमी में राजधानी रहती है। आने जाने के मार्ग दुर्गम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-संसार में एकदम नई रचना !

"भारतवर्ष का भूगोल"

लेखक—

भूपरिचय के रचयिता, "भूगोल"—सम्पादक
पं० रामनारायण मिश्र, प्रोफेसर
आफ ज्याग्राफ़ी, ई० सी०
कालेज, प्रयाग ।

इस पुस्तक को आरम्भ करने के पहले लेखक ने सारे भारतवर्ष, ब्रह्मा और लंका की यात्रा की थी ।

पुस्तक में २ तिरंगे, ४ चित्रमय नक़शे और १०० से ऊपर सादे नक़शे और चित्र दिये गये हैं ।

पुस्तक में सब कहीं १९३१ की मनुष्य गणना के अंक हैं ।

भारतवर्ष के भूगोल सम्बन्धी सभी जानने योग्य विषयों पर विद्वत्तापूर्ण प्रकाश डाला गया है ।

अब तक भूगोल की कोई पाठ्य पुस्तक इतनी विस्तृत यात्रा के आधार पर नहीं लिखी गई । कोई पुस्तक इतने मौलिक नक़शों और चित्रों से सुसज्जित नहीं है ।

फिर भी मूल्य केवल २) रुपये ।

"भूगोल" के ग्राहकों और अपने क्लास में प्रयोग करने वाले भूगोल के अध्यापकों के लिये ख़ास रियायत होगी । आर्डर शीघ्रही भेजिये ।

मैनेजर "भूगोल" प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिनलैण्ड वालों का स्नान

फिनलैण्ड के वासी ईश्वरी प्रकोप से अथवा अपने दुर्भाग्य से शीतमय टुंड्रा प्रदेश में फेंक दिये गये हैं। पर उनमें सामाजिक प्रेम अधिक है। सारे देशवासी बन्धुत्व के असीम और अटूट प्रेम-सूत्र में बँधे हुए हैं। यह किसे ज्ञात था अथवा किसे आशा थी कि ऐसे ठण्ढे और उजाड़ प्रदेश के रहने वाले, जिनका देश अनेक द्वीप-समूहों और असंख्य विशाल झीलों से भूल भुलैयाँ ऐसा बना है, इस अलौकिक एवं नैसर्गिक गुण से ओत-प्रोत होंगे, जिस गुण से आजकल की सभ्य कहाने वाली जातियाँ सर्वथा वंचित हैं।

फिन लोग प्रत्येक कार्य में, चाहे वह सरल हो अथवा कठिन, एक दूसरे को सहायता देते हैं। यह उनका प्राकृतिक गुण है। जब सारे पड़ोसी एकत्रित होकर किसी एक कुटुम्ब की सहायता करते हैं तो उसे वे टाको (सहयोग) कहते हैं। इस प्रकार प्रत्येक मनुष्य को उसके पड़ोसियों से हर समय सहायता तथा सहानुभूति मिलती है किन्तु यह विश्व-वृन्दनीय रीति उनको फसल काटने के समय में अत्यन्त उपयोगी और लाभदायक प्रतीत होती है।

फिन लोगों के सारे काम उनके पड़ोसियों के साथ होते हैं, यहाँ तक कि वे साथ ही स्नान भी करते हैं। यह स्नान प्रत्येक शनिवार को मध्यान्ह के उपरान्त होता है। स्नान की यह विधि दूसरे देश वालों के लिये अत्यन्त विचित्र और कौतूहल पूर्ण होती है।

उनका स्नानगृह लकड़ी का बना होता है, जिसमें केवल एक दरवाजे को छोड़ कर और कोई छिद्र आदि नहीं होते, जिनसे बाहर की ठंढी वायु आ सके। इस कमरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बीच में कुछ शिला खण्ड रक्खे रहते हैं। यह इस रीति से रक्खे जाते हैं कि उनके नीचे आग सरलता पूर्वक जल सके।

किन्तु शायद आप को यह देख कर आश्चर्य होगा कि वहाँ पर सारे अड़ोस-पड़ोस के मनुष्यों के स्नान के लिये एक भी छोटा अथवा बड़ा पानी रखने का बर्तन नहीं है, किन्तु उसके स्थान पर कुछ पेड़ के लट्ठे कमरे में तीन चार कतारों में पड़े हुए दिखलाई पड़ेंगे जो स्नान के समय बेंचों का काम देते हैं।

शनिवार को प्रातःकाल ही से उन पत्थरों के नीचे आग जला दी जाती है, जो दोपहर तक ख़ूब जला करती है। जब वे पत्थर ख़ूब गर्म हो जाते हैं तब कोई औरत आकर वहाँ की राख साफ कर जाती है और एक लड़का कुछ सनौवर की पतली पतली टहनियाँ और एक बड़े बर्तन में पानी रख जाता है।

ज्योंही यह समाचार, कि स्नानगृह तैयार है, पड़ोसियों को मिलता है वे सारे बाल बच्चों के साथ अपने अपने घरों में कपड़े खोल कर रख देते हैं और बिना किसी प्रकार की लज्जा और संकोच के गुसलखाने की ओर दौड़ते हैं। यह लीला ग्रीष्म ऋतु में अत्यन्त हास्य-जनक होती है किन्तु जरा उस भयंकर हेमन्त ऋतु को सोचिये जब वहाँ का तापक्रम २० डिग्री फारेनहाइट अथवा इससे भी कम होता है।

लेकिन स्नानगृह काफ़ी गर्म रहता है और ज्योंही सारे आदमी अन्दर पहुँच जाते हैं कमरे का दरवाज़ा बन्द कर लिया जाता है। और प्रत्येक मनुष्य उन्हीं पेड़ के लट्ठों पर बैठ जाते हैं। इसके बाद एक आदमी थोड़ा थोड़ा जल उन जलती हुई शिलाओं पर छोड़ता है। यह पानी गर्म पत्थर पर गिरते ही भाफ के रूप में बदल जाता है और कमरे में भर जाता है। कुछ समय तक यही काम जारी रहता है और कमरा भाप द्वारा इतना गर्म हो जाता है कि उन लोगों के शरीरों से पसीना बहने लगता है।

अब शायद आप प्रश्न करेंगे कि सनौवर या बिर्च की छड़ियाँ किस काम आती हैं। किन्तु प्रश्नोत्तर सुन कर आप हँसने लगेंगे। स्नान करने वालों में से प्रत्येक मनुष्य एक एक छड़ी ले लेता है और तब वे एक दूसरे को ख़ूब पीटते हैं। ऐसा करना वे एक खेल समझते हैं और उनको विश्वास है कि इस रीति से उनके शरीर के रक्त का प्रवाह अत्यन्त तीव्र हो जाता है जो अत्यन्त लाभदायक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नान समाप्त होने के उपरान्त वे स्नानगृह से निकल कर अपने अपने घरों की ओर दौड़ लगाते हैं किन्तु मार्ग में वे दो तीन बार बरफ में अवश्य लोट लगाते हैं। इस लोट के बाद वे भाग कर घर पहुँचते हैं और कुछ समय तक आराम करने के बाद अपने अपने वस्त्र धारण करते हैं।

यहाँ ग्रीष्म ऋतु में समुद्र तट के गाँवों में समुद्र-स्नान की ख़ूब धूम रहती है। किन्तु वहाँ भी फिन लोग पड़ोसियों के साथ ही और नंगे होकर स्नान करते हैं। किन्तु नगरों में श्रीमान फिन लोगों के पृथक पृथक स्नानालय बने होते हैं जिनमें प्रायः सारा कुटुम्ब एक साथ ही वाष्प-स्नान करता है। इस स्टीम-बाथ के पश्चात् वे लोग भी गाँव वालों के समान किसी झील अथवा समुद्र के ठंढे पानी में गोते अवश्य मारते हैं।

अयोध्या प्रसाद जायसवाल

---

२००) रुपये का इनाम लेने के लिये एक दम "भूगोल" के ग्राहक हो जाइये अथवा १) रुपया प्रवेश शुल्क (फी) भेजिये। ग्राहकों और प्रवेश शुल्क भेजने वालों को प्रवेश पत्र (फार्म) मुफ़्त मिलेगा। केवल डाक व्यय के लिये एक -) आने का टिकट भेजना पड़ेगा।

मैनेजर, "भूगोल"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

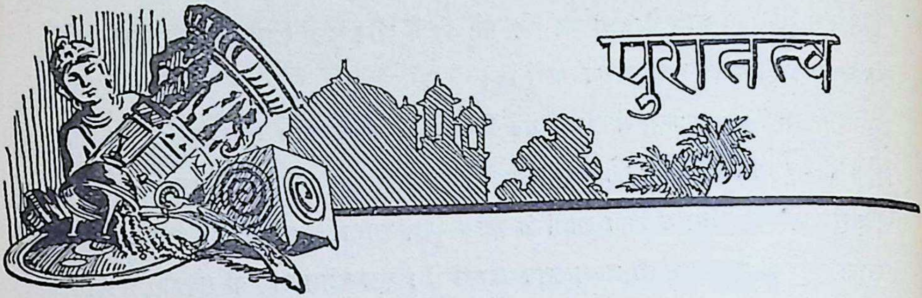

प्राचीन भूगोल

तोयान्तः स्थां महीं ज्ञात्वा जगत्येकार्णवीकृते ॥

अनुमानात्तदुद्धारं कर्तुं कामः प्रजापतिः ॥ ७ ॥

अकरोत्स्वतनू मन्यां कल्पादिषु यथा पुरा ॥

मत्स्य कूर्मादिकां तद्वद्वाराहे स्थितः ॥ ८ ॥ विष्णु पुराण प्रथमोंऽशः

कल्प के आदि में पृथ्वी के ऊपर पहले तीन बड़े बड़े पठार उत्पन्न हुए जिनके नाम ये थे।

एक—कश्यप या कूर्म (कछुवा)

दूसरा—मत्स्य या मच्छ (मछली)

तीसरा—शेष (सर्प)

कश्यप की सीमा—कश्यप दुनिया में सब से बड़ा पठार है इसकी सीमा उत्तर में आर्कटिक महासागर; पश्चिम में यूराल पहाड़, यूराल नदी और कास्पियन सागर; दक्षिण में ईरान, हिन्दू-कुश पर्वत, आमू दरिया, अरल सागर, सर दरिया, अलाई टाघ, पामीर, काराकुर्रम पहाड़, सिन्धु नदी, सतलज नदी, हिमालय पर्वत, बर्मा, पटकोई पर्वत, मीकाङ्ग नदी, कम्बोडिया और कोचीन चीन और पूर्व में चीन-सागर, पीला सागर, जापान सागर, ओखोटस्क सागर और बैरिङ्ग सागर हैं।

कश्यप का रूप—कश्यप का रूप एक कछुवे के समान है जिसकी गर्दन (१) टौनकिन और एनाम; दाहिना अगला पैर (२) सिन्धु व सतलज नदियों के बीच का देश काश्मीर और पञ्जाब; (३) बाँया अगला पैर कोरिआ दाहिना पिछला पैर (४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काराकुम का रेगिस्तान, कास्पियन सागर, ईरान व आमू नदी के बीच का देश; बाँया पिछला पैर (५) केमस्चाटका प्रायद्वीप; पीठ (६) तिब्बत (७) पूर्वीय तुर्किस्तान (८) मंगोलिया (९) मंचूरिया (१०) चीन और पिछाड़ी का भाग (११) साइबेरिया और (१२) पश्चिमीय तुर्किस्तान हैं।

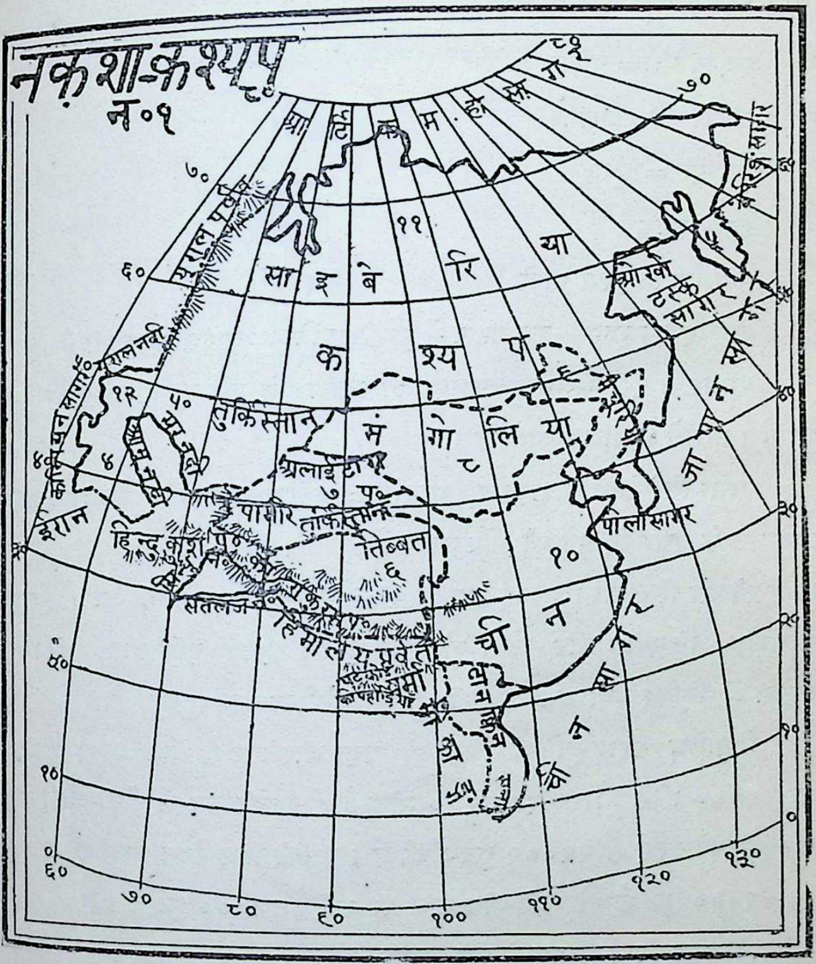

कश्यप का नाम—इस पठार का नाम कश्यप या कूर्म पर पाया जाता है जैसे—

कूर्म देश=कोरिया

कश्यप मेरु=काश्मीर देश

कूर्म पर्वत=काराकुर्रम पहाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्यप शृङ्ग=किञ्चिनचिङ्गा

कूर्म मरुस्थल=काराकुम का रेगिस्तान

कश्यप सागर=कैस्पिअन सागर

कश्यप पर्वत=कोहकाफ

कश्यप पादुका=कैमिस्चाटका

कश्यप वंश=कास्पियन रेस

कश्यप गढ़=काशगर

कूर्म द्वीप=क्यूराइल

कूर्म=खुर्रम

कूर्म घाटी=कुर्रम घाटी

कश्यप का गुण—इस पठार में पामीर दुनियां की छत कहलाती है ।

पामीर से एक सिलसिला पहाड़ों का तिब्बत के दक्षिण, दक्षिण-पूर्व की ओर जाता है । उसको हिमालय कहते हैं ।

दूसरा सिलसिला कराकुर्रम, क्विनलिन; अल्टाई टाघ और नानशान पहाड़ों का तिब्बत के उत्तर में, पूर्व की ओर जाता है ।

तीसरा सिलसिला अलाई टाघ (Alai Tag), थानशान, अल्टाई, सावन याबलोनोई, खिनगान और स्टेनो वोई पर्वतों का पूर्वीय तुर्किस्तान, मंगोलिया मंचूरिया में गुज़रता हुवा उत्तर पूर्व की ओर साइबेरिया तक पहुँचता है ।

हिमालय पहाड़ दुनिया में सब से बड़ा और सब से ऊँचा पहाड़ है इसकी लम्बाई १५०० मील और चौड़ाई २०० मील है । इसकी सब से ऊँची चोटी सदाशिव समुद्र की सतह से २९००२ फुट ऊँची है । इसकी हिम रेखा उत्तरीय ढाल पर करीब १६००० फुट है और दक्षिणीय ढाल पर करीब १८००० फुट है ।

तिब्बत दुनिया में सब से ऊँचा पठार है ।

जैसे कछुवे की पीठ पर पानी नहीं ठहरता चारों ओर को ढलक जाता है वैसे ही कश्यप पठार की पीठ तिब्बत, पूर्वीय तुर्किस्तान और मंगोलियादि में पानी नहीं ठहरता है ।

तिब्बत का पानी सिन्धु, झेलम, चैनाव, रावी, व्यास, सतलज, यमुना, गङ्गा, गोमती, घाघरा, गंडक, ब्रह्मपुत्रा, ऐरावती, मीनाम, मीकाङ्ग, याङ्गटिसी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किआङ्ग और ह्वांगहो नदियों के द्वारा, पूर्वीय तुर्किस्तान का पानी सर और आमू दरियाओं के द्वारा और मंगोलिया का पानी आमूर, लीना, यनीसी, ओबी और इरिटिश नदियों के द्वारा बाहर निकल जाता है इसीलिये तिब्बत, पूर्वीय तुर्किस्तान और मङ्गोलिया सदा सूखे के सूखे रहते हैं। यहाँ खेती बहुत ही कम होती है ऊन और दूध से लोगों की गुज़र होती है।

साइबेरिया और पश्चिमीय तुर्किस्तान कश्यप की पिछाड़ी का भाग कहा जा सकता है जैसे कछुवे की पिछाड़ी का ढाल थोड़ा थोड़ा उतरता हुआ होता है इसी तरह साइबेरिया का ढाल बहुत मन्द है। इसीलिये लीना, यनीसी, ओबी आदि नदियों का बहाव बहुत धीमा है। कश्यप के पूर्वीय किनारे पर प्रशान्त महासागर में कछुवे कसरत से पाए जाते हैं इन सब कारणों से इसको कश्यप कहा गया है।

शेष पुनः

नारायण प्रसाद मौहनियाँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

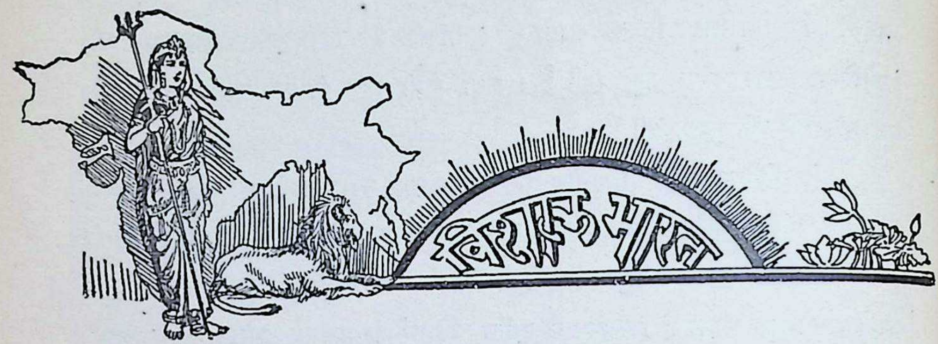

तिब्बत के किसान

तिब्बत के ऊँचे ढाल निस्सन्देह उजाड़ हैं। पर सब का सब देश उजाड़ नहीं है। निचली घाटियों की कम से कम $\frac{3}{4}$ ज़मीन हर साल कोई न कोई फसल उगाने के काम आती है। ये घाटियाँ भी समुद्रतल से दो ढाई मील ऊँची हैं। इसलिए ठंड के कारण बारह महीनों में उनसे केवल एक फसल उग सकती है। इस से खेतों पर अधिक ज़ोर नहीं पड़ता है और उनकी उपजाऊ शक्ति ज्यों की त्यों बनी रहती है। इसके अतिरिक्त तिब्बती किसान गोबर की खाद भी डालते हैं। कुछ खाद नदियों के मटीले पानी से भी मिल जाती है।

वास्तव में इस देश में खेतों की कमी नहीं है। कमी किसानों की है। अविवाहित लामाओं की अधिकता से यहाँ की आबादी घट रही है। इसी से खेती के योग्य बहुत सी अच्छी ज़मीन बिना जुती-बुई पड़ी रहती है। इसी से किसान लोग ज़मींदार की आज्ञा मिलने पर ही अपना गाँव छोड़कर दूसरे भागों में जाने पाते हैं। इस बीच में खेत को जोतने, बोने और लगान को अदा करने की ज़िम्मेवारी घर वाले लेते हैं।

तिब्बत के पठार की प्रधान फ़सल जौ है। इसके बाद मटर, गेहूँ और सरसों की बारी आती है। मूली, शलगम भी बहुत होती है। आलू कम होता है। गेहूँ की खेती १२,००० फुट से नीचे ही होती है। पर जौ का सब कहीं साम्राज्य है। यहाँ सफेद (ने कार्मो) और काले (ने नाक) दो प्रकार के जौ होते हैं। जौ के साथ अक्सर मटर भी मिला देते हैं। जई भी बहुत होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेल के लिये सरसों बोई जाती है। तेल खाने और लगाने के काम आता है। पर गड़रिये लोग अपने और अपने बच्चों के शरीर पर तेल की जगह मक्खन मला करते हैं। पर तेल या मक्खन लगभग दो पहर को मला जाता है क्योंकि दूसरे समय पर कड़ी सरदी पड़ती है। कड़ी सरदी के कारण ही तिब्बत में शाकभाजी या हरी तरकारी भी अधिक नहीं उगती है। केवल चीनी लोग बड़े शहरों के आस पास कुछ तरकारी उगाते हैं।

निचले भागों और ख़ासकर पूर्वी तिब्बत में फल भी बहुत होते हैं। आड़ू, अखरोट, सेब, नाशपाती बहुत हैं।

लासा शहर की दूकानों में सूखे फल निचले भागों से आते हैं।

नैपाल और शिकम के निचले भागों में मकई एक प्रधान फसल है। पर तिब्बत में इसका प्रायः अभाव है। यही हाल चावल का है। भूटान में ८००० फुट तक चावल उगता है। यही चावल भूटान और नैपाल से यहाँ बिकने आता है। इस प्रकार नैपाल, शिकम और भूटान का तिब्बत से स्वाभाविक सम्बन्ध है।

मध्यवर्त्ती तिब्बत में कमज़ोर खेत को हर दूसरे या तीसरे वर्ष यों ही छोड़ देते हैं। उस में कोई फसल नहीं उगाई जाती है। पर अच्छे खेतों में लगातार खेती होती है। फसलें भी अदल बदल कर होती हैं। किसी साल जौ, किसी साल मटर और किसी साल गेहूँ बोया जाता है। अक्सर जौर मटर या जौ और सरसों को मिला कर बोते हैं। तिब्बत में फसल कुआर या आश्विन महीने में काटी जाती है। बोने का कोई एक महीना नियत नहीं है। कभी कुआंर में, कभी फाल्गुन में और कभी चैत्र या वैशाख में खेत बोये जाते हैं। कमज़ोर खेत कुआंर में, अच्छे खेत वसन्त ऋतु में बोये जाते हैं। पर अगर अच्छे खेत भी कुआंर में बो दिये जावें तो फसल अच्छी होती है। इसमें मेहनत अधिक पड़ती है। शिकम नैपाल और दार्जिलिंग में गेहूँ और जौ ३००० से ६००० फुट तक की ऊँची ज़मीन पर शीत काल के आरम्भ में बोये जाते है। यहाँ ये चैत या बैशाख में काटे जाते हैं। यदि इसके बाद फसल खेत में बनी रहे तो गरमी से उसके झुलसने या वर्षा से उसके सड़ने का डर रहता है।

किसानों के हल, फावड़ा आदि औज़ार बहुत सीधे सादे होते हैं। पर किसान लोग अपने याक या बैल को बहुत सजा कर रखते हैं। उसकी गरदन और सिर पर रंग विरंगी ऊन और पंख लगे रहते हैं। कभी कभी वे उसे कौड़ियों की माला पहनाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। याक, खच्चर और गधे यहाँ के मुख्य जानवर हैं। गधे बड़े सस्ते हैं। पर वे बहुत सा काम करते हैं। कुत्ते और सुअर भी बहुत पाले जाते हैं। सुअर अक्सर चीनी लोगों के यहाँ मिलते हैं।

यहाँ की खुश्क जलवायु में सिंचाई की बड़ी ज़रूरत होती है। सिंचाई की नहर खोदने और मरम्मत करने का काम किसान लोग मिल जुलकर कर लेते हैं। जो किसान अधिक बीज बोते हैं वे अधिक देर तक काम करते हैं। जो थोड़ा बीज बोते हैं उनका खेत भी छोटा होता है। इसलिये वे सिंचाई का काम भी थोड़ा ही करते हैं। सिंचाई का काम बहुत पुराना है और अतिशू नामी भारतीय भिक्षु ने लासा के पास टोल में अब से ८०० वर्ष पूर्व आरम्भ किया था। सिंचाई सम्बन्धी झगड़े पंचायत (ज़ोज पौन) के द्वारा तय हो जाते हैं पर कभी कभी ये मुक़दमे लासा में तय होने के लिये पहुँचते हैं। जब किसी साल में न पानी बरसता है और न बरफ़ गिरती है तो किसानों को सिंचाई के लिये कष्ट उठाना पड़ता है। वे सब मिल कर वर्षा के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

तिब्बत में खेत जोतने का काम मरद करते हैं पर बीज औरतें बोती हैं। नराने, सींचने और गाहने का काम दोनों करते हैं। पर दूध दुहने और मठा फेरने का काम औरतें ही करती हैं। फ़सल कटने के बाद उसे एक चबूतरे पर फैला देते हैं। फिर उस पर याक की दाँय चलाते हैं या डंडे से झोरते हैं। अन्त में कठौतों में भर कर उसे ऊपर से नीचे छोड़ते हैं जिससे दाना नीचे ठहर जाता है और हवा से भूसा कुछ दूर पर जा कर ठहरता है। यहाँ जल शक्ति अपार है इसलिये आटा पनचक्कियों से पीसा जाता है। बीस सेर आटे की पिसाई के लिए यहाँ १ सेर अन्न दिया जाता है।

तिब्बत में ओले अचानक गिरते हैं और बड़े भयानक होते हैं। उनसे फसल को बड़ा नुक़सान होता है। बाढ़ यहाँ बहुत नहीं आती है। पर बड़ी नदियों की बाढ़ को रोकने के लिये बाँध बना दिये जाते हैं। लासा के पास क्यिचू में इसी तरह के बांध बने हैं। पर किसान को सब से अधिक डर पाले से होता है। जहाँ चार छः दिन लगातार पाला पड़ा वहीं फसल नष्ट हो जाती है। इन दैवी आपत्तियों से बचने के लिये तिब्बत के लोग अक्सर प्रार्थना किया करते हैं।

किसान लोग अपने जानवरों के लिये गोचर भूमि अवश्य रखते हैं। जहाँ खेती बहुत होती है (जैसे चुम्बी घाटी में) वहाँ भी जानवारों के चरने के लिये ज़मीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ दी जाती है। गरमी और सरदी के लिये चरागाह भिन्न भिन्न हैं। चरागाहों में चरानेवालों से फी जानवर नाममात्र का लगान भी लिया जाता है। यह लगान लोगों के ही काम में लगाया जाता है। फिर भी कुछ लोग बिल्कुल लगान नहीं देते हैं।

यहाँ के किसानों के मकान मज़बूत और शानदार होते हैं। दीवारें पत्थर या कच्ची ईंटों की बनी होती हैं। तिब्बत की ख़ुश्क जलवायु में कच्ची ईंटें जल्द नहीं गलती हैं। घर को गरम रखने के लिये फ़र्श लगभग १ गज़ गहरा बना लिया जाता है। तिब्बत के मकान अक्सर एक आँगन के चारों ओर बने होते हैं। वे दो-तीन मंज़िल के होते हैं। उनका बराम्दा खुले हुए आँगन की ओर होता है। सब से नीचे के कमरों में जानवर बाँधे जाते हैं। इनके शरीर की गरमी से ऊपर वाले कमरे भी गरम रहते हैं। नीचे के कमरे में ही अनाज और दूसरा सामान भी रक्खा जाता है। तिब्बत की शीतल और खुश्क जलवायु में अनाज दो तीन सौ वर्ष तक बिना बिगड़े हुए ज्यों का त्यों रक्खा रहता है। तीन चार वर्ष तक मांस भी यहाँ नहीं बिगड़ता है। ऊपर के कोठे पर मनुष्य रहते हैं। ज़ीना पत्थर का बना होता है। धनी लोग सीढ़ी भी रखते हैं। छत चपटी होती है और देवदारु की लकड़ी और मिट्टी से छाई जाती है। मिट्टी को कूट कर ठोस कर देते हैं। जिन निचले भागों में पानी अधिक बरसता है वहाँ घर ढलवाँ छत या छप्पर से छाये जाते हैं। छत को रोकने के लिये थोड़ी थोड़ी दूर पर लकड़ी के खम्भे लगे होते हैं। खम्भों पर नक़्क़ाशी होती है। वे रंगे भी रहते हैं। धनी लोगों के घरों में कई चौकियाँ और गद्दे होते हैं। इन गद्दों के ऊपर कपड़ा रहता है। लेकिन उनके नीचे ऊन या घास भर दी जाती है। एक कोठरी मूर्तियाँ और पूजा का सामान रखने के लिये होती है। सामूहिक पूजा के लिये शंख बजाया जाता है जिसे सुनते ही लामा और दूसरे लोग इकट्ठे हो जाते हैं। चपटी छत बड़े काम की होती है। इस पर अनाज कूटा जाता है और घास सुखाई जाती है। यहीं इंधन रक्खा जाता है।

तिब्बत के किसान बहुत सवेरे उठते हैं और हाथ मुँह धोकर थोड़ी देर "मणि-पद्म हुम्" का जप करते हैं। फिर वे अपने खेत में काम पर जाते हैं अथवा जंगल से इंधन लाते हैं। जाने से पहले वे चाय पीते हैं और कलेवा करते हैं। दो पहर के पहले घर की स्त्रियाँ जौ का दलिया, रोटी और मूली खेत में ले आती हैं। अगर खेत बहुत दूर होता है और खेत में काम करनेवाले बहुत होते हैं तो वे वहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकर भोजन बनाती हैं। एक दो बजे पूरा भोजन किया जाता है। शाकभाजी मक्खन रोटी अधिक खाई जाती है। कभी कभी मांस भी खाया जाता है। इस भोजन के बाद वे शाम तक काम करते हैं। शाम का भोजन समाप्त कर के वे कुछ जप करते हैं और फिर गहरी नींद सो जाते हैं।

The last date for receiving names for "Bhugol" competition prizes of Rs. 200/ is 31st of October 1931. Be sure to subscribe to "Bhugol" and send your name for competition at once.

२००) रुपये के "भूगोल" संघर्ष में भाग लेने वालों को ३१ अक्तूबर सन् १९३१ तक अपना नाम हमारे यहाँ भेज देना चाहिये। अगर आप ग्राहक नहीं हैं तो २००) रुपये का इनाम लेने के लिये एक दम "भूगोल" के ग्राहक बन जाइये।

मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

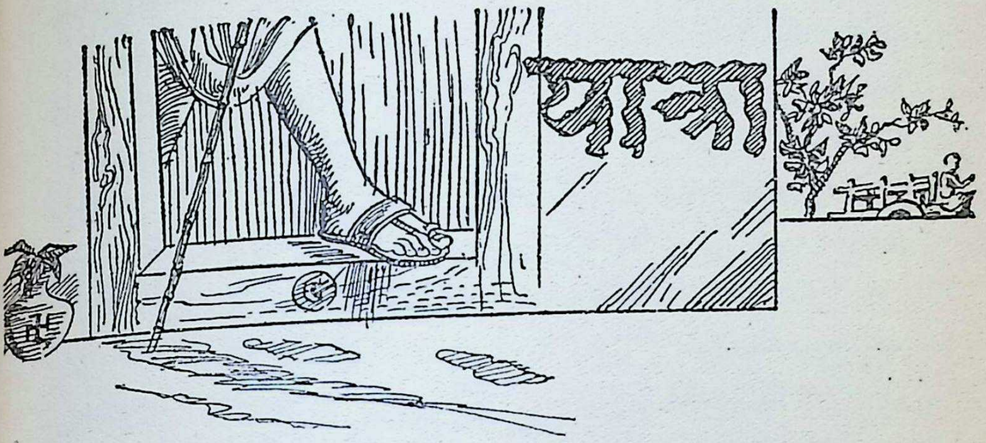

दुनिया के इर्द गिर्द

[**नोट**—पिछले दो वर्षों में मुझे दुनिया के इर्द गिर्द चक्कर लगाने का अवसर मिला। "भूगोल के एडिटर साहब के हुक्म के अनुसार इस सफर का मुख़्तसर हाल कई भागों में "भूगोल" के पढ़ने वालों के लिए भेंट करता हूँ।]

पहिला भाग (कोलम्बो से नेपिल्स तक)

रामेश्वरम् से धनुश्कोटी तक साउथ इंडियन रेलवे की बोट मेल रेतीले मैदानों में से बहुत धीरे धीरे होती हुई निकली मानों भारतवर्ष को छोड़ते हुए उसका भी दिल दुःखित था। अंत में वह क़रीब ४ बजे शाम को समुद्र के तट पर आ लगी। पास ही एक जहाज़ खड़ा था। घंटे भर में सब सामान और मुसाफिर जहाज़ पर सवार हो गये और ठीक पाँच बजे "हारडिङ्ग" जहाज़ लंका की ओर चल पड़ा। पर सब की आँखें भारतवर्ष के किनारे की तरफ लगी रहीं—धीरे धीरे किनारा दूर होता गया और थोड़ी ही देर में चारों तरफ़ पानी ही पानी नज़र आता था। अब जहाज़ के दूसरी ओर जाकर लंका की ओर सब की आँखें लगीं। थोड़ी देर में अँधेरा हो गया और सब कुरसियों पर आकर बैठ गये। सात बजे तलेमनार पहुँच कर जहाज़ रुक गया और वहाँ फिर सब सीलोन रेलवे पर सवार हो गये। सीलोन रेलवे ईस्ट इण्डिया रेलवे की तरह बड़ी रेल है। पर इतना ज़रूर कहना पड़ेगा कि ईस्ट इण्डिया रेलवे की दूसरे दर्जे की गाड़ियाँ लंका के रेल के मुक़ाबले में बहुत अच्छी हैं।

दूसरे दिन सबेरे ही हम कोलम्बो में पहुँचे। लंका की भूमि बड़ी सुन्दर है और चारों तरफ हरा भरा मालूम पड़ता है मानो लगातार घाटियाँ, बाग़ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत बी० बी० मालवीय, एम० ए०, पी-यच० डी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पार्क" हैं। सब स्टेशनों पर केले ख़ूब मिलते हैं। नदी, नालों की भी खूब बहार है। लोग बहुत ग़रीब नहीं हैं। वे आराम से रहते हैं। कोलम्बो नगर बड़ा साफ़ और सुथरा नज़र आया। कोई भिखारी या लंगड़े लूले, कोढ़ी या अंधे सड़कों पर बैठे भीख माँगते हुए नहीं मिले। ख़याल आया कब हम भारतवासी अपने ग़रीबों और मुहताज़ों की परवा करके उनका अच्छा इन्तज़ाम करना सीखेंगे। दो दिन लंका की सैर करने के बाद "ओरेमंड" जहाज़ पर सवार हुए। यह जहाज़ बहुत बड़ा दिखाई दिया। इस पर क़रीब पाँच सौ यात्री थे जिनमें क़रीब २५ हिन्दुस्तानी थे। रात में बारह बजे बिगुल बजा और जहाज़ रवाना हो गया।

दूसरे रोज़ सुबह हिन्द महासागर की लहरों की बहार थी। पर शाम तक बहुत से लोग "डैक" पर टहलने और जहाज़ी खेलों से दिल बहलाते रहे। शाम को "बोट ड्रिल" की सीटी बजी और सब अपना अपना "लाइफ़ बैल्ट" पहिन कर किश्तियों के पास जो "डैक" पर रहती है इकट्ठे हुए। एक अफसर ने सब को बताया कि खतरे के समय क्या करना चाहिये।

दूसरे दिन सुबह खाने के वक्त तक सब ठीक ठाक थे। मेज़ पर (अफ़सोस के साथ लिखना पड़ता है) हमारे हिन्दुस्तानी विद्यार्थी अक्सर छीन झपट करते थे। इस वजह से दो तीन अँगरेज़ी स्त्रियाँ जो हिन्दुस्तानियों के साथ मेज़ पर खाती थीं दूसरी मेज़ पर चली गईं। इससे थोड़ा बहुत तो सबक़ मिला पर काफ़ी नहीं। खाने का प्रबन्ध मांस खाने वालों के लिये तो बहुत अच्छा होता है। पर जो मांस नहीं खाते उनकी मुश्किल है। अगर कह कर ख़ास तरकारी या साग का इन्तिज़ाम भी कराओ तो उबली गाज़र और मटर और आलू मिलेंगे और अगर इनको छौंकने के लिये कहा जावे तो तरकारी सुअर की चरबी में छौंकी जाती है। बस आँख बंद करके जो खिलावे खा लेना पड़ता है। पाँच छः दिन तक समुद्र की बीमारी "सी-सिकनेस" ने ख़ूब सताया। इसके बाद लाल सागर पहुँचने से शान्ति हुई। हिन्द महासागर की बड़ी बड़ी लहरों से जहाज़ खूब डगमगाता था और उससे तबीयत शुरू में बहुत घबराती है। जहाज़ की सफ़ाई क़ाबिल-तारीफ़ है। हर सुबह पेशतर इसके कि मुसाफ़िर नहा धोकर डैक पर आवें सब "डैक" अच्छी तरह से पानी से धोये और रेत से माजे जाते और इसी तरह से "कैबिन" भी साफ़ किये जाते हैं।

हिन्दुस्तानियों को एक लताड़ पानी ओक लगाकर पीने के लिये भी लगी। खाने के कमरे के बाहर एक पानी का नल था इसमें हर वक्त बर्फ़ का ठण्डा पानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीने को मिलता था और पीने के लिये गिलासों का प्रबन्ध था। पर हमारे भाइयों ने आदत के अनुसार गिलास लेने की तकलीफ़ न उठाई और ओक लगा कर पीना शुरू किया। नतीजा यह था कि पानी के नल के पास सब गीला होने लगा। इसको रोकने के लिये स्टुअर्ड को कहना पड़ा कि तुम चाहो जैसे पीयो पर यहाँ गीला न होने पावे।

तीन दिन में लाल समुद्र को पार करके "स्वेज़" बन्दरगाह में पहुँचे वहाँ कुछ घंटे ही ठहरे। छोटी किश्तियों में बहुत से सौदागर छोटी मोटी चीज़ें बेचने आये और रस्सी फेंक फेंक कर रस्सी के द्वारा टोकरियों से सौदा जहाज़ पर मुसाफिरों को पहुँचाते और दाम वसूल करते थे। माला, कपड़े, मिस्री खिलौने और तुर्की मिठाई और सिगरटों की ख़ूब विक्री हुई। वहाँ से चल कर स्वेज़ नहर में दाख़िल हुए अब जहाज़ बहुत धीरे धीरे चलता था। नहर बहुत चौड़ी नहीं है होशियारी के साथ चलाने से एक जहाज़ निकल सकता है। जगह जगह अरब के कुली नहर में से रेत निकाल रहे थे। दोनों तरफ़ रेतीले मैदानों में बंगले और बाग़ात लगे हुए हैं। डिज़रायली (जिसने अंगरेज़ों के लिये स्वेज़ ले ली) बड़ा दूरबीन आदमी था। सचमुच पूरब की कुंजी स्वेज़ है। रात को बारह बजे हम "पोर्ट सैयद" पहुँचे। यह सारा शहर रात भर जागता है, दुकानें सब खुली रहती हैं। सुबह छः बजे हम वहाँ से भी आगे के लिये रवाना हो गये।

तीन दिन के सफ़र के बाद हम मसीना की प्रणाली (जल संयोजक) में से होकर गुज़रे। यह इटली के दक्षिणी हिस्से और सिसिली टापू के बीच में है। यहाँ का दृश्य बड़ा सुन्दर था। रात के समय जहाज़ धीरे धीरे जल संयोजक में से निकला दोनों तरफ़ जहाँ तक निगाह जाती थी बिजली की बत्तियाँ टिमटिमाती हुई नज़र आती थीं। एक तरफ़ मसीना का नगर और पहाड़ और उस पर सब तरफ़ बत्तियाँ ही बत्तियाँ नज़र आती थीं। एक महीना पहले इस टापू पर एक नया ज्वालामुखी पहाड़ निकला था। वह भी दूर से दिखाई पड़ता था। और अजीब दृश्य था। उसके कारण पहाड़ पर इर्द गिर्द दूर तक रोशनी और धुआँ फैला हुआ था। धीरे धीरे टिमटिमाते हुए दिये समुद्र की गोलाई से ढक गये और ऊपर आसमान और नीचे पानी ही पानी रह गया। दूसरे दिन नैपिल्स पहुँचे।

क्रमशः

बी० बी० मालवीय, एम० ए०, पी-यच० डी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरणातीति इन्द्रः" सो किये नहीं अपितु
"गौतम की स्त्री अहिल्या से इन्द्र ने जारकर्म
किया उसे गौतम ने शाप दिया कि तू हजार भग
वाला होजा और तू पत्थर होजा" इत्यादि
मन गढ़न्त अर्थ कर दिये। इसी प्रकार सुर
असुर युद्ध आदियों में भी इसी रीति का
अनुकरण करके सायण ने और उनके मतानु-
यायियों ने अर्थ का अनर्थ कर डाला है।

कुछ न जानते थे। अन्यथा उन्हें और उनके कुत्तों को खाने का अभाव ही न होता। विवश होकर उन्हें अपने एक एक कुत्ते को मारकर दूसरों को जीवित रखना पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशाल भारत जनवरी १९३१.
विशाल भारत मई १९३१
मुखोल फरवरी, मार्च, अप्रैल + सितम्बर +
दिसम्बर १९३१

The Literary Digest.
१, जुलाई २२ जुलाई, ४ मार्च, १९३३. / १५ अक्टूबर, ८ अक्टूबर
१ अक्टूबर १९३२.
माधुरी १९३२, १९३३
सरस्वती १९३२, १९३३

और ऊपर आसमान और नीचे ...

क्रमशः

बी० बी० मालवीय, एम० ए०, पी-यच० डी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्रुव प्रदेशों की खोज

१८९५—१९२८

जनरल अम्बरटो नोबिल सन् १९२८ में ध्रुव प्रदेशों की खोज करने निकला। स्पिट्स्बर्गेन से ३० मील दूर पहुँच कर उसका जहाज़ बरफ़ में फँस गया। उसने बेतार के तार से अपनी दशा की सूचना दी। समाचार पा कर उसकी सहायता के लिये हवाई जहाज़ एवं बरफ़ की चट्टानों को तोड़ने वाली मशीनें भेजी गईं और उसने उन वीरों को सहायता पहुँचाई।

परन्तु इससे पहले ध्रुव प्रदेशों में तीन यात्रा मंडली और भेजी जा चुकी थीं। उनमें और इसमें कितना अन्तर था! उनके पास न तो हवाई जहाज़ थे और न बरफ़ को तोड़ने वाली मशीनें। उनका सहायक था उनका साहस और निर्भयता।

२४ मई सन् १८९५ में साहसी फ्रिजौफ़ नानसेन अपने एक साथी फ्रेडेरिक जोहानसन के साथ उसी स्थान पर जहाँ ४० वर्ष बाद नोबील का जहाज़ फँस गया था पहुँचा। वह तो बरफ़ में ही चलते चलते ७५ मील तक पहुँच गया परन्तु जब आगे जहाज़ न चल सका तो उन्होंने उसे वहीं पर छोड़ दिया और उतर कर चले। उनके साथ तीन कुत्तों से खींची जाने वाली गाड़ियाँ और बरफ़ पर फिसलने के यान थे। शीत की ऋतु थी और जाड़ा कड़ाके का पड़ रहा था। कभी कभी तो तापक्रम ०° से ४०° कम हो जाता था। उस समय तक उन लोगों ने एस्किमो घर (एक विशेष प्रकार का झोंपड़ा) बनाना नहीं सीखा था। अतः जाड़े भर उनको बड़ा कष्ट सहना पड़ता था। बरफ़ उनके शरीर पर जम कर कवच की तरह सख़्त हो जाती थी। नानसेन स्वयं लिखता है कि रात को जब हम लोग बिछौने में लिपट कर सोते थे तो शरीर की गर्मी से एक आध घण्टे के लिये तो वह मुलायम हो जाती और सुबह होते ही फिर उसी प्रकार जम जाती।

उन्होंने तीनों गाड़ियाँ खाने के सामान से भर रक्खीं थीं। जिसमें से एक तो जल्द ही ख़ाली हो गई। वे लोग उस समय (१८९५) 'सील' मछली के विषय में कुछ न जानते थे। अन्यथा उन्हें और उनके कुत्तों को खाने का अभाव ही न होता। विवश होकर उन्हें अपने एक एक कुत्ते को मारकर दूसरों को जीवित रखना पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ तक कि उनके सब कुत्ते मर गये। वे अब फ्रैंज़-जोज़फ-द्वीप (जो स्पिट्स्बर्गन के उत्तर-पूर्व में है) के समीप पहुँच गये थे। जाड़ा भी प्रायः समाप्त हो गया था और बरफ़ गलनी शुरू हो गई थी।

मैं पहले ही कह चुका हूँ कि वे लोग पैदल जा रहे थे क्योंकि उनका जहाज़ बरफ़ में बहुत पहले फँस चुका था। बरफ़ के गलने के कारण पानी के बड़े बड़े सरोवर बन गये थे। अतः उन्हें बरफ़ की एक शिला से दूसरी शिला पर जाने में बड़ा कष्ट होता था। प्रायः छोटी छोटी डोंगियों में जाते थे। इन डोंगियों को वे अपने साथ लाये थे।

उन लोगों को बड़े कष्ट का सामना करना पड़ता था। परन्तु वे कभी निराश नहीं होते थे। उनके हृदय में अदम्य साहस भरा रहता था और उनका स्वास्थ्य अति उत्तम रहता था। इस प्रकार कष्टों का सामना करते हुए १५ अगस्त सन् १८९५ को वे फ्रैंज़ जोज़फ़ द्वीप में पहुँच गये और जाड़ा वहीं बिताकर ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ में लौट आये।

इसके १९ वर्ष बाद २४ मई सन् १९१४ को अन्वेषकों की एक और टोली बरफ़ में चलते चलते १०० मील पहुँच गई। उनका विचार बरफ़ में ७०० मील तक जाने का था। उन्हें इतना कष्ट नहीं उठाना पड़ा जितना नानसेन को उठाना पड़ा था क्योंकि वे बरफ़ में एस्किमो नाम का झोपड़ा बनाना जानते थे जिसके अन्दर ख़ूब गरमी रहती थी। उन्होंने वहाँ के मूल निवासियों से एक ऐसी तरकीब भी जान ली थी जिससे उनके वस्त्रों में बरफ़ नहीं जमती थी। वे सील का शिकार भी करते थे। उसी के मांस को खाते, उसी की चरबी जलाते और उसकी पतली हड्डी और ताँत से सुई डोरे का काम लेते थे।

किन्तु ग्रीष्म ऋतु आरम्भ होने पर जब बरफ़ पिघली तो उनको भी नानसेन की तरह कष्ट उठाना पड़ा। परन्तु भाग्यवशात वायु में एक ठंडी लहर आ गई जिससे बरफ़ फिर जम गई और उन्होंने अपने छहों कुत्तों के सहित अपनी यात्रा सकुशल समाप्त की। वे अपने गन्तव्य स्थान पर २६ जून को पहुँच गये।

२४ मई १९१८ को एक और दल ध्रुव प्रदेश में पहुँचा जिसका नेता स्टोर्कर्सन था। वह २०० मील तक बरफ़ में चक्कर लगा आया। यह दल मुख्यतः समुद्र की गहराई नापने गया था। अतः ये आठ महीने बरफ़ की एक चट्टान पर रहे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ जहाँ वह गया वहाँ वहाँ समुद्र की गहराई इन्होंने नापी। ये चलते चलते नवम्बर में अलास्का तक पहुँचे। वहाँ इन्हें बस्ती मिली और कुछ दिन उस स्थान पर रह कर ये लौट आये।

२९ मार्च सन् १९२७ को विल्किन्स और कार्लबेन ईल्सन एक हवाई जहाज़ में अलास्का के १ मील ऊपर उड़ रहे थे—चारों ओर अन्धकार था। उसी समय शीत के कारण उनके एंजिन ने काम करना बंद कर दिया और वे भाग्य से बरफ़ की एक शिला पर गिरे। अतः उनके अधिक चोट नहीं आई। वे किनारे से ८० मील दूर थे। उन्होंने अपने टूटे जहाज़ से बरफ़ पर फिसलने वाली गाड़ियाँ बनाईं और जो खाना उनके पास था उसे लेकर १३ दिन में बिना अधिक कष्ट के अलास्का पहुँच गये।

अब हम नोबील और पहले अन्वेषकों के दलों की समता और विषमता पर विचार करेंगे। नोबील का जहाज़ टकरा जाने पर उनके एक साथी की टाँग टूट गई जिससे बहुत से आदमियों की सम्मति हुई कि सहायता के लिये ख़बर भेजनी चाहिये। विल्किन्स का जहाज़ टूट गया था और उसके पास भी बेतार के तार का सामान था परन्तु उसमें पुराने अन्वेषकों की सी हिम्मत थी और वह अपने में भरोसा करके स्वयं कष्ट उठाता हुआ ८० मील पैदल ही चलकर अलास्का पहुँचा। पहले अन्वेषकों में यह आदत थी कि चाहे जैसी तकलीफ़ पड़े वे अपने उद्देश्य से नहीं हटते थे यद्यपि उनके पास न हवाई जहाज़ थे न बरफ़ तोड़ने वाली मशीनें और न बेतार के तार का सामान। परन्तु उनमें वीरता, आत्मविश्वास और अदम्य उत्साह था। वास्तव में जो मनुष्य ऐसे भयावह काम को करने का बीड़ा उठाये और उसमें उपरिलिखित बातें न हों तो उसका साहस करना बेकार है।

हम लोगों के पास बेतार का तार और हवाई जहाज़ इसलिये नहीं हैं कि हम उनको आत्मविश्वास और साहस के बदले में लें, प्रत्युत इसलिये कि उनको रखते हुए भी इन वस्तुओं की सहायता से और भी ऐसे ऐसे श्लाघ्य कार्य कर सकें जो अन्यथा असंभव नहीं तो अत्यंत कठिन अवश्य हैं।

इससे न केवल हम और अधिक उन्नति ही कर सकेंगे किन्तु इन साहसी कार्यों पर ख़र्च किये जाने वाला धन कम से कम आधा हो जायगा।

शान्ति स्वरूप गुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

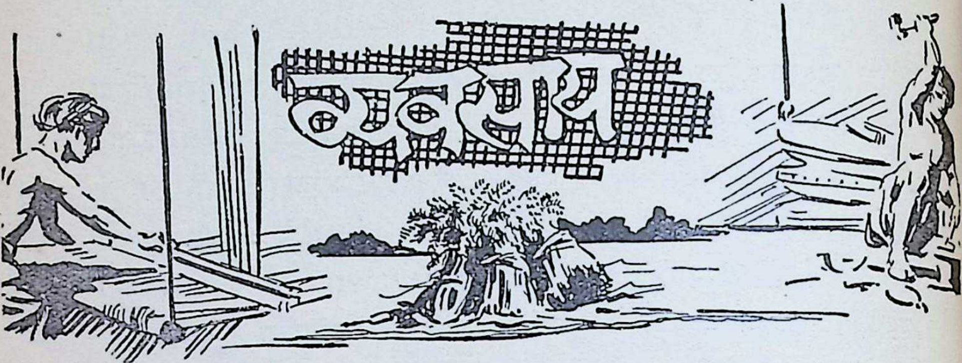

भारतीय बालकों का आर्तनाद

छोटी उम्र के बालक बहुत से कारख़ानों में काम करते हैं। यहाँ उन्हें ऐसी अवस्था में काम करना पड़ता है जिससे उनकी स्वाभाविक वृद्धि में भयानक बाधा पड़ती है। उनकी दशा सुधारने के लिये जिन बड़े कारख़ानों में बिजली या इंजिन के ज़ोर से काम होता है कुछ नियम बन गये हैं पर बहुत से ऐसे कारख़ाने हैं जिन में उक्त नियम लागू नहीं है। ऐसे ही कुछ कारख़ानों का यहाँ ज़िकर किया जाता है।

अभ्रक के कारख़ाने—ये कारख़ाने अधिकतर बिहार–उड़ीसा प्रान्त में स्थित हैं। इनमें ३० फ़ी सदी मज़दूर बालक हैं। अधिकतर बालकों की उम्र ६ और १० वर्ष के बीच में है। इन्हें आसपास के गाँवों से आने जाने में कई मील का चक्कर योंही पड़ जाता है। फिर बरामदों की घुटी हुई हवा में उन्हें कई घंटे काम करना पड़ता है। इनकी दशा का अनुमान सहज ही में किया जा सकता है।

ऊन के कारख़ाने—ऊन साफ़ करने का काम पंजाब की ओर अधिक होता है। इस काम में स्त्रियाँ और ८ वर्ष या अधिक उम्र के बालक लगाये गये हैं। पहले उनको ऊन में लगी हुई मिट्टी, ख़ून आदि बाहरी चीज़ों को हाथ से या लोहे की मुँगरी से कूट कूट कर साफ़ करना पड़ता है। इससे थोड़ी ही देर में हवा, फ़र्श और मज़दूरों के शरीर निकली हुई धूल के दूषित कणों और ऊन के ज़र्रों में भर जाते हैं। बालकों के कपड़ों और चेहरों पर कीटाणुओं से भरी हुई बारीक मिट्टी की तह जम जाती है। बहुत छोटे बच्चे अपनी माताओं के पास ही ऊन के ढेरों में सोते हैं। कई स्थानों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पाखाने या पेशाब का भी कोई प्रबन्ध नहीं है। इस तरह का काम कई घंटे लिया जाता है।

लाख के कारख़ाने—लाख का काम अधिकतर बिहार-उड़ीसा में और कुछ कुछ मध्य प्रान्त में होता है। बहुत से कारख़ाने ऐसे हैं जिनकी छतें चूती हैं और जिनके फ़र्श कच्चे हैं। साफ हवा और रोशनी आने का प्रबन्ध ठीक नहीं है। यह काम ऐसा है कि इसमें दुर्गन्ध अधिक फैलती है पर मैला धोने या नहाने का यहाँ कोई प्रबन्ध नहीं है। जब लाखों कीड़े कुचले जाते हैं और उनका मैला सड़ता है, तब दुर्गन्ध का ठिकाना नहीं रहता है। लाख धोने वाले मज़दूरों को घुटनों तक गहरे गन्दे पानी के इन्हीं गड्ढों में खड़े होकर घंटों धोने का काम करना पड़ता है। गन्दे पानी को बहाने का कोई प्रबन्ध नहीं है। मध्यप्रान्त में बारह वर्ष से कम उम्र वाले बालक हलके काम में लगाये जाते हैं। वे लाख को सुखाते हैं और बैलों को मोड़ते हैं। पर बालकों को कड़ाहों के पास गरमी में रहना पड़ता है जिससे उनकी तन्दुरुस्ती पर बुरा असर पड़ता है। यहाँ दस फ़ी सदी मज़दूर बालक हैं। दिन भर काम करने के बाद बेहद थकान होती है। तीन चार महीने लगातार काम करने के बाद किसी न किसी तरह की कमज़ोरी अवश्य हो जाती है।

बीड़ी के कारख़ाने—बीड़ी बनाने का काम सभी तरह के घरों में होता है। ये कारख़ाने देश भर में फैले हुए हैं। बहुतों में सफाई नहीं होती है। इनके फ़र्श कच्चे और नम होते हैं। इन्हीं फ़र्शों पर बैठकर मज़दूरों को दिन रात काम करना पड़ता है। इस काम में ५ वर्ष तक के बालक लगे हुए हैं। इन्हें भी १० या १२ घंटे काम करना पड़ता है। पर बालकों की रोज़ाना मज़दूरी २ आने से अधिक नहीं होती है। अक्सर इन बालकों के माता-पिता पर कारख़ाने के मालिक का कर्ज़ चढ़ा होता है। इसलिये वे शिकायत करने में भी असमर्थ होते हैं। वे अपने प्यारे बालकों पर होने वाले अत्याचारों को देखते हुए भी उन्हें दूर नहीं कर सकते हैं।

कालीन बुनने के कारख़ाने—ये कारख़ाने अधिकतर मिर्ज़ापुर और अमृतसर में हैं। वैसे यह काम देश भर में फैला हुआ है। इनमें ६ वर्ष तक के बालक काम करते हैं। उन्हें अक्सर झुक कर काम करना होता है। पंजाब में इन लड़कों को दरी या कालीन के बुनने वाले ठेके पर ले आते हैं। माँ बाप पर कर्ज़ होता है उसे चुकाने के लिये वे दो चार वर्ष (या किसी नियत समय) के लिये अपने लड़कों को भेज देते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। बेचारे लड़कों को दिन भर काम में जुता रहना पड़ता है। कभी कभी उन पर मार भी पड़ती है। पर वे उफ़ तक नहीं करने पाते हैं।

चमड़े के कारख़ाने—यों तो चमड़े का काम देश के प्रायः सभी भागों में होता है। पर मद्रास के कारख़ाने अधिक उल्लेखनीय हैं। इन कारख़ानों में ८ से १२ वर्ष तक के बालक काम करते हैं। इन छोटी उम्र के बालकों को १२ घंटे और कभी कभी इससे भी अधिक काम करना पड़ता है। यह काम अछूतों के बालक करते हैं। कारख़ानों का कच्चा फ़र्श भीग कर बड़ा गन्दा हो जाता है। जगह जगह पर गढ़ों में पानी भर जाता है। चमड़े या दूसरे मैले टुकड़ों पर मक्खियाँ भिनभिनाती हैं। पर ऐसे ही स्थानों में बेचारे बालकों को अपना लाया हुआ भोजन करना पड़ता है। कभी कभी उन्हें वहीं सोना भी पड़ता है। छोटी उम्र के बालक बड़े फुर्तीले होते हैं। थोड़े समय के बाद वे अपने बड़ों से मुकाबला करने लगते हैं। पर उन्हें मज़दूरी बहुत कम दी जाती है। यही नहीं, असहाय बालकों पर ज़ोर डालकर उनकी शक्ति से अधिक काम लिया जात है। इससे स्वार्थी मालिकों को कुछ समय के लिये आर्थिक लाभ अवश्य होता है। पर वे अपने लोभ से राष्ट्र की असली सम्पत्ति ठुकराकर नष्ट कर देते हैं। प्रत्येक भारतवासी का कर्त्तव्य है कि वह देश के भावी सैनिकों की रक्षा का पूरा प्रबन्ध करे।

जापानी जेलखाने

जापानी भाषा में जेल को केईमूशो कहते हैं जिसका अर्थ दंड-गृह है। आजकल जापान में ९५ बड़े बड़े और ६१ छोटे छोटे जेल हैं। छोटे जेल मुक़दमा चलने के समय मुजरिमों को रखने के काम आते हैं। १६ जेलखाने कोरिया (चोसन) में, ३ तैवान (फारमूसा) में और १ क्वांटंग में है। बालकों के लिये २ बड़े बड़े सुधार-घर हैं। इनके अतिरिक्त ९ जेलखाने छोटे छोटे लड़कों के लिये अलग हैं।

अपराध के अनुसार क़ैदी अलग अलग रक्खे जाते हैं। आजन्म या अधिक समय के क़ैदी बिल्कुल अलग रक्खे जाते हैं उन्हें खेती और खान का काम सिखाया जाता है।

अपने पड़ोसियों पर बुरा प्रभाव डालने वाले क़ैदियों पर कड़ी नज़र रक्खी जाती है।

जेल के अधिकारी निम्न हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गवर्नर, उपगवर्नर, पुजारी, डाक्टर, विशेषज्ञ और पहरेदार। गवर्नर लोग न्यायाधीशों या अनुभवी पहरेदारों में से चुने जाते हैं। उन्हें ११०० से ४५०० येन* वार्षिक वेतन मिलता है।

पुजारी बौद्ध भिक्षुओं में से चुने जात हैं। जहाँ ईसाई क़ैदी होते हैं वहाँ ईसाई पादरियों को भी धर्म-चर्चा करने के लिये जेल में जाने की आज्ञा मिल जाती है। स्त्रियों के जेल में पहरे का काम स्त्रियाँ ही करती हैं।

पहले छः महीने तक क़ैदी अलग कोठरियों में रक्खे जाते हैं जिससे उन्हें सोचने का पूरा अवसर मिले और वे अपना सुधार स्वयं करलें। यह कोठरी १८ घन मीटर† से कम नहीं होती है। रात वाली कोठरी भी १५ घन मीटर से ऊपर ही होती है। पास वाले बड़े कमरे में १२ कैदियों के लिये स्थान होता है। प्रत्येक कोठरी में पाखाना-पेशाब का अलग प्रबन्ध होता है। प्रत्येक कोठरी में एक थाली, चावल खाने के लिये लकड़ी (चम्मच), तश्तरी, दाँत साफ़ करने का ब्रुश, मंजन, साबुन, काग़ज़, तौलिया, डेस्क, पानी का बरतन, झाड़ू, कपड़ा, अखबार, बुद्ध-सूत्र, इंजील और जेल-पुस्तकालय की पुस्तकों की सूची रहती है।

ठीक तरह से रहने वाले क़ैदियों को फूल का गमला और जड़ी हुई तस्वीर रखने की भी आज्ञा मिल जाती है। क़ैदी लोग पुस्तकालय से पुस्तकें उधार लेकर पढ़ सकते हैं। पढ़ने की यहाँ बड़ी सुविधा है एक क्रान्तिकारी के बारे में कहा जाता है कि जब जब वह जेल गया तब तब वह वहाँ से एक नई भाषा सीख कर लौटा। इस प्रकार वह कई भाषायें जान गया।

पुजारी लोग क़ैदियों में धार्मिक भाव उत्पन्न करते रहते हैं। हर छुट्टी में गवर्नर या पुजारी का व्याख्यान भी होता है। कभी कभी बाहर के नामी सदाचारी लोग भी क़ैदियों को भाषण देने के लिये बुलाये जाते हैं। कुछ समय से शिक्षा सम्बन्धी (फ़िल्म) चलती फिरती तस्वीरें भी क़ैदियों को दिखाई जाने लगी हैं। जेल का शफ़ाखाना और इमारतों से बिल्कुल अलग होता है।

जेल में क़ैदियों के साथ बड़ा अच्छा व्यवहार होता है। पर जेल के नियम पालन करने में कोई त्रुटि नहीं की जाती है। नियम तोड़ने वाले क़ैदियों को आवश्यकतानुसार दंड दिया जाता है। दंड कई प्रकार का है:—(१) धमकाना, (२) सद्व्यवहार

*एक येन लगभग डेढ़ रुपये के बराबर होता है।

† एक मीटर लगभग १ गज़ और ३·७ इंच के बराबर होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये जो सुविधायें दी हुई हैं उन्हें कुछ समय के लिये बन्द कर देना (३) उन सुविधाओं को बिल्कुल बन्द कर देना, (४) तीन महीने के लिये पढ़ने के लिये अधिकार न देना, (५) काम करने की सुविधा को न देना, (६) कपड़ों की कमी करना, (७) विशेष भोजन न देना, (८) पाँच दिन तक कसरत बन्द कर देना, (९) मज़दूरी में से से कुछ काट लेना, (१०) १० दिन तक कुछ कम भोजन देना, (साधारण भोजन का ३/४ कमी होने पर भी दिया जाता है।), (११) दो महीने तक लगातार कोठरी में रखना, (१२) ७ दिन तक काल कोठरी देना।

आजकल न भोजन में ही विशेष कमी की जाती है न काल कोठरी ही अधिक दी जाती है।

क़ैदी को ४० फ़ी सदी चावल और ६० फ़ी सदी जौ भोजन के लिये मिलते हैं। इनके अतिरिक्त एक अलग स्वादिष्ट तश्तरी मिलती है। जैसा काम वैसा ही भोजन दिया जाता है। प्रत्येक क़ैदी को तीन पाव से लेकर सवासेर तक भोजन दिया जाता है। अलग तश्तरी में भाजी, मांस और मछली रहती है। पर मांस और मछली सप्ताह में एक बार दी जाती है। शाक भाजी जेल के ही खेत में पैदा होते हैं। इसलिये इसमें अधिक ख़र्च नहीं होता है।

क़ैदियों को लाल गेरुआ या नीले रंग के कपड़े मिलते हैं। प्रत्येक क़ैदी को अलग अलग तीन जोड़े दिये जाते हैं। एक गरमी की ऋतु के लिये, दूसरा सरदी के लिये, तीसरा बसन्त या शिशिर के लिये। कपड़े जल वायु के अनुसार हलके या भारी होते हैं। बिस्तरे के अलावा क़ैदी को एक चादर, एक तकिया और एक मसहरी मिलती है।

नहाने में कोई बाधा नहीं है। अपराध के अनुसार क़ैदी दो महीने में एक बार, १ महीने में एक बार, या १० दिन में एक बार अपने रिश्तेदारों और मित्रों से भेंट कर सकते हैं या पत्र लिख सकते हैं। मुजरिम और वकील के मिलने में किसी प्रकार की रोक टोक नहीं है।

पुजारी लोग धार्मिक व्याख्यानों के अतिरिक्त पढ़ाने का भी काम करते हैं। वे क़ैदी और उसके घर वालों का सम्बन्ध अटूट बनाये रखते हैं जिससे छूटने पर क़ैदी को कोई बाधा नहीं पड़ती है। लड़कों को पढ़ाने के लिये अध्यापक रक्खे जाते हैं। क़ैदियों को काम बहुत सोच विचार कर दिया जाता है। यह काम उनकी शारीरिक अवस्था के अनुसार होता है। इससे उनकी मानसिक उन्नति भी होती है और छूटने पर वे स्वावलम्बी होते हैं। छूटते समय उनको इनाम के रूप में कुछ धन भी दिया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

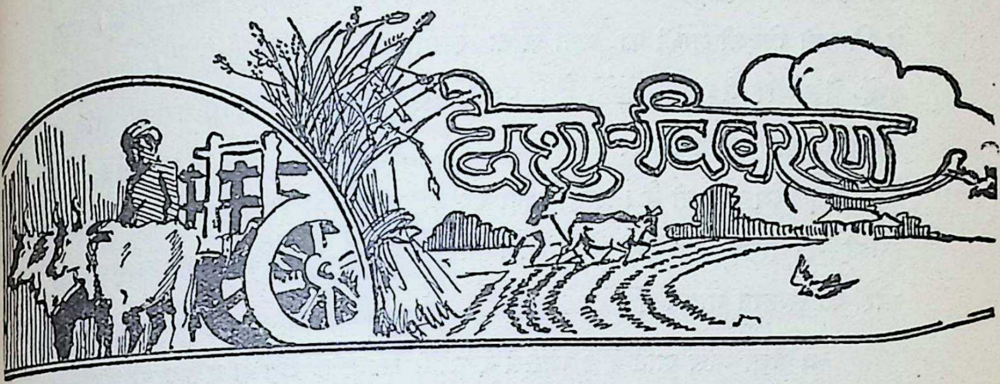

एबीसीनिया

अफ्रीका महाद्वीप में ब्रिटिश ईस्ट अफ्रीका और ऐंगलो मिस्री सूडान के बीच में यह देश स्थित है। इसका क्षेत्रफल ४० लाख वर्ग मील और अबादी ८० लाख है। यहाँ के निवासी अपने को "एटेपीवाँ" कहते हैं। इनका विश्वास है कि उनकी जाति की उत्पत्ति हज़रत सुलेमान के बेटे और शैवा की लड़की से हुई है।

चौदहवीं शताब्दी से वे भगवान ईसा की पूजा करते हैं। पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में मुसलमानों ने यहाँ हमला किया। परन्तु वे असफल रहे। अठारहवीं शताब्दी तक यूरोप से इसका सम्बन्ध न था परन्तु १८६६ में अंग्रेज़ों ने इन लोगों को हरा दिया।

१८८९ में मनलिक ने अपने को सम्राट् घोषित किया। कुछ समय के पश्चात् इटली से फूट हो गई। इटली ने हमला किया परन्तु इटेलियन लोग हार गये।

सम्राट् ने देश में विदेशी माल जारी करने का यत्न किया। परन्तु इसमें उसे सफलता न हो सकी तो भी देश में तार, टेलीफोन आदि फैल ही गये। १९१३ में मनलिक मर गया। मासू राज का मालिक बन बैठा। परन्तु अपनी मूर्खता के कारण वह तख़्त से उतार दिया गया।

इस देश की राजधानी एदिस अबाबा है। अन्दरूनी प्रान्तों की यात्रा बहुत ही दुःखदाई है। राजधानी तक एक रेल जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी में मिट्टी के झोपड़े बहुत हैं। कचहेरियाँ आदि भी मिट्टी की बनी हैं। शहर से बाहर ढोर चराने वाले लम्बा लबादा पहिने अक्सर दीख पड़ते हैं। यहाँ के निवासी विदेशी माली का यथा शक्ति स्वागत और सम्मान करते हैं। उपहार में उन्हें बैल और भेड़ आदि देते हैं। यात्री उन्हें बदले में' रुपया, शराब आदि दे देता है। लोग कारतूस और नमक की छड़ी (४ इंच लम्बी, १/२ इंच चौड़ी) छोटे सिक्कों की भाँति काम में लाते हैं। इन्हें गदहों पर लाद कर लोग फिरा करते हैं। पर वर्षा इनकी बुरी हालत बना देती है। काले और गोरे दोनों भाँति के मनुष्य अपने को गोरों की सन्तान बताते हैं।

वे कच्चा मांस खाते हैं। जिससे वे भाँति भाँति के रोग से ग्रसित हो जाते हैं। शासन प्रणाली अच्छी न होने के कारण सुमालीलैंड की सीमा पर कुछ निवासी "आदम ख़ोर" हैं।

देश में न तो सड़कें हैं और न पुल हैं। कुछ नदियाँ एक दम शुष्क रहती हैं परन्तु उनमें अचानक बाढ़ आ जाती है जिसके कारण भारी हानि होती है। यहाँ बालों में मक्खन लगाने की चाल है। धर्म ईसाई है परन्तु ब्याह और मँगनी की प्राचीन प्रथा प्रचलित है। औरतों को लोग भेड़ और बकरी से ख़रीदते हैं। परन्तु सुन्दरता और स्थिति का विशेष ध्यान रक्खा जाता है। विवाह से पहिले स्त्रियों के चाल-चलन पर अधिक ध्यान रक्खा जाता है। परन्तु बाद में कोई ध्यान नहीं देता। खेतों में स्त्रियाँ ही सारा कार्य्य करती हैं। कभी कभी तो एक ही हल में वे गदहों के साथ साथ जोती जाती हैं।

पासपोर्ट कठिनता से प्राप्त होता है। तो भी हर सूबे की सीमा पर पूछताछ हुआ करती है और यात्री को डर लगा रहता है कि कब वह रोक लिया जावे और बाहर निकाल दिया जावे।

शिवगोविन्दलाल गुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापान के राजनैतिक दल

अभी हाल में जो चुनाव हुआ था उसमें जापान के एक ही राजनैतिक दल को राष्ट्रीय शासन-सभा में अधिक संख्या में स्थान दिया गया है। इस प्रकार जापान आज दुनिया के उन थोड़े से देशों में से है जिनमें न दलबन्दी (Party system) और न तो पार्लियामेंट के ही तरीक़े का शासन है।

जापान के शासन-विधान को बनाने वाले राजनीतिज्ञों ने सब से पहले इस बात का ध्यान रक्खा कि शासन सुदृढ़ हो। अपने देश को सुधारों द्वारा उन्नत करने के लिये उन्होंने अपने हाथ में पूर्ण अधिकार रखने का विचार किया था। बिसमार्क (Bismark) की जर्मनी का उदाहरण उनके सामने था, क्योंकि जर्मनी को भी जापान की ही तरह कठिनाइयों और समस्याओं को सुलझाना पड़ा था। इसलिये जापान में जो विधान बना वह न तो एकतांत्रिक था और न तो पार्लियामेंट की ही प्रणाली के अनुसार था। शासन-विधान-सभा (Diet) को क़ानून बनाने का पूर्ण अधिकार था, परन्तु राष्ट्रमंत्री (Ministers of state) सम्राट के आधीन थे। ये राजमंत्री किसी ख़ास दल के नहीं थे। उनका निर्वाचन सरकार के अधिकारियों में से अनुभवी कार्यकर्त्ताओं की प्रशंसा के अनुसार होता था। जिन्हें जापान में जिनरो (Genro) अथवा 'वृद्ध तथा अनुभवशील राजनीतिज्ञ' कहते हैं।

ऐसी परिस्थिति में राष्ट्र-सभा के अधिकार क़ानून बनाने तक ही सीमिति होते हैं। यह सभा गवर्नमेंट पर उसी समय अधिकार प्राप्त कर सकती है जब वह अधिक संख्या में हो। और अपनी एक नियमित रीति पर योग्यता पूर्वक अग्रसर होती जाय। चुनाव के प्रारम्भ से दल-बन्दी की उन्नति 'राजसभा द्वारा घरेलू मामिलों में प्राप्त की हुई सफलता पर निर्भर रही है।

यह शासन-विधान दो राजनैतिक दलों के आन्दोलन के फल स्वरूप निर्मित हुआ। वह राजनैतिक-दल जिउटो (Jiyoto) अर्थात् उदार तथा शिम्पोटो (Shimpoto) अर्थात् विकासवादी के नाम से विख्यात थे। नई राजसभा में यही दो मुख्य दल थे। परन्तु कोई दल बहु-संख्या में नहीं था। दोनों एक दूसरे के प्रति ऐसी विद्वेषपूर्ण प्रतिद्वन्दिता रखते थे कि आठ वर्ष तक इन्हें नौकरशाही (Beauro-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

cracy) के विरुद्ध कार्य करने का अवसर ही नहीं प्राप्त हुआ, और नौकरशाही बराबर अपने शासन में स्वतंत्रतावादी (Independent) और विषमतावादी (Splinter) दलों की सहायता से सफल बनी रही। सन् १८९८ में ये दोनों दल मिल गये और उन्होंने अपना दूसरा ही स्वाधीन दल बना लिया। लोअर हाउस अर्थात् छोटी धारा-सभा में संख्या भी अधिक हो गयी और शासन-कार्य भी उनके हाथों में सौंप दिया गया। लेकिन इस पार्टी का यह थोड़े दिनों का शासन बड़ा असफल रहा और किनसीटो (Kenseito) दल कई भागों में विभाजित हो गया। उन्नति-वादियों (Progressives) ने तो अपना पुराना नाम स्थापित रक्खा, लेकिन उदार-दल (Liberals) ने १९०० में एक कुशल राजनीतिज्ञ द्वारा स्थापित एक दूसरे दल में मिल गया। इसका नाम सिउकाई (Seiyukai) पड़ा और आजकल तो यह दो प्रमुख दलों में से है। प्रारम्भ काल से ही यह नया दल सुचारु रूप से उन्नति कर रहा था। इसका सिद्धान्त कुछ भिन्न ही था। यह दल चाहता था कि मंत्री राष्ट्र-सभा के आधीन रहें। अत: शासन में इनका अधिक ज़ोर न रह सका, गोकि गवर्नमेंट इस संस्था से बहुत लाभ उठाती रही। यह दल इस अवस्था में थोड़े दिनों तक जीवित रहा; उन्नति की ओर अग्रसर होते रहने से कुछ साल के उपरान्त तो इसका कोई प्रतिद्वन्दी ही न रहा। १९०२ के चुनाव में इस दल के १९५ व्यक्ति चुने गये, जब कि इसके चार प्रतिद्वन्दी दलों के केवल १८४ ही थे।

१९१२ ई० में इसका एक प्रतिद्वन्दी दल आ खड़ा हुआ। वह राजकुमार कटसुरा द्वारा दो अन्य दलों को मिलाकर बनाया गया था। १९१६ में उसकी मृत्यु के उपरान्त दो अन्य दल भी आ मिले और उनका सम्मिलित नाम केन-सिकाई (Kenseikai) पड़ा। कालान्तर में इसका नाम मेनसीटो (Men-seito) हुआ। यही दल आजकल शासन-विधान में प्रमुख है। प्रारम्भ में ही राष्ट्र सभा में इसकी अधिक संख्या हो गई; तभी से इसने उस समय के शासन-प्रधान टेराची (Terauchi) मंत्रिमंडल का विरोध करना शुरू किया। फलतः शासन-सभा टूट गई। फिर से चुनाव हुआ। अभाग्यवश इस बार किनसिकाई को केवल ११७ स्थान मिले, सुइकाई को १५७।

इस नये दल के आगमन ने सारी राजनैतिक परिस्थिति को ही परिवर्तित कर दिया। राष्ट्र-सभा में ऐसी ज़ोरदार प्रतिद्वन्दिता चली कि किसी दल को राजा की विशेष कृपा प्राप्त करने का अवसर ही नहीं मिला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस शताब्दी के प्रारम्भ से ही नौकरशाही की जर्मन-विधान पर नज़र पड़ी हुई थी। महा युद्ध से इसकी उन्नति में कुछ धक्का लगा। १९१४ के जलसेना-संबंधी समझौते से परिवार-गत शासन (clan rule) की बड़ी क्षति हुई और जर्मनी की अन्तिम हार तो इसके लिये अत्यन्त अशान्ति पूर्ण हुई।

राजनैतिक संसार में प्रजातंत्रवाद की आँधी बह रही थी। प्रत्येक देश इसी उपकरण द्वारा अपने अधिकारों को सर्वदा के लिये सुरक्षित कर देना चाहता था। आर्थिक दशा ने इसे साहयता दी। १९१८ वाले ग्रीष्मकाल के चावल-संबंधी दंगों ने (Rice riots) ने टेराची मंत्रिमंडल को नीचे गिरा दिया। लेकिन सिउकाई ने राजसभा में अपना प्रभुत्व क़ायम रक्खा, और उन्हीं ने पहला प्रभावशाली मंत्रि-मंडल बनाया। हैरा महाशय १९१८-२१ तक उसके प्रधान मंत्री रहे। १९२१ में किसी कोरिया निवासी ने उनकी हत्या कर डाली।

१९२० के चुनाव में भी सिउकाई की ही जीत हुई और हैरा के बाद भी इसी दल का एक प्रधान मंत्री नियुक्त हुआ। नये मंडल को असफलता का सामना करना पड़ा और थोड़े दिनों के लिये राज्य की बागडोर सर्वश्रेष्ठ दल के हाथों में चली गयी। १९२४ के चुनाव में इसका अन्त हो गया और जभी से सारे प्रधान-मंत्री दल-नेता रहे हैं।

१९१८ के आरम्भ में मत देने वालों (Voters) की संख्या १,५०,००० थी। उसी वर्ष के मार्च मास में एक क़ानून पास हुआ जिसके द्वारा यह संख्या दूनी हो गयी। किनसिकाई दल वालों ने अब इस बात के लिये लड़ना शुरू किया कि सर्व-साधारण को भी मत देने का अधिकार दिया जाय। इसके लिये १९२० के चुनाव में उन्होंने बड़ी-बड़ी कोशिशें कीं लेकिन अन्त में उनकी हार ही रही। १९२४ में इनका सितारा चमका। राजसभा में इन्हीं की प्रधानता रही। इन्होंने अपना क़ानून पास किया और १९२८ व ३० के चुनाव प्रजातंत्रवादी सिद्धान्तों के अनुसार हुए।

न तो १९२४ और न १९२८ के ही चुनाव में किसी दल को निरंकुश अधिकता मिली। आजकल दशा इसके प्रतिकूल है। आज प्रतिद्वन्दियों के विरुद्ध मेनसीटो की पर्याप्त अधिकता है। १९२४ से, २९ की राजसभा में तरह-तरह के हेर-फेर और समझौते हुए। इस काल में छोटे-छोटे दलों का अन्त कर देने की विशेष इच्छा जन-साधारण में प्रतिध्वनित हो रही थी। १९२४ के चुनाव में तीसरा दल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिउहोंटो था। इस दल ने सिउकाई से अलग हो कर एक नया दल बनाया। ४६४ स्थान में से इसे केवल ९४ मिले। शीघ्र ही यह दल भी सिउकाई में जा मिला, और फिर कोई तीसरा दल नहीं रह गया। जापान में राजनीति आजकल सिउकाई और मेनसीटो दलों की प्रतिद्वन्दिता के लिये रंग-मंच बन गई है। इन दोनों दलों ने स्वतंत्रतावादी (Independent) और विषमतावादी (splinter) दलों को पद-दलित कर अपनी शक्ति बढ़ा ली है। अन्तिम तीन चुनाओं में तीसरे दल के सम्मुख इन दो प्रमुख दलों की शक्ति को देखिये—

साल	सिउकाई तथा मेनसीटो (किनसीटो) स्थान	अन्य दल
१९२४	२९९	१६५
१९२८	४३५	३१
१९३०	४४७	१९

राजनैतिक क्षेत्र में मज़दूर दल ने प्रवेश तो अवश्य किया है लेकिन उपरोक्त दोनों दलों के विरुद्ध अभी कोई तीसरा दल नहीं खड़ा हुआ है। १९२८ में मज़दूर दल ने उनके बीच केवल आठ स्थान प्राप्त किये। १९३० के चुनाव में उनकी सफलता की बड़ी आशा थी लेकिन सारी आशाओं के प्रतिकूल उनकी भारी हार हुई। इसका प्रधान कारण आपस का ईर्षा-पूर्ण विरोध है जिसने आन्दोलन की सारी शक्ति का ह्रास कर दिया है। फिर इस दल का ऐसा कोई नेता नहीं है जो मिस्टर हैमेगुची (Mr. Hamaguchi) के सामने जनसाधारण की दृष्टि में खड़ा हो सके। लेकिन साथ ही साथ ऐसा सोच लेना कि 'मज़दूर' जापान में एक अति तुच्छ दल है—भारी भूल होगी। स्थानीय शासन में इसका बड़ा प्रभाव है, गो कि राष्ट्रीय शासन में ऐसा नहीं है। ऐसी आशा है कि भविष्य में राजसभा में इसकी शक्ति बहुत अधिक बढ़ जायगी। जापान में सिउकाई और मेनसीटो दलों की प्रतिद्वन्दिता वैसी ही है जैसी इंगलैण्ड में कनज़रवेटिव और लिबरल की है।

जहाँ तक एक विदेशी किसी देश की भीतरी राजनैतिक दशा से जानकारी प्राप्त कर सकता है उसके अनुसार तो यही कहा जा सकता है कि मिनसीटो दल को आज जो सफलता प्राप्त हुई है उसके वह योग्य था। मिंस्टर हैमेगुची को जो विश्वास का वोट दिया गया उसका प्रधान कारण यही था कि जनता को आर्थिक संकट से दूर करने की उन्होंने हृदय से अपील की और उसके लिये जी जान से तत्पर हो गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९२३ के भीषण भूचाल के बाद सोने के व्यापार में जो बाधायें डाली गयीं उससे देश के सामान्य आर्थिक जीवन को भारी धक्का पहुँचा। स्वर्गीय बैरन टैनाका (Baron Tanaka) का सिउकाई मंत्रिमंडल भी इस कठिनाई को सुलझाने में सफल न हो सका और मंचूरिया की भयंकर घटना के उपरान्त सिउकाई मंत्रिमंडल का अन्त हो गया। हैमेगुची पदासीन हुए। सोने के व्यापार को नियंत्रित करने का उन्होंने बहुत प्रयत्न किया। मेनसीटो को मालूम था कि उसकी नीति से राष्ट्रीय ख़र्च बहुत बढ़ जायगा और पहले तो लोग उसे अवश्य बुरा समझेंगे। ग्रामीण संस्थाओं में लोक-प्रिय बनने के लिये ऐसे सार्वजनिक काम आरम्भ किये गये जिससे देश को आर्थिक हार्थिक हानि हुई। मेनसीटो को इस ओर अधिक उन्नति दिखाने का अवसर नहीं प्राप्त हुआ। नौकरी की कमी की वजह से बड़ी बेकारी फैली। वह बेकारी टोकियो और योकोहामा का पुनर्निर्माण का काम पूरा हो जाने पर और भी अधिक बढ़ गई। जनता की शुभ-सम्मति प्राप्त करने के लिये नये मंत्रिमंडल ने देश भर में सभाओं, नोटिसों तथा रेड़ियो द्वारा आन्दोलन प्रारंभ किया। एक दल-सम्मेलन में यह तय हुआ कि—"गर्वनमेंट के प्रतिनिधि जनता को इस बात की सूचना देंगे कि उसे कैसी आर्थिक क्षति एवं कष्ट का सामना करना पड़ रहा है और इस कष्ट से उद्धार उसी समय हो सकता है जब कि सोने के व्यापार के नियंत्रण हटा दिये जायँ तथा विदेशों से व्यापार अधिक हो। गवर्नमेंट का आय-व्यय व्यक्तिगत आय-व्यय पर निर्भर करता है इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को स्वर्ण-नियंत्रण हटाकर तथा विदेशी व्यापार को समुन्नत कर इस समस्या को हल करने में सहायता प्रदान करनी चाहिये। दूसरे शब्दों में जनता को गर्वनमेंट के साथ दुःख-निवारण में पूर्ण सहयोग देना चाहिये।"

उपर्युक्त चुनाव के अंक इस आन्दोलन की सफलता के पूर्ण साक्षी हैं। इस आर्थिक सफलता के सिवाय चीन के साथ संबंध में भी जनता ने इस नये मंत्रि-मंडल के साथ पूर्ण शुभ-सम्मति दी है। बैरन टैनाका की चीन-संबंधी क्रिया-शील Position नीति ने अच्छे फल नहीं दिये। मेनसीटो ने चीन के साथ मित्रता का व्यवहार करना सीखा है। इसका कारण ओसाका के साथ उसका घनिष्ट सम्बन्ध का होना है। ओसाका को हम निर्विवाद जापान का मैनचेस्टर कह सकते हैं। चीन के व्यापार का वहिष्कार करने से ओसाका की तिजारत को निस्संदेह भारी हानि की संभावना है। जब से मेनसीटो का शासन हुआ तब से वाह्य-सम्बन्धों में अवश्य आशातीत उन्नति हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं है कि मनचूरिया के सम्बन्ध में भी अधिकार और विशेष लाभ के ख़याल से भी कोई अन्तर का भाव बरता गया है। जापान अपने व्यापार में आर्थिक दृष्टि से इतनी उन्नति कर गया है कि मनचूरिया में अपने विशेष अधिकारों का तोड़ना उसके लिये बहुत कठिन है। मनचूरिया की समस्या आज जापान के लिये बहुत कठिन हो रही है। चुनाव में सिउकाई को जो नीचा देखना पड़ा उसका कारण है उसका रिश्वतख़ोरी में निंदित होना। इसके लिये मिस्टर आगवा (Mr. Ogawa) जो रेल विभाग के संत्री थे, अधिक निंदित हुए थे। सिउकाई दल में नेता की बड़ी कमी है। सिउकाई दल के प्रथम तीन नेताओं की योग्यता एंव प्रभाव शीलता अवश्य उल्लेखनीय थी लेकिन उनके बाद कुछ नहीं रह गया। टैनाका, जिसे इस दल का नेतृत्व सौंपा गया अवश्य एक बड़ा फ़ौजी था, परन्तु राजनीतिक क्षेत्र में उसकी योग्यता नहीं के बराबर थी। उसने बड़ी-बड़ी गल्तियाँ कीं जो प्रायः एक नौसिखिया किया करता है। वर्तमान नेता मिस्टर युनीकाई (Mr. Inukaie) को अच्छा राजनीतिक अनुभव है। उन्हें लोग 'शासन विधान का देवता' कहते हैं। किन्तु यद्यपि वे इस प्रशंसासूचक उपाधि से आभूषित हैं, तथापि अपने कार्य को सफलता पूर्वक पूर्ण करने के लिये काफ़ी वृद्ध हो चुके हैं।

"नाइटीन्थ सेन्चुरी एण्ड आफ़्टर" के आधार पर

रामसूर्ति सिंह.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

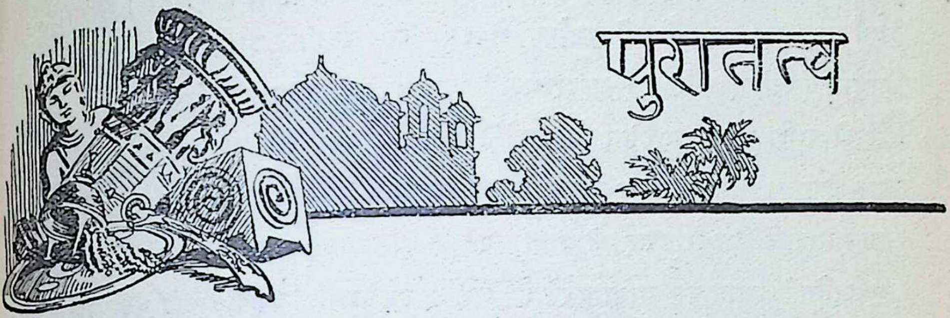

भारतवर्ष के कुछ प्राचीन नाम

भारतवर्ष अश्व क्रान्ति (Asia country) के दक्षिणी भाग में अवस्थित है यह प्रायः सभी जानते हैं । पर भारतवर्ष के देश पर्वत और नदियों के नामकरण किस आधार पर किये गये हैं यह प्रायः सब लोग नहीं जानते हैं क्योंकि इधर कई सहस्र वर्षों से भौगोलिक ज्ञान प्रायः नष्ट सा हो गया था और हो गया भी है जैसे कि मदरास देश को लोग जानते हैं कि मछली मारने वालों का स्थान है इसलिये मदरास कहा जाता है। धन्यवाद है कल्पकों को, जो निराधार प्रमाण शून्यकल्पना करके लोगों को अन्धकार में डाल देते हैं । मैं तो प्रमाण शून्य कुछ भी नहीं कहना चाहता । अब मैं आप लोगों के समक्ष कुछ भारतवर्ष का रहस्य प्रमाण पुरःसर उपस्थित करता हूँ । देखिये—

"निरोद्धुं सततं मार्गं भास्करस्याऽचलोत्तमः । सन्देशं पालयंस्तस्य विन्ध्यशैलो न वर्द्धते" वाल्मीकीय रामायण, अरण्य काण्ड ॥११।८७॥

इस श्लोक का अर्थ है कि रघुनाथ जी लक्ष्मण जी से अगस्त्य महिमा कहते हैं कि यह अचलोत्तम विन्ध्याचल पर्वत अगस्त्य मुनि की आज्ञा पालन करते हुए सूर्य भगवान् के मार्ग को सर्वदा रोकने के लिये और बढ़ता नहीं है, अर्थात् स्थिर है । इस पद्य का अर्थ पौराणिक लोग समझाते हैं कि 'विन्ध्याचल किसी समय में आकाश मण्डल में बढ़कर सूर्य का मार्ग रोक दिया था । अगस्त्य भगवान् ने उसे ऐसा करने से रोक दिया यही इस पद्य का अर्थ है' इस पौराणिक अर्थ को कोई भी शिक्षित पुरुष स्वीकार नहीं कर सकता । इसी को अँग्रेज़ लोग (मैथालोजी) मिथ्या ज्ञान कहते हैं । वास्तव में यह मिथ्या ज्ञान है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तुतः इसका ज्ञान करने के लिये भारतवर्ष का चित्र सामने रखिये और देखिये जब सूर्य भगवान् मेषराशि पर आते हैं तब विषुवद्रेखा (इक्वेटर) से भारतवर्ष पर यात्रा करते हैं। विषुवद्रेखा से १२ अंश (डिग्री) उत्तर की यात्रा होने पर मद्रास (महेन्द्र पर्वत) (मन्दराचल) आता है। मन्दराचल और विषुवद्रेखा के बीच में मेषराशि का स्थान होता है। ज्योतिष शास्त्र में मेष और अज के पर्याय होने से, इस देश का नाम अजनाभ खण्ड भागवतादि पुराणों में पाया जाता है। जब सूर्य भगवान् बारहवें अंश से उत्तर की यात्रा करते हैं और बीसवे अंश पर पहुँचते हैं तब यह वृषराशि के स्थान पर यात्रा करते हैं अर्थात् इक्वेटर से उत्तर १२ से २० अंश का स्थान वृष राशि का है इसे आप नकशे में देखिये कि १२ और २० अंश के बीच में गोदा नदी जिसे गोदावरी कहते हैं बहती है (गां वृषं वृष राशिं ददाति प्रतिपाययति इति गोदा) इस व्युत्पत्ति से हमारे पूर्वाचार्य महर्षियों ने वृष राशि का ज्ञान कराने के लिये गोदा यह नदी का नाम रख छोड़ा है न कि नकशे में अज्ञानता सूचक कर्करेखा के समान वृषरेखा स्थापन की है। यदि कुदरती गोदा नदी ही वृष का काम करती है तो रेखा कल्पना की क्या आवश्यकता। आजकल के भौगोलिक विद्वानों ने कर्करेखा के समान अन्य रेखाओं को नहीं दिखाया।

अस्तु, अब २० अंश से २४ या २३॥ अंश का परामर्श देखिये। जब सूर्य भगवान् विषुवत रेखा (इक्वेटर) से उत्तर २० से २४ अंश की यात्रा करते हैं तब मिथुन राशिका स्थान प्राप्त होता है। इसको बताने के लिये किसी रेखा की आवश्यकता नहीं क्योंकि परमात्मा ने जैसे वृषराशि को बताने के लिए १२-२० के बीच में गोदावरी को वहाया है, उसी प्रकार मिथुन राशि बताने के लिये २०-२४ अंश के बीच नर्मदा नदी को भी बहाया है। जब नर्मदा नदी ही से हमें मिथुनराशि का ज्ञान हो जाता है तब रेखा कल्पना करना उचित नहीं। अब आप देखें कि नर्मदा नदी विषुवत रेखा से उत्तर २०-२४ के बीच बहती है कि नहीं।

जब हम लोगों को नर्मदा का अर्थ नहीं मालूम है तब नकशे में रेखा बनाने की आवश्यकता प्रतीत होती है। नर्मदा का अर्थ देखिये:—(नर्म मिथुन क्रीड़ां ददाति इति नर्मदा) यहाँ 'नर्मदा' शब्द में नर्म मिथुन अर्थात् दम्पति का कार्य्य होने से दम्पति अर्थात् मिथुन वाची है। नर्म मिथुन ही का होता है दूसरे का नहीं। इसी अर्थ को नर्मदा का पर्याय 'रेवा' शब्द भी कहता है। अब देखिये जब २४ वें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंश पर सूर्य आते हैं तब एक अंश भी उत्तर की यात्रा नहीं करते। विन्ध्याचल पर्वत सीमा रूप होकर उत्तर की यात्रा को सर्वदा रोकता है। अब आप समझ सकते हैं कि विषुवद्रेखा से चल २४ या २३॥ अंश उत्तर में आकर विन्ध्याचल की सीमा में पहुँच कर सूर्य भगवान् कर्क राशि में प्राप्त होकर दक्षिण की यात्रा करते हैं। यहाँ विन्ध्य शब्द का अर्थ आप जान लीजिये तो नकशे में कर्करेखा की लाइन बनाने की आवश्यकता आपको न होगी (विध्यति छेदंकरोति इति विन्ध्यः पृषोदरादित्वात्) वेध करना, छेद करना या काटना। इस अर्थ को लेकर विन्ध्य शब्द का नाम करण किया गया आपको यह ऊपर दिखाया गया है कि विन्ध्याचल सूर्य की उत्तर यात्रा को काटता है।

काटना वा छेद करना यह काम केकड़े का है जैसे कर्क नामक जन्तु कर्त्तन करने के कारण कर्क कहा जाता है उसी प्रकार वेधन करने के कारण विन्ध्याचल और कर्क पर्याय होते हैं। अब २४ से २० तक कर्क राशि दक्षिण यात्रा में होती है और उसी यात्रा में २० से १२ तक सिंह राशि। इस सिंह को संस्कृतज्ञ लोग हरि भी कहते हैं। और हरि=महेन्द्र का भी नाम है। महेन्द्र जिसका दूसरा नाम मन्दराचल है २० और १२ के बीच में आता है। यही मन्दराचल मदरास हो गया है। यह अपभ्रंश की रीति से हुआ है। तद्यथा—(मन्दराचल=मन्दराच=मन्दराज़=मन्दराज़=मन्दरास मदरास) दूसरा रूप्—(मन्दराज=मन्दराजी। विशेषण में) होता है। मन्दराचल दो प्रकार का है एक सुमेरमन्दर दूसरा विन्ध्यमन्दर। किष्किन्धा से पूर्व दिशा में उत्कल देश के पश्चात् मन्दराचल का वर्णन भगवान् वाल्मीकि ने किया है तद्यथा—

'समुद्रमवगाढांश्चपर्वतान् पत्तनानिच। मन्दरस्य च ये कोटिं संश्रिताः केचिदालयाः। इति वाल्मी० कि० ४०।२६। अब आप को मालूम हो गया होगा कि मन्दराचल का अपभ्रंश मदरास है न कि मछवों का। यह मदरास दक्षिणायन यात्रा में २० से १२ अंश के बीच में है। जब मदरास के देखने से सिंह राशि का ज्ञान हमें हो जाता है तब नकशे में सिंह रेखा की क्या आवश्यकता। पर चित्रकारों ने तो सिंहराशि के लिये रेखा भी नहीं लिखा, मदरास सिंह भी बतलाया। हमारा तो मदरास से सिंह राशि का और गोदावरी से वृष का ज्ञान हो जाता है।

अब १२ से ० तक अर्थात् विषुवद्रेखा तक सूर्य के जाने में कन्याराशि आजाती है, इस कन्या के नाम से तो कन्या अन्तरीप अब भी प्रसिद्ध है इसी को कुमारी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहते हैं। इस कुमारी अन्तरीप को बिगाड़ कर अंग्रेजों ने (केप कमोरिन्) कर रक्खा है। कन्या राशि के नाम से भारतवर्ष को कन्यका क्षेत्र और कुमारी के नाम से कुमारिका क्षेत्र कहते है। यथा 'वर्ण व्यवस्थितिरहैव कुमारिकाख्ये इति ज्योतिर्विदः।

इस प्रकार विषुवद्रेखा से विन्ध्याचल तक राशियों के कारण नदी पर्वतों का नामकरण मैंने देखाया। (चाइना, साइबेरिया पर्शिया, योरप, जापान वगैरः) का फिर सप्रमाण देखाऊँगा। खण्ड खण्ड भारतीय देशों का भी।

बालगोविन्द शर्मा आयुर्वेदाध्यापक, गोयनका महाविद्यालय, बनारस

"भूगोल" पुरस्कार-कोष

यह कोष देश में आवश्यक तथा भौगोलिक साहित्य की रचना और पर्यटन की लहर फैलाने के लिये खोला गया है। कृपया अपनी शक्ति के अनुसार इस कोष को पूरा करने में सहायता दीजिये। सहायता भेजने वालों को मनीआर्डर के कूपन पर "भूगोल" पुरस्कार कोष अवश्य लिख देना चाहिये। अगले मास से दान भेजने वालों की नामावली "भूगोल" में प्रकाशित होगी।

मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

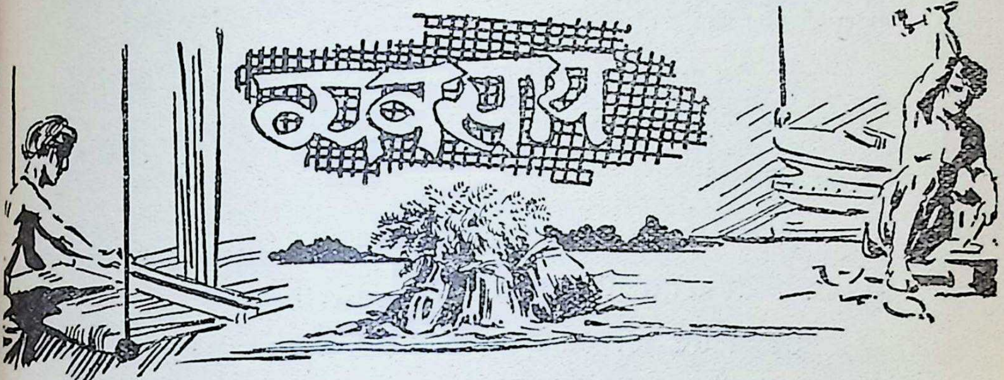

नागौर (मारवाड़) के कुछ औद्योगिक धन्धे

इस सुन्दर नगर की नींव पड़े हुए प्रायः १००० वर्ष बीत चुके हैं।

यह शहर मारवाड़ राज्यान्तर्गत उत्तर की तरफ़ बीकानेर की सरहद के पास आया हुआ है। यद्यपि यहाँ का इतिहास बड़ा ही मनोरंजक है तो भी हमें आज सिर्फ औद्योगिक धन्धों की तरफ़ ही पाठकों का ध्यान आकर्षित करना है।

धातु सम्बन्धी

यद्यपि मारवाड़ में किसी भी खान से लोहा नहीं निकाला जाता है पर इतने पर भी यह देख कर आश्चर्य होता है कि यहाँ के व्यापारी भारत के प्रत्येक भाग में यहीं से लोहे के औज़ार भेजते हैं।

शहर के पास ही एक छोटा सा क़सबा बसा हुआ है जो लोहारपुर के नाम से प्रसिद्ध है। ऐसा ज्ञात होता है कि ये सब मुसलमान लोहार कई शताब्दियों पहिले मुल्तान (पंजाब) से यहाँ आकर बस गये थे, क्योंकि अभी तक उनकी भाषा मुल्तान वालों से मिलती जुलती है।

प्राचीन समय में जब की मशीनों का आविष्कार नहीं हुआ था, तो इनका व्यापार बहुत ही बढ़ा चढ़ा था, पर इस मशीन के युग ने इनको कई बातों में पीछे ढकेल दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मशीन की प्रतियोगिता में न ठहर सकने के कारण से इन्होंने कई धन्धों को छोड़ दिया है पर जो कुछ भी व्यापार अभी तक इनके हाथ में है उसे देखकर एकदम निराश होने की कोई बात नहीं है।

यह लोग प्राय: रेलवे कारख़ानों के बिगड़े सामान को ख़रीद लेते हैं और उस पक्के फौलाद से सुनारों के काम के ऐसे सुन्दर औज़ार बनाते हैं कि उनकी माँग हर जगह बनी रहती है।

यही स्वर्णकारों के औज़ार बाजार के व्यापारी (Order suppliers) ख़रीद लेते हैं और यहाँ से प्राय: भारतवर्ष के सब प्रदेशों में भेजते हैं।

इसके अतिरिक्त यहाँ के ताले, बड़े बड़े कढ़ावे और इमामदस्ते प्रसिद्ध होते हैं और सुदूर भारतवर्ष के कई प्रदेशों में भेजे जाते हैं।

देश के इस धन्धे की अब भी रक्षा की जावे तो ठीक है।

चमड़ा

यों तो मारवाड़ के प्रत्येक प्रदेश से चमड़ा बाहर भेजा ही जाता है पर इस ग्राम की विशेषता देखकर आश्चर्य होता है।

नागौर शहर के पच्छिम की तरफ ५ मील की दूरी पर 'वासनी' नाम का एक गाँव है—यद्यपि यहाँ तक रेल नहीं गई है पर यहाँ ताँगे और बैल गाड़ियों की बड़ी धूम रहती है—यही ग्राम चमड़े के व्यापार के लिये प्रसिद्ध है। इस गाँव में ९५% मुसलमानों की बस्ती है जिनका धन्धा चमड़े का व्यापार करना ही प्रधान है।

पाठकों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि यहाँ से ऐसे पशुओं के चमड़े भेजे जाते हैं, जो कि यहाँ मिलते भी नहीं हैं।

प्रधानत: यहाँ से 'गोह' का चमड़ा बाहर भेजा जाता है इस चमड़े को प्राप्त करने के लिये इनके एजेन्ट भारत के विभिन्न भागों का दौरा करते हैं और इस चमड़े को प्राप्त करके 'वासनी' भेजते हैं। यहाँ के बड़े बड़े व्यापारी इसे मद्रास और मुंबई के व्यापारियों को बेच देते हैं—जो इसे विलायत को भेज देते हैं। गोह के चमड़े का परिमाण १८×४ इंच क़रीब होता है और इस एक चमड़े का मूल्य क़रीब १) होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनते हैं विलायत में जाकर इस चमड़े के सुन्दर बटुए और कीमती जूते बनते हैं।

इसके अलावा मगर मच्छ, साँप, जल मानुस, लोमड़ी और हिरन इत्यादि का चमड़ा भी बाहर भेजा जाता है।

कुछ समय पहिले मोर की पँखें भी बाहर बहुत भेजी जाती थीं, यहाँ तक की उसके विशेष नाम के रोएं तो ८०) तोले तक बिकते थे। पर अब यह व्यापार ढीला है, क्योंकि योरप में अब इसकी माँग नहीं है।

इन्हीं व्यापारों से ग्राम में विदेशों से आये हुए व्यापारियों के दर्शन हर दम होते ही रहते हैं।

खनिज

पास के ही कुछ गाँवों में खड़ी नाम की सफेद मट्टी निकाली जाती है, जो इमारत बनाने के काम आती है। यह यहाँ से बहुत मात्रा में बाहर भेजी जाती है जिससे सीमेंट (cement) बनता है।

इसके अतिरिक्त भी दूसरे कई उद्योग धन्धे हैं जो यहाँ के जीवन प्राण हैं उन पर फिर कभी दृष्टि डाली जावेगी।

भगवती प्रसाद शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिल्का झील

चिल्का झील वास्तव में एक भीतरी उथला समुद्र है। मीलों तक केवल २०० गज़ चौड़ा रेतीला टीला इस झील को समुद्र से अलग करता है। समुद्र का धाड़ना झील से ही सुनाई देता है। पश्चिम की ओर यह झील ऊँचे पहाड़ों से घिरी हुई है। कहीं कहीं ये पहाड़ झील के किनारे एक दम ऊँचे उठे हुए हैं। दक्षिण की ओर ऊँचा जल-विभाजक है जो उड़ीसा प्रान्त को मद्रास प्रान्त से अलग करता है। उत्तर की ओर नदियाँ हर साल इतनी मिट्टी और काँप इस झील में गिराती हैं कि यहाँ यह झील बहुत उथली हो गई है। यहीं कई द्वीप निकल आये हैं। एक एक स्थान पर रेतीले टीले को काटकर चिल्का झील समुद्र से जोड़ दी गई है। इसी तंग मुहाने से ज़ोर का ज्वार आता है। कभी कभी ज्वार एक पानी का पहाड़ सा मालूम होता है।

इस प्रकार चिल्का झील एक ओर समुद्र से और दूसरी ओर पहाड़ से घिरी हुई है। इसका आकार एक नाशपाती के समान हो गया है। इसकी समस्त लम्बाई ४४ मील है। इसके उत्तरी भाग की औसत चौड़ाई २० मील है। पर दक्षिणी भाग तंग होते होते केवल ५ मील चौड़ा रह गया है। खुश्क ऋतु में इसका क्षेत्रफल सिकुड़ कर केवल ३४४ मील रह जाता है। पर वर्षा ऋतु में यह झील उमड़ कर ४५० वर्ग मील फैल जाती है। इसकी औसत गहराई एक या दो गज़ है। ऐसे बहुत ही कम भाग हैं जिनकी गहराई दो गज़ से अधिक है। झील की तली समुद्र-तल से चंद फुट नीची है। झील के भीतरी भाग समुद्र से सदा एक या दो फुट ऊँचे बने रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिल्का झील और समीपवर्ती प्रदेश

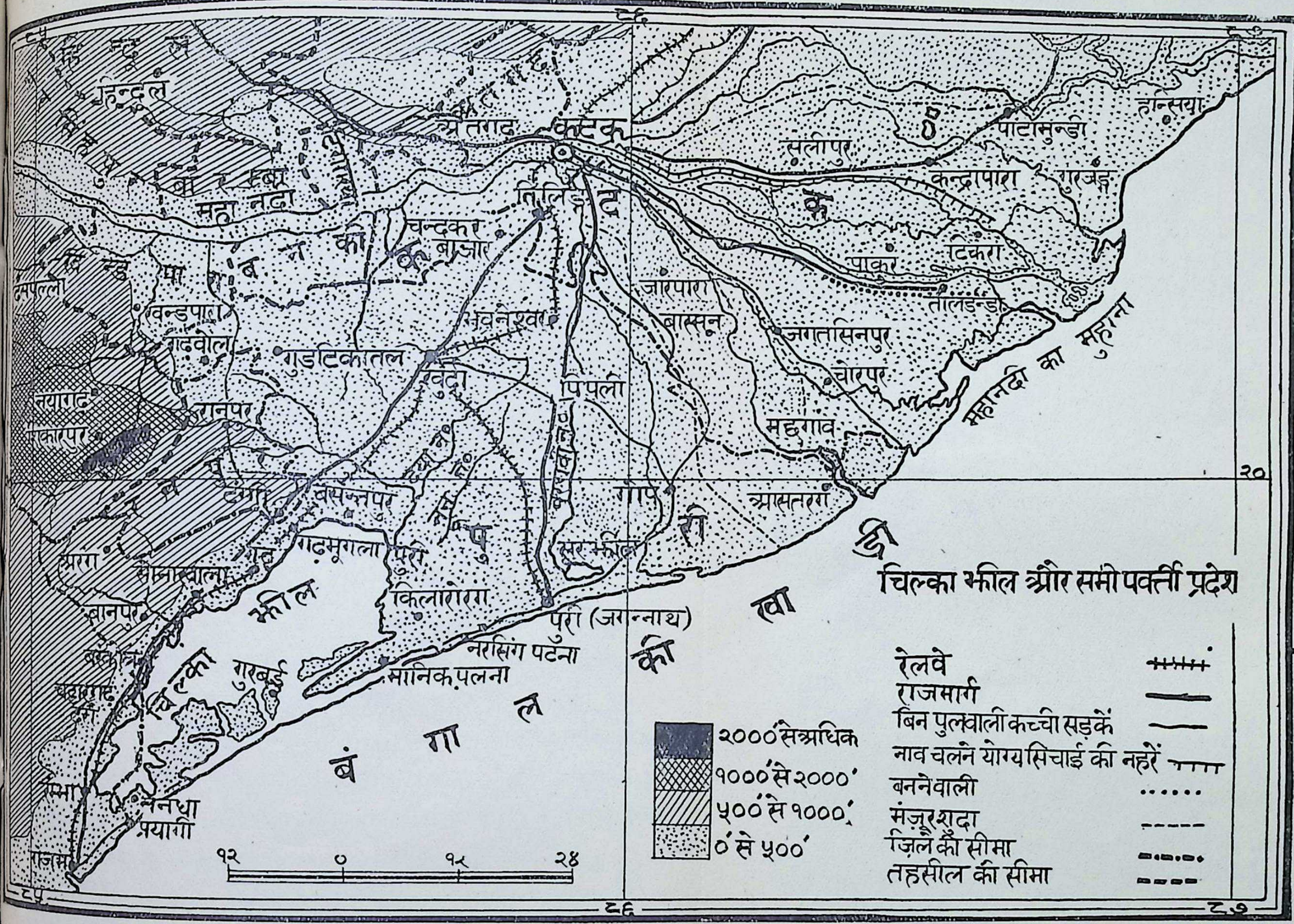

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झील को समुद्र से मिलाने वाली तंग नाली कुछ ही सौ गज़ चौड़ी है। इसलिये इस नाली के द्वारा आने वाले पानी से केवल तीन या चार फुट का अन्तर पड़ता है। पर बाहर की ओर समुद्र में पाँच फुट ऊँचा ज्वार आता है। धरातल में अधिक अन्तर न पड़ने पर भी ज्वार का पानी खुश्क ऋतु में (दिसम्बर से जून तक) झील को खारी बना देता है। पर वर्षा आरम्भ होते ही झील के उत्तरी सिरे पर नदियाँ अपनी बाढ़ का पानी गिराने लगती हैं। बाढ़ का पानी ज़ोर लगाकर समुद्र के पानी को भगा देता है और चिल्का झील का पानी फिर मीठा हो जाता है। चिल्का झील की उत्पत्ति बड़ी विचित्र है। दक्षिण की ओर एक पहाड़ी का सिरा समुद्र तक चला गया है। इस ओर कोई नदी झील में नहीं गिरती है। पर उत्तर की ओर छोटी छोटी नदियों ने मिट्टी लाकर न केवल कई द्वीप बना दिये हैं वरन् नई बनी हुई ज़मीन के सिरे को समुद्र तक पहुँचा दिया है। समुद्र की प्रबल धाराओं और प्रचंड मानसूनी हवाओं ने पूर्व की ओर रेत की दीवार खड़ी करके चिल्का झील को बंगाल की खाड़ी से अलग कर दिया।

उड़ीसा-प्रान्त समुद्र और नदियों का एक बड़ा युद्ध-स्थल रहा है। अति प्राचीन समय में समुद्र पहाड़ियां से टकराता था और यहाँ मैदान का अभाव था। पर छोटी छोटी नदियों ने मिट्टी लाकर समुद्र को पीछे हटाना आरम्भ किया। समुद्र को हार माननी पड़ी। जहाँ पहले समुद्र था वहाँ अब १५० मील लम्बा और ५० मील चौड़ा मैदान है। पर चिल्का झील को बनाने में समुद्र ने नदियों का पूरा पूरा साथ दिया। साथ देने का काम समुद्र बड़ी तेज़ी से कर रहा है। आज से १५० वर्ष पहले चिल्का झील को बंगाल की खाड़ी से अलग करने वाली रेत की दीवार आध मील चौड़ी थी अब उन्हीं स्थानों में वही दीवार दो मील चौड़ी हो गई है। इसी समय रेत की दीवार में १ मील चौड़ी धारा थी। पर चालीस वर्ष के बाद वह धारा बिल्कुल रुंध गई। पर उड़ीसा को बाढ़ से बचाने के लिये धारा का होना आवश्यक था। इसलिये धारा को फिर से खोद कर खोला गया है। पर वह धारा फिर रुँधने लगी। आजकल उड़ीसा के इंजीनियरों का एक बड़ा काम यह है कि वे उड़ीसा के निचले भाग को बाढ़ से बचाने के लिये समुद्र तक पहुँचाने वाली धाराओं को खुला रक्खें। इन इंजीनियरों के लिये नई धारा का बनाना सुगम है पर उसे खुला रखना कठिन है। इस प्रकार वह दिन दूर नहीं है जब यह झील मिट्टी से बिल्कुल भर जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिल्का के दक्षिणी सिरे पर एक सात मील लम्बी नहर रूशीकुल्य नदी को जोड़ती है। झील के दक्षिणी सिरे पर बसे हुए रम्भा नगर से पुरी की ओर अग्निबोटें छूटा करती हैं। दक्षिण से उत्तर को नमक और उत्तर से दक्षिण के लिये अन्न आता है। इस झील के पड़ोस में भिन्न भिन्न लोग रहते हैं। पूर्व की ओर समुद्र और झील के बीच में नई ज़मीन पर नमक बनाने वाले और मछली मारनेवाले लोगों के कुछ झोपड़े हैं। पश्चिम की ओर पहाड़ी बनों और बाँस के झाड़ों में जंगली शिकारी लोग रहते हैं। दक्षिण की ओर कुछ व्यापारी और उत्तर की ओर बाँध बनाकर खेती करने वाले लोग रहते हैं। पर इस ओर खेती करने वालों को हर छठे सातवें वर्ष भयानक बाढ़ का सामना करना पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल के कुछ भीषण चक्रवात

१५-१६ अक्तूबर सन् १८७४ का चक्रवात

बर्दवान कमिश्नरी में इस प्रचंड चक्रवात का घोर आक्रमण हुआ। यह चक्र-वात बंगाल की खाड़ी की ओर से आया। १५ तारीख को दोपहर से आधी रात तक इस तूफान ने बालासोर के उत्तर में बड़ा कोप किया। इसके रास्ते का प्रदेश बरबाद हो गया। कन्टाई के पास मिदनापुर तट पर एक समुद्री लहर ने हमला किया। यह तूफ़ान चक्कर लगाता हुआ दक्षिण-पश्चिम से चला और मिदना पुर ज़िले को पार करता हुआ उत्तर-पूर्व की ओर बढ़ा। इस का व्यास २० मील का था। इसकी तेज़ी १८६४ ई० के तूफ़ान से भी कहीं अधिक थी। इसलिये इसने अपने रास्ते के प्रदेश को अच्छी तरह तबाह कर दिया। मिदनापुर स्टेशन को भारी धक्का पहुँचा। नगर में कई लोग मर गये सारे ज़िले में ३,०४९ मनुष्य और १७,५०० जानवर नष्ट हो गये। मिदनापुर से यह तूफ़ान घाटल और जहानाबाद होता हुआ बर्दवान पहुँचा। इसके आते ही गिरजे का गुम्बज़ उड़कर गिर गया। खाना जंकशन में ऊपर से आने वाली सवारी गाड़ी उड़ गई। बर्दवान ज़िले में २१,००० मनुष्य नष्ट हो गये। हुगली ज़िले में ९, बर्दवान शहर में २९, मुर्शिदाबाद में २७, नदिया में ९ और राजशाही में ४ मृत्यु इस तूफ़ान से हुईं। बांकुड़ा और बीरभूम ज़िलों में भी इस तूफान का कुछ कुछ असर पहुँचा। सूरी स्टेशन पर दो तीन जगह पेड़ उखड़ कर गिर गये। पर उनके पास वाले पेड़ (जो तूफ़ान से अलग थे) बच गये वर्षा भी असाधारण हुई। मिदनापुर में १० इंच, मुर्शिदाबाद में १६ इंच पानी गिरा। मुर्शिदाबाद में ८ बजे सबेरे से ४ बजे शाम तक ज़ोर का तूफ़ान रहा। १६ तारीख़ को गंगा को पार करके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह तूफ़ान राजशाही ज़िले में नष्ट हो गया। हुगली नदी में बहुत सी नावें डूब गईं। ४,००० मनुष्यों के मरने की ख़बर मिली पर असली मृत्यु-संख्या और भी अधिक रही होगी।

३१ अक्तूबर सन् १८७६ की तूफ़ानी लहर

मेघना नदी के मुहाने पर अत्यन्त उपजाऊ और गुंजान आबादीवाले द्वीप हैं। ३१ अक्तूबर सन् १८७६ ई० को तूफ़ान के साथ बंगाल की खाड़ी से पन्द्रह बीस फुट ऊँची लहर आई। रुकावट मिलने पर इसकी ऊँचाई और भी अधिक बढ़ गई। अचानक आधी रात को एक एक करके इसी प्रकार की लहरें तीन बार आईं। ये लहरें ठीक आधी रात को आईं। लोगों को पेड़ों पर चढ़ने का भी मौक़ा न मिला। चारपाई और छप्पर समेत लोग एकदम बाढ़ के ऊपर आ गये। पर लोगों के मकान इस प्रदेश में ताड़, बाँस और दूसरे कँटीले पेड़ों से घिरे हुए थे। जो लोग इस प्रकार अचानक उठकर कँटीले पेड़ों की चोटियों पर अटक गये वे बच गये। उनका तो केवल काँटों ने ही स्वागत किया। पर जो लोग इन कँटीले लेकिन प्राणरक्षक पेड़ों में अटक न सके और बह गये उनका आज तक पता न चला। बहे हुए लोग दूर दूर तक पहुँचे। उनकी लाशें सड़कर इतनी ख़राब हो गईं कि उनके रिश्तेदार भी उन्हें न पहचान सके। डिप्टी मजिस्ट्रेट, पुलिस इन्सपेक्टर, जज और किसान आदि सभी लोगों की एक सी हालत हुई। तूफ़ान आने के पहले इधर के खेत धान की फसलों से हरे भरे थे। यह फसल बिल्कुल नष्ट हो गई। कम से कम ढाई लाख मनुष्य मरे जानवरों की संख्या का पता लगाना कठिन है। बाढ़ के कम होने पर हैज़ा फैला। उस से और भी अधिक हानि हुई।

२५ मई सन् १८८७ ई० का चक्रवात

मई के महीने में बंगाल की खाड़ी में अक्सर तूफ़ान उठा करते हैं। १८८७ ई० में २० मई से ही तूफ़ान की आशंका हो रही थी। २५ मई को फाल्स अन्तरीप से पूर्व की ओर सैन्डहेड और सागर की ओर यह तूफ़ान बढ़ा। इस प्रचंड चक्रवात का केन्द्र २६ तारीख को सवेरे ही सागर के पश्चिम की ओर पहुँच गया। समुद्र में अभूत पूर्व ऊँची लहरें उठ रही थीं। तूफ़ान स्थल की ओर बढ़ा और बालासोर के पश्चिम में पहुँचा। कलकत्ता में इसका वेग अधिक न था। तूफ़ानी लहरें भी मामूली ऊँची थीं। फिर कुछ दिन तक कोई जहाज़ न छूटा। पर रिट्रीवर और चाँदवली या लारेंस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम के दो जहाज़ २५ तारीख़ को दोपर को ही छूट चुके थे। इन दोनों में अधिकतर यात्री थे। एक जहाज़ में ७३५ यात्री थे। ये दोनों जहाज़ डूब गये और किसी यात्री का पता न चला। केवल एक फायरमैन बहता हुआ पाया गया और बचा लिया गया।

ढाका का तूफ़ान

७ अप्रैल सन् १८८८ ई०

७ अप्रैल सन् १८८८ ई० को ढाका में भारी तूफान आया। यह प्रचंड तूफान कुछ ही मिनट रहा। इसने केवल ३½ मील लम्बे और २०० पग चौड़े प्रदेश पर आक्रमण किया। फिर भी इसमें १३० मनुष्य मर गये। १२०० के चोट आई और ७ लाख रुपये की सम्पत्ति नष्ट हो गई। बहुत से घर गिर गये। दूसरा तूफान २३ तारीख को ८ बजे सबेरे आया। इसने श्रीरामपुर के पास भद्रेश्वर नगर पर हमला किया। पाँच मिनट में ही १२ मनुष्य और ४०० जानवर नष्ट हो गये। २५,००० रुपये की सम्पत्ति नष्ट हो गई।

चिटगाँव का चक्रवात

२४ अक्तूबर, १८९७ ई०

२४ अक्तूबर की रात को चिटगाँव में प्रचंड चक्रवात आया। इसका ज़ोर चिटगाँव से काक्सबाज़ार तक प्रायः ७० मील में रहा। इस प्रदेश के दक्षिण में महासुरी नदी का डेल्टा है। डेल्टा के निचले भाग तूफानी लहरों में एक दम बह गये। बहुत से गाँवों में आधे मनुष्य डूब गये। बचे हुए लोगों के मकान ज़मीन में मिल गये। फसलें बिल्कुल नष्ट हो गईं और बहुत से जानवर डूब गये। लगभग १४,००० मनुष्य और १५,००० जानवर डूब गये। इसके बाद हैज़ा फैला। हैज़ा से मरे हुए मनुष्यों की संख्या का ठीक पता लगाना कठिन है। कुतुबदिया का प्रकाश-भवन टूट गया। चिटगाँव बन्दरगाह में जहाज़ों और मकानों को भारी हानि हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सितम्बर (भाद्रपद)

भाद्र मास के नक्षत्रों का अध्ययन करने के लिये सामने का नक़शा, दिया जाता है। मुझे खेद है कि यह नक़शा पाठकों के पास मास के आरम्भ में न पहुँच सका। भविष्य में आकाश दर्शन का नक़शा महीने के आरम्भ में ही भेजने का प्रयत्न किया जायगा। २० तारीख को साढ़े नौ बजे आकाश में नक्षत्रों की वही स्थिति होगी जो नकशे में दिखलाई गई है। इसके बाद दूसरी रात्रि को यही स्थिति ४ मिनट पहले दिखाई देगी। इस प्रकार प्रति दिन ४ मिनट घटते जायंगे। तीस तारीख को रात्रि के लगभग नौ बजे दूसरी स्थिति में तारे दिखाई देंगे।

तारों को देखने के लिये अपने घर की छत, खुला हुआ चबूतरा या और कोई स्थान चुन लो। हो सके तो एक टेलिस्कोप भी ले लो। वैसे बड़े बड़े तारे नंगी आँख से भी दिखाई देंगे। नक़शे को देखने के लिये एक टार्च या लालटीन ले लो। फिर नक़शे की दिशा अपने सामने की दिशा से मिलाकर ठीक कर लो। आकाश गंगा की राशियों को सबसे पहले ढूँढो। चित्रोष्ट्र के बाद अंग्रेज़ी के डब्ल्यू अक्षर के आकार वाला केसिओपिया तारागण है। इसी के एक सिरे पर यमदग्नि है। आकाश गंगा के दूसरे सिरे पर डंक उठाये हुए बिच्छू के समान वृश्चिक राशि है। इसी प्रकार और राशियों को पहचानो।

इस मास में बुध सिंह राशि के पास है। शुक्र तारा सिंह राशि से चलकर कन्या राशि में पहुँच गया है। मंगल तारा २८ सितम्बर (आश्विन कृष्ण ८) को कन्या राशि में चला जायगा। वृहस्पति कर्क के साथ रहेगा। शनिश्चर का धनुः से साथ है। मीन के साथ अरुण और सिंह के साथ वरुण (नेप्चून) हैं

१२ तारीख़ का सूर्य ग्रहण भारतवर्ष में अदृश्य रहा। पर २६ तारीख़ भाद्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
Gurukula Library Kangri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्णिमा का चन्द्र ग्रहण सब जगह दिखाई देगा। रात्रि के १० बज कर ११ मिनट पर चन्द्रमा पृथिवी की खंड-छाया में प्रवेश करेगा।

११-२४ मिनट पर स्पर्श अर्थात् ग्रहण का प्रारम्भ होगा।

१२-३६ मिनट पर ही सर्व ग्रास होगा।

१-१८ मिनट पर ही मध्य होगा।

२-९ मिनट पर चन्द्र मण्डल स्वच्छ होने लगेगा, और ३-१२ मिनट पर मोक्ष होगा (ग्रहण छूटेगा)। २७ को प्रातःकाल ४ बज कर २७ मिनट पर चन्द्रमा खंड-छाया को पार कर लेगा। १ घंटा २४ मिनट तक रात अँधेरी रहेगी। और राहुग्रस्त चन्द्रमा तांबे के समान लाल रहेगा। सामने के गोलार्ध और सर्वत्र भारत में ३ घंटे ४८ मिनट तक यह चन्द्र ग्रहण रहेगा।

सितम्बर (भाद्रपद) मास में आकाश-दर्शन

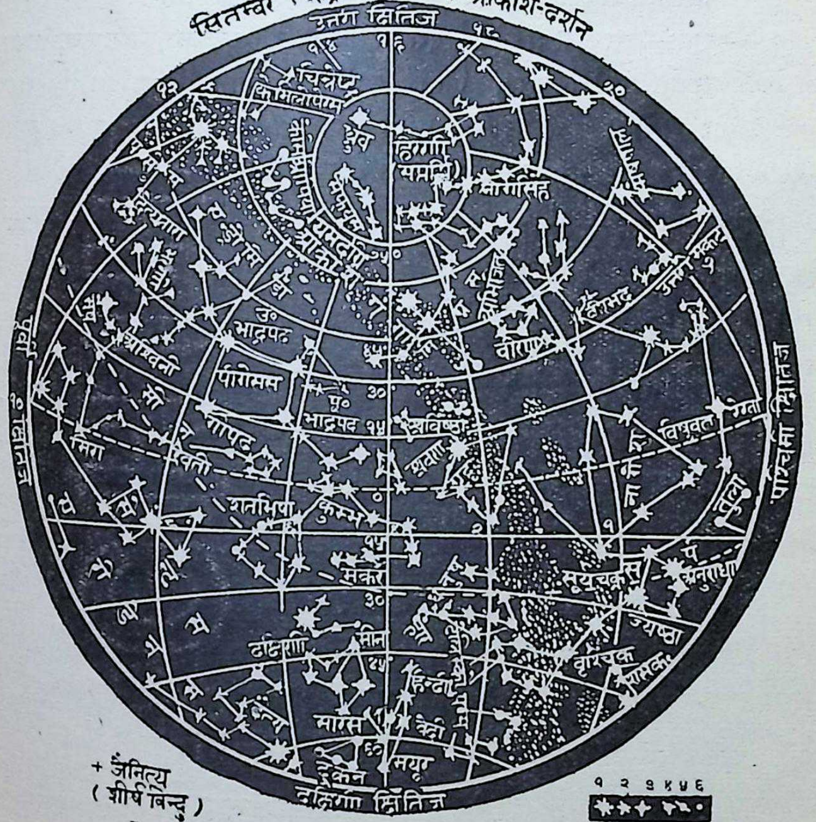

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल" का स्थायी साहित्य

१—**भारतवर्ष का भूगोल**—यह पुस्तक सारे भारतवर्ष, ब्रह्मा और लंका की यात्रा के बाद लिखी गई है। इसमें सन् १९३१ की मनुष्य-गणना के अंक दिये गये हैं। पुस्तक में २ तिरंगे, ४ चित्रमय नक़शे और १०० से ऊपर एक रंगे नक़शे और चित्र हैं। अब तक भारतवर्ष का कोई भूगोल ऐसी विस्तृत यात्रा के आधार पर नहीं लिखा गया। न कोई भूगोल इतने मौलिक नक़शों और चित्रों से सुसज्जित है। मूल्य केवल २) रु० डाक व्यय ।=)

२—**भारतीय भाषाएँ**—मूल्य ।), इसमें भारतवर्ष की सभी भाषाओं का विषद वर्णन है।

३—**संसार-शासन**—मूल्य ।), इसमें संसार के प्रमुख देशों की शासन-पद्धति का विवरण है।

४—**अफ़ग़ानिस्तान**—मूल्य १), इस अंक को पढ़ने से अफ़ग़ानिस्तान का एक संक्षिप्त चित्र आँखों के सामने खिँच जाता है—प्रताप, कानपुर

५—**टर्की**—मूल्य १), इस अंक में टर्की की प्रायः सभी भौगोलिक और ऐतिहासिक स्थितियों का बड़ा सुन्दर और रोचक संकलन है।

६—**ईरान**—इस अंक में ईरान देश की स्थिति, भू-रचना, जलवायु, उपज, व्यापार, मार्ग, निवासी, इतिहास, साहित्य, वर्तमान परिस्थिति आदि फारस देश के सभी अंगों पर पूरा पूरा प्रकाश डाला गया है। यह अंक सुन्दर चित्रों और बड़े नक़शों से सुसज्जित है। मूल्य केवल १) रु०।

७—Geographical Questions (For High School Examination)—मूल्य -)॥, इसमें १० वर्षों के हाई स्कूल के प्रश्न-पत्र छपे हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक महाद्वीप, भारतवर्ष और प्राकृतिक भूगोल पर प्रसिद्ध भूगोल विशारदों के चुने हुए प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रति का डाकव्यय आध आना अलग है।

८—**वर्नाक्यूलर फाइनल परीक्षा के भूगोल-प्रश्न पत्र और उनके आदर्श उत्तर**—मूल्य ॥), इसमें १९२० से १९३१ ई० तक के प्रश्न-पत्र और आदर्श उत्तर दिये गये हैं। परीक्षार्थियों के सुभीते के लिए हर सन् का पूरा पत्र आरम्भ में छापा गया है। इसके बाद प्रश्नों का उत्तर उसी ढंग से दिया गया है जो परीक्षकों को पसन्द है। इस पुस्तक को पढ़कर विद्यार्थी लोग उत्तम श्रेणी के नम्बर सहज ही में प्राप्त कर सकते हैं।

मैनेजर "भूगोल"

इलाहाबाद

Gurukula Library Kangri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल" की नियमावली

१—"भूगोल" प्रत्येक मास की १० तारीख़ तक प्रकाशित होगा।

२—इसका अग्रिम वार्षिक मूल्य भारतवर्ष में ३) रु० और विदेशों में ५) रु० है एक प्रति का मूल्य ।-) है। नमूने की कापी के लिये आर्डर के साथ पाँच आने के टिकट भेजने चाहिए।

३—संरक्षकों से उनके सम्मानार्थ १० रु० वार्षिक है। आजन्म संरक्षकों से केवल एक बार १००) रु० है।

४—कार्यालय से पत्रव्यवहार करते समय ग्राहकों को ग्राहकनम्बर अवश्य लिखना चाहिए। प्रबन्ध-सम्बन्धी पत्र—मैनेजर "भूगोल," ईविङ्ग क्रिश्चियन कालेज, इलाहाबाद के पते से आने चाहिए।

५—समालोचनार्थ पुस्तकें, परिवर्तन के पत्र, और प्रकाशित होनेवाले लेख—सम्पादक, "भूगोल", ई० सी० कालेज, इलाहाबाद के पते से आने चाहिए।

६—"भूगोल" का वर्ष जूलाई मास के विशेषाङ्क से आरम्भ होता है। मई और जून मास की छुट्टी रहती है। पर ग्राहक किसी मास से आरम्भ कर सकते हैं। पिछले वर्षों के सब अङ्क मौजूद नहीं हैं। जो मौजूद हैं उनमें से प्रत्येक का मूल्य ।-) है।

७—कार्यालय से "भूगोल" भली भाँति जाँच कर प्रत्येक ग्राहक के पास भेजा जाता है। फिर भी यदि किसी मास का "भूगोल" किसी ग्राहक को न मिले तो ग्राहक-महाशय पहले अपने पोस्ट आफ़िस से पूछें। जो उत्तर मिले उसे ग्राहक-नम्बर सहित कार्यालय में दूसरे मास की १० तारीख़ तक भेज देने से खोया अङ्क बिना मूल्य प्राप्त होगा। अन्यथा ।-) मिलने पर ही दूसरा अङ्क भेजा जायगा।

८—एक दो मास के लिए पता बदलवाना हो तो अपने पोस्ट-आफ़िस को लिखना चाहिए, अधिक समय के लिए कार्यालय को लिखना चाहिए।

९—लेख को छापने अथवा न छापने तथा उसमें काट-छाँट करने का सब अधिकार सम्पादक को प्राप्त है। "भूगोल" में प्रकाशित लेखों को कोई महाशय सम्पादक की आज्ञा बिना न छापें।

१०—सचित्र लेख के चित्रों का प्रबन्ध लेखक महाशय को ही करना होगा।

मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose: Bhugol aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents: Articles are published on varied topics of geographical interest: Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving a file of Bhugol any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

An index to each volume will be supplied with the April number.

Travel Department: The Travel Department of Bhugol annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools: The use of Bhugol in connection with the geography instruction in high schools, normal schools, and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, Berar, the Central Provinces, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior and Jaipur.

Correspondence: Editorial communications, exchanges, and books for review, should be addressed to: Pt Ram Narain Misra, Editor, **Bhugol**, Geography Department of Ewing Christian College, Allahabad City.

Business communications, including subscriptions and advertisements, should be addressed to: The Manager **Bhugol**, Ewing Christian College, Allahabad. Telegrams: 'Bhugol,' Allahabad.

Subscriptions: Prepaid annual subscription: To any place served by the Indian Post Office Department, Rs.3. To any other country in the Universal Postal Union, Rs.5 or 7*s*. 6*d*. or $1.50.

To adressees in India the first copy will be sent by V.-P. P., unless remittance accompanies order. V.-P. P. Fee, 3 annas.

Remittances: Make all remittances by cheque, money order or British Postal Order, payable to the Manager, **Bhugol.**

Rates for Advertisements:

Ordinary full one page	Rs.	10
3rd page of the cover	"	12
4th page of the cover	"	15

Write to the Manager,

" BHUGOL,"

Ewing Christian College, Allahabad

Printed by S. S. Srivastava, at the Allahabad Law Journal Press, Allahabad
Published by the Editor (Pt Ram Narain Misra, B.A.) under
the auspices of the Ewing Christian College, Allahabad

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Bhugol—October 1931 [Regd. No A. 1333

वर्ष ८] अक्तूबर १९३१ [संख्या ६

भूगोलविषयक हिन्दी का एक-मात्र सचित्र मासिक पत्र

...ह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्य...
...ान्त तथा ग्वालियर, जेपुर और ...
...ग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के ...
...ए स्वीकृत है।

...८] आश्विन सं० १९८८, अक्तूबर १९३१ [संख्या ६

एक प्रसिद्ध भौगोलिक पत्र

काबुल—अफ़ग़ानिस्थान
मंगल १८ मार्च १९...

... "...गोल"

भूगोल अनुभव हेतु यह "भूगोल" पत्र अमोल है।
"भूगोल" कहता है निरख, भू गोल है भूगोल है॥

सम्पादक—रामनारायण मिश्र, बी० ए०

वार्षिक मूल्य ३) एक प्रति का ।-)

ईविंग क्रिश्चियन कालेज, प्रयाग से संरक्षित

Yearly Subscriptions:
Indian Rs. 3
Foreign Rs. 5

Single Copy
5 as.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

...onth, and qu...

लेख ...mbers contain serial article पृष्ठ संख्या

१—एक प्रसिद्ध भौगोलि... preserving a file of Bhugol any ...invaluable reference material. १६९

An index to each volume will be supplied with the April १७२

Travel Department: The Travel Department of ... annually arranges tours which provide an excellent opportunity fo... १७७

graphy teachers and students to visit regions of special interest in १८०

Burma and Ceylon. Full information will be supplied on applicatio... a stamped and addressed envelope).

Use in Schools: The use of Bhugol in connection with t... graphy instruction in high schools, normal schools, and middle sc... १८२

specially sanctioned by the Educational Departments of the Unit... १८६

vinces, Berar, the Central Provinces, the Punjab, Bihar and Orissa, and Jaipur. १९२

Correspondence: Editorial communications, excl... को ...r review, should be addressed to: Pt Ram Narain... १९४

९—Geography Department of Ewing Christian C... १९६

१०—एक ...munications, including subs... १९७

११—संक्षिप्त समाचार The Mana... सम्पादकीय विचार— १९९

१२—ज्योतिष— २०४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाबप्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिए स्वीकृत है।

वर्ष ८] आश्विन सं० १९८८, अक्तूबर १९३१ [संख्या ६

एक प्रसिद्ध भौगोलिक पत्र

काबुल—अफ़ग़ानिस्थान
मंगल १८ मार्च १९३०

सेवा में
श्रीयुक्त सम्पादक जी "भूगोल"
प्रयाग

महाशय—प्रेम !

आप को आश्चर्य होगा कि मैं ने आप के पत्र का समाचार किस अद्भुत मार्ग वा रीति से सुना। फीजी टापू के फीजी-समाचार का जनवरी अङ्क मेरे नाम बर्लिन पहुँचा। वह वहाँ से लौट कर कल परसों मुझे यहाँ मिला। इस के द्वारा यह पता चला कि आप ने कोई अफ़ग़ानिस्थान के विषय में विशेषाङ्क निकाला था और उस में कई मनोहर चित्र थे जिन में "कन्धार के फल" अति सुन्दर था। वह अङ्क, वह कथा, सम्भवतः अब बहुत पुरानी पड़ गई हो। वह अब न केवल भौगोलिक विवरण है वरन एतिहासिक स्वरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी धारण कर चुका है। तब भी मैं आप को इस विषय में कुछ कष्ट देना उचित समझता हूँ। मेरा निवेदन है कि इस प्रकार के कार्य—जैसा अङ्क आप ने निकाला—न केवल अपने देश वासियों को कुछ विशेष ज्ञान प्रदान करते हैं वरन इनके द्वारा दूसरे देशों से घनिष्ट सम्बन्ध भी स्थापित किया जाता है। यद्यपि इस देश के नेता हिन्दी भाषा नहीं जानते तथापि उनको आप का विशेषाङ्क देख अवश्य आनन्द होता और भारत वासियों के लिये और भी अधिक श्रद्धा उत्पन्न होती। जहाँ तक मुझे पता चला है आप का अफ़ग़ानिस्थान अङ्क स्वयं अफ़ग़ानिस्थान में ही नहीं पहुँचा। यदि अब भी आप के पास उस अङ्क की कुछ प्रतियाँ बची हों तो एक एक प्रति श्री मान पादशाह, [2]वज़ीर आज़म, [3]वज़ीर ख़ारजा, [4]वज़ीर मार्रफ अर्थात [2]प्रधान मन्त्री, [3]परि राष्ट्र सचिव, [4]विद्या सम्बन्धी मन्त्री को भेजें। मैं तो स्वयं यहाँ से शीघ्र ही जानेवाला हूँ। कोई एक मास से आज कल चलने की आशा में टिका हुआ हूँ। केवल वायु-विमान की प्रतीक्षा है। कभी पहाड़ों के इस ओर बर्फ पड़ने लगी कभी उस ओर वायु तीव्र चलने लगी। इसी प्रकार देर होती चली गई है। परन्तु अब अधिक देर नहीं होनी चाहिये। यदि आप मेरे नाम भी एक प्रति भेजने की कृपा करना चाहें तो c/o American Express and Co. New-york U. S. A. को रवाना कर दें। मुझे स्वयं भूगोल विद्या से अधिक प्रेम रहा है। मेरे जीवन का एक बड़ा भाग मानो भूमण्डल को नापने में ही बीता है। अब तक चार बार तो पृथ्वी परिक्रमा कर ही चुका हूँ और अब यदि वर्तमान सङ्कल्पानुसार अमरीका गया वा वहाँ से चीन-जापान की ओर बढ़ा तो एक और परिक्रमा हो जायगी। मैं आप के एक साधारण अङ्क को देखना अवश्य चाहता हूँ। यदि मुझ से उस की कुछ सेवा हो सकेगी तो मैं सहर्ष जब तब कुछ लिख भेजा करूंगा। आज आप के पाठकों को यहाँ भूगोल-सम्बन्धी कुछ ऐसी बातें सुनाता हूँ जो कदाचित बहुतों के लिये सर्वथा नयी होंगी। यात्रा वा केवल यात्रा ही मनुष्य को वास्तविक भूगोल ज्ञान प्रदान करती है। स्वयं भूगोल की बड़ी से बड़ी पुस्तक किन्ही यात्रियों के अनुभव मात्र होते हैं। मैं स्वयं भूगोल सम्बन्धी बहुत सी बातें केवल यात्रा से सीख सका हूँ। उदाहरणतः मुझे समस्त पुस्तकों से जो मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने पढ़ीं थीं यही ज्ञात हुआ था कि तिब्बत एक ऊजड़ बर्फिस्थानी पटपड़ा है। वहाँ के ऊँचे पर्वतों वा ऊँची घाटियों के विवरण भी सुने थे। पर जब मैं पूर्वी तिब्बत में पहुँचा और वहाँ के हरे भरे बनों को देखा तो मेरे आश्चर्य की कोई सीमा नहीं रही। वहाँ नीली नदी के किनारों पर—ऊँचे हरे पहाड़ों के मार्गों पर जो दृश्य देखे उन से संसार के सुन्दर से सुन्दर चित्र याद आ गये। इसी प्रकार मुझे मेरी यात्रा ने यह सिद्ध किया कि सूचुआन चीन का प्रान्त संसार के अति मनोहर स्थानों में एक है। जापान की शोभा, काश्मीर की उपमा, बदख्शां की बुलबुल हज़ार दास्तां की प्रशंसा, स्विटज़रलैण्ड के चितचोर दृश्यों की चर्चा तो मैं ने कुछ कुछ पहले भी सुनी थी। पर हवाई टापू को देखने पर ही यह ज्ञात हुआ कि वह तो मानो समुद्र का नगीना है—पृथ्वी का सिङ्गार है! एक और स्थान पर—यों तो और बहुत से स्थानों पर—किन्तु यहाँ एक ही और स्थान की चर्चा करूँगा—एक और जगह मुझे मेरे समस्त विचारों के प्रतिकूल एक चित्र देखने को मिला। वह था नगर उर्गा अथवा ऊलान बातोर मंगोलिया की राजधानी का। वहाँ के वह लकड़ी के घर, वह फिर बुद्ध भगवान के बड़े बड़े मन्दिर, वह विशाल मूर्तियाँ, उस ठंडी जल वायु में जहाँ इक्कीस जून मास को मैं ने स्वयं बर्फ पड़ती देखी। ये ऐसी वस्तुएँ थीं जो मानो कोई स्वप्न की घटनायें हों। जब तब इन्हीं और ऐसी ही दूसरी तसवीरों के विषय में फिर कभी भूगोल में कुछ लिखूँगा। परन्तु एक बार पत्रिका के दर्शन की आवश्यकता है।

प्रेमी म० प्रताप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिब्बत के बच्चे*

[लेखक—प्रो० सिद्धिनाथ चौबे, एम० ए०]

तिब्बत के बच्चे प्रसन्न चित्त एवं शरारती होते हैं। बड़े होने पर भी उनकी प्रसन्न चित्तता और शरारत उन से दूर नहीं होती। वे बड़े खुले दिल होते हैं और हँसी-दिल्लगी करना उन्हें बहुत पसंद है। जीवन-संग्राम के लिए उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा होता है और वे अपने कार्यों में कठिन परिश्रम करते हैं।

तिब्बत-निवासियों का विश्वास है कि दिन में सोना हानिकारक है, क्योंकि इससे ज्वर हो आता है। इस कारण वहाँ दिन में कोई नहीं सोता, और यदि कोई सोता है तो उस के संबंधी उस के मुँह पर पानी छिड़क कर उसे जगा देते हैं।

जब तक बच्चे दो तीन वर्ष के नहीं हो जाते, तब तक माताएं उन्हें अपनी छाती का दूध पिलाती हैं। यदि बच्चे की माँ मर जाय, तो कोई समीपी संबंधी अथवा दाई माता का स्थान ग्रहण करती है और यदि ये भी न हुईं, तो गाय का दूध पिलाया जाता है।

पूर्वीय भाग में लामा अथवा कोई अन्य प्रसिद्ध पुरोहित बच्चे का नामकरण संस्कार करता है। पर बहुधा पुकारने का नाम इस नाम से भिन्न और

---

* 'सर चार्ल्स बेल' लिखित 'पीपुल आव टिबेट' के आधार पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक प्रयुक्त होता है। मध्य तिब्बत में माता-पिता ही बच्चे का नाम रखते हैं। कभी कभी कुछ वर्ष उपरान्त लामा नाम-करण कर देता है और तब पुरोहित का दिया हुआ नाम ही माता-पिता के रखे हुए नाम का स्थान ग्रहण कर लेता है।

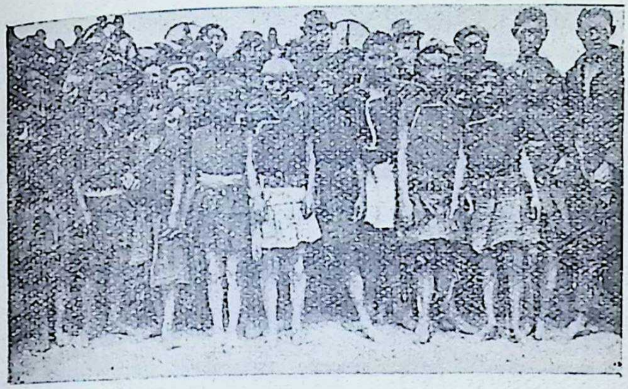

बालकों के दो नाम होते हैं। एक नाम तो अक्सर उस दिन का नाम होता है जिस दिन वह जन्म लेता है और दूसरा नाम किसी देवी-देवता अथवा पुष्प आदि के शुभ नाम पर रखा जाता है। बालिकाओं के भी दो नाम होते हैं। एक तो स्त्री का नाम होता है और दूसरा बालकों की भाँति किसी देवी-देवता का नाम अथवा अन्य शुभ सूचक शब्द होता है।

नाम-करण के पश्चात् एक दूसरा संस्कार होता है जिसे 'जीवन-शक्ति' (ट्सेवैंग) कहते हैं। किसी किसी भाग में यह संस्कार जन्म के तीसरे दिन किया जाता है, पर बहुधा यह भविष्य के लिए टाल दिया जाता है। इस संस्कार का तात्पर्य चिरायुष करने का है। यह केवल बच्चों ही का संस्कार नहीं है, वरन् युवक और वृद्ध भी इसके अधिकारी हैं। जभी कोई व्यक्ति बीमार पड़ता है, तभी इस संस्कार की बन आती है। लामा का नौकर जीवन प्रदायिनी गोलियाँ तथा पेया तैयार करता है। स्वयं लामा सप्ताह भर तक प्रार्थना करता रहता है। तत्पश्चात् 'अनंत-जीवन देव' की मूर्ति प्रार्थी के सिर पर स्थापित कर उसकी पूजा की जाती है। इस भाँति यह संस्कार, किसी मनुष्य के जीवन में कई बार किया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ दिनों बाद क्षौर-कर्म संस्कार होता है। इसमें बच्चे का सिर मूँड़ दिया जाता है। हाँ, बीच में एक चुटिया छोड़ दी जाती है। जब पुरोहित के पास बच्चा नाम-करण के हेतु लाया जाता है, तो वह स्वयं इस चुटिया को काट देता है। यह नया नाम 'सुनहला नाम' अथवा 'पुरोहिती नाम' कहलाता है।

लोगों का विश्वास है कि नवजात शिशु को पूर्व-जन्म की बातें स्मरण रहती हैं, पर ज्यों ज्यों वह चलने-बोलने लगता है, त्यों त्यों वे बातें विस्मृत होती जाती हैं। तिब्बत में पूर्व जन्म विषयक ज्ञान की बहुत सी कथाएँ प्रचलित हैं। "एक बार लोग सात महीने के एक बच्चे को एक मंदिर में ले गये। वहाँ लामा की एक मूर्ति स्थापित थी। मूर्ति देख कर बच्चा जोर से हँसने लगा। जब लोगों ने उससे हँसने का कारण पूछा, तो उसने मूर्ति की ओर उंगली उठा कर अपनी ओर इशारा किया। अर्थात् उसने मूक भाषा में उत्तर दिया कि मैं ही लामा हूँ। लोग विश्वास करते हैं कि यह स्मरण-शक्ति अवतारों में अधिक होती है। अर्थात् उन पवित्र आत्माओं में यह शक्ति विशेष रूप में वर्तमान रहती है जिन्हें निर्वाण मिल गया था, पर जिन्हों ने संसार की भलाई करने को फिर जन्म ग्रहण करना स्वीकार कर लिया है।

यदि बच्चे को भिक्षु बनाना हुआ तो उसकी शिक्षा-दीक्षा किसी बिहार में होती है। तिब्बत में बहुत सी ऐसी कथाएँ प्रचलित हैं जिनसे बच्चों की इच्छा भिक्षु बनने की प्रत्यक्ष प्रगट होती है। "एक बार एक निर्धन माता ने अपने बेटे से कहा, 'अब तुम पढ़ना-लिखना छोड़ दो। हम गरीब हैं, इतना ख़र्च कहाँ मिलेगा?" पर उस बच्चे ने उत्तर दिया "संसार के प्रत्येक उच्च व्यक्ति को कठिनाइयों और कष्टों का सामना करना पड़ा है।" इसी भाँति की बहुत सी कथाएँ तिब्बत के इतिहास में भरी पड़ी हैं और लोग इनमें पूर्णतया विश्वास करते हैं।

यद्यपि लासा ऐसे बड़े बड़े नगरों में वर्तमान नियमों के अनुसार शिक्षा होने लगी है, पर अधिकतर शिक्षा का वही प्राचीन ढंग अभी तक चला जाता है। छः सात वर्ष की अवस्था तक बच्चे घर ही में अपने माता-पिता से प्रार्थना और तहजीब सीखते हैं। इसके उपरांत वे किसी शिक्षक के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास भेज दिये जाते हैं। शिक्षक की कोई फ़ीस नहीं होती। फ़ीस देने के बदले शिष्य उसकी सेवा करते हैं और उसके घर के काम काज कर देते हैं। जब वहाँ की पढ़ाई समाप्त हो जाती है, तब लोग अपने बच्चों को लासा ऐसे नगरों की पाठशालाओं में भेजने का विचार करते हैं।

तिब्बती बच्चे काठ की पट्टियों पर बाँस की कलमों से लिखने का अभ्यास करते हैं। लिखने पर वहाँ विशेष ध्यान दिया जाता है। अन्य विषय रटा रटा कर याद कराये जाते हैं। इससे उनकी याद करने की शक्ति बहुत बढ़ जाती है। पर उनका हिसाब बड़ा कमज़ोर होता है। यहाँ तक कि साधारण साधारण जोड़, बाकी बिना माले की सहायता के नहीं कर सकते।

चित्र खींचने, रंग भरने, धातु और लकड़ी पर नक्क़ाशी करने का स्वाभाविक शौक तिब्बतियों में पाया जाता है। औषधि-ज्ञान की क्षमता भी उनमें विशेष जान पड़ती है।

कक्षा में लड़के खूब चिल्ला चिल्ला कर पढ़ते हैं। पाठ याद न करने पर वे पीटे भी खूब जाते हैं।

लड़कियों की शिक्षा प्रायः घर ही में होती है। शिक्षा के साथ साथ उन्हें घर के सब छोटे मोटे काम भी करने पड़ते हैं। वे बालकों के साथ भेड़ चराने जाती हैं, लकड़ियाँ चुनती हैं, और कंडे इकट्ठा करती हैं। कभी कभी लकड़ियाँ और कंडे चुनने के लिये उन्हें हज़ारों फ़ीट नीचे तराई में उतरना पड़ता है। वे घर के छोटे छोटे बच्चों को खिलाती हैं, कुएँ से पानी लाती हैं और घर के अन्य कार्य करती हैं।

तिब्बती बच्चे शरारती तो होते ही हैं, खिलाड़ी भी अव्वल दर्जे के होते हैं। ग्रीष्म ऋतु में वे कुश्ती लड़ते हैं, पत्थर फेंकते हैं और निशाना बाज़ी करते हैं। कुछ बच्चे कलाबाजी में बड़े प्रवीण होते हैं। वे अपने हाथों या सिर के बल देर तक खड़े रह सकते हैं। कुछ धनुष या गोफन बना कर चट्टान, डाल या चिड़ियों पर निशाना मारते हैं। कुछ टट्टुओं की सवारी पसंद करते हैं और उन्हें खूब सरपट दौड़ाते हैं।

वे एक खेल खेलते हैं जिसका नाम 'भेड़-भेड़िया' है। एक लड़का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेड़िया बनता है और शेष भेड़ें। भेड़िया पिछली भेड़ को पकड़ने का प्रयत्न करता है और सब उसकी रक्षा करते हैं।

जाड़ों में वे बरफ पर फिसलते हैं अथवा बरफ के गेंदों से खेलते हैं। लड़कियाँ घर-घरौना बनाती हैं और घरेलू खेल खेलती हैं। वे फूल-पत्तियों की मालाएं बना कर उन्हें पहनती हैं और मिट्टी की रंग बिरंगी टोपियाँ बनाती हैं। कभी कभी सीसे के बने हुए गेंद को पैरों से उछालती हैं और देखती हैं कि कितनी बार तक वे उसे ज़मीन पर नहीं गिरने देतीं।

दो सौ रुपये का इनाम लेने के लिये एक दम "भूगोल" के ग्राहक हो जाइये अथवा १) रुपया प्रवेश शुल्क (फी) भेजिये। ग्राहकों और प्रवेश शुल्क भेजने वालों को प्रवेश पत्र (फार्म) मुफ़्त मिलेगा। केवल डाक व्यय के लिये एक -) आने का टिकट भेजना पड़ेगा।

मैनेजर, "भूगोल"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

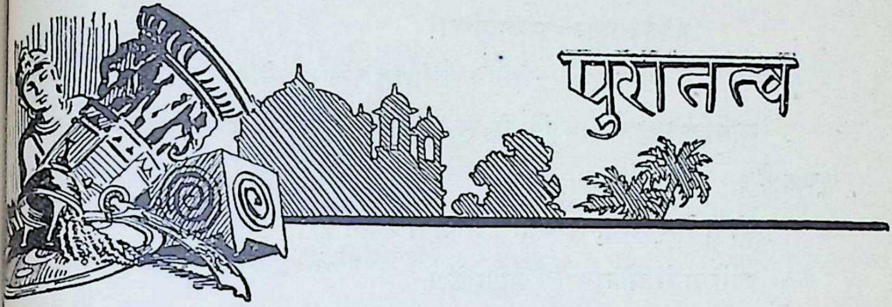

कश्यप

(गतांक से आगे)

आबादी—कश्यप देश के निवासी कश्यप या कूर्म कहलाते थे जो अब

भारतवर्ष में	कश्यप=काछी
	कूर्म=कुर्मी
	कूर्म=कोरी
पूर्वीय तुर्किस्तान में	कश्यप=काशानियाँ
कोरिया में	कूर्म=कोरिअन
ईरान में	कूर्म=कुर्रम
कुर्दिस्तान में	कूर्मेश=कुरेश; कूर्मवत्=कुर्द
काकेशिया में	कूर्म=कारमेनिअन्स (लघु रूप अरमेनिअन)
क्राइमिया में	कूर्म=क्राइमिअन
योरुप में	कश्यप=काकेशियन रेस
	कश्यप=कैस्पिअन रेस कहलाते हैं

बस्तियाँ—कश्यपों की नौ आबादियाँ

पूर्व में	कूर्म द्वीप=क्यू राइल	जापान द्वीप समूह में
	कश्यप द्वीप=क्यूश्यू	
पश्चिम में	कूर्म नगर=किरमान ईरान में	
	कूर्म नदी=कारून नदी ईरान में	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूर्म नदी=कुर नदी काकेशिया में

कूर्म देश=क्राइमिया रूस के दक्षिण में

कश्यप नगर=कुस्तनतनियाँ

कूर्म देश=कारमेनिआँ (लघु रूम आरमेनिआँ)

खनिज पदार्थ—कछुवे के पेट का रंग पीला होता है जो कि सोने का सूचक है।

सोना साइबेरिया में कसरत से पाया जाता है।

कोरिया में सोना पाया जाता है।

तिब्बत में सोना पाया जाता है।

मंगोलिया में अल्टाई (सोने का पहाड़) प्रसिद्ध है।

चीन में याङ्गटिसीकआङ्ग के रेत से सोना मिलता है।

इसी कारण यह नदी "स्वर्ण नदी" कहलाती है।

कुछ काल के अनन्तर कश्यप देश के दो भाग हो गये।

एक—हिरण्याक्ष, कश्यप की पिछाड़ी।

दूसरा—हिरण्य कश्यप, कश्यप की पीठ।

हिरण्याक्ष

सीमा—इस देश की सीमा उत्तर में आर्क्टिक महासागर; पश्चिम में यूराल पहाड़, यूराल नदी और कास्पियन सागर; दक्षिण में ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, भारतवर्ष, पूर्वीय तुर्किस्तान, मंगोलिया, मन्चूरिआ व कोरिआ; और पूर्व में जापान सागर, ओखोटस्क सागर व बैरिङ्ग सागर है।

इसमें साइबेरिया और पश्चिमीय तुर्किस्तान शामिल हैं।

नाम—इसका नाम हिरण्याक्ष पर पाया जाता है जैसे

हिरण्याक्ष सागर=अरल सागर

हिरण्याक्षी=इराक़ी

रूप—हिरण्याक्ष का रूप एक महाकाय पुरुष के समान है जिसका शिर पश्चिमीय तुर्किस्तान; मुकुट कास्पियन सागर; मस्तक कोपेट की डांग (पहाड़); आँखें अरल सागर; मुख हिन्दूकुश; होठ पामीर; लब बालकश झील; ठोडी अलाई, टाघ व थिआनशान; गर्दन ईशम के ठाल; छाती अल्टाई पहाड़; हृदय को बड़ोका पठार;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोंद सायन व याबलोनोई पर्वत; नाभि वैकाल झील; जंघायें स्टेनो वोई के पहाड़; बायाँ पैर टारटर पहाड़; दाहिना पैर किलोन का ज्वाला मुखी पर्वत और पीठ तन्दरा देश है।

गुण—इस देश के रहने वालों की आँखों का रंग सोने के समान होता है इसी लिये हिरण्याक्षी कहलाते थे।

हिरण्य कश्यप

विस्तार—हिरण्य कश्यप देश में तिब्बत, पूर्वीय तुर्किस्तान, मंगोलिया, मंचूरिआ, कोरिआ, चीन, टौनक्विन, ऐनाम, काश्मीर व पंजाब (सिन्धु व सतलज नदियों के बीच का भाग) शामिल है।

नाम—इसके नाम की व्याख्या कश्यप के पाठ में हो चुकी है पाठक वहाँ देख लें।

रूप—इसका रूप कछुवे के समान है जिसकी गर्दन टौनक्विन व ऐनाम; दाहिना पैर काश्मीर व पञ्जाब; बायाँ पैर कोरिआ और पीठ तिब्बत, पूर्वीय तुर्किस्तान, मंगोलिया, मंचूरिआ व चीन है।

गुण—इस देश का पीला रंग प्रसिद्ध है जैसे

हिरण्य वंश=पीली क़ौम

हिरण्य सागर=पीला सागर

हिरण्य नदी=होङ्गहो (पीली नदी)

हिरण्यनद=याङ्गटिसिकिआङ्ग (स्वर्ण नदी)

हिरण्य मृतका=उत्तरीय चीन व मंगोलिया की पीली मिट्टी जो लोयेस (Loess) कहलाती है।

हिरण्य पर्वत=अल्टाई पहाड़ (स्वर्ण पर्वत) प्रसिद्ध है।

हिरण्य पर्वत=पीलिङ्ग पर्वत (पीला पहाड़)

हिरण्य देश=कोरिआ, तिब्बत व चीन में सोना पाया जाता है।

इन्हीं सब कारणों से यह देश हिरण्य कश्यप कहलाता था।

शेष पुनः

नारायणप्रसाद मौहनियाँ, सारंगपुर, फतहाबाद,

आगरा ताः ७-७-१९३१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेरेग्वे में मगर का शिकार

दक्षिणी अमरीका का पेरेग्वे देश भयानक मगरों के लिये प्रसिद्ध है। यों तो सभी ऋतुओं में मगरों की अधिकता रहती है पर पानी घटने और मछलियों के कम होने पर वे बहुत चंचल हो जाते हैं। भोजन की तलाश में इधर उधर भटकने लगते हैं। रात के समय वे जोड़े में निकलते हैं। इनकी गन्ध पाकर घोड़े दूर से ही सरपट भागते हैं। यदि किसी घुड़सवार को मार्ग में मगर मिला तो घोड़ा वे-तहाशा भागकर अपने मालिक को घर की ओर ले जाता है। कभी कभी मगर आधी रात को सुअरों के बाड़े पर हमला करता है। बेचारे सुअर चिल्लाने लगते हैं। उनकी दर्द भरी अवाज़ सुन-कर मालिक उठकर आग जलाता है। मगर आग से बहुत डरता है। मालिक एक कुल्हाड़ी और जलती हुई लकड़ी लेकर आगे बढ़ता है और मरते हुए सुअरों की जान बचाता है।

यों तो गाय बड़ी सीधी होती है। पर वह अपने बछड़े को संकट से छुड़ाने के लिये जान पर खेल जाती है। एक बार मगर का एक जोड़ा अलग होकर एक गाय की ओर बढ़ा। गाय बैठी हुई जुगाली कर रही थी। उसका बछड़ा कुछ दूर पर घास में छिपा हुआ था। मगर की आहट पाकर गाय एक दम चौंक कर खड़ी हो गई। वह अपने सींगों को तिरछा करके मगर की ओर बढ़ी। इस पर दोनों में युद्ध होने लगा। फुर्तीली गाय मगर को बहका कर अपने बछड़े से बहुत दूर ले गई। फिर वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ से चक्कर काट कर लौट आई। लौटने पर जब उसे बछड़ा न मिला तब तो उसके दुःख का ठिकाना न रहा। वह बुरी तरह से रँभा रँभा कर अपने बछड़े को ढूँढ़ने लगी। बछड़े के वियोग में उसका खाना छूट गया। कई दिन तक वह ऐसी चिल्लाई कि आस पास के लोगों को रात में नींद न आई। इस तरह की घटनायें पेरेन्वे में सर्व साधारण हैं।

पर अब मगरों को रोकने के लिये भेड़ और गाय के मालिक बाँध बनाने की ओर ध्यान देने लगे हैं।

The last date for receiving names for "Bhugol competition prizes" of Rs. 200/ is 30th of November 1931. Be sure to subscribe to "Bhugol" and send your name for competition at once.

दो सौ रुपये के "भूगोल संघर्ष" में भाग लेने वालों को ३० नवम्बर सन् १९३१ तक अपना नाम हमारे यहाँ भेज देना चाहिये। अगर आप ग्राहक नहीं हैं तो २००) रुपये का इनाम लेने के लिये एक दम "भूगोल" के ग्राहक बन जाइये।

मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

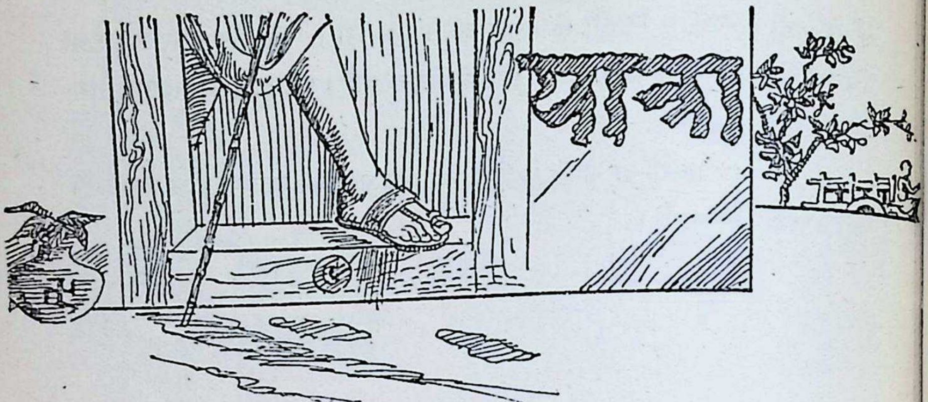

दुनिया के इर्द गिर्द

भाग (२)

नेपिल्स इटली का एक मशहूर बंदरगाह है। जहाज़ पर से उतरते वक्त एक बड़ा शानदार अफ़सर किनारे खड़ा हुआ दिखाई पड़ा। लाल ऊनी चमकीली ज़री लगी हुई वरदी पहिने हुए वह बड़ी शान के साथ खड़ा था। ऐसा मालूम पड़ता था कि कम से कम जनरल तो होगा ही। दर्याफ़्त करने से मालूम हुआ कि एक मामूली पुलिस का सिपाही है। मोटर पर सवार हो कर मैं पम्पई के खंडरात देखने के लिये रवाना हो गया। बीच शहर के चौक में हम कुछ देर तक ठहरे। थोड़ी ही देर में गली के बच्चे मोटर के इधर उधर आ जमा हुए। उनकी दशा बड़ी गिरी हुई मालूम पड़ी। कपड़े पहनने को काफी न थे और ऐसा मालूम होता था कि बहुतों को कुछ खाने को भी नहीं मिलता था। ये लड़के लड़कियाँ आपस में धक्का-मुक्की करने लगे। इतने में किसी ने मोटर में से सिगरट पी कर बचा हुआ टुकड़ा फेंका। बस इसके लिये जान देकर सब लड़के टूट पड़े और एक ने पाकर झट मुँह में लगा लिया। योरुप के एक देश में यह हालत और ग़रीबी देख कर बहुत ताज्जुब हुआ। नेपिल्स से बाहर निकलने पर पम्पई के रास्तों पर और भी ग़रीबी के बहुत निशान नज़र आये। नंगे बच्चे सड़कों पर फिरते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने विस्यूवियस ज्वालामुखी धुआँ दे रहा था जैसा कि वह सदियों से देता चला आया है। पम्पई शहर किसी ज़माने में बड़ा नगर था। मसीही सन के शुरू ही में विस्यूवियस के पास वाले ज्वालामुखी ने अपना चमत्कार दिखाया और देखते ही देखते सारे नगर को नष्ट करके राख से ऐसा दबा दिया के डेढ़ हज़ार वर्ष तक यह भी न मालूम पड़ा कि पम्पई नगर था कहाँ। कुछ साल गुज़रे कि इसका पता लगने पर

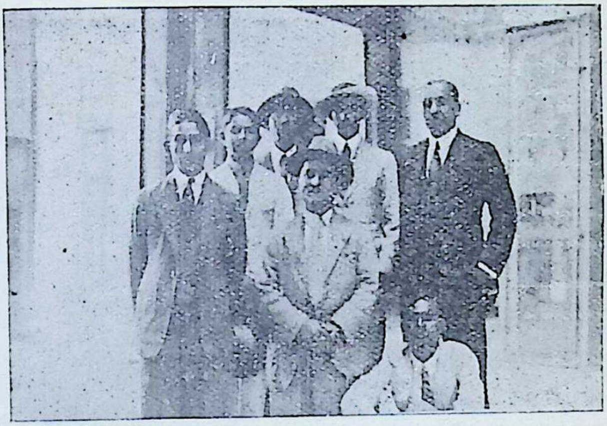

पम्पई नगर के एक हाकिम का घर—थोड़ी मरम्मत के बाद अब भी रहने के लायक है हिन्दुस्तानी विद्यार्थी खड़े हैं

इटली की सरकार ने बहुत रुपया खर्च करके सारे नगर को खोद कर निकाला और अब जो इटली मुल्क को जाता है वह पम्पई के खंडरात ज़रूर देखता है। इतने सैकड़ों बरसों के बाद कई बातें तो इस सफ़ाई से दिखाई देती हैं कि मानो कल ही हुई हों। कई लाशें उल्टा मुँह किये पड़ी थीं। वे कोयला होकर निकलीं। नानबाई के घर में रोटियाँ और नाज के दाने निकले। जहाँ की तहाँ भस्म हो कर कोयला होकर पत्थर बन गये थे। यह सब चीज़े हम वहाँ के अजायब घर में देख सकते हैं। बहुत से महल खोद कर निकाले गये हैं जिन पर नक्काशी का काम इतना बढ़िया है कि लोग अब जा जाकर वहाँ से नकल उतार ले आते हैं। पत्थर की सड़कें। खास जगहों पर पानी पीने के लिये पत्थर के नल और नल के दोनों तरफ पानी के बह जाने के लिये नालियाँ, बड़े आलीशान मंदिर और खेल के अखाड़े साफ़ नज़र आते हैं। इन सब से मालूम होता है कि १७०० वर्ष पहले इस शहर के लोग कितनी तरक्क़ी कर गये थे। इटली के लोग सुन्दर हैं। वहाँ के फूल और फल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी बड़े सुन्दर और अच्छे हैं। फ़ौजी शान शौक़त और तैयारी बड़ी है। लेकिन लोग ग़रीब और भूखे मालूम होते हैं।

वहाँ से चलकर कोरसिका और सारडीना के बीच में होते हुए हम फ़्राँस के बंदरगाह टूलोन में पहुँचे। फ़्रान्स के लोग बड़ी प्यारी बोली बोलते हैं। दुकान में ज़्यादा औरतें चीज़े बेचती हैं। वहाँ की स्त्रियाँ सौदा बेचने में इतनी चतुर हैं कि

टूलोन की एक बड़ी दूकान और बाजार की सड़कें

बगैर कुछ मोल लिये वहाँ से निकल आना कठिन काम है। लोग अंग्रेज़ी बहुत कम समझते हैं और फ़्रांसीसी ज़बान में बड़ी जल्दी जल्दी बात करते हैं। अगर किसी को थोड़ी बहुत फ़्रांसीसी आती भी हो तो उनको बोलते हुए सुनकर सब भूल जावे। वहाँ से चल कर रुकने की जगह जिब्राल्टर थी। रास्ते में एक रात जहाज़ को कई दफ़ा सीटी बजाते सुना। और गौर से सुनने से मालूम पड़ता था कि जहाज़ चल भी नहीं रहा था। हर मिनट मिनट पर सीटी देता था। दर्याफ़्त करने से मालूम हुआ कि रात भर कुहरा इतना ज़्यादा था कि २० गज़ के फासले पर कुछ दिखाई ही नहीं पड़ता था। इस वजह से जहाज़ ने आगे बढ़ना बंद कर दिया और बार बार सीटी इस वजह से देता था के कोई दूसरा जहाज़ आकर न टक्करा जावे।

जिब्राल्टर भूमध्यसागर की कुंजी कहलाता है। जिस तरह सुएज़ पूर्व के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुद्रों के लिए कुंजी है। इसीलिये यह अंग्रेजी राज्य के मातहत है। जगह तो कुछ भी नहीं, २ या ३ वर्ग मील चट्टान है लेकिन फ़ौजी दृष्टि से बड़ी बहुमूल्य जगह है। यहाँ स्पेन मुल्क के बड़े रसीले अंगूर बड़े सस्ते मिलते हैं। और मरक्को से शाल दुशाले बेचने वाले आकर जहाज़ के डैक पर बहुत सी दूकानें लगा लेते हैं। इस तरह बहुत कुछ सौदा बिकता है। यहाँ तम्बाकू के टीन बहुत कुछ सस्ते मिलते हैं। यहाँ जहाज़ ३ या चार ही घंटे ठहरा और फिर इंगलिस्तान की ओर चल दिया। रास्ते में बिस्के की खाड़ी पड़ती है। सुनते थे कि सारे सफर में यहाँ समुद्र में सब से ज़्यादा तूफान मिलते हैं और हर कोई इस बात के लिये तयार था के एक दफा फिर जहाज़ की बीमारी सब को होगी लेकिन समुद्र सारे रास्ते भर बिल्कुल शान्त रहा और चौथे दिन जहाज़ इंगलिस्तान के दक्षिणी किनारे पर दिखाई देने लगा। पोर्ट्समथ बंदरगाह तक हम नहीं गये। बंदरगाह से कुछ फासले पर हम कुछ घंटे रुके रहे। विलायत की डाक यहाँ से ही ले ली गई। लेकिन जहाज़ किनारे के नज़दीक नज़दीक करीब २४ घंटे और चला और दूसरे दिन सुबह हम लंदन शहर के बंदरगाह में दाखिल हुए।

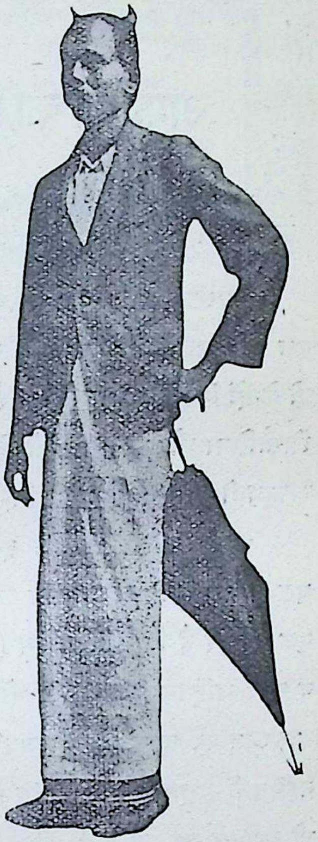
लंका का एक आदमी सींघ की नोकीली कंघी सिर में लगाये हुए

शेष फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफ्रीका का सिन्नोसिया आन्दोलन*

इस्लाम का सुधार १९वीं शताब्दी (ईस्वी) के बीच से आरंभ होता है, जब कि मुसलमानों में ढंग से काम करने का विचार उत्पन्न हुआ। यह आन्दोलन दो केन्द्रों के गिर्द इकट्ठा होता है। (१) नई क़िस्म की मज़हबी बिरादरियाँ जैसे सिन्नौसिया और (२) उस सोचने वाले गिरोह का प्रचार जिनका नेता जमालुद्दीन अफ़ग़ानी था। यहाँ हमको सिर्फ़ इन बिरादरियों का बयान करना है।

मजहबी बिरादरियाँ इस्लाम में सदियों से मौजूद हैं। इन सब का इन्तज़ाम एक ही तरह का है। वह सब अखाड़ों (ज़ावियों) में बँटी हैं और हर एक के ऊपर एक सरदार है जिसको मुखद्दम (गुरु) कहते हैं, और जिसको भाइयों के ऊपर कुछ न कुछ अख़्तियार होता है। लेकिन इन बिरादरियों का अमली असर दुनियावी मामलात पर बहुत कम था जब तक सिन्नौसिया की तरह नई क़िस्म की संस्थायें नहीं बनीं। इनका असर क़रीब क़रीब बिल्कुल मज़हबी था। इनका राजनैतिक प्रभाव जो कुछ था वह कहीं कहीं और कभी कभी था। इकट्ठे मिलकर काम करना इनके लिये नामुमकिन था क्योंकि इनमें आपस में एक दूसरे से बढ़ जाने का ख़याल और हसद था। इस क़िस्म की पुरानी बिरादरियाँ अब भी बहुत हैं लेकिन इनका राजनैतिक प्रभाव कुछ नहीं है।

नई क़िस्म की संस्थायें क़रीब क़रीब १९ सदी ईसवी के बीच से शुरू होती हैं। इनमें से हर तरह से सबसे ज़्यादा महत्त्व सिन्नौसिया को है। इसकी नींव डालने

---

* यह लेख लाथ्रॉय स्टाड्डारड की पुस्तक "इस्लाम की नई दुनिया" से लिया गया है। ले०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाला सय्यद मुहम्मद सिन्नौसी का बेटा है। यह मुस्तागनम (अलजीरिया) में सन् १८०० ईसवी के करीब पैदा हुआ। जैसा कि इसकी उपाधि सय्यद से ज़ाहिर है। वह पैगम्बर मुहम्मद की नस्ल से था और इस तरह पर उसको पैदायशी इज़्ज़त और बड़ाई मिली थी। शुरू ही से उसको इल्म और दीनदारी का बड़ा शौक़ था। उसने धर्म-शास्त्र फेज़ (Fez) की मूरिया यूनीवर्सिटी में हासिल किया और उसके बाद अफ़्रीका के उत्तर में वह घूमा और इस्लाम मत में जो बुराइयाँ मौजूद थीं उनको दूर करने का प्रचार करता रहा। इसके बाद वह हज्ज के लिये मक्का गया और वहाँ गुरुयों के साथ रह कर उसका सुधार करने का जोश वहाबी और भी तेज़ हो गया। मालूम होता है कि उसने उसी वक्त पक्का इरादा कर लिया कि वह अपने मत का नियमानुसार सुधार एक बड़े पैमाने पर करेगा। सन् १८४३ ईसवी में वह उत्तरी अफ़्रीका को वापिस हुआ और ट्रिपाली में रहने लगा। यहाँ उसने पहिला जाविया (आश्रम) क़ायम किया। इसका नाम जाविग्रा वैज़ा (श्वेत आश्रम) रक्खा गया। यह डरना (Derna) के पहाड़ों में था। वह खुद इस तरह प्रभावशाली था और उसमें इन्तज़ामी लियाकत इतनी थी कि नये चेले तमाम उत्तरी अफ़्रीका से उसके पास आने लगे और उसकी ताक़त इस तरह बढ़ गई कि ट्रिपाली के तुर्की अफसरों को उससे डर पैदा हुआ और विरोध इतना बढ़ा कि सय्यद मोहम्मद ने फ़ौरन अपनी राजधानी जाराबूह (Jarabuh) के मरुद्वीप में जो कि लिबिया के रेगिस्तान में बहुत दूर पूर्व में हटा दिया। जब वह सन् १८५९ ईसवी में मरा उस वक्त उसकी संस्था उत्तरी अफ़्रीका के बड़े हिस्से में फैल गई थी।

सय्यद मोहम्मद का काम उसके बाद उसके बेटे ने बिला रुकावट जारी रक्खा। यह आमतौर पर सिन्नौसी अल महदी के नाम से मशहूर है। इस बेटे ने जिस तरह से अपने बाप की गद्दी पाई उससे सिन्नोसिया ख्यालात अच्छी तरह से जाहिर होते हैं। सय्यद मोहम्मद के दो बेटे थे। अल महदी छोटा था। जब ये लड़के बिल्कुल बच्चे ही थे उनके बाप ने इरादा किया कि उनको जाँचे ताकि मालूम हो कि कौन ज़्यादा दीनदार है। तमाम आश्रम के सामने उसने दोनों बेटों को एक बड़े ऊँचे ताड़ के दरख़्त पर चढ़ने को कहा और तब उनको अल्लाह और उसके पैग़म्बर (मुहम्मद) की क़सम दी कि वह ज़मीन पर कूद पड़े। छोटा लड़का फौरन कूद पड़ा और ज़मीन पर बिला चोट खाये पहुँच गया। बड़े लड़के ने कूदने से इन्कार कर दिया। इस तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर अल महदी को हुकूमत मिली जिसने अपने तईं .ख़ुदा की मर्ज़ी के सुपुर्द करने में कुछ डर नहीं खाया था। अपनी तमाम ज़िन्दगी भर सिन्नौसी अल मेहदी ने अपने बाप की पसन्द को सच्चा कर दिखाया क्योंकि उसने बहुत ऊँची अक्लमन्दी और दीनदारी दिखलाई और बिरादरी की ताकत को और फैला दिया। इसने अपनी हुकूमत के आख़िरी ज़माने में अपनी राजधानी जौफ के मरुद्वीप में हटा ली। यह जगह लिबिया के रेगिस्तान में बहुत दूर पर है। वहाँ वह सन् १९०२ ईसवी में मर गया। उसके बाद उसका भतीजा अहमद अलशरीफ सिन्नौसिया फिरके का सरदार हुआ और यही मौजूदा सरदार है। यह शख़्स भी बहुत काबिल माल्म होता है। क़रीब अस्सी बरस के बहुत अच्छा काम करने के बाद सिन्नौसिया फिरक़ा आजकल इस्लाम का एक प्रधान अंग है। इसके मानने वाले इस्लामी दुनियाँ के हर हिस्से में मौजूद हैं। अरब में इसके मानने वाले बहुत ज़्यादा हैं और मक्का और मदीना के पाक शहरों की रुहानी ज़िन्दगी पर इसका गहरा असर है। लेकिन अब भी इसका खास मुक़ाम उत्तरी अफ़्रीका ही है। तमाम उत्तरी अफ़्रीका में मरक्को (Morocco) से सुमाली लैंड (Somali land) तक इसके आश्रम हैं। और यह सब उस बड़े आश्रम के ताबेदार हैं जिसका गुरु अलसिन्नोसी है। सिन्नौसियों का जौफ का क़िला लिबियाई या लिबियन सहारा के बिल्कुल बीचोबीच में है और इस छिपी हुई जगह को सिर्फ एक योरोपियन अन्वेषक (खोज करने वाले) डाक्टर नचटीगर ने देखा है। इसके चारों तरफ़ बिल्कुल रेगिस्तान है। कुएँ मीलों दूर हैं। इसके रास्ते सिर्फ अनुभवी सिन्नौसी रहबरों को मालूम हैं। ये लोग हज़ारों बार मर जाना अच्छा समझते हैं लेकिन वे रास्ता कभी न बतायेंगे। महागुरु अल सिन्नौसी मजे में यहाँ बैठा हुआ तमाम उत्तरी अफ़्रीका में अपने हुक्म भेजता रहता है।

सिन्नौसिया फिरके का असर बहुत बड़ा है। स्थानीय आश्रम सिर्फ आश्रम ही नहीं है। गुरु के अलावा एक वकील भी होता है जो कि राजनैतिक गवर्नर होता है। इन हाकिमों को न सिर्फ आश्रम के सदस्यों ही पर बलिक तमाम फिरके पर पूरा पूरा अख़्तियार होता है। सिन्नौसिया का तमाम उत्तरी अफ़्रीका पर इतना रोब छाया हुआ है कि गुरु या वकील की हर बात हमेशा सुनी और मानी जाती है। इस तरह पर उन मुल्कों में मुख़्तलिफ़ योरोपियन राज्य के अलावा (चाहे वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगरेज़ हो या फ़्रान्सीसी या इटली की) एक और छिपी हुई हुकूमत है। और यह योरोपीयन हुकूमतें इसका ख़्याल रखती हैं कि वह इस छिपे हुए राज्य से न भिड़ें।

साथ ही साथ सिन्नौसी भी इसका ख्याल रखते है कि वे योरोपियन राज्यों से खुल्लमखुल्ला न भिड़ें। उनकी यह दूरदर्शिता और होशियारी बहुत अचंभे की बात है। यह फिरका ५० वर्ष से बड़ी ताक़त से चला आ रहा है। लेकिन इसने कभी बड़ी लड़ाई का खतरा नहीं लिया। उन बहुत सी कट्टर क्रान्तियों में जो अफ्रीका के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में हुई हैं स्थानी सिन्नौसी ज़रूर शामिल हुए हैं और इसी तरह पर ट्रिपाली और इटली की लड़ाई के समय और पिछली बड़ी लड़ाई में सिन्नौसी भी शामिल हुए। लेकिन यह फिरका हाकिमाना तौर पर कभी किसी लड़ाई में शामिल नहीं हुआ।

सिन्नौसी न केवल ईसाइयों से ही अलग रहे हैं वरन् वे दुनिया के इस्लामी राज्यों से भी अलग रहे हैं। सिन्नौसिया फिरके ने हमेशा अलग रहकर काम करने में अपनी पूरी आज़ादी क़ायम रखी है। तुर्की के सुल्तान होशियार अबदुल हमीद को भी इन लोगों ने यों ही टाला, हालाँकि वह इस्लाम के सुधार का बड़ा पक्षपाती था। इस तरह पर सिन्नौसियों का ताल्लुक तुर्कों से भी कभी बहुत उम्दा नहीं रहा। सिन्नौसी अलमहदी अकसर कहा करता कि तुर्कों और ईसाइयों दोनों को मैं एक ही चोट से तोड़ूँगा। इसी तरह पर अलमहदी का बर्त्ताव मुहम्मद अहमद के साथ हुआ। मुहम्मद अहमद मिश्रीसूडान में महदवींया क्रान्ति का नेता था। अपनी सफलता के ज़ोर में मुहम्मद अहमद ने अल सिन्नौसी के पास मदद के लिये अपने दूत भेजे। अल सिन्नौसी ने इन्कार कर दिया और बड़े घमंड से जवाब दिया कि मुझे इस डनगोला (Dongola) के फक़ीर से क्या कहना, अगर मैं चाहूँ तो मैं खुद ही महदी (नेता) बन सकता हूँ।

इन धीमी चालों का यह मतलब नहीं है कि सिन्नौसी बिल्कुल काहिल और चुप हैं और कुछ नहीं करते। वे लगातार काम कर रहे हैं। लेकिन उनके हथियार दूसरे हैं जो कि रूहानी हैं। वे शिक्षा, संयम और शुद्धि से काम ले रहे हैं। सिन्नौसियों का प्रोग्राम (कार्यक्रम) यह है कि वे पहिले इस्लामी अफ़्रीका को और फिर तमाम इस्लामी दुनिया को इस्लाम की इमामत (नेतापन) में मिला लें और यह एक बड़ा धर्मराज्य हो जिसमें मुसलमान शामिल हों। यानी एक इस्लामी संगठन क़ायम करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन उनका विश्वास है कि इस्लाम की राजनीति और आज़ादी ईसाइयों के पंजे से उसी समय मिल सकती है जब कि पहिले एक गहरी नई मज़हवी पैदाइश हो। इस बात को हासिल करने के लिये वे लगातार कोशिश कर रहे हैं। और अपने मातहत आवादियों के रस्मरीति और आचरण को दुरुस्त कर रहे हैं। साथ ही साथ दुनियावी मामलात को दुरुस्त करने की भी वे कोशिश कर रहे हैं। मरु द्वीपों की और अच्छी तरह पर खेती करा रहे हैं। नये कुएँ खोदे जा रहे हैं कारवांओं के रास्तों पर आराम करने की जगह बनाई जा रही है और तिजारत को तरक्की दी जा रही है।

सुडानी महदवियों के क़त्ल और लूट मार से सिन्नौसियों को बड़ी घृणा हुई और उनके नेता ने उसकी वहुत बुराई की।

इन सब बातों से इस फिरक़े का ग़ैर मामूली संयम ज़ाहिर होता है और यही वजह है कि सिन्नौसी हर साल धीरे धीरे चुपचाप और इतमीनान के साथ आगे बढ़ रहे हैं और एक वहुत बड़ी छिपी ताक़त इकट्ठी करते जा रहे हैं। लेकिन वे इस लालच को रोके हुए हैं कि इस ताक़त को एक पल भर भी ठीक वक्त से पहिले काम में न लावें। इसी के साथ वह तमाम उत्तरी अफ़्रीका को आश्रमों और स्कूलों से ढाँके जा रहे हैं और लोगों को सिखा रहे हैं कि वह सिन्नौसी गुरुओं और वकीलों की बात मानें और दक्षिणी अफ़्रीका में लाखों अधर्मी हवशियों को मुसलमान कर रहे हैं।

सिन्नौसी अपने मज़हव के फैलाने में बड़ा जोश दिखला रहे हैं। वे उन कुदरती आश्रमों और सहारा के नखलिस्तानों से हज़ारों मैरा वाउट या जादूगरों को इस्लाम का प्रचार करने के लिये भेजते हैं। ये वरवरियों का एक गिरोह हैं। जो मज़हवी ज़िन्दगी अख्यार करते हैं और उत्तरी अफ़्रीका के लोग इनकी बड़ी इज़्ज़त करते हैं। इनकी आँखों से लपटें निकलती हैं और इनके सीने जोश से फूले होते हैं। इस्लाम के अचम्भे बयान करने के लिये ये खुशी से वाहर जाते हैं। इन लोगों में वही जोश होता है जो मध्य काल के ईसाई घूमने वाले फ़क़ीरों में होता था। पिछली सदी में इस्लाम के मिशनरियों को पश्चिमी और मध्य अफ़्रीका के हवशियों में वहुत अधिक सफलता हुई है। वीस साल गुज़रे एक अँगरेज़ ने बहुत सच कहा कि इस्लाम अन्दरूनी अफ़्रीका में अनोखी तरक्क़ी कर रहा है। यह अधर्म को बिल्कुल दबाये दे रहा है। इसके सामने ईसाई आन्दोलन कुछ भी नहीं है। इसी तरह एक फ्रान्सीसी प्रोटेस्टेन्ट मिशनरी कहता है कि हम इस्लाम को अफ़्रीका के बीच की तरफ बढ़ते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखते हैं। कभी कभी इसकी चाल धीमी हो जाती है लेकिन वह बिल्कुल बन्द नहीं होती है। इन सब मुश्किलों के होते हुए भी ये लोग बिला थके हुए अपने रास्ते पर चले जाते हैं। इस आन्दोलन को किसी बात का डर नहीं है। अपने विरोधी इसाइयों को भी इस्लाम बिला नफरत के देखता है। इसको अपनी कामयाबी का पूरा यकीन है। ईसाई अफ़्रीका की फतह का ख़्वाब ही देख रहे हैं। पर मुस्लमान फतह कर रहे हैं।

इस्लाम किस तरह पर दक्खिनी अफ़्रीका की तरफ बढ़ रहा है यह हाल की एक घटना से साफ ज़ाहिर होता है। चन्द साल गुज़रे कि अँगरेज़ों को अचानक मालूम हुआ कि इस्लाम न्यासालैंड में फैल रहा है। विचार करने पर मालूम हुआ कि यह काम ज़ैंजीबार के अरबों का है। उन्होंने अपना आन्दोलन सन् १९०० ईसवी के करीब शुरू किया। १० साल के बाद दक्षिणी न्यासालैंड में हर गाँव में एक मुसलमान आलिम (पंडित) और झोपड़ी की मस्जिद मौजूद थी। यह आन्दोलन खुल्लम-खुल्ला योरोपियनों के खिलाफ था। लेकिन अँगरेज़ अफसरों को हिम्मत न हुई कि इसको रोकें। क्योंकि वह डरते थे कि शायद दूसरी जगह इसका बदला न लिया जाय। बहुत से आँख रखने वाले योरोपियन डरते हैं कि कुछ ही समय में इस्लाम ज़ैम्बिज़ी नदी को पार करके दक्षिणी अफ़्रीका में पहुँच जायगा।

यह विजय केवल अधर्म के ऊपर ही नहीं हो रही है। बल्कि यह विजय अफ़्रीका की ईसाइयत को भी नुक़सान पहुँचा रही है। एक तरफ तो पश्चिमी अफ़्रीका में योरोपियन मिशन के ईसाई किये हुए लोग मुसलमान हो रहे हैं और दूसरी तरफ एबीसोनिया का गिरजा जो कि बहुत दिन तक इस्लाम के खिलाफ एक रुकावट था बढ़ती हुई इस्लामी बाढ़ में डूब जाने के डर में है। लड़ाई के हमलों से नहीं बल्कि शान्ति के साथ अबीसीनिया वाले मुसलमान किये जा रहे हैं। वे कबीले जिनमें पचास साठ वर्ष पहिले मुश्किल से एक मुसलमान होगा आज कल या तो कुछ कुछ या बिल्कुल इस्लामी कानून के मुताबिक जीवन बिता रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस मील ऊपर आकाश में

(एक वायुरहित गेंद में)

अभी कुछ सप्ताह व्यतीत हुए कि एक बहुत बड़ा पीले रंग का गुब्बारा जर्मनी के आसबर्ग (Augsberg) शहर से आकाश की ओर उड़ाया गया। इस गुब्बारे के नीचे एक टोकरी बाँधने के बदले एक बहुत बड़ी अलमोनियम की काली और रुपहले रंग की वायुरहित गेंद बँधी हुई थी। इसके अन्दर प्रोफेसर पिकार्ड और चार्ल्स केफर बैठ कर पृथ्वी से दस मील ऊपर वायु की दशा ज्ञात करने के लिए उड़े थे। १७ घंटे के पश्चात जब लोगों को यह विश्वास हो गया कि ये लोग मर गए होंगे वे सकुशल ५२००० फीट अर्थात् लगभग १० मील की ऊँचाई से वापिस आ गए। इन लोगों से पूर्व कोई व्यक्ति पृथ्वी से इतने ऊपर नहीं गया था। ये लोग सर्व प्रथम व्यक्ति थे जो पृथ्वी से इतनी ऊँचाई पर गए। जब ये व्यक्ति व्योम में अनुभव (प्रयोग) कर रहे थे इनके अमूल्य प्राणों को आक्सीजन गैस ने जीवित रक्खा जिसको ये लोग अपने साथ ले गए थे। उनके औज़ारों की देख भाल हो रही है और उसका परिणाम भी प्रकाशित किया जावेगा। जिस समय ये लोग पृथ्वी से १० मील की ऊँचाई पर पहुँचे तो उन्हें वहाँ यह अनुभव हुआ कि वहाँ वायु का दबाव (भार) समुद्र के धरातल से $\frac{१}{१०}$ है।

पिकार्ड महाशय और उनके साथी ने यह भी मालूम किया कि १० मील पृथ्वी से ऊपर सूर्य की किरणों की क्या दशा है। उसमें कितनी गर्मी और रोशनी है। नमूने के लिये वहाँ की थोड़ी सी वायु वे लोग अपने साथ बंद करके लाए थे। पिकार्ड के कथनानुसार यह वायु नीले रंग की थी। इससे ज्ञात होता है कि १० मील की दूरी पर ऐसे गैस अधिक हैं जिनका रंग नीला है। जब ये लोग पृथ्वी से कुछ दूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर पहुँचे थे तो अलमोनियम के उस बड़ी गेंद में जो वायुरहित थी और जिसमें ये लोग बैठे थे, एक छोटा सा सूराख हो गया। इन लोगों ने उसको तुरन्त ही रुई और वेसलीन से बंद कर दिया। पहले आधे घंटे में यह गुब्बारा सीधा आकाश की ओर लगभग ९ मील चला गया। ९ मील की ऊँचाई से पृथ्वी और गुब्बारे के बीच की वायु ताँबे के रँग की ज्ञात हुई और फिर नीली मालूम होने लगी और पृथ्वी एक चौड़ी रकाबी की तरह जिसका किनारा उल्टा हुआ हो मालूम होती थी। दस मील की ऊँचाई पर आकाश का रंग नीले रंग का काला मालूम होता था। जब प्रयोग (Experiment) समाप्त हो गए और ये लोग उतरना चाहते थे किन्तु न उतर सके और उनका आक्सीजन का कोष भी लगभग समाप्त होने को था, तब इनका गुब्बारा जर्मनी, आस्टरिया और इटली प्रदेश के ऊपर उड़ता रहा। सायंकाल की ठंढी वायु के कारण गुब्बारे की गैस का जमना प्रारम्भ हो गया। इसके कारण गुब्बारा आस्टरिया के बर्फीले मैदान ओबरगर्ल (Obergurl) पर उतर आया। इस समय केवल एक घंटे के लिए आक्सीजन ग़ैस उनके पास बची थी।*

मुहम्मद नूरूलहुदा
सेकंड इयर, ई० सी० कालेज, प्रयाग

---

* (पापुलर साइन्स के आधार पर)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक समुद्र तट से दूसरे तट को जानेवाली अफ़्रीका की पहली रेलवे

अफ़्रीका के पश्चिमी तट पर बसे हुए लोबिटो नगर से गत जुलाई में प्रथम

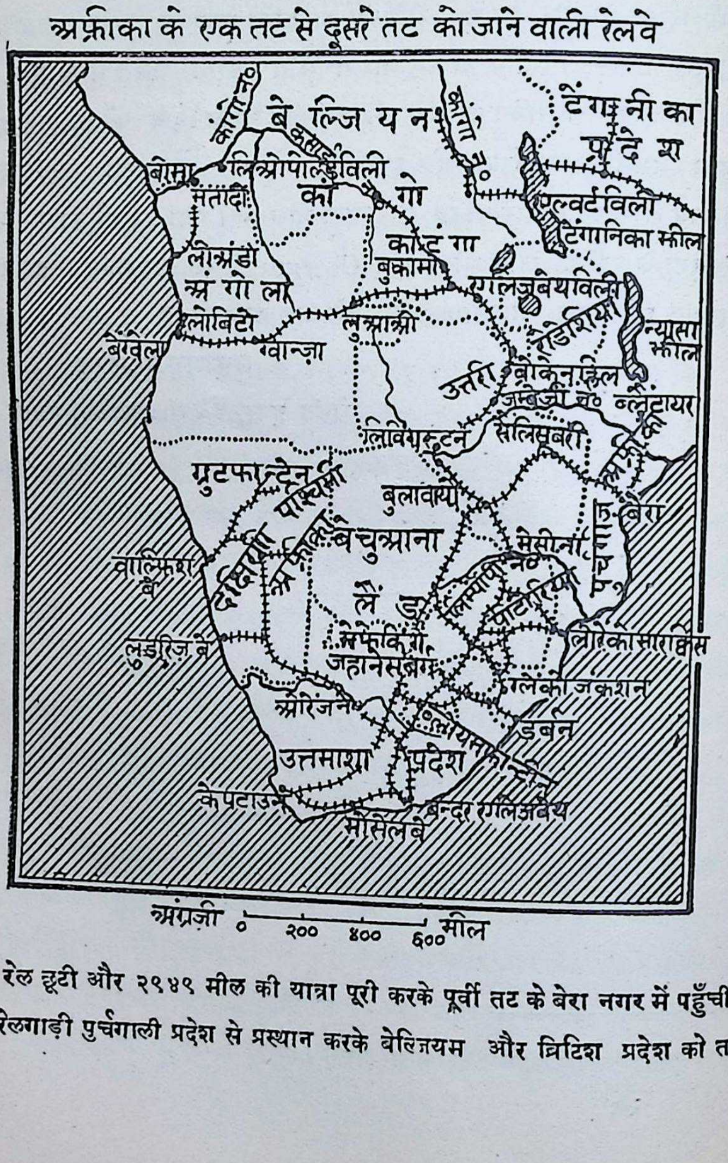

वार रेल छूटी और २९४९ मील की यात्रा पूरी करके पूर्वी तट के बेरा नगर में पहुँची। यह रेलगाड़ी पुर्चगाली प्रदेश से प्रस्थान करके बेल्जियम और ब्रिटिश प्रदेश को तय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके फिर पूर्वी पुर्चगाली अफ़्रीका में पहुँची। इस रेल की योजना का श्रेय रोड्स और विलियम्स महाशय को मिलना चाहिये। रोड्स महाशय के आग्रह से पुर्चगाली प्रदेश में स्थित बेरा नगर रोडेशिया का प्रधान बन्दरगाह बन गया। विलियम्स महाशय काटंगा की अपार खनिज सम्पत्ति से परिचित थे। इन्होंने इस बात पर बड़ा ज़ोर दिया कि काटंगा की सम्पत्ति को विकसित करने के लिये समुद्र के लिये सीधा रास्ता होना चाहिये। इसी का फल यह हुआ कि अंगोला की लोबिटो खाड़ी में नवीन बन्दरगाह बना। काटंगा के खनिज को बाहर भेजने के लिये यह मार्ग बड़ा सीधा था। कुछ वर्ष पहले काटंगा को लोग जानते भी न थे। यह भाग सभी ओर से समुद्र से प्रायः १००० मील दूर बेल्जियन कांगों में स्थित था। पर जिस प्रकार हीरे की खानों ने रेल को केपटाउन से किम्बर्ली खींच लिया और जिस प्रकार सोने की खानों ने रेल को किम्बर्ली के आगे रैंड तक बढ़ाया उसी प्रकार काटंगा की ताँबे की खानों ने रेल को काटंगा के उजाड़ प्रदेश तक फैला दिया। आज कल काटंगा की खानों से प्रायः ८० करोड़ रुपये का ताँबा निकलता है। इधर गोरे लोगों की आबादी भी तेज़ी के साथ बढ़ रही है। इस प्रकार इस नवीन रेलवे लाइन का भविष्य बड़ा महान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मनी में शिक्षा का विकास

विगत दस वर्षों में जर्मनी ने शिक्षा के क्षेत्र में भारी उन्नति की है। प्राइमरी स्कूल की चार वर्ष की पढ़ाई सब कहीं अनिवार्य है। १० वर्ष की उम्र में बालक इस पाठ्य क्रम को पूरा कर लेता है। फिर वह रेफ प्रूफंग या हाई स्कूल में प्रवेश करता है जहाँ ९ वर्ष की पढ़ाई है। इस नौ वर्ष की पढ़ाई के अन्त में जो परीक्षा ली जाती है वह स्कूल की ही परीक्षा है। इस परीक्षा का प्रबन्ध स्कूल के कर्मचारी ही करते हैं। पर सफलता का सर्टीफिकेट मिल जाने पर विद्यार्थी यूनिवर्सिटी में भरती हो सकता है।

नई शिक्षाप्रणाली में अध्यापक को पाठ्य क्रम नियत करने और उस पर प्रयोग करने की पूरी आज़ादी है। वह जैसा चाहे वैसा पाठ्य क्रम नियत कर सकता है और बालकों को उन्नत करने के लिये नये नये प्रयोग कर सकता है। प्रत्येक विषय के विशेषज्ञ अलग अलग हैं।

दूसरा बड़ा सिद्धान्त सहयोग और एकता का है। प्रत्येक विषय का दूसरे विषयों से घनिष्ट सम्बन्ध जोड़ दिया गया है। जर्मन भाषा राष्ट्रीयता के भाव जाग्रत करने के लिये पढ़ाई जाती है। प्रचलित कहानियाँ भी नियमित रूप से सिखाई जाती हैं। राजनैतिक ज़िम्मेवारी सिखाने के लिये इतिहास पर ज़ोर दिया जाता है। जर्मन लोगों ने स्वाधीनता स्थापित करने के लिये जो जो प्रयत्न किये वे भली भाँति से समझाये जाते हैं। विदेशी भाषाएँ इस उद्देश्य से सिखाई जाती हैं कि विद्यार्थी लोग शुद्ध और अच्छी जर्मन भाषा में उनका अनुवाद कर सकें। विदेशी भाषाओं की केवल उपयोगी पुस्तकें पाठ्य क्रम में रक्खी जाती हैं।

भूगोल में सर्व प्रथम स्थान इस प्रकार के प्रश्नों को दिया जाता है कि साम्राज्य की क्या समस्यायें हैं। साम्राज्य से लाभ क्या है। व्यापार और उपनिवेश के लिये जर्मन लोगों को संसार में कहाँ कहाँ और किस प्रकार की सुविधा है। मैंडेट शासन प्रणाली और अल्प संख्या वाली जातियों की समस्याओं की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। सम्पूर्ण शिक्षा का उद्देश्य यही है कि जर्मन लोग सच्चे नागरिक बनें।

आज कल के स्कूलों में विद्यार्थियों के खाने पीने का प्रबन्ध भी रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक रूमानियाई कहानी

पुराने समय में एक राजा था। वह बूढ़ा हो चला था पर उस के कोई लड़का न था। जब रानी के लड़का पैदा हुआ तो उसे बड़ी ख़ुशी हुई। राज्य भर में उत्सव मनाये गये। लड़के का नाम एलियोडोर रक्खा गया। लड़का बड़ा ही सुन्दर था। धीरे धीरे वह बलवान होने लगा। पर जब वह जवान हुआ राजा मर गया। राजा ने मरने के पहले अपने लड़के से कहा "बेटा सामने वाले पहाड़ पर भूल कर भी कभी पैर न रखना"।

एलियोडोर बड़ा चतुर राजा हुआ। उसने अपने पिता की आज्ञा को सदा माना। पर एक दिन टहलते टहलते वह अपने विचारों में ऐसा डूब गया कि उसने उसी पर्वत पर पैर रख दिया। पैर रखते ही एक राक्षस की आवाज़ सुनाई दी। उसने कहा जो कोई मेरी ज़मीन पर पैर रखता है वह मेरा हो जाता है।

बहुत कुछ कहने सुनने पर उसने कहा कि अगर हरे राजा की लड़की ले आओ तो मैं तुम्हें छोड़ दूँ। लाचार होकर एलियोडोर को यह शर्त माननी पड़ी। वह अपने काम की तलाश में इधर उधर घूमने लगा। रास्ते में उसे एक तालाब मिला। उसने वहाँ से एक मछली पकड़ी। मछली ने कहा अगर मुझे न मारो और तालाब में छोड़ दो तो मैं तुम्हारे काम आऊँगी। एलियो-डोर ने मछली को छोड़ दिया। मछली ने अपना एक सिन्ना देकर कहा जब तुम मेरा ध्यान करोगे मैं तुम्हारे पास पहुँचूँगी।

आगे बढ़ने पर एक ऐसा कौआ मिला जिसके पंख टूटे हुए थे। कौए ने कहा अगर तुम मेरे पंख जोड़ दो और छोड़ दो तो मैं तुम्हारे काम आऊँगा। दयावान एलियोडोर ने ऐसा ही किया। इस पर कौए ने एक पंख दिया और कहा जब कभी तुम इस की ओर देखोगे मैं तुम्हारे पास आ जाऊँगा।

कुछ ही दूर आगे राजा को एक चींटी मिली। राजा ने इसी तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चींटी को भी बचाया। इस चींटी ने कहा मैं तुम्हें मौत से बचाऊँगी। फिर एलियोडोर हरे राजा के महल में पहुँचा। आने का काम पूछने पर राजा ने कहा मैं तुम्हारी लड़की को लेने को आया हूँ। राजा ने उत्तर दिया बहुत अच्छा। तुम तीन बार अपने को जहाँ चाहो वहाँ दौड़ कर छिपाओ अगर मेरा लड़की तुम्हें तीनों बार देख लेगी तो तुम्हारी जान ले लेगी। अगर वह तुम्हें न देख सकेगी तो तुम उसे ले जा सकते हो।

एलियोडोर ने मछली को याद किया। मछली ने एलियोडोर को मछली में ही बदल दिया और समुद्र की तली में जा छिपाया। पर हरे राजा की लड़की ने अपनी जादू की ऐनक लगाकर उसे ऊपर खींच लिया। तब राजा ने कौए को याद किया। कौए ने उन्हें एक दूसरा कौआ बनाकर दूर देश में जा छिपाया। पर लड़की ने जादू की ऐनक से राजा को इस बार भी देख लिया। अन्त में राजा ने चींटी को याद किया। चींटी ने राजा को एक छोटी चींटी का रूप दिया और लड़की के ही कपड़ों में छिपा दिया। इस बार लड़की राजा को किसी तरह न देख सकी और उसने राजा से ब्याह कर लिया। जब दोनों राक्षस के पहाड़ पर पहुँचे तो राक्षस ने ख़ुश होकर राजा को अपनी सब ज़मीन दे दी। इस प्रकार राजा और नई रानी अपने दिन आनन्द से बिताने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

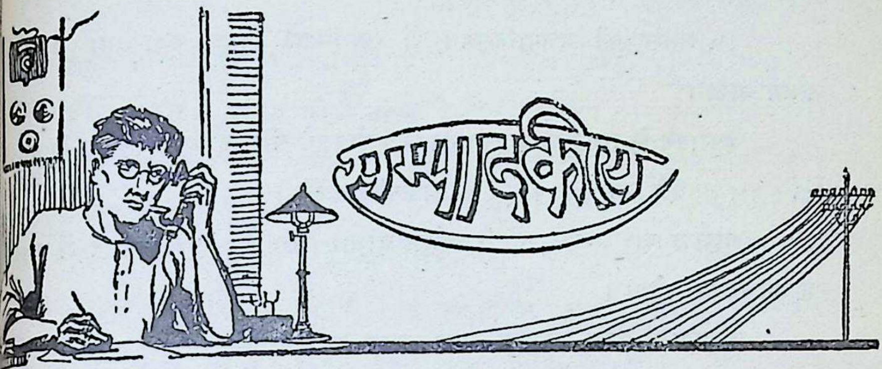

संक्षिप्त समाचार तथा सम्पादकीय विचार

इस बार पद्मा नदी में तेज़ बाढ़ आने के कारण गोआलंडो घाट प्रायः डूब गया। बाज़ार में कमर तक पानी हो गया। सहायता पहुँचाने के लिये ३९ कराचियों में राख भेजी गई। पर मैमन सिंह में २५,०० वर्ग मील ज़मीन डूब गई। २० लाख मनुष्य गृह-हीन हो गये और ८ करोड़ की सम्पत्ति नष्ट हो गई। फेनी में मुहरी नदी में बाढ़ आई। परसुराम और छगलनिया में बहुत दूर तक फ़सलें डूब गईं।

बंगाल के प्राचीन सेन राजाओं की राजधानी विक्रमपुर (रामपाल) में दो गज़ लम्बी एक काठ की मूर्ति खोद कर निकाली गई है। मूर्ति के दाहिने हाथ में कमल और बायें हाथ में चादर है।

नेपाल के महाराजा भीम शमशेर जंग बहादुर राना ने अपने राज्य में ५ वर्ष के लिये फाँसी की सजा बन्द कर दी है।

इस वर्ष कनाडा के प्रेरी (सस्कचवान, अलबर्टा और मेनीटोबा) में ५० लाख एकड़ ज़मीन में कोई फसल न होगी।

गेहूँ पैदा करने वाले देशों में अगस्त मास तक इतना अधिक गेहूँ हुआ कि साधारण विदेशी माँग को पूरा करने के बाद ३६,४०,००,००० बुशल गेहूँ बच रहेगा।

इस वर्ष आसाम, बंगाल, छोटा नागपुर से उत्तरी हैदराबाद तक और कोन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन में मानसून बड़ी प्रबल रही। पूर्वी राजपूताना, पूर्वी मध्यभारत, पूर्वी संयुक्त प्रान्त उत्तरी मद्रास और ब्रह्मा में काफी वर्षा हुई।

१५ अगस्त को अफ़ग़ानिस्तान में स्वाधीनता दिवस बड़ी धूम धाम से मनाया गया।

केपटाउन के समझौते के सम्बन्ध में भारतवर्ष और दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधि १५ जनवरी सन् १९३२ ई० को बातचीत करेंगे।

अहमदा बाद में एक स्थायी स्वदेशी बाज़ार खुला है। इस बाज़ार में सारा सामान स्वदेशी रहेगा।

कानपुर में संयुक्त प्रान्तीय हवाई जहाज़ का क्लब खुला है।

चिली देश के राष्ट्रपति (प्रेज़ीडेन्ट) ने ४ वर्ष के एक तन्त्री शासन के बाद त्याग-पत्र दे दिया है।

वेराक्रूज़ में धार्मिक युद्ध छिड़ गया है। लोग गिरजों को जला रहे हैं।

पेलेस्टाइन में जलशक्ति का विकास

जार्डन नदी का निकास उस स्थान से ठीक ३००० फुट ऊँचा है जहाँ पर वह मरासागर में गिरती है। मरासागर वास्तव में एक अत्यन्त खारी झील है। इसका तल भूमध्य सागर के धरातल से १३०० फुट नीचा है। साधारण समुद्रतल से उसकी तली और भी अधिक नीची है। यारमुक और जार्डन नदी के पानी से एक विशाल जलाशय तयार किया जायगा जहाँ से इंजीनियर लोग ५० लाख टन पानी प्रतिदिन ले सकेंगे। आरम्भ में ४८ हज़ार हार्सपावर (अश्व शक्ति) बिजली तयार होगी। आगे चलकर समस्त पेलेस्टाइन में बिजली फैल जायगी।

श्रावण मास (अगस्त) की उल्कायें

उल्काओं का समूह सदा सूर्य की परिक्रमा करता रहता है। यह समूह पृथिवी के मार्ग को उस स्थान पर काटता है जब अगस्त का महीना होता है। हमारी पृथिवी बहुत सी उल्काओं को रोक लेती है पर जब वे गिरती हैं तब वे वायु-मंडल की रगड़ से चकना चूर हो जाती हैं। अधिकांश बालू के कणों के बराबर होती हैं। सन्ध्या के समय केवल बड़ी बड़ी उल्कायें नज़र आती हैं। पर आधी रात के बाद पृथिवी का सिरा उनकी ओर होता है। उस समय वे अधिक संख्या में दिखाई देती हैं। वे सूर्य से निकलती हैं और उनका मार्ग कुछ कुछ पृथिवी के समानान्तर होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्य शक्ति

समर कन्द में रूसी लोगों ने एक विचित्र कारख़ाना खोला है। मकान दो मंज़िला है। इसमें विशेष यन्त्रों द्वारा सूर्य की किरणों का उपयोग किया जाता है। ये किरणें इस प्रकार एकत्रित की जाती हैं कि पानी से भाप बनने लगती है। भाप के ज़रिये से मशीनों के पहिये चलते हैं और बिजली बनती है। गरम पानी दूसरे काम में आता है।

पृथ्वी-परिक्रमा

पृथ्वी की परिक्रमा समाप्त करने का समय लगातार घट रहा है। जब १५१९-२२ ई० में फ़र्नांडों ने पृथिवी की परिक्रमा समाप्त की थी तो उसे १०८४ दिन लगे थे। यह समूची यात्रा जहाज़ द्वारा हुई थी। कई सदी तक इसमें कोई उन्नति नहीं हुई। सन् १८८९ में नेली विली नामी यात्री ने कुछ यात्रा रेल द्वारा और कुछ यात्रा जहाज़ द्वारा तय की इस प्रकार पृथ्वी-परिक्रमा में उसको केवल ७२ दिन लगे। आगे चलकर १९१३ ई० में नई रेलों और उन्नत जहाज़ों से यात्रा होने के कारण परिक्रमा ३६ दिन में ही पूरी हो गई। १९२४ ई० में संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सैनिकों ने हवाई जहाज़ द्वारा यात्रा की। पर उनको इस यात्रा में १७५ दिन लग गये। पर १९२५ में यही यात्रा २९ दिन में पूरी हुई। १९२९ ई० में ज़ेपलिन ने यह परिक्रमा २१ दिन में पूरी की। अभी कुछ दिन हुए विली पोस्ट और हेरोल्ड गेटी ने समस्त पृथिवी की परिक्रमा ९ दिन में पूरी कर डाली। वह दिन दूर नहीं है जब नये आविष्कार मनुष्य को केवल १ दिन में पृथिवी की परिक्रमा करने में सफल बनावें।

जलशक्ति

गत दस वर्षों में संसार की जल-शक्ति (बिजली) दुगुनी हो गई है। १९२० में २,३०,००,००० हार्स पावर (अश्व शक्ति) का विकास हुआ था। यह शक्ति बढ़ कर १९२३ में २,९०,००,००० और १९२६ में ३,३०,००,००० हो गई आज कल यह जल शक्ति ४,६०,००,००० हार्स पावर (अश्व शक्ति) से अधिक है। गत चार वर्षों में जल शक्ति का सब से अधिक विकास, इटली, जापान, कनाडा, जर्मनी, स्विटज़रलैंड आस्ट्रिया और स्वेडन में हुआ है। जल शक्ति की बहुत कुछ वृद्धि न्यूज़ीलैंड, मेक्सिको, ब्रेज़िल और भारतवर्ष में हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक महाद्वीप की जल-शक्ति का योग इस प्रकार है—

	विकसित	संचित
अफ़्रीका	३३,०००	१९,००,००,०००
एशिया	४०,००,०००	७,१०,००,०००
योरुप	१,८४,००,०००	५,६०,००,०००
उत्तरी अमरीका	२,१८,००,०००	६,९०,००,०००
दक्षिणी अमरीका	९,००,०००	४,४०,००,०००
आस्ट्रलेशिया	३,७०,०००	१,७०,००,०००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष

प्रत्येक राशि पर चन्द्रमा ढाई दिन ठहरता है।

आश्विन मास में चन्द्रमा का राशि प्रवेश इस प्रकार है :—

कृष्ण पक्ष	तिथि	वार	तारीख़	राशि	घ० प० वि०
	२	चन्द्रवार	२८ सितम्बर	मेष	२७-४२-१९
	४	बुधवार	३० सितम्बर	वृष	५५–३–४८
	६	शनिवार	३ अक्तूबर	मिथुन	१८-१२-२१
	८	चन्द्रवार	५ अक्तूबर	कर्क	३३-१२-३५
	११	बुधवार	७ अक्तूबर	सिंह	४३-५४-१६
	१३	शुक्रवार	९ अक्तूबर	कन्या	५०-५४-११
अमावस्या	३०	रविवार	११ अक्तूबर	तुला	२४-११-२८
शुक्ल पक्ष	३	बुधवार	१४ अक्तूबर	वृश्चिक	३–९–४१
	५	शुक्र	१६ अक्तूबर	धनु	
	७	रविवार	१८ अक्तूबर	मकर	
	९	मंगल	२० अक्तूबर	कुम्भ	४८-५३-२७
	१२	शु०	२३ अक्तूबर	मीन	१७-२६-४२
	१४	रविवार	२५ अक्तूबर	मेष	४४-५०-३०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकटूबर (आश्विन) मास में आकाश दर्शन

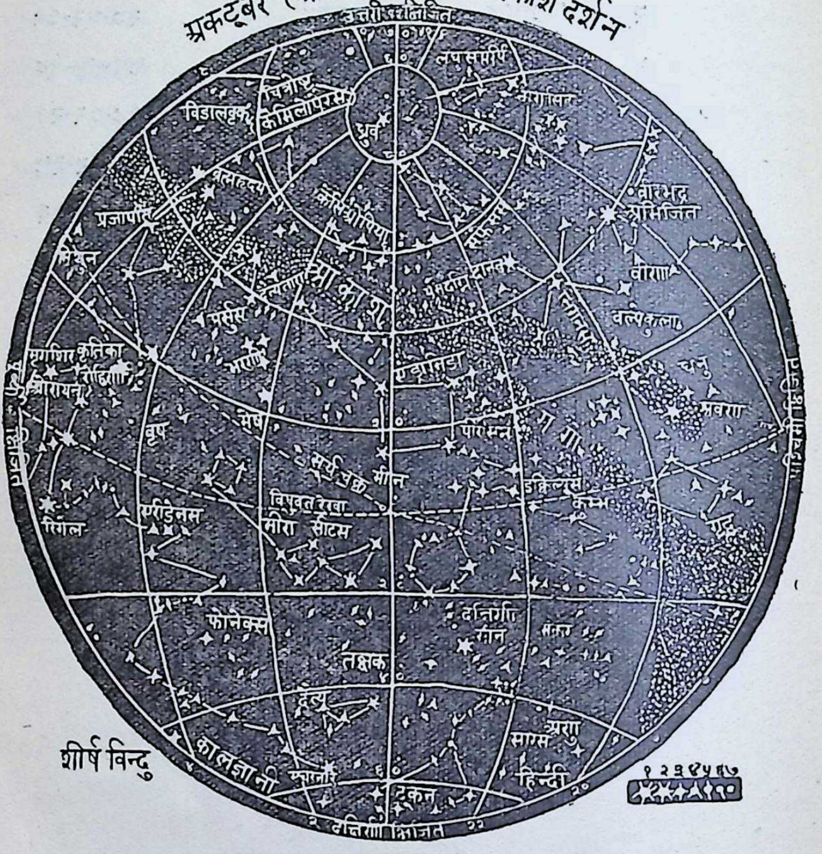

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल" पुरस्कार-कोष

जिन सज्जनों ने इस कोष में दान देने की कृपा की है उनको हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं। उन लोगों की नामावली इस प्रकार है :—

		रु० आ० पाई
१—जान वी० फ्रैन्क (थर्डफ़ार्म, इ० सी० कालेज प्रयाग)		०—४—०
२—पुत्तूलाल	"	०—४—०
३—धनपत थोर	"	०—४—०
४—वंशावली	"	०—२—०
५—रामरतन शर्मा	"	१—०—०
६—धीरेन्द्र गुपाल गुरहा	"	०—४—०
७—सत्यपाल सिंह	"	०—८—०
८—रामचरन गिल्डिपाल	"	०—४—०
९—वृजनन्दन शर्मा	"	१—०—०
१०—सरयूप्रसाद तिवारी	"	०—४—०
११—बोधन सिंह	"	१—०—०
		योग=५—२—०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघर्ष में सम्मिलित होने वालों के लिये सूचनायें

(अ) लेख सुन्दर अक्षरों में हिन्दी में कागज़ के केवल एक ओर लिखे जाने चाहिये। एक इन्च का हाशिया भी रहे। प्रत्येक लेख के पहिले पृष्ट में सबसे ऊपर अपना नाम और पूरा पता होना चाहिए। लेख के अन्त में उन पुस्तकों और पत्रिकाओं आदि का नाम लिखिए जिनसे लेख तय्यार करने में सहायता ली गई हो। प्रत्येक लेख में एक हज़ार शब्द से कम न रहें और न दस हज़ार शब्दों से अधिक हों। (भूगोल के पूरे एक पृष्ट में प्रायः पाँचसौ शब्द रहते हैं)

(ब) गरमी की यात्रा में न दो महिने से अधिक और न एक महिने से कम समय लगे। संघर्ष में सम्मिलित होने वालों को प्रत्येक दिन की यात्रा और खर्च का ठीक २ विवरण लिखना चाहिए। यदि हो सके तो यात्रा के प्रसिद्ध स्थानों के फोटोग्राफ और कुछ प्रतिष्ठित सज्जनों के हस्ताक्षर भी ले लिये जाने चाहिए। चित्र नकशा और डायरी के साथ समस्त यात्रा का पूरा २ विवरण भूगोल कार्यालय में ता० ३१ जुलाई सन् १९३२ तक आ जाना चाहिए।

(स) चित्रों के संघर्ष के लिये चित्र लेने का समय, स्थान और केमरे का नाम प्रत्येक चित्र के पीठ पर रहना चाहिए। प्रत्येक चित्र का विवरण भी वांछनीय है।

(द) प्रत्येक ग्राहक बनाने वाले को आर्डर फार्म (आज्ञापत्र) भूगोल कार्यालय से ले लेने चाहिए। (ये आर्डर फार्म बिना मूल्य के मिलेंगे।) यदि ऐसा न हो सके तो चन्दा भिजवाते समय मनी आर्डर के कूपन पर हस्ताक्षर होना चाहिए।

(नोट) मार्ग में खो न जावें इसलिये लेखों और चित्रों को मज़बूती से पैक करके रजिष्टरी द्वारा भेजिए। लेख और चित्र ता० ३१ दिसम्बर सन् '३१ तक भूगोल कार्यालय में पहुँच जाने चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैनेजर, भूगोल, प्रयाग

प्रिय महाशय :—

मैं निम्न संघर्षों में सम्मिलित होना चाहता हूँ :—

(क) ५०) रु० के लेख संघर्ष में
(ख) १००) रु० के यात्रा संघर्ष में
(ग) २५) रु० के चित्र संघर्ष में
(घ) २५) रु० के ग्राहकवृद्धि संघर्ष में

मैं १९३१-३२ वर्ष में "भूगोल" का स्थायी ग्राहक हूँ। मेरा ग्राहक नम्बर……है।

मैंने १) रु० प्रवेश फी भेज दी है उस रसीद का नम्बर……है।

मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि "भूगोल" पुरस्कार संघर्ष से सम्बन्ध रखने वाले सभी मामलों में मैं आपका निर्णय स्वीकार करूँगा। मेरी उम्र आदि के विषय में जो सूचनायें दी जाती हैं वे सब ठीक हैं।

नाम (पूरा)……………………………

उपाधि

डाक का पूरा पता

उम्र

कक्षा और स्कूल या कालेज
(केवल विद्यार्थियों के लिये)

भूगोल में भेजे हुए लेख का नाम

हस्ताक्षर…………

तारीख़……………

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२००) रुपये का इनाम !

५०) रुपये का इनाम उसे मिलेगा जो "भूगोल" में प्रकाशित होने वाले ज्योतिष, यात्रा, व्यवसाय, स्थानीय भूगोल, पुरातत्व, आधुनिक इतिहास आदि अंगों पर तीन सर्वोत्तम लेख लिखेगा।

१००) रुपये का इनाम उसे मिलेगा जो गरमी की छुट्टियों में कम से कम खर्च से अधिक से अधिक यात्रा करेगा और सर्वोत्तम जानकारी प्राप्त करेगा।

२५) रुपये का इनाम उसे दिया जायगा जो प्राकृतिक दृश्य, प्रसिद्ध इमारत, बाजार, मेला और कला-कौशल, खेती या जीवन के और किसी विभाग से सम्बन्ध रखने वाले सर्वोत्तम १० फोटोग्राफ़ (चित्र) लेकर भेजेगा।

२५) रुपये का इनाम ३० अप्रैल सन् १९३२ तक "भूगोल" के सब से अधिक नये ग्राहक बनाने वाले को मिलेगा।

मैनेजर "भूगोल"
प्रयाग

भूगोल के ग्राहकों से कोई प्रवेश शुल्क न ली जायगी परन्तु जो ग्राहक नहीं हैं उनको संघर्ष में सम्मिलित होने के लिये एक रुपया १) रु० देना पड़ेगा। दाख़िला फार्म भूगोल कार्यालय से ४ बजे सायंकाल से ५ बजे सायंकाल तक मुफ़्त मिल सकते हैं। जो सज्जन डाक द्वारा फार्म मगाना चाहें उनको अपना पता और एक आने का टिकट भेजना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL" PRIZES

Essay Competition

A prize of Rs.50 will be paid to the sender of three best essays on any of the topics that usually appear in "Bhugol".

Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibition, Plants and Animal life.

Trip Competition

A prize of Rs.100 will be awarded to one who will travel (in any interesting region or outside) most economically, most extensively and most profitably.

Photographic Competition.

A prize of Rs.25 will be given to the sender of the 10 best photographs of life, security or famous buildings.

Convassing Competition

A prize of Rs.25 will be paid to anyone who secures the largest number of subscribers for "Bhugol" by April 30, 1932.

No entry fee will be charged from the subscribers of "Bhugol" Non-subscribers will have to pay *Rupee one* only for entering the competition. Admission forms can be had free from the "Bhugol" office personally between 4 and 5 P.M. Those who want the forms to be mailed to them should send addressed and stamped envelope or anna postage stamp.

R. N. MISRA
Manager
"Bhugol",
E. C. College, Allahabad

Instructions to Competitors

(*a*) The essays must be written neatly in Hindi on one side of the foolscape size paper with sufficient (one inch) margin, write your name and address on the top of the first page of each essay. Give at the end the names of books, periodicals etc., consulted by you in preparing each essay. Each of your essays should contain neither less than one thousand nor more than ten thousand words. (One full page of "Bhugol" contains some 500 words).

(*b*) The vacation trip should not take more than two months or less than one month to be completed. An authentic diary of the tour and expenses should be kept by the competitors. If possible, competitors are advised to take photographs and secure signatures of some well known persons of the important places they visit. Complete description of the trip together with the map, pictures and the diary should reach "Bhugol" office by July 31, 1932.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(*c*) For photographic competition, the time, place and the name of the camera must be mentioned on the back of each picture, a brief description of the picture is also desirable.

(*d*) Each convasser should either use the order forms which will be supplied free from the "Bhugol" office or simply sign the money order coupon when securing subscribers for Bhugol.

NOTE—To avoid loss or damage in transit the essays and photographs must be strongly packed and sent by registered post. The essays and photographs must reach the "Bhugol" office by December 31, 1931.

To
The Manager, "Bhugol",
Allahabad.

Dear Sir,

I wish to enter the following competitions:—

(*a*) Rs.50 Essay Competition.

(*b*) Rs.100 Vacation Trip Competition.

(*c*) Rs.25 Photographic Competition.

(*d*) Rs.25 "Bhugol" convassing Competition.

I am a regular subscriber of "Bhugol" for the year 1931-32. My subscription No. is. . . . .

I have paid the admission fee of Re.1 only. My receipt No. is. . . . .

I promise to abide by your decision in all matters concerning the "Bhugol" Prize Competition. I declare that the following information given about my age etc., is correct:—

Name (in full). . . . .
Designation. . . . .
Complete postal address. . . . .
. . . .
. . . .
Age. . . . .
Class and School or College (for students only). . . . .
Name of the article or articles contributed to "Bhugol". . . . .
. . . .
. . . .
. . . .
. . . .
. . . .

Signature. . . . .
Date. . . . .

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल" का स्थायी साहित्य

१—भारतवर्ष का भूगोल—यह पुस्तक सारे भारतवर्ष, ब्रह्मा और लंका की यात्रा के बाद लिखी गई है। इसमें सन् १९३१ की मनुष्य-गणना के अंक दिये गये हैं। पुस्तक में २ तिरंगे, ४ चित्रमय नक़शे और १०० से ऊपर एक रंगे नक़शे और चित्र हैं। अब तक भारतवर्ष का कोई भूगोल ऐसी विस्तृत यात्रा के आधार पर नहीं लिखा गया। न कोई भूगोल इतने मौलिक नक़शों और चित्रों से सुसज्जित है। मूल्य केवल २) रु० डाक व्यय ।=)

२—भारतीय भाषाएँ—मूल्य ।), इसमें भारतवर्ष की सभी भाषाओं का विषद वर्णन है।

३—संसार-शासन—मूल्य ।), इसमें संसार के प्रमुख देशों की शासन-पद्धति का विवरण है।

४—अफ़ग़ानिस्तान—मूल्य १), इस अंक को पढ़ने से अफ़ग़ानिस्तान का एक संक्षिप्त चित्र आँखों के सामने खिँच जाता है—प्रताप, कानपुर

५—टर्की—मूल्य १), इस अंक में टर्की की प्रायः सभी भौगोलिक और ऐतिहासिक स्थितियों का बड़ा सुन्दर और रोचक संकलन है।

६—ईरान—इस अंक में ईरान देश की स्थिति, भू-रचना, जलवायु, उपज, व्यापार, मार्ग, निवासी, इतिहास, साहित्य, वर्तमान परिस्थिति आदि फारस देश के सभी अंगों पर पूरा पूरा प्रकाश डाला गया है। यह अंक सुन्दर चित्रों और बड़े नक़शों से सुसज्जित है। मूल्य केवल १) रु०।

७—Geographical Questions (For High School Examination)—मूल्य –)॥, इसमें १० वर्षों के हाई स्कूल के प्रश्न-पत्र छपे हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक महाद्वीप, भारतवर्ष और प्राकृतिक भूगोल पर प्रसिद्ध भूगोल विशारदों के चुने हुए प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रति का डाकव्यय आध आना अलग है।

८—वर्नाक्यूलर फाइनल परीक्षा के भूगोल-प्रश्न पत्र और उनके आदर्श उत्तर—मूल्य ।।), इसमें १९२० से १९३१ ई० तक के प्रश्न-पत्र और आदर्श उत्तर दिये गये हैं। परीक्षार्थियों के सुभीते के लिए हर सन् का पूरा पत्र आरम्भ में छापा गया है। इसके बाद प्रश्नों का उत्तर उसी ढंग से दिया गया है जो परीक्षकों को पसन्द है। इस पुस्तक को पढ़कर विद्यार्थी लोग उत्तम श्रेणी के नम्बर सहज ही में प्राप्त कर सकते हैं।

मैनेजर "भूगोल"

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल" की नियमावली

१—"भूगोल" प्रत्येक मास की १० तारीख़ तक प्रकाशित होगा।

२—इसका अग्रिम वार्षिक मूल्य भारतवर्ष में ३) रु० और विदेशों में ५) रु० है एक प्रति का मूल्य ।-) है। नमूने की कापी के लिये आर्डर के साथ पाँच आने के टिकट भेजने चाहिए।

३—संरक्षकों से उनके सम्मानार्थ १० रु० वार्षिक है। आजन्म संरक्षकों से केवल एक बार १००) रु० है।

४—कार्यालय से पत्रव्यवहार करते समय ग्राहकों को ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिए। प्रबन्ध-सम्बन्धी पत्र—मैनेजर "भूगोल," ईविङ्ग क्रिश्चियन कालेज, इलाहाबाद के पते से आने चाहिए।

५—समालोचनार्थ पुस्तकें, परिवर्तन के पत्र, और प्रकाशित होनेवाले लेख—सम्पादक, "भूगोल", ई० सी० कालेज, इलाहाबाद के पते से आने चाहिए।

६—"भूगोल" का वर्ष जुलाई मास के विशेषाङ्क से आरम्भ होता है। मई और जून मास की छुट्टी रहती है। पर ग्राहक किसी मास से आरम्भ कर सकते हैं। पिछले वर्षों के सब अङ्क मौजूद नहीं हैं। जो मौजूद हैं उनमें से प्रत्येक का मूल्य ।-) है।

७—कार्यालय से "भूगोल" भली भाँति जाँच कर प्रत्येक ग्राहक के पास भेजा जाता है। फिर भी यदि किसी मास का "भूगोल" किसी ग्राहक को न मिले तो ग्राहक-महाशय पहले अपने पोस्ट आफ़िस से पूछें। जो उत्तर मिले उसे ग्राहक-नम्बर सहित कार्यालय में दूसरे मास की १० तारीख़ तक भेज देने से खोया अङ्क बिना मूल्य प्राप्त होगा। अन्यथा ।-) मिलने पर ही दूसरा अङ्क भेजा जायगा।

८—एक दो मास के लिए पता बदलवाना हो तो अपने पोस्ट-आफ़िस को लिखना चाहिए, अधिक समय के लिए कार्यालय को लिखना चाहिए।

९—लेख को छापने अथवा न छापने तथा उसमें काट-छाँट करने का सब अधिकार सम्पादक को प्राप्त है। "भूगोल" में प्रकाशित लेखों को कोई महाशय सम्पादक की आज्ञा बिना न छापें।

१०—सचित्र लेख के चित्रों का प्रबन्ध लेखक महाशय को ही करना होगा।

मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose: Bhugol aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents: Articles are published on varied topics of geographical interest: Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving a file of Bhugol any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

An index to each volume will be supplied with the April number.

Travel Department: The Travel Department of Bhugol annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools: The use of Bhugol in connection with the geography instruction in high schools, normal schools, and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, Berar, the Central Provinces, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior and Jaipur.

Correspondence: Editorial communications, exchanges, and books for review, should be addressed to: Pt. Ram Narain Misra, Editor, **Bhugol,** Geography Department of Ewing Christian College, Allahabad City.

Business communications, including subscriptions and advertisements, should be addressed to: The Manager **Bhugol**, Ewing Christian College, Allahabad. Telegrams: 'Bhugol,' Allahabad.

Subscription: Prepaid annual subscription: To any place served by the Indian Post Office Department, Rs.3. To any other country in the Universal Postal Union, Rs.5 or 7*s*. 6*d*. or $1.50.

To addresses in India the first copy will be sent by V.-P. P., unless remittance accompanies order. V.-P. P. Fee, 3 annas.

Remittances: Make all remittances by cheque, money order or British Postal Order, payable to the Manager, **Bhugol.**

Rates for Advertisements:

Ordinary full one page	Rs.	10
3rd page of the cover	"	12
4th page of the cover	"	15

Write to the Manager,

" BHUGOL,"

Ewing Christian College, Allahabad

Printed by S. S. Srivastava, at the Allahabad Law Journal Press, Allahabad
Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B.A.) under the auspices of the Ewing Christian College, Allahabad

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाबप्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिए स्वीकृत है।

वर्ष ८] कार्तिक सं० १९८८, नवम्बर १९३१ [संख्या ७

सर्बिया के बालक

योरुप की बड़ी लड़ाई सर्बिया से शुरू हुई। बड़ी लड़ाई के बाद यह
बहुत बढ़ गया। इस बढ़े हुए देश को आज कल यूगोस्लेविया के नाम
ते हैं।

देश के बालक बचपन से ही स्कूल जाने के लिये तरसने लगते
के ७ वर्ष ने पहले जाने

भूगोल का वास्तव हेतु यह "भूगोल" पत्र अमोल है।
"भूगोल" कहता है निरख, भू गोल है भूगोल है॥

सम्पादक—रामनारायण मिश्र, बी० ए०

वार्षिक मूल्य ३) एक प्रति का ।=)

ईविंग क्रिश्चियन कालेज, प्रयाग से संरक्षित

Yearly Subscriptions:
Indian Rs. 3
Foreign Rs. 5

Single Copy
5 as.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose: Bhugol aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents: Articles are published on varied topics of geographical interest: Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving a file of Bhugol any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

An index to each volume will be supplied with the April number.

Travel Department: The Travel Department of Bhugol annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools: The use of Bhugol in connection with the geography instruction in high schools, normal schools, and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, Berar, the Central Provinces, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior and Jaipur.

Correspondence: Editorial communications, exchanges, and books for review, should be addressed to: Pt. Ram Narain Misra, Editor **Bhugol,** Geography Department of Ewing Christian College, Alla[illegible] City.

Business communications, including subscriptions and ad[illegible] should be addressed to: The Manager **Bhugol,** Ewing Chr[illegible] [illegible]ams: 'Bhugol,' Allahab[illegible]

[illegible] [illegible]ption:

To a

२३५

२३९

१५—तपि[illegible] २४०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाबप्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिए स्वीकृत है।

वर्ष ८] कार्तिक सं० १९८८, नवम्बर १९३१ [संख्या ७

सर्बिया के बालक

योरुप की बड़ी लड़ाई सर्बिया से शुरू हुई। बड़ी लड़ाई के बाद यह देश बहुत बढ़ गया। इस बढ़े हुए देश को आज कल यूगोस्लेविया के नाम से पुकारते हैं।

इस देश के बालक बचपन से ही स्कूल जाने के लिये तरसने लगते हैं। कुछ लड़के ७ वर्ष की उम्र से पहले ही स्कूल जाने लगते हैं। छोटी छोटी किताबों का बस्ता लेकर वे बड़ी ख़ुशी से स्कूल जाते हैं। देहात में बालकों को प्रति दिन कई मील घर से आना जाना पड़ता है। पर ये लोग थैले में किताबें भर लेते हैं और उसे कन्धे पर लटका कर बड़े मज़े से चलते हैं। वे अपने थैले में खाने के लिये रोटी और पनीर भी रख लेते हैं।

सर्बिया में सभी स्कूल सरकारी हैं। वहाँ इम्दादी या प्राइवेट स्कूल नहीं हैं। सभी स्कूलों में शिक्षा मुफ़्त दी जाती है। किसी से कोई फीस नहीं ली जाती है। ग़रीब-अमीर सब साथ साथ पढ़ते हैं। सर्बिया के स्कूलों में लड़कों के खेलने के लिये कोई सामान नहीं है। बलग्रेड के स्कूलों में फुटबाल शुरू हुई है पर हाकी या क्रिकेट का नाम नहीं है। लड़के घर आने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर लट्टू नचाते हैं या गुट्टी से खेलते हैं। गरमी के दिनों में यहाँ के बालक घंटों नहाते हैं। कभी वे नदी के किनारे पड़े पड़े धूप लेते हैं। कभी वे पानी में तैरते हैं। सरदी में उन्हें इस तरह के खेल खेलने को नहीं मिलते हैं। सरदी में घर पर पढ़ने में भी उन्हें बड़ी अड़चन होती है। घर में एक ही बड़ी कोठरी होती है जिसमें आँच रहती है। आग तापने के लिये घर के सब लोग यहाँ आ जाते हैं और बात चीत करते हैं। जब सब लोग आपस में बात करते हों तो लड़के को मन लगा कर पढ़ना बड़ा कठिन हो जाता है।

अधिक बड़े होने पर यहाँ के लड़के पेरिस या वियना में पढ़ने जाते हैं। आगे पढ़ना छोड़ देते हैं वे अपने घर का काम करते हैं और फुरसत मिलने पर होटलों में एक दूसरे से गप लड़ाते हैं।

पहले लड़कियों को पढ़ाने की ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया जाता था पर अब लड़कियों का पढ़ाना ज़रूरी हो गया है। फिर भी स्कूल में जाने योग्य लड़के और लड़कियाँ अक्सर खेतों में काम करती हैं या ढोर चराती हैं। किसान लोग पढ़ने की ओर ध्यान नहीं देते। पर नये लोग पढ़ने की ओर बहुत झुक गये हैं। लड़कियाँ शुरू से ही घर का काम सीखती हैं। भोजन बनाना, कपड़ा सीना और झाड़ना बहारना वे बहुत जल्द सीख लेती हैं। अधिक चतुर लड़कियाँ रंगना और चिकन काढ़ना भी सीख लेती हैं।

सत्रह या अठारह वर्ष की उम्र में उनके ब्याह की तयारी होती है। यहाँ आदमी की आमदनी इतनी कम होती है कि स्त्री को रखना कठिन हो जाता है। इसलिये बिना दहेज़ दिये लड़की का ब्याह नहीं होता है। प्रोवादाजिया या बिचमनियाँ दहेज़ की बात चीत तय कर देता है। दहेज़ की बात ठीक हो जाने पर वर-वधू एक दूसरे को देख कर पसन्द कर लेते हैं। पर पहले घर से ब्याह ठीक न होने पर दूसरे से बात की जाती है। कभी कभी कुछ दुष्ट लोग दहेज़ ले लेते हैं और कुछ दिनों के बाद स्त्री को निकाल देते हैं।

सर्बिया की स्त्रियाँ सदा कुछ न कुछ काम करती ही रहती हैं। पर काम ढंग से न होने पर उनका बहुत सा समय नष्ट हो जाता है। घर का काम हो चुकने पर वे मोज़े बुनती हैं और बुनते बुनते अपने पड़ोस की स्त्रियों से बातें करती जाती हैं। जब सब काम हो जाता है तब नौ जवान स्त्रियाँ टहलने निकलती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

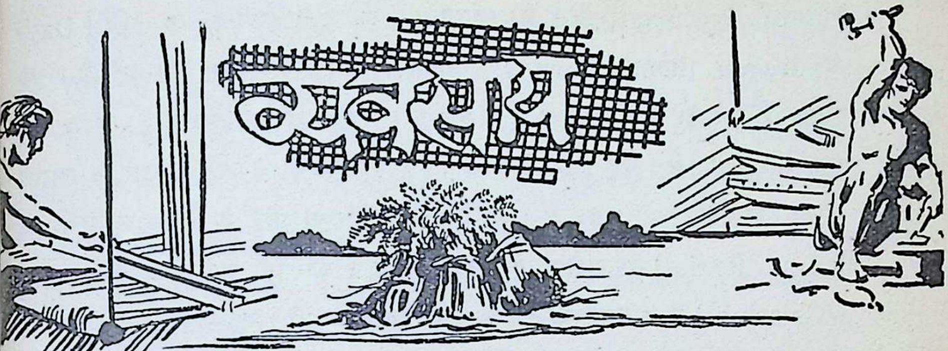

प्लैटिनम

प्लैटिनम, वैज्ञानिक संसार के लिये एक बड़े महत्त्व की वस्तु है। इसका उपयोग अन्य धातुओं की अपेक्षा कहीं अधिक होता है। इसका प्रारम्भिक इतिहास बड़ा ही विचित्र एवं मनोहर है। कोलम्बिया के विजेता स्पेन वासियों ने इसको सब से पहले खोज निकाला था। उनके बाद लगभग एक शताब्दी तक वैज्ञानिकों का ध्यान इस ओर आकृष्ट न हुआ। अमेरिका के आदिम निवासियों ने मछली पकड़ने के लिये सोने (स्वर्ण) के काँटे (गल) बनाये किन्तु इस बहु मूल्य धातु का उन्होंने कोई उपयोग नहीं किया। अन्य धातुओं के समान वे इसको बड़े परिश्रम से एकत्रित करते थे। पर इसके सफेद रंग के कणों को व्यर्थ जान कर फेंक देते थे।

यूरोप निवासियों को इसका पता लगभग १७३७ ई० में लगा था। उस समय यह धातु रूस के यूराल पर्वत में पाई जाती थी। यह अधिकतर रूस की बारीक उपजाऊ मिट्टी (काँप) तथा कंकड़ों में पाई जाती थी जिनको वहाँ की नदियाँ वहाँ के ऊँचे ऊँचे ढालों से बहा कर लाती थीं। यह हाल ही में कनाडा तथा दक्षिण अफ़्रीका में पायी गयी है। इसकी इस अंतिम खोज ने समस्त वैज्ञानिक संसार को इसकी उपयोगिता का परिचय दे दिया। जैसे जैसे इस खनिज पदार्थ की बाहुल्यता बढ़ती गई वैसे वैसे इसको उपयोग में लाने के लिये नये नये उपाय सोचे जाने लगे। माँग से अधिक पैदावार होने के कारण इस में बहुत सी बुराइयाँ आ गईं।

इस धातु में निम्नलिखित गुण पाये जाते थे:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका रङ्ग पारे के समान चमकीला तथा सफ़ेद होता है । इसमें न तो कभी ज़ंग लगती है और न कभी यह मैला ही होता है । यह ओषजन (Oxygen) और उदजन (Hydrogen) गैसों की सहायता से बने हुए ओषी-उदजन अग्नि (Oxy-Hydrogen flame) में १७५०° सेन्टीग्रेड तापक्रम होने पर पिघलती है । यह संसार के अत्यन्त भारी धातुओं में से एक है । इसका घनत्व लगभग २१ ग्राम प्रति घन सेन्टिमीटर है । यह इतनी घनवर्धनीय है कि मकड़ी के जाले के तार के समान पतला तार इससे बना सकते हैं । यह केवल नमक तथा शोरे के तेजाब के मिश्रण में (Aqua Regia) घुलनशील है । यह ओषजन कारबन डाईऑक्सइड, हरिन (Chlorine) तथा नमक के तेजाब से भी नहीं मिलती । यह खदानों से बड़े बड़े घुनत (Dunite) के ढेलों के रूप में निकाली जाती है । इसमें इरीडियम (Iridium,), पैलेडियम (Palladium), औसमीडियम (Osmedium) औसमेरिडियम, (Osmeridium), रोडियम (Rhodium,) रुथेनियम (Ruthenium) और स्वर्ण (Gold) जैसी बहुमूल्य धातुयें मिली रहती हैं ये सब अपने अपने गुणों के अनुसार उपयोग में लाई जाती हैं । इन धातुओं में इरीडियम (Iridium) सब से मूल्यवान होता है । इसके एक आउन्स का मूल्य लगभग ४००) रु० होता है ।

इन दो या तीन वर्षों में इस प्लैटिनम की माँग बहुत बढ़ गई है । यह अधिकतर आभूषणों, विद्युत वैज्ञानिक प्रयोगों तथा दाँत बनाने के उपयोग में आता है । इसके सिवा अंगूठी, पिन, कड़े, चैन, कर्ण फूल, घड़ी, सिगरेट रखने की डिबया, बनाने में काम आता है । तेजाबों के असर को रोकने के लिये तथा ऐसी घरिया बनाने के लिए जिसको अधिक देर तक गर्म करने की आवश्यकता हो यह धातु काम में आती है । रकाबी, तार पन्नी और अन्य बहुत सी वस्तुयें इससे बनाई जाती हैं ।

प्लैटिनम और इरिडियम के मिश्रण से एक बहुत कठिन वस्तु बनती है जिसका उपयोग वायुयान तथा पैट्रोल के इंजन में होता है । क्योंकि कोई और धातुयें या मिश्रण यह कार्य इतनी सफलता पूर्वक नहीं कर सकती है । मौनोप्लेन, एरोप्लेन, हाइड्रोप्लेन मोटर बोट, सशस्त्र मोटर और ऐसी बहुत सी युद्ध की सामग्री इससे बनाई जाती है क्योंकि इसी धातु के बने हुए इंजन पर भरोसा रक्खा जा सकता है । यह भिन्न भिन्न प्रकार के रंग देने के काम में भी आती है जो पैलेडियम, चाँदी और प्लैटिनम के मिश्रण से बनती है और पैलेडियम के कारण ही किरण चित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(Spectrum) में रंग आते हैं। औसमेरिडियम (Osmeridium) तथा सोने के मिश्रण से फाउन्टेनपैन के निब बनते हैं।

सारांश में यदि हम ऐसा कहें कि इसकी समता रखने वाली अन्य कोई धातु इस वैज्ञानिक क्षेत्र में नहीं है तो कोई अत्युक्ति न होगी।

युद्ध के पहिले रूस में तीस लाख आउन्स के लगभग प्लैटिनम प्रति वर्ष निकाली जाती थी और सर्व संसार की माँग का नब्बे प्रतिशत प्लैटिनम यहीं से भेजी जाती थी। पर आज कल यह देश केवल ५० प्रतिशत ही भेजता है। कोलम्बिया की पैदावार गत महायुद्ध के पहले से अब चौगुनी हो गई है तथा इसका नम्बर कनाडा से भी आगे बढ़ गया है।

रूसवालों ने प्लैटिनम की पैदावार बढ़ाने के लिये अमरीका के बने हुए विद्युत कलों का आश्रय लिया है। यह धातु ब्रिटिश कोलम्बिया में श्याम वर्ण की रेत में पायी जाती है। कनाडा में फ्रूड और सडबरी के पास इसकी तथा अन्य धातुओं की खदाने हैं। खदान से निकालते समय यह धाऊ (कच्ची धातु Ore) के रूप में होता है तथा इसके साथ सोना और चाँदी के धाऊ भी होते हैं।

ब्रिटिश कोलम्बिया, दक्षिणी अमरीका तथा अन्य स्थानों की प्लैटिनम कम्पनियों के हाथ में ही अन्य दूसरी धातुओं के खोदने का अधिकार सुरक्षित है। खोदने का काम विद्युत कलों द्वारा ही होता है। अफ्रीका में यह धातु लेडेन बर्ग रस्टिन बर्ग तथा ट्रान्सवाल के जिलों से निकाली जाती थी पर अब यह पौटगीटर, रस्त तथा कटरवाल में मिलती है। दक्षिणी अफ्रीका की खदानों का पता लगने के पूर्व प्लैटिनम तथा अन्य मिश्रित धातुओं का ज्ञान हमारे वैज्ञानिकों को पूर्ण रूप से न था क्योंकि उनको इन कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता था और सरलता ही में काँप से इसके कण मिल जाते थे।

जैसे जैसे इसकी पैदावार बढ़ती गई वैसे वैसे वैज्ञानिकों ने विभिन्न रीतियों से इसको खोज निकालने के उपाय निकाले। उनमें से अमैलगेमेशन (Amalgamation) क्लोरिनेशन (Chlorination) विद्युत द्वारा निकालना तथा, और इसी प्रकार की अन्य रीतियों का उपयोग होने लगा।

हरिन द्वारा जो प्लैटिनम निकाला जाता था उसमें से कई विषैली गैसें उत्पन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती थीं जिनसे अत्यन्त स्वस्थ मनुष्य शीघ्र ही अस्वस्थ हो जाता था। पर आज कल इस विधि में भी आशातीत उन्नति हो गई है।

प्राचीन काल में रसायन वेत्ताओं ने बहुत परिश्रम से धातुओं को मार कर प्लैटिनम तयार किया था इस प्रकार तैयार किया हुआ प्लैटिनम विशुद्ध नहीं होता था और इसका मूल्य सोने से लगभग नौ या दस गुना अधिक होता था। इसके पाँच वर्ष बाद ही विशुद्ध प्लैटिनम ३० शिलिंग अर्थात् २५) रु० प्रति आउन्स* मिलता था फिर कुछ वर्षों तक इसका मूल्य नौ पाउंड सात शिलिंग प्रति आउन्स रहा, फिर गत महा युद्ध में ब्रिटिश सरकार ने इसका इजारा ले लिया और प्रति आउन्स का मूल्य २० पाउंड† हो गया। इसके मूल्य में इतना अन्तर होने का कारण इसकी उपयोगिता थी। महा युद्ध में इसके नये नये उपयोग हुए। सन् १९२५के लगभग प्रति आउन्स का मूल्य २५ पाउंड हो गया किन्तु अब स्वाधीनता महायुद्ध में इसकी बिल्कुल आवश्यकता न होने के कारण इसका मूल्य लगभग ५ पाउंड प्रति आउँस हो गया है।

इंगलिस्तान के आभूषण-संसार में प्लटिनम का वह स्थान नहीं है जो सोने का है। कनाडा में सन् १९२८ में एक कानून पार्लियामेंट द्वारा पास हुआ था जिसके अनुसार कोई भी आभूषण प्लैटिनम का नहीं कहा जा सकता था जब तक कि उसमें कम से कम ९५ प्रतिशत विशुद्ध प्लैटिनम न हो। प्लैटिनम तथा इरीडियम के आभूषणों के लिये इसी प्रकार के कानून आज कल संयुक्त राज्य में भी प्रचलित हैं।

प्लैटिनम की माँग की वृद्धि तथा उसकी उपयोगिता देख कर यही ज्ञात होता है कि वह एक अति उपयोगी धातु है और निकट भविष्य में उसकी उपयोगिता बढ़ने की अत्यधिक संभावना है।

रूस के अर्थशास्त्र वेत्ताओं ने इस अत्युपयोगी धातु का एक बहुत अच्छा उपयोग निकाला है। वे आज कल इसको सिक्का बनाने में उपयोग करते हैं और इस प्रकार इसका सम्मान करते हैं। अब ऐसी संभावना है कि इसका व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय हो जायगा।

रवि प्रकाश वैश "प्रकाश" "प्रताप"

---

* एक औंस लगभग २$\frac{1}{3}$ तोले के बराबर होता है।

† एक पौंड प्रायः १३ रु० ६ आने के बराबर होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साइकिल द्वारा इलाहाबाद से लखनऊ

मई के महीने में जब कि गर्मी पड़ना प्रारम्भ हो गया था, मैंने अपने एक मित्र के साथ साइकिल द्वारा इलाहाबाद से लखनऊ के लिये प्रस्थान किया।

मई के दस बारह दिन बीत चुके थे, प्रातःकाल हम दोनों ग्राँड ट्रंक रोड द्वारा इलाहाबाद से कानपुर की ओर रवाना हुए। यह सड़क दारागंज से सीधी चौक के बीच से होकर जाती है। रास्ते में खुर्दाबाद का फाटक है जो सिटी गेट कहा जाता है। कुछ दूर आगे बढ़ कर ईस्ट इंडिया रेलवे की लाइन पार कर के जब आगे बढ़े तो सूबेदारगंज नाम का रेलवे स्टेशन मिला जो कि हमारे बायें हाथ छूट जाता है यह अभी नया ही बना हुआ स्टेशन है, चूने की भट्टियों तथा ईंटों के भट्टे होने के कारण बनाया गया है। यहीं से प्रयाग के मकानों के लिये ईंटें जाया करती हैं।

शहर से आठ नौ मील चलने पर बाम्हरौली नामक स्टेशन के पास हमारी सड़क के दाहिने हाथ पर एक बड़ा भारी तारघर मिला जिसमें रेडिओ के खम्भे भी लगे हुए थे। वहाँ के निवासियों से पूछने पर पता लगा कि यह तारघर अभी नया ही बनाकर तय्यार किया गया है और यह हवाई स्टेशन (एरोड्रोम) का पोस्ट आफ़िस है। फिर हम लोग हवाई जहाज़ के स्टेशन को भी देखने गये जिसकी लम्बाई चौड़ाई का अनुमान करने से ज्ञात हुआ कि यह मैदान जिसमें हवाई जहाज़ उतरते हैं करीब सवा मील लम्बा और एक मील चौड़ा है। फिर हम लोग आगे बढ़े और स्थान स्थान पर हमें मार्ग बतलाने वाले खम्भे मिलते रहे। अधिकतर सड़कें स्टेशनों को जाती थीं। रेलवे लाइन गाँड ट्रंक रोड के समानान्तर ही है।

शहर से २२ मील चलने पर हम मूरतगंज नामक स्थान पर पहुँचे जो एक व्यापारिक स्थान प्रतीत होता था। उस स्थान को देखने से ज्ञात हुआ कि यहाँ पर तम्बाकू तथा लाठी, डंडे की दूकानें अधिक हैं। मूरतगंज से एक सड़क भरवारी स्टेशन होती हुई राजापुर को जाती है। मूरतगंज के पास गंगा नदी कहीं कहीं पर सड़क से दिखाई देती है। आगे बढ़ने पर सड़क के दोनों ओर हमें तरबूज, खरबूजे तथा अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामयिक तरकारियों के खेत दिखाई पड़ते थे जिनमें पुर* द्वारा कुओं के पानी से सिंचाई की जा रही थी। अभी जहाँ तक हम पहुँचे थे इलाहाबाद के ही प्रान्त में थे। पैदावार तथा मनुष्यों के रहन सहन और भाषा में किसी प्रकार का अन्तर नहीं मिलता था।

गर्मी काफ़ी पड़ती थी। जब हम सिराथू की सीध में आये तो हमें एक थाना मिला जो सैनी के नाम से पुकारा जाता है। वहीं पर सड़क के किनारे छायेदार वृक्षों की छाया में हम लोगों ने विश्राम किया। यहाँ से एक सड़क भरवारी को जाती है जो कि मूरतगंज से राजापुर जाने वाली सड़क से मिल जाती है।

सैनी से आगे बढ़ कर जब हम इलाहाबाद से ४० मील की दूरी पर निकल आये तो सिराथू नामक स्थान पर पहुँचे जो कि इलाहाबाद ज़िले की एक तहसील है। रेलवे स्टेशन भी है। यहीं से एक सड़क कड़ा† तक जाती है जो एक ऐतिहासिक स्थान है। सिराथू से आगे बढ़ कर "ससुर खदेरी" नदी का पुल पार करके इलाहाबाद ज़िले से फतेहपुर के ज़िले में घुसे। इस प्रान्त में आगे बढ़ने पर हमें एक गाँव दाहिने हाथ मिला जो सड़क से एक मील दूर है, वहाँ रुद्रवन्ती नामक एक जड़ी पैदा होती है। हम लोग उस स्थान को नहीं गये। केवल सड़क पर ही चरवाहों के लड़कों से बात चीत की थी जिनसे यह पता मिला।

वहाँ से तीन चार मील चलने पर हम लोग खागा नामक स्थान पर आये जो कि फतेहपुर ज़िले की एक बड़ी तहसील है। यहाँ से एक पक्की सड़क यमुनाजी के किनारे तक जाती है। खागा एक व्यापारिक मंडी है। यह स्थान इलाहाबाद से करीब बासठ मील है। हमारी यात्रा का प्रथम विश्राम यहीं पर हुआ।

दूसरे दिन प्रातःकाल हम लोग फिर रवाना हुए। वहाँ से चार पाँच मील चल

---

*पुर—एक चमड़े की बनी हुई बड़ी थैली होती है जिसमें एक मोटी रस्सी बाँध कर बैलों द्वारा पानी खींचा जाता है।

†कड़ा यह स्थान पहिले एक छोटे से सूबे का सदर मुकाम था सन् १७६५ ई० में इलाहाबाद के सुलहनामें में इसी "कड़ा" का ज़िकर आया है। गंगा नदी के किनारे यहाँ बड़ी बड़ी नावों के ठहरने के लिये व्यापारिक घाट थे। अब केवल उनके भग्नावशेष दिखाई देते हैं। नावों का व्यापार रेल ने छीन लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर हमें एक स्थान मिला जो रामपुर थरियाँव के नाम से पुकारा जाता है। वहाँ पर सड़क के किनारे ही थाना बना हुआ है। यह स्थान रेलवे स्टेशन से भी दूर नहीं है।

खागा से लगभग २२ मील चल कर हम लोग फतेहपुर पहुँचे। यह शहर कानपुर और इलाहाबाद के बीच में स्थित होने के कारण किसी प्रकार की व्यापारिक उन्नति नहीं कर सका। कानपुर की टैनरी (चमड़े का कारखाना) के लिये कम से कम २५ प्रतिशत कच्चा चमड़ा यहीं से जाता है। यहाँ से एक सड़क बाँदा को जाती है और दूसरी डलमऊ को। यह शहर अपने नाम के रेलवे स्टेशन से एक मील उत्तर की ओर स्थित है। ग्रांड ट्रंक रोड इसके उत्तरी भाग के मध्य में होकर जाती है। यहाँ पर सूती कोड़े अच्छे बनते हैं। यहाँ से कानपुर ४८ मील और इलाहाबाद ७२ मील की दूरी पर है। हम इस स्थान को देखते हुए आगे बढ़े।

चाँदपुर के थाने से होकर हम लोग जब फतेहपुर से २२ मील की दूरी पर पहुँचे, तो सड़कों का चौराहा मिला। यह चौराहा "चौडगरा" नाम से पुकारा जाता है इसी से लगा हुआ पश्चिमोत्तर भाग में एक मिल था जिसमें काम हो रहा था और मशीनें चल रही थीं। हम लोगों ने पहिले अन्दर जाकर इसे देखना चाहा, परन्तु न देख सके। वहीं के लोगों से पता चला कि इस मिल का मालिक एक गौराङ्ग साहेब है जो कभी कभी आता है। इस मिल में आस पास की कुल कपास की पैदावार इकट्ठी की जाती है और साफ़ करके कानपुर भेजी जाती है। इस चौराहे से एक सड़क बिन्दकी रोड स्टेशन होकर जहानाबाद को जाती है और दूसरी उत्तर की ओर गंगा जी के किनारे शिवराजपुर तक जाती है। शिवराजपुर एक प्रसिद्ध स्थान है। कार्तिकी के मेले में यहाँ घोड़े तथा ऊँटों की विक्री व खरीद बहुत होती है। यहीं पर गिरधर गोपाल का मन्दिर है। कहा जाता है कि मीराबाई ने इसी मन्दिर के अन्दर विष पान किया था।

इन सब स्थानों को देखते हुए हम रिन्द नदी तक आये जो एक छोटी सी नदी है। चौडगरा से जहानाबाद जाने वाली सड़क का जो पुल रिन्द पर बनाया गया है वह फतेहचन्द का बनवाया हुआ है। ग्राँडट्रंक रोड के पुल के पास बहुत ज़्यादा जंगल है जहाँ पर शिकारी लोग शिकार खेलने के लिये आया करते हैं। यह जंगल कानपुर ज़िले में है। कानपुर यहाँ से केवल २० मील रह जाता है। इस स्थान से १० मील और आगे महराजपुर नामक स्थान है यहाँ भी सड़क के किनारे थाना बना हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इसके बाद हम लोग कानपुर आये आज हम लोगों ने ७० मील की यात्रा की।

कानपुर को घूमने तथा देखने के लिये हम लोगों ने एक दिन का समय दिया, प्रत्येक स्थान को घूम घूम कर देखा। यह रमणीक स्थान गंगा नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। यहाँ चमड़े का काम बहुत होता है। यहाँ पर लाल इमली नामक ऊनी कपड़ों का कारख़ाना है और भी बहुत से आटा तथा कपड़े के मिल हैं। जे० के० मिल आज कल बहुत उन्नति पर है। यह सूती कपड़ों का मिल है। यहाँ पर कम्पनी बाग़ तथा फूल बाग, मालरोड, नया स्टेशन देखने योग्य हैं।

कानपुर से लखनऊ लगभग ५० मील है। कानपुर पहुँच कर उसके तीसरे दिन हम लोगों ने लखनऊ की ओर प्रस्थान किया। गंगा जी के पुल को पार करके हम उन्नाव ज़िले में पहुँचे। यहाँ हमें तरबूज़ के खेत बहुत मिलते थे। आगे चल कर हम मँगरवारा नामक स्थान पर आये जो उन्नाव ज़िले का एक क़स्बा है।

कानपुर से लखनऊ जाने वाली सड़क उन्नाव शहर के ठीक बीच हो कर जाती है। उन्नाव कानपुर से दस या बारह मील की दूरी पर स्थित है। यह शहर ठीक फतेहपुर की भाँति है परन्तु यहाँ पानी के लिए नल लगे हैं और फतेहपुर में कुओं का पानी काम में लाया जाता है। उन्नाव से आगे बढ़े तो सड़क के दोनों ओर खरबूजों के खेत अधिक थे। उनकी सिंचाई के लिये खेतों के पास ही छोटे छोटे कुएँ बने हुए थे जिनसे लोग ढेंकुली* द्वारा सिंचाई करते थे। लोगों की बोली कुछ अजीब ढंग की थी। लोग बहुत सीधे थे। देहातियों की भाषा समझने में हमें कुछ कठिनता होती थी। हम लोगों ने एक बड़ी नहर भी देखी जो हमारे संयुक्त प्रान्त की सब से बड़ी नहर है। लखनऊ शहर के पास जब हम लोग पहुँचे तो डेढ़ दो मील पहिले से ही रेलवे के कारख़ाने की चहार दीवारी मिलने लगी। इस प्रकार सुबह के चले हुए दो बजे तक हम लोग कानपुर से लखनऊ पहुँच गये।

मूलचन्द्र शुक्ल

---

*ढेंकुली—एक लम्बी लकड़ी के सिरे पर पत्थर और दूसरे सिरे पर पानी खींचने का पात्र एक रस्सी द्वारा एक लम्बी रस्सी से लटकाया रहता है और यह लकड़ी कुएँ के किनारे गड़े हुए एक खम्भे में लीवर की भाँति बँधी रहती है जिससे पानी खींचने का पात्र कुएँ के अन्दर रहे। कुएँ के अन्दर से पानी के पात्र को बाहर लाने में लकड़ी के दूसरे सिरे पर बँधे हुए पत्थर सहायता पहुँचाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुण्य भूमि गढ़बोर

यों तो मेवाड़ प्रान्त का प्रत्येक भाग दर्शनीय है ही किन्तु उसमें भी विशेष महत्त्व रखने वाले स्थान प्रायः इने गिने ही हैं। उनमें से एक स्थान जो अपने अपूर्व भक्ति रस के स्रोत एवं अपनी सौन्दर्य छटा के लिए प्रसिद्ध है वह "गढ़बोर" है। जहाँ श्री आनन्द कन्द भगवान श्री चतुर्भुज नाथ मात्र का ही शासन है। और जो "भगवान चार भुजा" के नाम से मारवाड़ एवं मेवाड़ में विख्यात हैं।

इस मंगल मूर्ति के दर्शनार्थ सैकड़ों यात्री प्रति वर्ष आया करते हैं। यहाँ प्रति वर्ष भाद्र पद शुक्ला एकादशी को एक बड़ा मेला लगता है जिसमें सुदूर के यात्री आया करते हैं। जिसकी जन-संख्या प्रायः एक लाख एवं कभी कभी तो इससे भी अधिक हो जाती है।

अतः हम आज के विषय में अपने प्रिय पाठक वृन्द के समक्ष उक्त भगवान की यात्रा मात्र की ही चर्चा करेंगे—जो तारीख़ २२, २३ सितम्बर सन् १९३१ ई० तदनुसार वि० सं० १९८८ के भाद्र पद शुक्ला एकादशी एवं द्वादशी को की गई थी।

हमारी यात्रा का श्री गणेश मारवाढ़ राज्यान्तर्गत देसूरी ग्राम से होता है जहाँ से "गढ़बोर" प्रायः १० मील होता है। अस्तु। तारीख़ २१ सितम्बर को जब हम तमाम अध्यापक गण अपने शालीय कार्य से निवृत्त हुए, तो एक अध्यापक जी ने यह प्रस्ताव पेश किया कि "कल झूलना एकादशी है, अतः तमाम अध्यापकों को उचित है कि कल के प्रोग्राम में चतुर्भुज नाथ की यात्रा रखें।"

प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हो गया और यह निश्चय हुआ कि प्रातः काल प्रायः ३ बजे तमाम अध्यापक स्कूल में आजायँगे और फिर वहीं से चल देंगे। फिर प्रायः ७ बजे तमाम अध्यापक अपने अपने स्थान पर चले गए।

प्रातःकाल ४ बजे तक कोई आता नहीं दिखाई दिया। ५ बज गए फिर भी कोई नहीं आया तब विवश होकर हम दोनों को (सहायक अध्यापक देवीदत्त जी एवं मैं) ही यात्रा का श्री गणेश करना पड़ा।

हमने प्रायः ५-१५ पर देसूरी से प्रस्थान किया।

प्रातः काल का समय था। शीतल, मंद सुगन्ध पवन देव अपने सुखद स्पर्श

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से यात्रियों की आतिथ्य-सेवा कर रहा था और हम मध्यम गति से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहे थे। कई मन्द गामी यात्री पिछड़ते जा रहे थे।

कुछ ही दूर (प्राय: १½ मील) चलने पर पहाड़ का प्रवेश द्वार "चौकी" स्वरूप दृष्टि गोचर हुआ—जो मारवाड़ की ही सीमा में है और यात्रियों के लिये एक रक्षक स्थान है। यहां ३ मीने रहते हैं। पास ही एक मंदिर एवं एक सुन्दर एवं पक्की बंधी हुई निर्मल जल की बावड़ी है।

ऐसा सुनने में आया है कि इस बावड़ी का जल अपेय है, क्योंकि जल के प्राय: २-३ माह तक लगातार सेवन करते रहने से बाला (नारू) की व्याधि अवश्य ही उत्पन्न हो जाया करती है।

वहाँ से कुछ ही दूर चलने पर नाल का प्रवेश द्वार दृष्टिगोचर हुआ। जिसमें प्रवेश करते ही मानो साक्षात इन्द्र देव के नन्दन कानन में ही प्रविष्ट हुए हैं। कलकल नाद करती हुई वाम पार्श्व में एक छोटी नालिका अपनी द्रुत गति से प्रवाहित हो रही थी। ऊपर जल मुर्गे अपनी कलरव ध्वनि से पर्वत की शोभा को और भी द्विगुणित कर रहे थे। जिधर ध्यान जाता है उधर ही नाना प्रकार की कुसुमावली फैली हुई है जिनमें मीठी मीठी भीनी भीनी सौरभ आती थी और जिससे चित्त बहुत प्रसन्न हो जाता है।

नाल—यह नाल अभी हाल ही विक्रम संवत् १९२२ के लगभग मरुधरा धीश महाराज की श्री यशवन्त सिंह जी साहिब बहादुर के राज्य काल में निर्माण हुई है। इससे पूर्व आवागमन का साधन एक अन्य नाल थी जो यहाँ से (देसूरी से) ६ मील के अन्तर पर सुमेर नामक ग्राम के पास होकर निकली है जहाँ पर एक सुन्दर शिव मंदिर है। सुनने में आया है कि महाराणा प्रताप-काल की ऐतिहासिक घटना से घनिष्ठ संबंध रखता है। क्योंकि वह नाल अधिक समय लेती थी अतः इस नाल की रचना की गई थी।

नाल की बनावट प्रशंसनीय है यह पक्की बंधी हुई है किन्तु अभी वर्षा ऋतु होने के कारण पाषाण खण्ड इतस्तत: बिखरे हुए मिलते हैं।

जरा से दूर चलने पर वाम पार्श्व में ही गणेश जी का एक मंदिर आता है जहाँ वट वृक्ष अपनी सघन शीतल छाया से उस स्थान को आवेष्टित किए हुए है पास ही कल कल करती सुन्दर सरिता स्वच्छ जल लिए हुए द्रुत गति से प्रवाहित हो रही है जहाँ स्नान करने का अनुपम आनन्द आता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्थान पर भाद्र पद शुक्ला चतुर्थी को प्रति वर्ष उत्सव होता है जिसमें देसूरी के हाकिम एवं अन्य व्यक्ति भी इस विशाल मूर्ति के दर्शनार्थ एकत्रित हुआ करते हैं। एवं गान वाद्य से उस दिन के सायंकाल के समय को आनन्द पूर्वक यहीं व्यतीत करते हैं।

यहां से आगे प्रायः ४ मील चलने पर वाम पार्श्व में एक निर्मल जल की बावड़ी आती है जिस पर सघन वट वृक्ष यात्रियों को अपनी सुखद छाया दान करताहै। हमने यहाँ पर कुछ देर तक विश्राम कर जल पान किया और फिर आगे की ओर चल पड़े।

कुछ ही दूर चल कर इस नाल का अन्त हो जाता है और एक चौकी दिखाई देती है इसे झीलवाड़े की चौकी कहते हैं (क्योंकि इसी नाम का पास ही एक ग्राम है)। यहाँ मारवाड़ की सीमा समाप्त होती है और मेवाड़ की सीमा का आरंभ होता है। यहां दो-तीन व्यक्ति यात्रियों के रक्षार्थ रहते हैं। प्रति व्यक्ति एक पैसा यात्रा-कर भी देना पड़ता है किन्तु राज्य-कर्मचारी एवं ब्राह्मण अदण्ड्य समझे जाते हैं।

यहां हमें ८ बज गये थे धूप भी अब अपना प्रभाव भली प्रकार से जताने लगी थी (क्योंकि भूमि चौरस थी) अतः हमने यहाँ प्रायः ½ घंटे का विश्राम किया फिर राह पूंछ कर आगे बढे। अगाड़ी चलने पर एक नाड़ी मिली जिसके वाम पार्श्व में होकर एक पगडंडी चारभुजा जाती है और राह झीलवाड़े को जाती है।

प्रायः १½ मील चलने पर एक गाँव आता है जहाँ से गढ़वोर ½ मील रह जाता है। राह इस गांव के वीच में होकर जाती है।

आगे चलने पर एक छोटी नाडी (जिसे दूदा नाडी कहते हैं) मिलती है। इस पर एक विशाल एवं सुन्दर बारहदरी बनी है और जहाँ चारभुजा की रेवाड़ी झूलनार्थ ठहरती है। इसी के पास एक स्वच्छ जल का कुण्ड आया हुआ है। हमने यहाँ पर विश्राम किया, शौच, स्नान, सन्ध्या आदि से निवृत्त हुए कि इतने ही में देसूरी के नायब हाकिम आदि अन्य व्यक्ति भी मिल गए। उनके चले जाने के पश्चात् हम गढ़बोर की तरफ अग्रसर हुए। एक मिट्टी का टीला पार करने पर ही नगर का विशालकाय प्रवेश द्वार दृष्टिगोचर होता है।

हमने नगर में प्रवेश किया। नगर में असंख्य जन समूह को देखकर आश्चर्या-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्वित होना पड़ा। नगर में अपार जन समूह के आगे पृथ्वी का धरातल भी अगोचर था। आगे जाने पर देखा कि मंदिर के सामने ही बाहर एक बारहदरी बनी है जिसमें बाहर के आए हुए साधु महात्माओं को चार भुजा के निजी कोष से सदैव सदावर्त मिलता हैं एवं जहां कई साधु बैठे हुए भगवान का नामोच्चारण कर रहे थे।

मंदिर के प्रवेश द्वार के पास ही दोनों पार्श्व में दो विशालकाय गज अपनी सूँड को पृथ्वी के सहारे लगाए अचल थे।

हमने द्वार में प्रवेश किया, वहाँ भला भीड़ का क्या पूछना! मनुष्यों का संघर्ष इतना प्रबल था कि जरा सा भी पैर डिगा और कुछ समय के लिए त्रिशंकु वाली दशा होती थी। खैर, हम ज्यों त्यों करके निज मन्दिर के द्वार तक पहुँच ही तो गए। वहाँ भगवान के दर्शन करते ही सब काम सफल हुआ।

स्त्रियों का तो इस अवसर पर कुछ पता नहीं लगता था। बिचारी बाहर दर्शनार्थ दो पहर तक खड़ी ही रहीं किन्तु दर्शन दुर्लभ थे।

निज मन्दिर के बाहर ही कुछ स्त्रियां रासलीला के अनुकरण स्वरूप नृत्य, गान कर रही थीं। प्रदक्षिणा के पश्चात् हम दूसरी राह से निकले। वहाँ से चारभुजा के बाग की ओर अग्रसर हुए।

बाग में कई प्रकार के पुष्पों के एवं कई प्रकार के फलों के सुरुचिर वृक्ष खड़े थे। हमने यहाँ पर कुछ फलाहार किया क्योंकि आज का दिवस सब के व्रत का था।

तत्पश्चात प्रायः १ बजे चार भुजा की रेवाड़ी स्नानार्थं उपरोक्त दूदा तलाई पर जाती है, वास्तव में उसका दृश्य अवलोकनीय है।

प्रायः एक बजे का समय था और क्योंकि मन्दिर के अगाड़ी मानव मेदिनी अधिक थी अतः हमने राह में एक चबूतरे पर ही खड़े रह कर दर्शन करना उचित समझा।

अब रेवाड़ी के आने की तैयारी थी। नाना प्रकार के वाद्य यंत्रों की कर्ण मधुर ध्वनि सुनाई देने लगी।

सवारी का ठाट देखते ही बनता था—सबसे अगाड़ी एक हाथी था जिस पर निशान था। नक्कारों से सजा हुआ ऊँट और कई सजे हुए घोड़े मंद गति से चल रहे थे। बीच में रेवाड़ी के सामने कई मनुष्य अपने हाथों में तुर्रे वाली छड़ियाँ लिये हुए नृत्य करते हुए धीरे धीरे चल रहे थे। और साथ ही रेवाड़ी लिए हुए कई व्यक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल रहे थे। इस रेवाड़ी में एक बन्द बक्स मात्र ही था। फिर एक दूसरी रेवाड़ी निकली जिसमें भगवान की प्रतिमा थी। जिधर से रेवाड़ी निकलती थी उधर ही उस पर नाना प्रकार से पुष्प-वृष्टि होती थी जो दृश्य एक बार देख लेने पर आजन्म नहीं भूलता। अब यह सवारी सीधी उक्त तलाई की ओर जायगी।

क्योंकि हमने पहिले भली प्रकार मन्दिर में दर्शन नहीं किये थे अतः अब की पुनः दर्शन कर तलाई की ओर अग्रसर हुए।

यहाँ का दृश्य बड़ा ही सुन्दर होता है :—

एक व्यक्ति अपने शीश पर भगवान की मूर्ति रखता हुआ उस तलाई के चौतर्फ प्रदक्षिणा करता है। तब तमाम यात्री तलाई में उतर पड़ते हैं और तलाई के जल से भगवान को स्नान कराने के हेतु उन पर जल-वृष्टि करते हैं। इसी प्रकार भगवान की प्रदक्षिणा दो बार होती है।

तत्पश्चात् प्रतिमा बारहदरी में लाई जाकर पालकी में स्थापित की जाती है। और उसी प्रकार धूम धाम के साथ मन्दिर की ओर प्रत्यागमन होता है।

रेवाड़ी के दर्शन करने पर जन समूह कम होने लगता है यहाँ तक कि द्वादशी तक बहुत कम यात्री रह राते हैं, फिर भी भीड़ तो वैसी ही रहती है।

हमने कुछ फलाहार किया और रात्रि भर थकावट हो जाने के कारण यहीं विश्राम करना उचित समझा।

फिर दूसरे दिन प्रातःकाल को प्रायः ९ बजे भोजन कर चुकने के बाद हमने देसूरी की ओर प्रस्थान किया किन्तु राह में हमारे मित्र कुछ अस्वस्थ हो गए थे अतः धीरे धीरे ३ बजे तक हम सानन्द देसूरी लौट आए।

प्रिय पाठक वृन्द, हमने उक्त यात्रा का वर्णन तो किया है किन्तु यह तो वर्णन मात्र ही है। किन्तु प्रत्यक्ष दर्शन करने पर तो एक अलौकिक छटा का प्रदर्शन होता है, अस्तुः।

बोलो—"चतुर्भुज नाथ की जै।"

दाऊलाल शर्मा 'देवेन्द्र'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्ण का एक विचित्र गुण

स्वर्ण एक ऐसी धातु है जिसने अपनी चमक दमक के कारण आदि काल से ही मनुष्य का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। बायबिल के प्रथम भाग (old testament) में ईसा से ६०० वर्ष पूर्व स्वर्ण का उल्लेखन किया गया है। यही नहीं वरन् स्वर्ण को दूसरी धातुओं से अलग करने की विधि भी दी गई है। कटार व तलवारों की मुठिया में सोने का प्रयोग प्राचीन काल से होता रहा है।

सोना प्राय: चट्टानों में और नदियों द्वारा लाई हुई कछारी मिट्टी में पाया जाता है। चट्टानों में इस धातु के टुकड़े कुछ बड़े पाये जाते हैं, पर कछारी मिट्टी में तो केवल छोटे छोटे कण ही मिलते हैं। केवल एक तोले सोने के कणों के लिये एक टन मिट्टी की आवश्यकता होती है। दक्षिण अमरीका के ब्रैज़ील प्रान्त में कछारी मिट्टी की खानें बहुत सी हैं। यहाँ पर सोना निकालने के लिये खान की मिट्टी को एक संकरे हौज़ में पानी से ख़ूब धोते हैं, और फिर ऊपर का पानी निथार देते हैं। सोने के कण भारी होने के कारण तह में बैठ जाते हैं और फिर इकट्ठे कर लिये जाते हैं। आजकल विज्ञान के इस नये युग में यह पुराना तरीक़ा भी लुप्त होता जा रहा है। अब मिट्टी एक बड़े हौज़ में रक्खी जाती है, और मशीन द्वारा पानी की बहुत ही तेज़ धार उस पर फेंकी जाती है। मिट्टी घुल कर अलग हो जाती है और सोने के छोटे छोटे कण रह जाते हैं।

सोने की खान में काम करने वाले लोगों का यह अनुभव है कि ब्रैज़ील की अनेक खानों में जो १५ या २० वर्ष पूर्व ख़ाली जान कर छोड़ दी गई थीं, अब फिर से सोना निकाला जा सकता है। विशेष कर ऐसी खानों में जहाँ झाड़ियों के कारण सूर्य्य का प्रकाश कम पहुँचता है, यह अद्‌भुत शक्ति शीघ्र लौट आती है।

उदाहरण स्वरूप मिस्टर फ़्रेड-डब्ल्यू-फ़्रेज (Fred W. freise) ने मिना रियासत में पामा ज़िले में १९०८-९ में सोना निकाला, फिर दूसरी बार १९२६ में भी वहाँ से सोना खोदा। पहली बार प्रति टन बालू में ८·५ ग्राम सोना मिला, और दूसरी बार प्रति टन ४·८५ ग्राम। पर इस बार का सोना पहली बार की अपेक्षा रङ्ग, चिकनाहट तथा घनत्व में भिन्न था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्हीं महाशय ने रियो रियासत में १९१२ में सोना निकाला था, फिर १९२६ में भी उसी स्थान से सोना निकाला। १९१२ में ११·६ ग्राम प्रति टन मिला था, और १९२६ में केवल ४·६६ ग्राम।

एक बात ध्यान देने योग्य यह है कि १९२६ में जब खान खोदी गयी थी तो पहले की अपेक्षा गहरा खोदना पड़ा था, और सोना सब से नीचे की तह में ग्रेनाइट चट्टान के ऊपर वाली बालू में मिला। इस सोने का रंग कुछ हरा था। और कई बातों में साधारणतः पाये जाने वाले सोने से भिन्न था। मिस्टर फ्रेज़ ने इस बात का अन्वेषण करना आरम्भ किया कि कैसे नीचे वाली तह में सोने के कण पहुँच गये। उन्होंने पुराने और नये सोने की वैज्ञानिक परीक्षा की। इस परीक्षा का फल निम्न-लिखित हुआ :—

सोने की किस्म	घनत्व	रंग	सतह surface	पारे पर ठहरना	प्रतिशत सोना जो पोटैसीयम साइनाइड के १% घोल में २४ घण्टे में घुला
९८·३% सोना, १·७% ताँबा } मामूली सोना	१९५६२	पीला	चित्तीदार	६६·४५	२२·४
नया सोना १००%	१९२२२	हरा	सादा	१८·३८	१०·१
	१९२१७	हरा	सादा	१६·६६	९·९

काला सोना—यह ब्रेज़ील के मोनाजिरेज़ रियासत में पाया जाता है। इसके काले होने का यह कारण होता है कि इसके ऊपर भूरे या काले रंग की एक तह चढ़ी होती है जो २×१०^{-३} से २५×१०^{-३} मि० मीटर मोटी होती है। यदि ५ प्रति शत पौटेसियम कार्बोनेट (K_2CO_3) के घोल से धो दिया जाय तो यह पतली तह फौरन् दूर हो जाती है। यदि यह तह कुछ विशेष मोटी हुई, तो गन्धक के तेज़ाब से धो देने पर दूर हो सकती है। यह तह लौह-ह्यूमेट (humate of iron) के कारण होता है। यह वस्तु लोहे और एक तेज़ाब से मिल कर बनती है। यह तेज़ाब ह्यूमिक ऐसिड, (humic acid) वनस्पतियों के सड़ने से उत्पन्न होता है।

मिस्टर फ्रेज़ ने यह अनुमान किया कि इस तेज़ाब के संग सोना, लोहा तथा दूसरी कई धातुएँ घुल कर भूमि की नीची तहों में पहुँच जाती हैं। इस अनुमान की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यता सिद्ध करने के लिये फ़्रेज़ ने कई एक प्रयोग किये, जिनका निष्कर्ष यह निकला कि :—

१—आक्सिजन गैस की अनुपस्थिति में यदि पर्य्याप्त समय दिया जाय तो ह्यूमिक ऐसिड में सोना घुल सकता है।

२—भाप से बनाया हुआ जल या वायु रहित जल ऊपर की क्रिया में कोई बाधा नहीं डालता। वर्षा का जल भी कोई विशेष बाधा नं० १ क्रिया में नहीं उपस्थित करता। इन प्रयोगों के पश्चात् और भी कई प्रयोग विस्तीर्ण रूप से किये गये। अन्त में यह सिद्ध हुआ है कि ब्रेज़ील के उन प्रान्तों में जहाँ सोने की खानें पायी जाती हैं, प्रायः भूरे तथा काले रंग का पानी मिलता है, जिसमें 'आक्सिजन' गैस बिलकुल ही नहीं घुली रहती, तथा हवा भी उसमें बहुत कम ही रहती है। इस पानी में वनस्पति के सड़ने से उत्पन्न हुई 'ह्यूमिक ऐसिड' भी रहती है। अतः अनेक धातुओं के संग सोना भी इस में घुल जाता है। हवा तथा प्रकाश के कारण बहुत सी घुली हुई धातुएँ पानी के बाहर निकल आती हैं पर सोना व लोहा घुला ही रहता है। इस प्रकार ये दोनों धातुएँ भूमि की नीची तहों में पहुँचती हैं। वहाँ यदि पानी की कोई ऐसी धारा मिल जाती है जिसमें किसी धातु का गन्धेत घुला हो, तो फ़ौरन सोना घोल के बाहर कणों के रूप में निकल आता है, और वहाँ बालू में मिल जाता है। लोहे तथा 'ह्यूमिक ऐसिड' से मिलकर बने हुए एक काले पदार्थ की एक पतली तह उन कणों पर बैठ जाती है और वह सोना काला दीखता है।

अपने इस अनुमान के समर्थन में मि० फ़्रेज़ ने निम्नाङ्कित प्रयोग किया :—

एक लकड़ी का हौज़ ५० फीट लम्बा, ६ फीट चौड़ा और ४ फ़ीट गहरा लिया गया, इसमें प्रति ३ फ़ीट लम्बाई में एक इंच का ढाल भी था। इसकी लम्बाई का $\frac{९}{१०}$ भाग स्वच्छ बालू तथा मिट्टी से भर दिया गया और समतल कर दिया गया। ऊपर के शेष भाग में पहले की भाँति बालू ही भरा गया पर इसमें कुछ थोड़े से बारीक़ सोने के कण भी मिला दिये गये। इन कणों का व्यास पहले से नाप लिया गया था, और जितना सोना मिलाया गया था, उसका वज़न भी मालूम कर लिया गया था। इस छोर पर काला पानी जिसका उल्लेखन ऊपर हो चुका है, और जिसमें ६ से १० प्रतिशत ह्यूमस (raw humus) था, धीरे धीरे लगातार डाला गया। सारा हौज़ भली भाँति ढक दिया गया। पानी कितना उसमें डाला जाता था, तथा कितना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकलता था, यह भी मालूम किया गया। यह प्रयोग ६० दिन लगातार चलता रहा, प्रति दस दिनों के पश्चात् इस हौज़ के ख़ास ख़ास गहराई से वह काला पानी निकाला जाता था, और उसकी वैज्ञानिक रूप से जाँच की गई तो यह पता चला कि जितने ही गहरे से पानी निकाला जाता था, उतना ही सोना उसमें घुला होता था। किन्तु सबसे कम नीचे की तह में भी सोने के कण घुले हुए मिले।

इस प्रकार इस विचित्र पहेली को केमिस्ट्री के द्वारा सुलझाया गया है। और आज दिन पुरानी खानें जहाँ से सारा सोना निकाला जा चुका है, यदि खोदी जायँ, तो आश्चर्य्य नहीं, बहुतों में फिर सोना मिलेगा।

भगवती प्रसाद श्रीवास्तव

"भूगोल" पुरस्कार-कोष

जिन सज्जनों ने इस कोष में दान देने की कृपा की है उनको हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं। उन लोगों की नामावली इस प्रकार है :—

		रु० आ० पा०
१—श्री पूर्णेन्दुनरायन सिंह (थर्ड फ़ार्म, ई० सी० कालिज प्रयाग)		५—०—०
२—श्री प्रताप नारायण त्रिपाठी		३—०—०
३—श्री चुन्नीलाल शर्मा	"	१—०—०
४—श्री विजय किशोर पांडे	"	०—८—०
५—श्री वाचस्पति त्रिपाठी	"	०—२—०
६—श्री मूलचन्द शुक्ल	"	०—४—०
७—एक सज्जन	"	२—०—०
८—श्री शान्ति स्वरूप गोयल, देवनागरी हाई स्कूल, मेरठ	"	५—०—०
	योग	१६—१४—०
	पिछला योग	५—२—०
	वर्तमान योग	२२—०—०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वन में भूले हुए यात्रियों को परामर्श

वन में भटक जाने पर इधर उधर बहुत मत दौड़ो। एक जगह शान्ति से बैठ जाओ और अपने आरम्भ के स्थान को याद करो। यदि पास के किसी ऊँचे पेड़ या टीले पर चढ़ सको तो ऊपर जाकर अपने निर्दिष्ट स्थान की तलाश करो। मिल जाने पर वहीं से अपने मार्ग का एक मन में या काग़ज़ पर काम चलाऊ नक़्शा बना लो। यदि भटकने से पहले तुम्हारे साथ कुछ और लोग रहे हों तो एक अच्छे स्थान पर रहने योग्य जगह साफ कर लो और रात बिताने के लिये कुटी सी बना लो। पानी का बड़ा ध्यान रक्खो बिना भोजन के कुछ दिन तक काम चल सकता है पर बिना पानी के अक्सर लोग मरे हैं। पानी का नाला मिलने पर उसके निकास की ओर जाना अच्छा है क्योंकि नीचे बह कर वह अक्सर किसी न किसी खुले मैदान में प्रवेश करता है। नाले के पास कुछ न कुछ लोग भी पानी की तलाश में आया करते हैं। रात होने पर आग अवश्य जला लो। इससे जंगली जानवर भी पास नहीं आते हैं और अपने मित्रों को ढूँढ़ने में सहायता मिलती है। सरदी के दिनों में आग के पास सोने में और भी अधिक आनन्द आता है। यदि भोजन पास हो तो थोड़ा ही ख़र्च करो। सब से बड़ी बात यह है कि प्रसन्न रहो, जरा भी न घबड़ाओ। यदि बाँसुरी या सीटी हो तो बजाने में मग्न हो जाओ और यदि कुछ भी पास न हो तो कोई उच्च विचार वाला गाना गाओ। यदि इतने पर भी कहीं से कोई सहायता न मिले तो अपने आरम्भ के स्थान से धीरे धीरे आगे बढ़ो और मार्ग में ऐसे चिन्ह बनाते जाओ जिससे आगे दुर्गम मार्ग मिलने पर अपने आरम्भ के स्थान को लौट सको। सूर्य और तारों की सहायता से दिशा-ज्ञान बराबर रक्खो इसमें कोई भूल न होने दो। भोजन समाप्त होने पर परिचित पेड़ों के फलों और पत्तियों से काम चलाओ। संकटों में फंसने पर भी धैर्य से काम लेने वाले यात्री से मृत्यु कोसों दूर भागती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

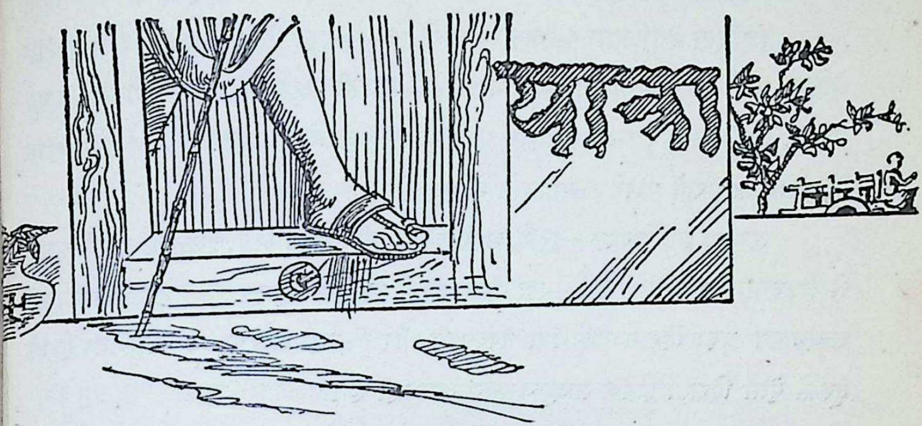

दुनिया के इर्द गिर्द

[ले०—श्रीयुत बी० बी० मालवीय, एम० ए०, एम० एस-सी०, पी-यच० डी०]

भाग (३)

लन्दन पहुँच कर सब जहाज़ खाली हो गया। चुङ्गी वालों से मुठभेड़ हुई। एक साहब ने जिब्राल्टर से दस पंद्रह सिग्रेट की डिबिया कोट की जेबों में छिपा रखी। सोचा कि चुङ्गी वाला सन्दूक़ खोल के देखेगा लेकिन चुङ्गी वाले ने पहिले ही हाथ जेब पर डाला और साहब बहादुर की सब डिबियाँ निकलवा लीं। सब काम बड़ी तरतीब के साथ होता था किसी भाँति की गड़बड़ नहीं। एक घण्टे में सब रेल पर सवार हो टिलबरी से सेन्ट पन्करास को जो क़रीब २५ मील के फासले पर है चल पड़े। रेल की गाड़ियाँ (तीसरा दरजा भी) साफ और आराम देह हैं। मख़मल की गद्दियाँ लगी हुई भारत की रेल गाड़ियों की दशा (तीसरे दरजा) उन गाड़ियों के सामने बड़ी गिरी हुई मालूम पड़ती है।

सेन्ट पन्करास स्टेशन से मोटर गाड़ी से दस मिनट में इंडियन स्टूडेंट युनियन जा पहुँचे। सितम्बर के महीने में वहाँ जगह कम ही होती है लेकिन पास ही के एक होटल में ठहरने का बड़ा अच्छा बन्दोबस्त हो गया। लन्दन इतना बड़ा शहर है कि हफ्ता दो हफ्ता में सब कुछ देख लेना नामुमकिन है तो भी मशहूर मशहूर जगह अच्छी तरह से देख सकते हैं। सवारी का दाम, और टैक्सी और ट्यूब (ज़मीन के नीचे की रेल) का बहुत अच्छा इन्तिज़ाम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी ऐसी जगह जो देखने के लायक है उनका बयान करेंगे।

ब्रिटिश म्युज़ियम—यह दुनिया में सब से बड़ा गिना जाता है बड़ी अजीब अजीब बातें देखने में आती हैं। भारत की पुरानी मूर्तियाँ, नक्काशी का काम, लकड़ी, हाथीदाँत पर काम, गलीचा, ज़री यह सब देखने के लायक हैं मिसर के, चीन के, ईरान के पुराने पुराने अजायबात मौजूद हैं।

लन्दन म्युज़ियम—इसमें शहर लन्दन की मशहूर बातें, इमारतें, पुराने समय से लेकर आज तक दिखाई हैं, एक दृश्य लन्दन के सन् १६६५ की बड़ी अग्नि जिसमें लन्दन का बड़ा हिस्सा जल गया नक्क़ाशी और बिजली से ऐसा बताया गया है कि दूर से ऐसा दिखता है कि सचमुच आग लग रही है।

विक्टोरिया म्युज़ियम—यहाँ साइन्स के सब मशहूर यन्त्र (apparatus) दिखाये गये हैं पहले पहल की घड़ियाँ, इंजन, जहाज़, मोटर, हवाई जहाज़ मौजूद हैं, अमरीका के राईट साहब का पहला हवाई जहाज़ भी यहाँ ही है।

लन्दन ज़ू—रीजंट पार्क के एक कोने में है। हर किस्म के जानवर यहाँ हैं। जैसे, सफ़ेद रीछ, दरयाई शेर और अमरीका का भैंसा, हिन्दुस्तान का शेर, बर्फिस्थान की पैंगविन, किस्म किस्म की मछलियाँ और साँप। यह देखने के लायक जगह है।

हाइड पार्क—हर क़िस्म के आदमी औरत यहाँ जमा होते हैं। सरगरम बोलने वाले बड़ी बड़ी भीड़ों को व्याख्यान सुनाते हैं। धार्मिक प्रचार करने वाले व्याख्यान सुनाते हैं मुल्क के खिलाफ़, बादशाह के खिलाफ़ जो चाहे कहते हैं। पुलिस को उनके मुँह दर मुँह गालियाँ सुनाते हैं किसी किस्म की रोक टोक नहीं। आदमी औरत जैसे खुल्लम खुल्ला जी बहलाते हैं भारत वालों के लिये बड़ी अचम्भे की बातें हैं गोकि वहाँ के लिये मामूली बातें हैं। कोई कुछ परवा नहीं करता।

बकिंघम महल—के हाते में हर सुबह १० बजे पहरा बदलता है यह नज़ारा देखने के लायक है। बड़ी भीड़ रोज़ इसको देखने के लिये जमा हो जाती है।

मैडम टूसो—के मोम की मूरतों का अजायबघर देखने के लायक है। मूरतें बिलकुल सजीव मालूम पड़ती हैं। इंगलिस्तान के राजाओं और बड़े बड़े मंत्रियों की मूरतें हैं। एशिया के सिर्फ एक आदमी याने डाक्टर सन यात सेन (जो चीन के पहिले प्रेज़िडेन्ट हुए हैं) की मूरत है। ब्रिटिश एम्पायर का एक दृश्य है उसमें कैनेडा, आस्ट्रेलिया साउथ अफ्रीका न्युज़ीलैण्ड इन सब के लिये एक एक जवान अपने अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुल्क की खास पहचान की चीज़ लिये खड़ा है। कनाडा वाला एक दांतली और गेहूँ की बालें लिये हुए है इससे यह बताया है कि कनेडा गेहूँ पैदा करने वाला एक बड़ा मुल्क है। भारत के लिये एक स्त्री बड़ी सज धज के तकिये लगाये हुए ज़ेवर ज़ेवरात पहिने हुए लेटी हुई है। एक ख़्याल आया की जहाँ हर दूसरे मुल्क के लोग अपने पाँव पर खड़े हुए हैं हम भारत वाले सचमुच अब तक अपने ज़ेवरात की सज धज में ही लगे हुए हैं और सुस्ती से तकिया लगा लेटे हुए हैं। यह कब तक ?

वैस्ट मिन्स्टरअबी—इसके दो हिस्से हैं एक जहाँ लोग सदियों से ईश्वर की आराधना के लिये जमा होते हैं गिर्जा घर है, दूसरा जहाँ बड़े मशहूर लोगों की यादगारें बनी हुई है। बड़े बड़े मंत्री, कवि और साइंसदां सब की यादगारों पर बड़ी दिलचस्प बातें लिखी हैं। सबसे नई यादगार बड़ी लड़ाई के नामालूम सिपाही के लिये है।

पार्लीमेंट—भीतर और बाहर से बड़ी सुन्दर इमारत है। हाउस ऑफ़ लार्डस और हाउस ऑफ कामन्स नज़दीक नज़दीक हैं। यहाँ वह जगह बताते है जहाँ बड़े बड़े आदमियों के मुकदमे किये गये, जहाँ बादशाह चार्ल्स पहिले को कतल का हुक्म दिया गया। हाउस ऑफ लार्डस में बादशाह और मलिका और प्रिन्स ऑफ वेल्स के लिये सोने की कुरसियाँ रखी हैं।

टावर ऑफ लन्दन—बड़ी मशहूर इमारत है। वह कमरा बताते है जहाँ रेले को १२ वर्ष कैद रखा था, और वह जगह जहाँ दो शाहजादों की कई साल बाद लाश मिली थी, जहाँ रानी मेरी ऑफ स्काट्स का सर उड़ाया गया था। इन जगहों को देख कर उन भयानक दिनों की याद आती है जब छोटे कसूरों के लिए सिर काटा जाता या फांसी दी जाती थी। एक बुर्ज में जवाहिरात और ताज इंगलिस्तान के सब बादशाहों के जमा हैं। वहाँ कोहनूर जो सदीयों तक हिन्दुस्तान में रहा बादशाह जार्ज के ताज में जड़ा हुआ दिखाई देता है।

शेष फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेरेग्वे की स्त्रियाँ*

सन् १८६५ से १८७० ई० तक पेरेग्वे और उसके पड़ोसियों (आर्जेन्टाइना, ब्रेज़िल और युरुग्वे) में घोर युद्ध होता रहा । इस युद्ध के बाद पेरेग्वे में स्त्रियों बच्चों और लावारिस ज़मीन को छोड़ कर और कुछ बाक़ी न बचा। कारण यही था कि देशवासी लड़ते लड़ते सब के सब नष्ट हो गये। लड़ाई के बाद देश में एक पुरुष पीछे चार स्त्रियाँ और तीन बच्चे बाक़ी रह गये थे ।

इस दशा में सब काम स्त्रियों को ही सँभालना पड़ा नहीं तो पेरेग्वे में जंगल ही जंगल हो जाते । जगह-जगह स्त्रियों ने अपने तथा अपने बच्चों के भरण-पोषण के लिये ज़मीन साफ़ करके रहने के लिये झोंपड़े बनाये और वे खाने के लिये मक्का और अन्य अनाज, कपड़ों के लिये कपास तथा दिसावर भेजने के लिये तम्बाकू उगाने लगीं।

पेरेग्वे के नवीन राष्ट्र में प्रत्येक बालक भावी पिता समझा जाने लगा और इसी बात को ध्यान में रख कर बालकों का समुचित रीति से लालन-पालन भी किया गया था । यदि कभी भोजन का अभाव होता था तो भी लड़कों को पेट भर खाने को दिया जाता था । यदि घर में एक ही सवारी का घोड़ा होता तो वह लड़के का समझा जाता था । उसकी माँ-बहिनें पैदल ही चलने में सर्वदा प्रसन्न और सन्तुष्ट रहती थीं।

इन बातों को हुए दो पीढ़ियाँ बीत चुकीं और अब पेरेग्वे की दशा धीरे धीरे सुधरती जा रही है लेकिन अब भी देश में स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों की संख्या भयंकर रूप से कम है ।

---

* T. Martin के एक लेख के आधार पर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजकल पेरेग्वे में एक बहुत छोटी सी सेना और पुलिस-दल है। अधिकांश पुरुष शहरों में जाकर बस रहे हैं और खेती बारी का काम स्त्रियों और बालिकाओं के सिर पर पड़ा है; यद्यपि कहीं कहीं एकाध पुरुष भी ढोरों की रखवाली करते पाये जाते हैं।

यद्यपि पेरेग्वे एक प्रजातंत्र वादी (Democratic) राष्ट्र है और स्त्रियों की संख्या भी अधिक है तथापि स्त्रियों को शासन करने तथा मत देने का कोई अधिकार नहीं है। इसके विपरीत अन्य उन्नतिशील देशों की स्त्रियों को सभी तरह के अधिकार प्राप्त हैं।

जब किसी स्त्री का विवाह होता है तो राज्य-नियमानुसार उसकी समस्त सम्पत्ति पर उसके पति का अधिकार हो जाता है और वह जैसे चाहे वैसे इसका उपयोग कर सकता है। इसी कारण बालिकाओं को विवाह की रुचि ही नहीं होती है चाहे उन्हें कैसा ही अच्छे से अच्छा वर मिलता हो।

पेरेग्वे में यह कोई असाधारण दृश्य नहीं है कि गृह-स्वामी तो सोने चाँदी से सजे हुए एक सुन्दर और स्वस्थ घोड़े पर बैठा हुआ शान के साथ चला जाता है और उसकी गृह-स्वामिनी सिर पर तम्बाकू का बड़ा सा गट्ठर लिये और गोद में एक बच्चे को लादे पीछे पीछे पैदल घिसटती है और एक दूसरा बच्चा उसका पल्ला पकड़ कर उसे पीछे खींचता जाता है। किन्तु सबसे बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि स्त्रियाँ स्वयं इन सब बातों को उचित समझती हैं।

पेरेग्वे की स्त्रियाँ वास्तव में बड़ी मेहनती होती हैं। वे अत्यंत तड़के उठती हैं और सूरज निकलते निकलते खेतों में पहुँच कर काम करने लगती हैं। दस बजे तक वे घास खोदना, घास काटना, पौधे लगाना आदि काम किया करती हैं। तब वे घर लौट कर भोजन बनाती और सबको खिलाती-खाती हैं और इन सब कार्यों से निवृत्त होकर आराम करती हैं। इसके बाद वे बच्चों को लेकर फिर खेत चली जाती हैं और वहाँ जाकर फली, कपास तथा तम्बाकू के खेतों में काम करती हैं। अक्सर अंगरेजी दूकानों पर ये चीज़ें अन्य विविध वस्तुओं से बदल ली जाती हैं और इस प्रकार यूरोप भेज दी जाती हैं।

किन्तु लड़कियों को निरंतर काम ही करते नहीं रहना पड़ता है क्योंकि वर्ष में अक्सर ऐसे त्यौहार भी पड़ते रहते हैं जबकि काम करना सर्वथा वर्जित होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुधा ऐसे त्यौहारों पर रात को केवल एक नाच होता है।

प्रत्येक नवागत को सबसे पहले खटकने वाली बात यह है कि वह एक सुन्दर बालिका को देखता है जो अपने स्पेनिश और इन्डियन पूर्व पुरुषों की तरह ही काली होती है। वह बिना जूते और टोपी के मैनचेस्टर का बना हुआ गाउन पहिनती है और मैनचेस्टर ही की बनी कंघी अपने बालों में लगाये रहती है। उसके होठों के बीच में एक सिगार अवश्य दबा रहता है। इस देश की सब स्त्रियाँ तम्बाकू पीती हैं किन्तु इसमें उन्हें अधिक ख़र्च नहीं करना पड़ता क्योंकि वे अपने ही तम्बाकू से स्वयं सिगरेट तैयार करती हैं।

देश की जन-संख्या के कारण स्वभावतः नाच में स्त्रियों की संख्या पुरुषों से कहीं ज़्यादा हो जाती है। स्त्रियों की इस बड़ी संख्या का नियन्त्रण करने के लिये दो लड़कियों को एक साथ नाचने दिया जाता है। और विवाहिता स्त्रियों को तो नाचने की आज्ञा ही नहीं है। किन्तु विवाहित पुरुषों के लिये इस प्रकार की कोई रोकटोक नहीं है और कदाचित इस कारण से भी लड़कियाँ विवाह नहीं करना चाहतीं।

सब लड़कियाँ पूर्ण रूप से स्वाधीन और स्वावलम्बी होती हैं।

जो लड़कियां खेतों में मज़दूरी करती हैं उनकी सूर्योदय से सूर्यास्त तक कार्य करने की नियत तनख़्वाह एक दिन के लिये दस डॉलर * और ख़ूराक है। गर्मी के दिनों में दोपहर के समय कड़ी धूप के कारण वे तीन घंटे आराम करती हैं किन्तु जाड़े के छोटे दिनों में वे सबेरे भर पेट नारंगियों का नाश्ता करती हैं। और फिर दिन भर काम किया करती हैं।

यह मानना पड़ेगा कि उन्हें कोई अधिकार और सुविधायें नहीं प्राप्त हैं किन्तु यह नहीं प्रतीत होता कि जो कुछ उन्हें मिलता है उससे वे समुचित लाभ नहीं उठातीं।

—मोहन राम बंसल

---

* यह डॉलर ५ पैसे के बराबर होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल-घड़ी

घड़ी बनाने का ढङ्ग बहुत पुराना है। प्राचीन समय में वक्त किस तरह मालूम किया जाता था। यह बड़ी ही मनोरंजक कहानी है। बहुत प्राचीन समय के इतिहास से कुछ पता चलता है कि सूर्य की परछाईं के ज़रिये से समय विभाजित किया जाता था यह एक धूप घड़ी के समान होती थी। इसके पश्चात् चिराग़ की घड़ी बनाई गई थी। यह कल्पना की जाती है कि चिराग़-घड़ी अल्फ़्रेड बादशाह ने बनाई थी। जैसे जैसे शीशे की ढेबरी में तेल जलता जाता था वैसे वैसे समय घटता जाता था और उससे समय मालूम हो जाता था। ढेबरी पर घंटे के चिन्ह खुदे हुए थे।

रेत-घड़ी और घंटे की घड़ी यह समय मालूम करने के लिये बहुत प्रसिद्ध थीं। पर हम ऐसी घड़ियों का हाल बतायेंगे जो जल की सहायता से चलती थीं। और वह धूप घड़ी ही के आधार पर बनाई गई थीं। सर्व-प्रथम इस जल-घड़ी को केटिसिबस नामक (Ketesibuis) सिकन्दरिया के एक निवासी ने ईसा के २४५ वर्ष पूर्व उसका आविष्कार किया था। प्राचीन काल में समय मालूम करने के सभी तरीक़ों में यह सब से अधिक अच्छा है। यह तरीका सब से अधिक उपयुक्त एवं सरल भी था क्योंकि हर आदमी इसे बना कर इससे लाभ उठा सकता था।

चित्र नं० १ में नल घड़ी का एक नकशा है जो ईसा से २०० वर्ष पूर्व बनाई गई थी। इसमें यह देखा जा सकता है कि पानी एक नली (अ) के द्वारा एक छोटे टीप (ब) में जाता है। जहाँ से फिर वह एक छेद के द्वारा एक दूसरे पात्र (स) में बूँद बूँद टपकता है। एक पानी की नली (द) टीप नं० ब में लगी है जिससे कि पानी की सतह बराबर रहे और ज्यादा पानी इस नली (द) के द्वारा बह जाय। टीप में त्रिकोण आकार का काग (ह) लगा हुआ है जिससे कि उस पानी की रफ़्तार ठीक रक्खी जा सके जो कि टीप से होकर पात्र (स) में जाता है ताकि घड़ी को तेज करना हो तो काग ऊपर कर दिया जाय और यदि उसकी चाल धीमी करनी हो तो नीचे दबा दिया जाय। यह काग सचमुच वही काम करता है जो कि घड़ी के अन्दर नियत करने की सुई (Regulator) करती है। यह काग का डाट एक बेलन (फ) के द्वारा नीचे ऊपर किया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

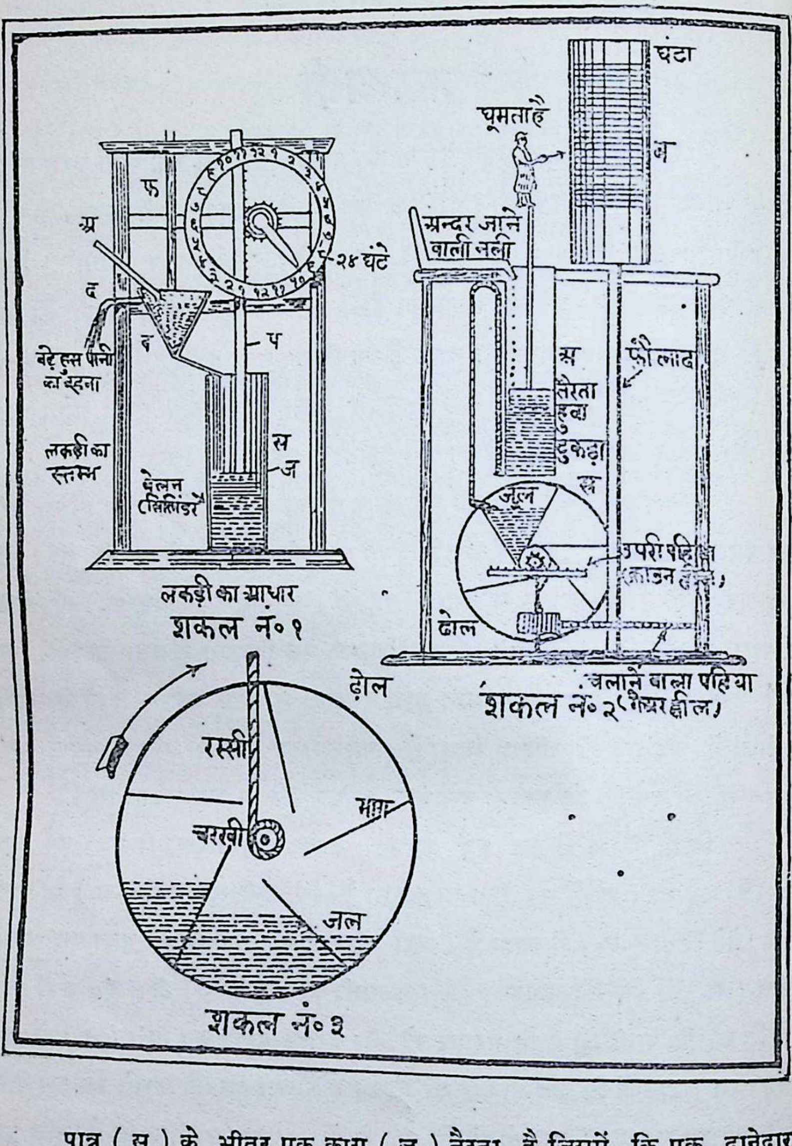

पात्र (स) के भीतर एक काग (ज) तैरता है जिसमें कि एक दानेदार लम्बा लोहा (प) जड़ा हुआ है। जो कि दानेदार पहिया (ह) को चलाता है जैसे जैसे ऊपर उठता है। और इस पहिये पर एक सूई लगी हुई है जो कि डायल (Dial) पर समय बताती है। यह डायल (Dial) चौबीस भागों में विभाजित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र न० २ में एक दूसरे प्रकार की जल घड़ी दिखाई गई है जो कि एक त्रिकोण काग की सहायता से चलती है इसमें यह देखा जा सकता है कि पानी एक ही ऊँचाई पर बूँद बूँद एक नली (अ) में गिरा कर रक्खा जाता है जिसके अन्दर एक काग तैरता है जो कि एक लकड़ी के बेलन में लगा हुआ है और इस बेलन पर एक आदमी खड़ा हुआ है और उसके हाथ में एक छोटी सी छड़ी है जो कि बेलन (ब) पर समय बताती है जब नली (अ) चौबीस घंटा में भर जाती है तो पानी स्वयं एक तिरछी नली द्वारा बह जाता है और फिर उसी समय पानी नली में ऊपर चढ़ने लगता है ।

पानी के पहिये में छ डोलचियाँ लगी हैं जिससे कि पहिया ६ दिन में पूरा चक्कर लगा ले और यह पहिया बेलन (ब) से लगा हुआ है जिससे बेलन ३६६ दिन में एक बार घूम जाता है ।

चित्र नं० ३ में तीसरे प्रकार की जल घड़ी दिखाई गई है जो कि सातवीं शताब्दी में विलायत में बनाई गई थी । एक लोहे का ढोल जिसका व्यास ५ इंच होता है और जो कई भागों में विभाजित होता और जिसके अन्दर थोड़ा सा जल होता है जल घड़ी के बनाने में काम में लाया गया था । इस ढोल के बीच में दोनों ओर चरख़ी लगी होती है जो कि मोटे तागे द्वारा लटकाई जाती हैं और तागा चरखी पर से जाता है जैसा कि चित्र नं० ३ में दिखाया गया है । जब कि चरखी तागे पर लपेट दी जाती है और लटका दी जाती है तो ढोल के बोझ के कारण नीचे खिसकने लगती है पानी ढोल के सब से नीचे के भाग के भीतरी और खुले हुए भाग पर गिर कर उसकी चाल को मन्द करता है क्योंकि ढोल के घूमने की वजह से पानी ऊपर की तरफ उठना आरम्भ करता है लेकिन ढोल के हर एक छोटे भाग में छेद है जिसके द्वारा पानी एक भाग से दूसरे भाग में जाता है जिसके कारण से ढोल नीचे धीरे धीरे घूम कर आती है और चरखी द्वारा समय ज्ञात होता है ।

चित्र नं० ४ में ऐसी पानी की घड़ी दिखाई गई है जो कि बिल्कुल ठीक समय बताती है जिसके बनाने के लिये हर एक सामान सरलता से मिल जाता है । पहिले दो टीन के डिब्बे लो और फिर दोनों को एक के ऊपर एक रख दो और ऊपर वाले डिब्बे की पेंदी में एक छोटा सा छेद टेकुलाई से कर दो और यह छेद इतना बड़ा हो कि पानी बूँद बूँद दूसरे टीन के डिब्बे में टपके जब कि घड़ी तैयार हो जावेगी तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरलता से छेद बड़ा कर समय ठीक किया जा सकता है अगर घड़ी कुछ सुस्त है तो छेद बड़ा करने ही से तेज हो जाती है और बहुत अच्छा ढङ्ग यह है कि इस छेद में एक पेंच लगा दिया जावे जिससे पानी गिरना नियत किया जा सके। ऊपर वाले डिब्बे के ढकने में दो छेद होना चाहिये।

एक छोटी लकड़ी के बीच में एक छोटी कांटी ठोक कर उसमें एक मोटा तागा बाँध देना चाहिये और फिर डिब्बे के ढकने के एक छेद से तागा निकाल कर एक बेलन पर लपेट कर ढकने के दूसरे छेद में डाल कर एक छोटा सा लोहे का टुकड़ा बाँध देना चाहिये जैसा कि चित्र नं० ४ में दिखाया गया है और फिर उस लोहे और लकड़ी को जो तागे में बँधा है जल भरे डिब्बे में डाल कर बन्द कर देना चाहिये और इस बेलन के अन्त में एक सुई लगा दी जावे और उस लकड़ी को जो पानी पर तैरती है ऐसी मोम या वारनिश लगानी चाहिए कि जिससे वह पानी न सोख सके और इस लकड़ी के दोनों किनारों को ऐसे छेदों में रखना चाहिये जिसमें कि बेलन बिना किसी रुकावट के चल सके। घड़ी का डायल (dial) एक चौकोर लकड़ी का है और इस चौकोर लकड़ी पर एक परिधि ऐसी खींच लो कि जिसका अर्धव्यास सुई के बराबर हो और कलम पर घंटे के निशान बने हों और इस परिधि को बारह बराबर भागों में विभाजित करो ताकि हर एक निशान से एक घंटा ज्ञात हो। प्राय: काग़ज़ या तामचीन पर बना हुआ (dial) घड़ी बनाने वालों के यहाँ मिल जाता है जिससे कि बहुत सहायता हो जाती और लकड़ी पर लिखने से बचत हो जाती है नीचे वाले डिब्बे में एक छेद बना कर अच्छा काग लगा दो जिससे उस समय जब कि डिब्बे में पानी भर जाय इस काग को खोल कर बहा दिया जाय और ऊपर वाले डिब्बे में ढकन खोल कर पानी भरा जा सकता है।

और इन्हीं नियमों पर बहुत सी घड़ियाँ बन सकती हैं जो कि खिलौना न होंगी वरन उनसे अच्छी तरह काम लिया जा सकता है। ठंढे देशों के रहने वालों के लिये शायद यह घड़ियाँ काम न दे सकें क्योंकि वहाँ पर ठंढक से पानी जम जाता है और घड़ी बन्द हो जाती है।

—नूरुलहुदा फोर्थ फार्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकाश-दर्शन

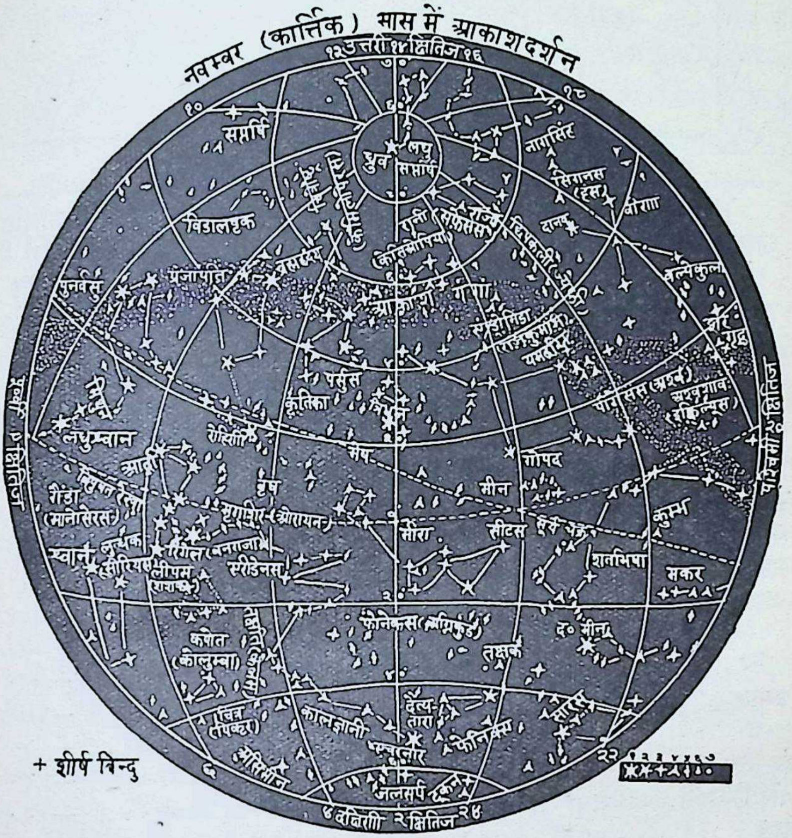

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान	११ अक्तूबर		३१ अक्तूबर		वर्षा १ जून से ३१ अक्तूबर तक	साधारण वर्षा में भेद
	परम तापक्रम	अल्प तापक्रम	परम तापक्रम	अल्प तापक्रम		
इलाहाबाद	८७° फ़ा०	७४° फ़ा०	८८° फ़ा०	६६° फ़ा०	३६·० इंच	— ०·३
आगरा	९०° ,,	७५° ,,	८५° ,,	५९° ,,	२५·३ ,,	+ १·०
बनारस	९०° ,,	७५° ,,	६९° ,,	६२° ,,	४३·१ ,,	+ ५·६
झांसी	८९° ,,	७५° ,,	८६° ,,	५९° ,,	३८·६ ,,	+ ४·७
कानपुर	८९° ,,	७३° ,,	८८° ,,	६२° ,,	४१·२ ,,	+ ७·९
लखनऊ	९१° ,,	७७° ,,	८७° ,,	६०° ,,	३१·० ,,	— १
पेशावर	९६° ,,	७४° ,,	८१° ,,	५४° ,,	१·९ ,,	— १·९
श्रीनगर	८७° ,,	५०° ,,	५७° ,,	४४° ,,	८·९ ,,	+ ०·१
लाहौर	९०° ,,	७५° ,,	७९° ,,	५०° ,,	२२·७ ,,	+ ७·६
शिमला	६७° ,,	५७° ,,	५८° ,,	४७° ,,	२९·१ ,,	—१९·५
देहली	९३° ,,	७१° ,,	८५° ,,	५४° ,,	२२·२ ,,	— ०·२
कलकत्ता	९२° ,,	७९° ,,	८७° ,,	७३° ,,	४७·३ ,,	— ३·९
दार्जिलिंग	६८° ,,	५४° ,,	५९° ,,	४७° ,,	१०३·७ ,,	— २·९
कटक	८९° ,,	७७° ,,	९०° ,,	७६° ,,	५५·६ ,,	+ ५·३
मद्रास	९५° ,,	७७° ,,	७८° ,,	७३° ,,	२८·२ ,,	+१०·०
रंगून	९०° ,,	७५° ,,	८८° ,,	७५° ,,	१०८·८ ,,	+२७·३
कोलंबो	८६° ,,	७९° ,,	८५° ,,	७४° ,,	४४·८ ,,	+ ९·८
बम्बई	८५° ,,	८०° ,,	९२° ,,	७७° ,,	९४·८ ,,	+२५·८
पूना	७८° ,,	७२° ,,	९१° ,,	७१° ,,	२३·१ ,,	·९
मसूर	८५° ,,	६५° ,,	८०° ,,	६७° ,,	१३·९ ,,	— ६·३
अजमेर	९१° ,,	७५° ,,	८०° ,,	५६° ,,	१९·७ ,,	+११·०
जयपुर	९३° ,,	७६° ,,	८५° ,,	६२° ,,	२६·९ ,,	+ ४·९
नागपुर	८२° ,,	७५° ,,	८९° ,,	६८° ,,	५६·६ ,,	+११·८
हैदराबाद (सिन्ध)	१०५° ,,	८२° ,,	८६° ,,	५९° ,,	१·० ,,	— ५·१
जैकबाबाद	१०७° ,,	७९° ,,	८६° ,,	५७° ,,	...	— २·३
क्वेटा	९०° ,,	५४° ,,	६५° ,,	२८° ,,	०·१ ,,	— १·४
शीलांग	७६° ,,	५३° ,,	६९° ,,	५२° ,,	८५·७ ,,	+२२·९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघर्ष में सम्मिलित होने वालों के लिये सूचनायें

(अ) लेख सुन्दर अक्षरों में हिन्दी में कागज़ के केवल एक ओर लिखे जाने चाहिये। एक इन्च का हाशिया भी रहे। प्रत्येक लेख के पहिले पृष्ट में सबसे ऊपर अपना नाम और पूरा पता होना चाहिए। लेख के अन्त में उन पुस्तकों और पत्रिकाओं आदि का नाम लिखिए जिनसे लेख तय्यार करने में सहायता ली गई हो। प्रत्येक लेख में एक हज़ार शब्द से कम न रहें और न दस हज़ार शब्दों से अधिक हों। (भूगोल के पूरे एक पृष्ट में प्रायः पाँचसौ शब्द रहते हैं)

(ब) गरमी की यात्रा में, न दो महीने से अधिक और न एक महीने से कम समय लगे। संघर्ष में सम्मिलित होने वालों को प्रत्येक दिन की यात्रा और खर्च का ठीक २ विवरण लिखना चाहिए। यदि हो सके तो यात्रा के प्रसिद्ध स्थानों के फोटोग्राफ और कुछ प्रतिष्ठित सज्जनों के हस्ताक्षर भी ले लिये जाने चाहिए। चित्र नकशा और डायरी के साथ समस्त यात्रा का पूरा २ विवरण भूगोल कार्यालय में ता० ३१ जुलाई सन् १९३२ तक आ जाना चाहिए।

(स) चित्रों के संघर्ष के लिये चित्र लेने का समय, स्थान और केमरे का नाम प्रत्येक चित्र के पीठ पर रहना चाहिए। प्रत्येक चित्र का विवरण भी वांछनीय है।

(द) प्रत्येक ग्राहक बनाने वाले को आर्डर फार्म (आज्ञापत्र) भूगोल कार्यालय से ले लेने चाहिए। (ये आर्डर फार्म बिना मूल्य के मिलेंगे।) यदि ऐसा न हो सके तो चन्दा भिजवाते समय मनी आर्डर के कूपन पर हस्ताक्षर होना चाहिए।

(नोट) मार्ग में खो न जावें इसलिये लेखों और चित्रों को मज़बूती से पैक करके रजिष्टरी द्वारा भेजिए। लेख और चित्र ता० ३१ दिसम्बर सन् '३१ तक भूगोल कार्यालय में पहुँच जाने चाहिए।

मैनेजर, भूगोल, प्रयाग

प्रिय महाशय :—

मैं निम्न संघर्षों में सम्मिलित होना चाहता हूँ :—

(क) ५०) रु० के लेख संघर्ष में

(ख) १००) रु० के यात्रा संघर्ष में

(ग) २५) रु० के चित्र संघर्ष में

(घ) २५) रु० के ग्राहकवृद्धि संघर्ष में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं १९३१-३२ वर्ष में "भूगोल" का स्थायी ग्राहक हूँ। मेरा ग्राहक नम्बर……है।

मैंने १) रु० प्रवेश फी भेज दी है उस रसीद का नम्बर……है।

मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि "भूगोल" पुरस्कार संघर्ष से सम्बन्ध रखने वाले सभी मामलों में मैं आपका निर्णय स्वीकार करूँगा। मेरी उम्र आदि के विषय में जो सूचनायें दी जाती हैं वे सब ठीक हैं।

नाम (पूरा)……………………

उपाधि

डाक का पूरा पता

उम्र

कक्षा और स्कूल या कालेज

(केवल विद्यार्थियों के लिये)

भूगोल में भेजे हुए लेख का नाम

हस्ताक्षर…………

तारीख़…………

२००) रुपये का इनाम !

५०) रुपये का इनाम उसे मिलेगा जो "भूगोल" में प्रकाशित होने वाले ज्योतिष, यात्रा, व्यवसाय, स्थानीय भूगोल, पुरातत्व, आधुनिक इतिहास आदि अंगों पर तीन सर्वोत्तम लेख लिखेगा।

१००) रुपये का इनाम उसे मिलेगा जो गरमी की छुट्टियों में कम से कम खर्च से अधिक से अधिक यात्रा करेगा और सर्वोत्तम जानकारी प्राप्त करेगा।

२५) रुपये का इनाम उसे दिया जायगा जो प्राकृतिक दृश्य, प्रसिद्ध इमारत, बाज़ार, मेला और कला-कौशल, खेती या जीवन के और किसी विभाग से सम्बन्ध रखने वाले सर्वोत्तम १० फोटोग्राफ़ (चित्र) लेकर भेजेगा।

२५) रुपये का इनाम ३० अप्रैल सन् १९३२ तक "भूगोल" के सब से अधिक नये ग्राहक बनाने वाले को मिलेगा।

मैनेजर "भूगोल" प्रयाग

भूगोल के ग्राहकों से कोई प्रवेश शुल्क न ली जायगी परन्तु जो ग्राहक नहीं हैं उनको संघर्ष में सम्मिलित होने के लिये एक रुपया १) रु० देना पड़ेगा। दाख़िला फार्म भूगोल कार्यालय से ४ बजे सायंकाल से ५ बजे सायंकाल तक मुफ्त मिल सकते हैं। जो सज्जन डाक द्वारा फार्म मगाना चाहें उनको अपना पता और एक आने का टिकट भेजना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL" PRIZES

Essay Competition

A prize of Rs.50 will be paid to the sender of three best essays on any of the topics that usually appear in "Bhugol".

Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibition, Plants and Animal life.

Trip Competition

A prize of Rs.100 will be awarded to one who will travel (in any interesting region or outside) most economically, most extensively and most profitably.

Photographic Competition.

A prize of Rs.25 will be given to the sender of the 10 best photographs of life, security or famous buildings.

Convassing Competition

A prize of Rs.25 will be paid to anyone who secures the largest number of subscribers for "Bhugol" by April 30, 1932.

No entry fee will be charged from the subscribers of "Bhugol" Non-subscribers will have to pay *Rupee one* only for entering the competition. Admission forms can be had free from the "Bhugol" office personally between 4 and 5 P.M. Those who want the forms to be mailed to them should send addressed and stamped envelope or anna postage stamp.

R. N. Misra
Manager
"Bhugol",
E. C. College, Allahabad

Instructions to Competitors

(*a*) The essays must be written neatly in Hindi on one side of the foolscape size paper with sufficient (one inch) margin, write your name and address on the top of the first page of each essay. Give at the end the names of books, periodicals etc., consulted by you in preparing each essay. Each of your essays should contain neither less than one thousand nor more than ten thousand words. (One full page of "Bhugol" contains some 500 words).

(*b*) The vacation trip should not take more than two months or less than one month to be completed. An authentic diary of the tour and expenses should be kept by the competitors. If possible, competitors are advised to take photographs and secure signatures of some well known persons of the important places they visit. Complete description of the trip together with the map, pictures and the diary should reach "Bhugol" office by July 31, 1932.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(*c*) For photographic competition, the time, place and the name of the camera must be mentioned on the back of each picture, a brief description of the picture is also desirable.

(*d*) Each convasser should either use the order forms which will be supplied free from the "Bhugol" office or simply sign the money order coupon when securing subscribers for Bhugol.

NOTE—To avoid loss or damage in transit the essays and photographs must be strongly packed and sent by registered post. The essays and photographs must reach the "Bhugol" office by December 31, 1931.

To

The Manager, "Bhugol",
Allahabad.

Dear Sir,

I wish to enter the following competitions:—

(*a*) Rs.50 Essay Competition.

(*b*) Rs.100 Vacation Trip Competition.

(*c*) Rs.25 Photographic Competition.

(*d*) Rs.25 "Bhugol" convassing Competition.

I am a regular subscriber of "Bhugol" for the year 1931-32. My subscription No. is..................................

I have paid the admission fee of Re.1 only. My receipt No. is......

I promise to abide by your decision in all matters concerning the "Bhugol" Prize Competition. I declare that the following information given about my age etc., is correct:—

Name (in full).......................................
Designation..................................
Complete postal address.............................
....
....
Age..............................
Class and School or College (for students only)...............
Name of the article or articles contributed to "Bhugol"...........
....
....
....
....
....
Signature..
Date..........................

Printed by S. S. Srivastava at the Allahabad Law Journal Press, Allahabad
Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B.A.) under the auspices of the Ewing Christian College, Allahabad

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल" का स्थायी साहित्य

१—भारतवर्ष का भूगोल—यह पुस्तक सारे भारतवर्ष, ब्रह्मा और लंका की यात्रा के बाद लिखी गई है। इसमें सन् १९३१ की मनुष्य-गणना के अंक दिये गये हैं। पुस्तक में २ तिरंगे, ४ चित्रमय नक़शे और १०० से ऊपर एक रंगे नक़शे और चित्र हैं। अब तक भारतवर्ष का कोई भूगोल ऐसी विस्तृत यात्रा के आधार पर नहीं लिखा गया। न कोई भूगोल इतने मौलिक नक़शों और चित्रों से सुसज्जित है। मूल्य केवल २) रु० डाक व्यय ।≡)

२—भारतीय भाषाएँ—मूल्य ।), इसमें भारतवर्ष की सभी भाषाओं का विषद वर्णन है।

३—संसार-शासन—मूल्य ।), इसमें संसार के प्रमुख देशों की शासन-पद्धति का विवरण है।

४—अफ़ग़ानिस्तान—मूल्य १), इस अंक को पढ़ने से अफ़ग़ानिस्तान का एक संक्षिप्त चित्र आँखों के सामने खिँच जाता है—प्रताप, कानपुर

५—टर्की—मूल्य १), इस अंक में टर्की की प्रायः सभी भौगोलिक और ऐतिहासिक स्थितियों का वड़ा सुन्दर और रोचक संकलन है।

६—ईरान—इस अंक में ईरान देश की स्थिति, भू-रचना, जलवायु, उपज, व्यापार, मार्ग, निवासी, इतिहास, साहित्य, वर्तमान परिस्थिति आदि फारस देश के सभी अंगों पर पूरा पूरा प्रकाश डाला गया है। यह अंक सुन्दर चित्रों और बड़े नक़शों से सुसज्जित है। मूल्य केवल १) रु०।

७—Geographical Questions (For High School Examination)—मूल्य -)॥, इसमें १० वर्षों के हाई स्कूल के प्रश्न-पत्र छपे हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक महाद्वीप, भारतवर्ष और प्राकृतिक भूगोल पर प्रसिद्ध भूगोल विशारदों के चुने हुए प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रति का डाकव्यय आध आना अलग है।

८—वर्नाक्यूलर फाइनल परीक्षा के भूगोल-प्रश्न पत्र और उनके आदर्श उत्तर—मूल्य ॥), इसमें १९२० से १९३१ ई० तक के प्रश्न-पत्र और आदर्श उत्तर दिये गये हैं। परीक्षार्थियों के सुभीते के लिए हर सन् का पूरा पत्र आरम्भ में छापा गया है। इसके बाद प्रश्नों का उत्तर उसी ढंग से दिया गया है जो परीक्षकों को पसन्द है। इस पुस्तक को पढ़कर विद्यार्थी लोग उत्तम श्रेणी के नम्बर सहज ही में प्राप्त कर सकते हैं।

मैनेजर "भूगोल"

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose: Bhugol aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents: Articles are published on varied topics of geographical interest: Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving a file of Bhugol any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

An index to each volume will be supplied with the April number.

Travel Department: The Travel Department of Bhugol annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools: The use of Bhugol in connection with the geography instruction in high schools, normal schools, and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, Berar, the Central Provinces, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior and Jaipur.

Correspondence: Editorial communications, exchanges, and books for review, should be addressed to: Pt. Ram Narain Misra, Editor, **Bhugol,** Geography Department of Ewing Christian College, Allahabad City.

Business communications, including subscriptions and advertisements, should be addressed to: The Manager **Bhugol,** Ewing Christian College, Allahabad. Telegrams: 'Bhugol,' Allahabad.

Subscription: Prepaid annual subscription: To any place served by the Indian Post Office Department, Rs.3. To any other country in the Universal Postal Union, Rs.5 or 7*s.* 6*d*. or $1.50.

To addresses in India the first copy will be sent by V.-P. P., unless remittance accompanies order. V.-P. P. Fee, 3 annas.

Remittances: Make all remittances by cheque, money order or British Postal Order, payable to the Manager, **Bhugol.**

Rates for Advertisements:

Ordinary full one page	Rs.	10
3rd page of the cover	„	12
4th page of the cover	„	15

Write to the Manager,
" BHUGOL,"
Ewing Christian College, Allahabad

Printed by S. S. Srivastava, at the Allahabad Law Journal Press, Allahabad
Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B.A.) under
the auspices of the Ewing Christian College, Allahabad

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Bhugol—December 1931 | Regd. No A. 1333

वर्ष ८] दिसम्बर १९३१ [संख्या ८

भूगोलविषयक हिन्दी का एक-मात्र सचित्र मासिक पत्र

भूगोल अनुभव हेतु यह "भूगोल" पत्र अमोल है।
"भूगोल" कहता है निरख, भू गोल है भू गोल है॥

सम्पादक—रामनारायण मिश्र, बी० ए०

एक प्रति का ।-)

वार्षिक मूल्य ३)

ईविंग क्रिश्चियन कालेज, प्रयाग से संरक्षित

Yearly Subscriptions:
Indian Rs. 3
Foreign Rs. 5

Single Copy
5 as.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

लेख	पृष्ठ संख्या
१—दुनिया के इर्द गिर्द—लेखक श्रीयुत बी० बी० मालवीय, एम० ए०, एम-एस० सी०, पी-एच० डी०	२४१
२—आकाश दर्शन	२४५
३—फ्रांस का राजनैतिक विकास—लेखक श्रीयुत श्रीनेत 'प्रताप'	२४६
४—संसार के कुछ शक्तिशाली पुरुष—अनुवादक श्रीयुत राममूर्तिसिंह, विशारद	२५१
५—बद्रीनाथ से प्रयाग की यात्रा—लेखक श्रीयुत रमेशचन्द्र नौटियाल	२६३
६—एक विचित्र स्वप्न—लेखक श्रीयुत रमेशचन्द्र सिनहा	२६९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाबप्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिए स्वीकृत है।

वर्ष ८] मार्गशीर्ष सं० १९८८, दिसम्बर १९३१ [संख्या ८

दुनिया के इर्द गिर्द

[ले०—श्रीयुत बी० बी० मालवीय, एम० ए०, एम० एस-सी०, पी-यच० डी०]

भाग (४)

(संयुक्त राष्ट्र अमरीका में प्रवेश)

सितम्बर महीने में योरुप से अमरीका के जहाज़ों में दूसरे दरजे में जगह का मिलना बड़ा कठिन है। कारण यह है कि गरमी के दिनों में अमरीका से बहुत लोग योरुप की यात्रा करने आते हैं और इस महीने में सब हज़ारों की तादाद में वापिस लौटते हैं। दो तीन महीने पहले से ही जगह का इन्तिज़ाम कर लेना चाहिये नहीं तो बड़ी मुश्किल पड़ती है।

लिवरपुल से शाम के वक्त क्युनर्ड लाइन का फ्रैंकोनिया जहाज़ करीब ढाई सौ मुसाफिर लेकर रवाना हुआ। दूसरे दिन सुबह आयरलैंड के बन्दरगाह "कोभ" से करीब ५० मुसाफिर और लेकर अटलान्टिक महासागर को पार करने के लिये चल पड़ा। एक दफा फिर समुद्र की बीमारी ने सब को सताया चार दिन के बाद न्युफाउंडलैंड के किनारे के पास ह्वेल मछलियों का एक बड़ा झुंड दिखाई पड़ा। कई ह्वेल मछली जहाज़ के नज़दीक तक आ गईं। दूर दूर तक पानी का फव्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ती दिखाई देती थीं। तसवीर में देखने से कुछ ठीक पता नहीं लगता कि यह मछली सचमुच कितनी बड़ी होती है। सातवें दिन सुबह न्यूयार्क की बत्तियाँ दूर से टिमटिमाती दिखाई पड़ीं। सात बजे सुबह जहाज़ खड़ा हो गया और अमरीका के डाक्टर ने आकर सब का मुलाहिज़ा किया। करीब एक घंटे रुकने के बाद फिर जहाज़ बन्दरगाह की तरफ धीरे धीरे चलने लगा। रास्ते में "स्टेच्यू आव लिबरटी" या स्वतंत्रता की मूर्ति की संगीन सूरत दिखाई पड़ी। दस बजे तक न्यूयार्क के तट पर जहाज़ आकर लग गया। एक घंटे में सब मुसाफिरों के पासपोर्ट जाँचे गये। हिंदुस्तानी विद्यार्थी अगर दूसरे दरजे के मुसाफिर हों तो बग़ैर किसी रोक टोक के चले जाते हैं। लेकिन अगर तीसरे दरजे के मुसाफिर हों तो चाहे कौन्सल जनरल के दस्तख़त हुए कितने ही कागज़ात क्यों न हों और चाहे कैसा ही पासपोर्ट क्यों न हो इमीग्रेशन के अफसर उनको रोक लेते हैं। बस उनका रोकना और जहाज़ में कैद होना बराबर है। उस वक्त से जहाज़ वाले बराबर निगाह रखते हैं और एलिस आइलैंड को पहुँचा देने की तैयारी होने लगती है।

इत्तफाक से जिस रोज़ न्युयार्क पहुँचे इतवार का दिन था। उस रोज़ एलिस आइलैंड के दफ़्तर बन्द रहते हैं सो जहाज़ ही पर रहना पड़ा। दूसरे दिन जहाज़ के अफसर ने सभों को जिन्हें रोक लिया था गिन कर पुलिस के सुपुर्द कर दिया।

एक जहाज़ में से इसी तरह रोके हुए मुसाफिर के सामान की जाँच चुङ्गी वालों ने की। "स्टील ट्रंक" हिन्दुस्तानी बने हुए थे। वे न्यूयार्क तक ठीक पहुँचे पर न्यूयार्क में जहाज़ से नीचे उतारने में उनकी ऐसी दुर्गति की कि पहचान में नहीं आते थे। ताला टूटा था। ढक्कन दबा कर पेंदे से मिला दिया गया। कोने सब मोड़ कर ऐसी सूरत कर दी कि रस्सी से चारों तरफ बाँधना पड़ा। लेकिन इतना ज़रूर कहना पड़ेगा कि कोई चीज़ चोरी नहीं हुई। एक छोटी सी किश्ती में बैठ कर (बैठने की तो कोई जगह ही नहीं थी कोयले की ढेरी पर बैठ कर) फिर वापिस एलिस द्वीप की ओर चले। करीब २० जन इस किश्ती पर थे। हिन्दुस्तानी दो और वाकी रूस के यूनान के बलगारिया के और और मुल्कों के लोग थे।

एलिस आइलैंड पहुँच के आदमियों को एक तरफ और औरतों को एक तरफ कर दिया फिर उन्हें अलग कमरों में ले गये। सब आदमियों को एक जगह इकट्ठा किया और एक डाक्टर ने कपड़े उतारने का हुक्म दिया। योरुप के और अमरीका के आदमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दूसरे के सामने नङ्गा होने में कोई बुराई नहीं समझते। हिन्दुस्तानी ऐसा करते हुए थोड़ा हिचकिचाते हैं। लेकिन डाक्टर ने एक और डाँट ऐसी कड़ी लगाई कि जल्दी से जो वह कहता था करने को तय्यार हो गये। डाक्टरी मुआयना के बाद कार्ड (जो जहाज़ पर ही मिल गये थे) पर एक डाक्टरी जाँच की छाप लग गई। उसके बाद किसी ने एक अफसर (जो कुरसी मेज़ लगाये दूर बैठा था) की तरफ़ इशारा किया। वहाँ जाओ। अफसर के सामने जो गये तो एक चपरासी ने (था तो वह भी साहब लेकिन चपरासी का काम करता था) ज़ोर से डाँट लगाई "जाओ वहाँ बैठो जब तुम्हारा नाम पुकारा जावे तब आना।" मर्द औरत सब से वह इस तरह से बात करता था मानो खा जायगा। जब नाम पुकारा गया तो अफसर ने थोड़े सवाल पूछे पर कोई ऐसा सवाल न था जिसका जवाब उसके पास कागज़ात पर न हो। वहाँ भी एक कार्ड बना कर हाथ में दिया और फिर कहा उधर जाओ ठँडी साँस ली कि भाई चलो छुट्टी मिली। अब क्या रुकावट है। पर नहीं ज्योंही दरवाज़े में से निकल कर बाहर जाने लगे एक पहरेदार ने कहा "कहाँ जाते हो टिकट बताओ" जब कार्ड बताया तो कहने लगा "इस सीढ़ी से ऊपर जाओ" ऊपर पहुँचे तो एक क्लर्क ने कार्ड देख कर कुछ देर बाद एक नारँगी के रंग का कागज़ कोट के कालर पर पिन से लगा दिया और एक दरवाज़ा खोल कर बताया जब तक तुम को बुलावें नहीं इस "हाल" में ठहरो।

"हाल" तो एक अजीब दुनिया थी हर तरह के लोग बच्चे आदमी औरत जमा थे कोई खेल रहा था कोई पढ़ रहा था कोई रो रहा था एक बुढ़िया एक कोने में बैठी रो रही थी कहती थी "मुझे न्युयार्क में कोई लेने नहीं आया और अब मुझे यहाँ इन्होंने चोरों के साथ बन्द कर दिया है मैं क्या करूँ?" यहूदी बड़ी डाढ़ी वाले चोंगा पहिने हुए दुआ बन्दगी में लगे हुए थे। थोड़ी देर में एक आदमी से सवाल किया भाई तुम यहाँ क्यो रुके हुए हो? कहने लगा मैं भी एक विद्यार्थी हूँ मुझे यहाँ तीन हफ्ते हो गये न मालूम कब यहाँ से छोड़ेंगे। तीन हफ्ते! हर एक को यह ख़याल होने लगा क्या यहाँ इतने दिनों तक रोकेंगे अब तो सचमुच फिक्र होने लगी। पर इस ख़याल से कि शायद हर एक के साथ ऐसा सलूक नहीं होता है एक और से पूछा "भाई तुम यहाँ कब से हो?" जवाब दिया "तीन महीने से रोक रखा है, मेरी बीबी और पाँच बच्चे अमरीका में हैं मुझे यहाँ आये पन्द्रह वर्ष हुए। चार महीने हुए, दो हफ्ता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये अपने पुराने मुल्क बलगेरिया को गया था अब वापिस अमरीका में घुसने नहीं देते और मैं मुक़दमा लड़ रहा हूँ।" अब तो और भी सब के मुँह फक होने लगे। इतने ही में एक आदमी ने आकर चंद नाम पुकारे। दौड़ दौड़ कर लोग सुनने जाते थे कि शायद उनका भी नाम हो। दिन के बारह बजे सबको गिन कर खाना खिलाने के लिये ले गये। मेज़ पर सफ़ेद कागज़ लगे हुए थे खाना सादा पर सब साफ़ सुथरा था। फल मोल लेने से मिल सकते थे। शाम हो गई पर हम लोगों का नाम किसी ने नहीं पुकारा। नये लोग और भी "हाल" में भरती किये गये। एक आदमी ने अपना सूट केस अपनी कुरसी के पास रख लिया बस इतने ही में एक औरत चीखती हुई झपटी और बड़े क्रोध से कहने लगी क्यों-इसको यहाँ रखते हो देखते नहीं वह कोने में इसके रखने की जगह है। ऐसा मालूम होता है कि एलिस आइलैंड वाले शायस्तगी तो जानते ही नहीं है।

रात को सब सफेद चमड़े वालों को एक बड़े हाल में सोने के लिये कर दिया। दो हिन्दुस्तानियों को अलग कमरा दे दिया और हवशियों को अलग हाल दिया। रात के वक्त कमरा बाहर से बन्द कर दिया (एलिस जेलखाना कहना चाहिये)। सुबह पाँच बजे आ के जगाया और फिर उसी बड़े हाल में जमा कर दिया। आधे घंटे के लिये नीचे बाहर हाते में ताज़ी हवा लेने के लिये निकाला। पहरे वाले चारों तरफ ताकते थे। कई बाहर से "सोशल सरविस" के लिये स्त्रियाँ अख़बार पढ़ने के लिये लाईं। लेकिन किसी ने हमारे सवाल का कोई जवाब नहीं दिया वे बिलकुल चुपचाप कहती थी हमको बोलने की इजाज़त नहीं है।

दूसरे दिन एक बजे हमारा भी नाम पुकारा गया सब एक अफ़सर के सामने जाकर बैठे। जब उसने बुलाया था फिर वही सवाल जिनका जवाब सब उसके सामने काग़ज़ पर मौजूद था। कहने लगा "देखो जहाँ तुम्हारा पढ़ने का काम खतम हो सीधे अपने मुल्क चले जाना। मन में आया जवाब दें कि अगर रस्सों से बाँध कर रखो तो भी न ठहरेंगे। इस अफ़सर ने एक काग़ज़ पर अपना दस्तख़त करके दे दिया अब इसको लेकर बाहर निकले तो कोई पहरेदार नहीं और कोई रास्ता बताने वाला भी नहीं कि किधर से निकलें। बाहर एक से पूछा तो जवाब दिया "हम यहाँ किसी को गाइड मुक़र्रर नहीं करते।" खैर किसी तरह बाहर निकले। अब तो फिर आज़ाद मुल्क में आज़ाद हुए। बड़े अदब से सब बात करते थे। वहाँ ही बैङ्क रेल का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिसम्बर मास का आकाश दर्शन

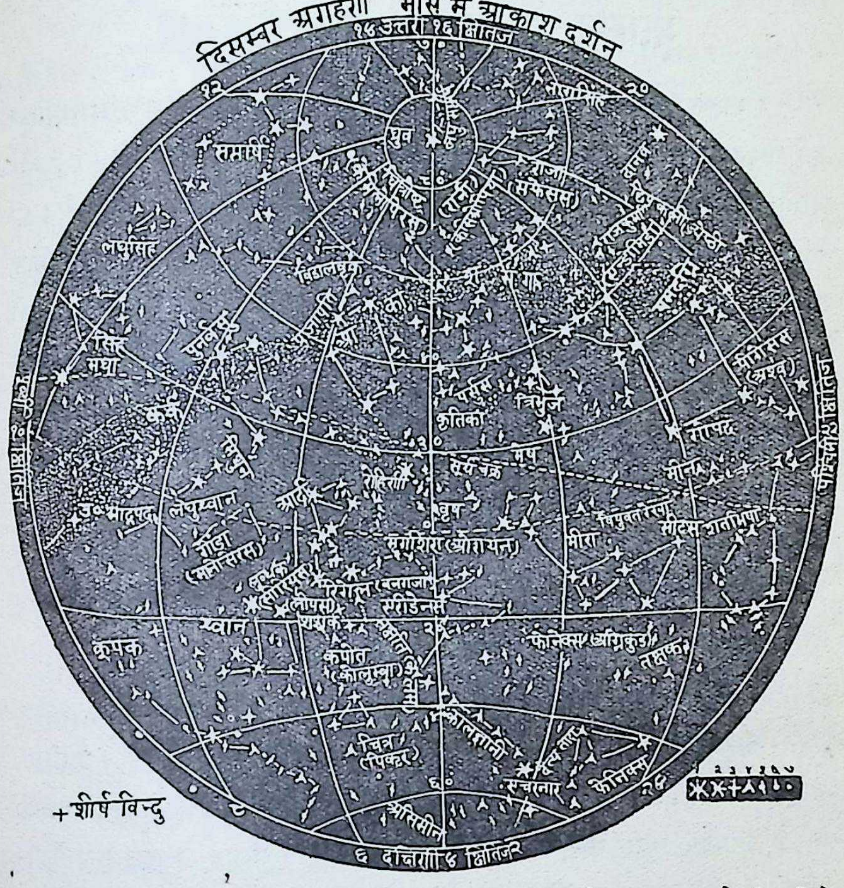

टिकट घर, पोस्ट आफ़िस सब मौजूद हैं। एक किश्ती पर बैठ कर न्यूयार्क की एलिवेटेड रेल (जो सड़कों के ऊपर चलती है) के टरमिन्स पर उतर गये। टैकसी बुला कर सामान रखा और इन्टर नेशनल हाउस की तरफ रवाना हुए। पहुँचने पर टैकूसी का किराया ५ डालर, जो उस वक्त के हिसाब से १५ रुपये के बराबर और आज कल के हिसाब से २० रुपया के बराबर है, देना पड़ा। अमरीका में ग़रीब आदमी की गुज़र नहीं।

शेष फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़्रान्स का राजनैतिक विकास

फ्रान्स ! हाँ, फ्रान्स ही में तो सन् १७८९ में प्रचण्ड क्रान्ति की अग्नि प्रज्वलित हुई थी। इस क्रान्ति रूपी अग्नि का प्रणेता था रूसो। रूसो कौन था ? और उसने क्या किया ? इसका उत्तर एक फ़्रांसीसी अच्छी तरह से दे सकता है। या तनिक फ़्रान्स का इतिहास देखिये। रूसो का मुग्ध-मंत्र थाः—"मनुष्य का जन्म-सिद्ध अधिकार स्वतंत्रता है।" जिस प्रकार मान्त्रिक अपने मंत्र के बल से जीवित जनों को मुग्ध कर, अपना पक्का अनुयायी बना लेता है, ठीक उसी प्रकार रूसो की दिव्य-वाणी का प्रभाव मानव-समाज पर पड़ा। परिणाम भी यथेच्छ ही हुआ। जन-समूह अन्ध-भक्त हो उठा और बावला हो गया। "क्रान्ति" के नारे लगने लगे। "क्रान्ति" ने सहस्रों प्रकार से अपनी विजय तथा अमर कीर्ति का भाव स्वतंत्रता के मस्त पुजारियों में भर दिया। वे स्वतन्त्रतारूपी मद्य में मस्त हो गये। अब क्या था—मय भी थी, प्याला भी था, मयख़ाना भी था और साक़ी भी था। क्रान्ति की सब सामग्री थी।

रूसो का अनुभव-सिद्ध विश्वास था कि वास्तव में, मानव-जाति शुद्ध, पवित्र तथा स्वतन्त्र है; पर काल के चक्र में आकर वह बनती तथा बिगड़ती है। इस 'क्रान्ति' के पूर्व फ़्रान्स की दशा बड़ी ही दयनीय थी। मनुष्य, मनुष्यत्व को नहीं पहिचानते थे। पूँजीवादियों तथा मज़दूरों में छत्तीस का नाता था। संसार के सारे सुख पूँजी-पतियों के लिये और संसार के सारे दुःख मज़दूरों तथा किसानों के लिये थे। धर्म के अघोर व्यवसायी तथा शासक एवं शासकों के सामन्तों की स्वच्छन्दता ने तो मरे को मारने में तनिक भी कसर न उठा रक्खी थी। किसान, बेचारे अटूट श्रम करने पर भी मुहताज़ ही रहते थे। पैदावार का लगभग ७५% तो विभिन्न करों (taxes) की पूर्ति ही में लग जाता था। अब बेचारा किसान किस प्रकार अपना तथा अपने आश्रितों का भरण-पोषण करता। इसका विचार करने वाला कौन था ? कोई नहीं। यही नहीं, अगण्य पापाचार नित्यप्रति हुआ करते थे। धर्म की आड़ में अधर्म होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। अबोध तथा मुकुलित बालिकाओं के सतित्व पर वैश्यासक्त पूँजी-पति अपना मनोरंजन करते थे।

रूसो का मंत्र सफल हुआ। क्रान्ति अमर हुई। व्यवसायी-समाज तथा किसान सन्तुष्ट हुए। रूसो को, लोग देवता कहने लगे। 'क्रान्ति' ने रक्त-पात किया—पापाचारियों का ईश्वर-प्रदत्त अधिकार के मूढ़-भक्तों का। फ्रान्स-भूमि का भार हलका हुआ। अन्यायी तथा धन-लोलुपों का अन्त हुआ। अभी भी अन्धकार ही था। नेपोलियन रूपी सूर्य चमका। अन्धकार लोप होने लगा। प्राचीन रूढ़ियाँ, अर्वाचीन हुईं। वर्त्तमान फ़ान्स का निर्माण हुआ। अपने तेज, अपनी प्रतिभा तथा अपने बाहु-बल से उस अद्वितीय वीर सेना-नायक ने फ़्रान्स का मुख उज्ज्वल किया। फ़्रान्स, उस समय अपनी उन्नति के शिखर पर चढ़ा था। सारा यूरोप उसके चरण-रज में लोटने लगा। समय ने अपना विहित-कर्म किया। ऐसे युद्ध-महारथी का भी अन्त हो गया। फ़्रान्स, टुकड़ों-टुकड़ों में विभक्त हो गया। सारा वैभव, सारी नेकनामी ख़ाक में मिल गई। घमण्डी फ़्रान्स को भी नतमस्तक होना पड़ा। फ़्रान्स की पुण्य भूमि रो पड़ी, रूसो के उद्‌गार ढेर हो गये।

देश में शान्ति स्थापित करने के लिए तथा उसे उन्नतिशील बनाने के लिये कई शासन-विधान हुए। फ़्रान्स की क्रान्ति के पश्चात् छः प्रकार की शासन-प्रणाली हुई। कभी प्रजातंत्रवाद और कभी साम्राज्यवाद। इतना होने पर भी अन्त में फ़्रान्स ने अपना रूप प्रजातंत्र ही रखा है और इसी में वहाँ उन्नति और वृद्धि के चिन्ह दीख पड़ते हैं। आजकल फ़्रांस में पूर्ण प्रजातंत्रवाद है। चुनाव की प्रथा है। प्रजा का श्रेष्ठ एवं प्रभावशाली प्रतिनिधि ही शासन-यंत्र का सर्वस्व होता है। इसे प्रेसीडेंट (प्रधान) कहते हैं।

वोटर (वोट या मत देने वाले) सभी हैं। कोई भी बालिग वोट दे सकता है। इक्कीस वर्ष की आयु वाले ही बालिग होते हैं। ग़रीब से लेकर अमीर तक अपनी इच्छानुसार, अपना प्रतिनिधि भेजते हैं। इन्हीं प्रतिनिधियों के ऊपर फ़्रान्स की उन्नति या अवनति निर्भर है। अतएव साधारण जनता के मत को अच्छा बनाना चाहिए। यह तभी हो सकता है जब सर्वसाधारण की शिक्षा का यथोचित प्रबन्ध हो। इसलिये देश भर में राज्य की ओर से तथा सर्वसाधारण की ओर से कई संस्थायें हैं, जिनमें बालक बालिकाओं को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। प्राथमिक-शिक्षा अनिवार्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मज़दूरों तथा श्रमिकों को शिक्षा देने के लिये नैश-पाठशालाओं का निर्माण किया गया है। वहाँ के धनिक विद्यादान को ही सर्वश्रेष्ठ समझते हैं; अतएव शिक्षा-प्रचार के लिए यथेष्ट धन मिल जाता है।

चुनने का अधिकार केवल पुरुषों को है, स्त्रियाँ राज्य-प्रबन्ध में हस्तक्षेप नहीं करतीं। चुने हुए प्रतिभाशाली व्यक्तियों की एक पार्लियामेंट होती है। फिर इनमें से मन्त्री चुने जाते हैं। प्रत्येक विभाग के लिए एक मन्त्री होता है। प्रेसीडेन्ट, मन्त्रियों की सहायता से शासन करता है। पार्लियामेंट के मुख्य दो विभाग होते हैं। पहिले को चेम्बर आफ डेपुटीज़ (Chamber of Deputies) और दूसरे को चेम्बर आफ सिनेट (Chamber of Senate) कहते हैं। इन दोनों चेम्बरों का नियंत्रण, प्रेसीडेंट तथा मन्त्रि-गणों के आधीन में होता है।

प्रेसीडेंट ही फ़्रांस का सर्वस्व होता है। उसको प्रायः वे ही अधिकार हैं जो एक बादशाह को प्राप्त होते हैं। यह प्रेसीडेंट प्रति सातवें वर्ष चुना जाता है। इसका चुनाव दोनों चेम्बरों के प्रतिभाशाली और योग्य-व्यक्तियों में से होता है। उसका वार्षिक वेतन बीस लाख फ़्रेन्कस्* है। यदि वह चाहे तो दोनों चेम्बरों का चुनाव फिर से तीन बार हो सकता है। सेना, अर्थ और न्याय में उसे पूरा पूरा अधिकार है। विदेशी सम्बन्ध का नियंत्रण भी वही करता है। यदि प्रेसीडेंट एक मत का अनुयायी है और मंत्रि-सभा दूसरे की तो वह मत कभी भी निर्धारित नहीं किया जा सकता, जब तक कि कोई भी मंत्री प्रेसीडेंट के मत से सहमत न हो अथवा प्रेसीडेंट ही घोर-विरोध के बाद दूसरे मत का पोषणकर्त्ता न हो जाय, अर्थात् प्रेसीडेंट कभी भी मनमानी नहीं कर सकता।

चुनाव की सुविधा के लिये सारा राज्य हल्कों में विभक्त है। प्रत्येक हल्के से निर्धारित मेम्बर चुन कर आते हैं। इन्हीं मेम्बरों में से पार्लियामेंट के लिये सदस्य चुने जाते हैं। मन्त्रियों का चुनाव प्रेसीडेंट मेम्बरों में से करता है। इस प्रकार शासन-विधान होता है।

अब हम यह देखेंगे कि इतने बड़े प्रजातंत्र का शासन-प्रबन्ध कैसे होता है। समय के परिवर्तन ने शासन में भी घोर परिवर्तन कर दिया है।

---

*एक फ़्रैंक लगभग साढ़े नौ आने के बराबर होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्याय-विभाग पहिले कुछ शिथिल था। क़ानून मनमाने बनाये जाते थे। न्यायाधीश ही न्याय अवतार थे। दण्ड कहीं कहीं अत्यन्त कठोर थे और कहीं अत्यन्त शिथिल। अब क़ानूनों में परिवर्तन हो गया है। भिन्न भिन्न न्यायालय हैं जिनमें भिन्न भिन्न प्रकार के अपराधों का न्याय होता है। अलग अलग क़ानून-ग्रंथ भी हैं :—

1. Code de Civil. कोड डी सिविल—दीवानी व्यवस्था।
2. Code de Procedure. कोड डी प्रोसीजर—विधि-व्यवस्था।
3. Code de Instruction Criminelle. कोड डी इन्स्ट्रक्शन क्रिमीनेल—शिक्षा सम्बन्धी विधान।
4. Code de Commerce. कोड डी कामर्स—व्यापारिक-व्यवस्था।
5. Code de Penal. कोड डी पेनेल—दण्ड-व्यवस्था।

अमानुषिक दण्ड अब नहीं दिया जाता। दण्ड-विधान कठोर नहीं है। वरन् नम्र है। अपराध भी दिन-प्रति कम होते जाते हैं।

सामुद्रिक-सेना की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। कलबर्ट ने १७वीं शताब्दी के लगभग समुद्र सेना की स्थापना की थी। आजकल भी इसकी उन्नति हो रही है। ल'इकोल नावेल (L'Ecole Navale), अ'इकोल सुपेरीक्योर (I'Ecole Supericure) और डी ला मेरीन (de la Marine) नामक संस्थायें इस ओर बहुत काम कर रही हैं। अनेकों जल-सैनिक दक्ष होकर निकल गये और सैकड़ों शिक्षा पा रहे हैं।

सैनिक-शिक्षा के लिये फ़्रान्स में कई संस्थायें स्थापित की गई हैं; क्योंकि भौगोलिक दृष्टि से फ़्रान्स को स्थल मार्ग से अधिक डर है। जल से उतना नहीं। प्रजातन्त्र की ओर से इसका बहुत ख़याल रक्खा जाता है। प्रति वर्ष नव-युवक सैनिक-शिक्षा पाते हैं और सैकड़ों की तादाद में योग्य सैनिक हो कर निकलते हैं। सैनिक-शिक्षा की संस्थाओं के नाम हैं :—पोलीटेक्निक (Polytechnique), सेन्टसिर (Saint-Cyr), सेन्ट मेक्ज़ेन्ट (Saint Maixent)। आजकल फ़्रान्स की सैनिक-शक्ति लगभग आठ लाख के है।

फ़्रान्स का स्वत्व कई विदेशी राज्यों में था; पर अब कई बस्तियाँ छिन गई हैं। अफ़्रीका, भारत तथा अन्य द्वीप-पुंजों में फ़्रान्स का थोड़ा सा हिस्सा रह गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीरिया, अलजीरिया मेन्डेटेड-टेरीटोरी हैं। लीग आफ नेशन्स् ने फ़ान्स को, इन्हें दिया था।

गत महायुद्ध ने फ़ान्स को बहुत भारी क्षति पहुँचाई है। फ़ान्स को गत महा-युद्ध में लगभग ४ अरब फ्रेन्कस् अन्य यूरोपीय राष्ट्रों से कर्ज़ लेना पड़ा है। इसके पहिले भी फ़ान्स को युद्ध की तैयारी करने के लिए तथा राज्य का काम चलाने के लिए लगभग ३ खरब फ्रेंकस् की आवश्यकता पड़ी थी। यह कर्ज़ प्रजा से लिया गया था। कर्ज़ अदा करने के लिए फ़ान्स को अपनी कई बस्तियाँ बेचनी पड़ीं और स्वयं अपनी सीमा भी बहुत कुछ घटानी पड़ी। फ़ान्स की माली हालत अभी भी ठीक नहीं है।

इतना सब होने पर भी फ़ान्सीसी हिम्मत नहीं हारे हैं। वे लगातार उन्नति ही कर रहे हैं। व्यापार तथा खेती में उन्नति हो रही है। आधुनिक विज्ञान-क्षेत्र में फ़ान्स पीछे नहीं है। नये नये आविष्कार कर, नई नई फेशन निकाल कर फ़ान्स अब भी अपना स्थान बढ़ाये हुए है। वह समय भी दूर नहीं है, जब फ़ान्स फिर से अपना पुराना गौरव स्थापित करे। मि० एम० लेवाल, आजकल फ़ान्स के प्रधान मंत्री हैं। आपने अपने देश के लिए बहुत कुछ किया है। अब प्रधान मंत्री हो कर, देश की भलाई ही करेंगे।

फ़ान्स की वर्तमान दशा आश्चर्यजनक है। इतने अल्पकाल में इतनी उन्नति करना, फ़ान्स जैसे राष्ट्र का ही काम है। आजकल उसकी गिनती यूरोप के उन्नति-शील राष्ट्रों में होती है। उसका लोहा, प्रभृति शक्तियाँ भी मानती हैं।

—श्रीनेत "प्रताप"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार के कुछ शक्तिशाली पुरुष

[मूल लेखक—श्री सुधीर चरन दास जी गुप्त]

अंगरेज़ी में एक कहावत है—"Strength fascinates human Souls" अर्थात् मनुष्य की आत्मा शक्ति की ओर झुकती है। सृष्टि के आदि काल से लोग शक्ति की पूजा करते आये हैं। पर आज वैज्ञानिक युग की शक्ति-पूजा थोड़े परिवर्तित रूप में है। देवी-देवताओं में लोगों का विश्वास नहीं रहा। जीवन में ही शक्ति है। अपने शरीर को बनाइये और उसी में ईश्वर-प्रदत्त शक्तियों का विकास देखिये। आज हम यहाँ संसार के कुछ शक्तिशाली पुरुषों का विवरण देते हैं। हमें पूर्ण आशा है सहृदय पाठक उनके उदाहरण से पूरा लाभ उठायेंगे।

स्थानाभाव के कारण हमें केवल १९ वीं शताब्दी के उत्तरार्ध एवं आधुनिक बीसवीं शताब्दी के ही शक्ति-सेवियों के विवरण से संतोष करना पड़ रहा है। फिर भी प्रोत्साहन देने के लिये वे कुछ कम नहीं हैं। विवरण देशानुसार होगा। पहले भारतवर्ष को लीजिये—

भारतवर्ष तो शक्तिशाली व्यक्तियों के लिये सदा से प्रसिद्ध रहा है। इस शताब्दी के पूर्व वर्षों में भी इसने राममूर्ति और भीम भवानी नामक दो व्यक्तियों को संसार के सामने रक्खा। भीम भवानी राममूर्ति का ही शिष्य था। शोक है कि उसकी मृत्यु बहुत पहले हो गयी।

राममूर्ति का नाम तो क़रीब-क़रीब सब ने सुना होगा। वह दक्खिन के रहने वाले हैं। व्यायाम से वह इतने अधिक पेशी-विकास (Muscular Develop-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ment) को प्राप्त हो गये हैं कि उन्हें अमानुषिक कहना कुछ अधिक अनुपयुक्त न होगा। शक्ति तो उनमें इतनी अधिक है कि १९१०-१४ में जब वह यूरोप गये थे, तो वहाँ के सारे पहलवान डर से गये थे। राममूर्ति के साथ थोड़े और कसरती भी गये हुए थे। इन लोगों ने व्यवसाय के तौर पर वहाँ अपनी करामात दिखाई थी। राममूर्ति ने लोहे की जंज़ीरें और छड़ तोड़े थे। यों तो सभी खेल चमत्कार पूर्ण रहे पर दो तो बहुत ही विचित्र थे। एक तो यह था कि ज़मीन पर लेटी हुई अवस्था में उन्होंने ८१ मन भारी एक हाथी अपने सीने पर चढ़ाया था। दूसरा यह कि १०० मन का एक बोझा उनकी पीठ पर ऊपर से गिराया गया। उसे उन्होंने पीठ पर रोका और फिर गिरा दिया। राममूर्ति ने अब व्यवसाय की दृष्टि से व्यायाम को छोड़ दिया है। आजकल वह भारतीयों के लिये एक व्यायामशाला स्थापित करने की चेष्टा में लगे हुए हैं। इस वक्त वह ५३ वर्ष के हो चुके हैं। पर अब भी उतने ही स्फूर्तिवान हैं। शक्ति भी उतनी ही है। बदन के विभिन्न भागों की नाप भी उतनी ही है जितनी जवानी की हालत में थी।

लेखक को राममूर्ति से मिलने का अवसर मिल चुका है। यह बात बिल्कुल ठीक है कि वह एक छोटे से पहाड़ सरीखे दीखते हैं। उनके शरीर की नाप यों है—

साधारण अवस्था में	सीना	५०″	से ऊपर
,,	गर्दन	१८″	,,
	भुजा	१७″	,,
	जंघा	३३″	,,

शरीर का वज़न २३० पौं० या २ मन ३५ सेर

ऊँचाई ५ फ़ी० १० ई०

राममूर्ति के जंघे, सीना और पीठ असाधारण विकास को प्राप्त कर गये हैं। यह अद्भुत शक्ति उन्होंने कुश्ती, नाल, डंड-बैठक, समुद्र के किनारे बालू में दौड़ तथा योगिक कसरतों से कमाई है।

भीमभवानी जैसा कि पहले ही बतलाया जा चुका है राममूर्ति का ही शिष्य था। वह कलकत्ता का निवासी एक बंगाली नवयुवक था। वह मनुष्य क्या दैत्य था। उसका पहले का नाम तो भवानीचरन साहा था, पर उसकी अमानुषिक शक्ति पर मुग्ध होकर राममूर्ति ने उसे 'भीम' की उपाधि से विभूषित किया। व्यावसायिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरीके पर उसने भारत, जापान, चीन, मलाया द्वीप इत्यादि स्थानों में भ्रमण किया और अपार धन भी कमाया। पर किसी पाश्चात्य देश में वह कभी नहीं गया। संसार में वह पहला मनुष्य हुआ है जिसने अपने सीने पर एक साथ दो हाथी चढ़ाये हों। वह अपने दाँतों के बल बहुत भारी बोझ जैसे भारी पीपे इत्यादि उठाया करता था। लोहे के छड़, जंज़ीर, नाल इत्यादि को हाथ से तोड़ देता था। यों तो मोटर रोकने वाले कितने मौजूद हैं पर तीन मोटरों को एक साथ रोकने वाला वह पहला मनुष्य हुआ है। उसके गुरु राममूर्ति केवल दो मोटर रोकते तथा केवल एक हाथी को सीने पर चढ़ा सकते थे। भीम भवानी संसार के उन चार व्यक्तियों में से था, जिन्होंने दोनों हाथों से सिर के ऊपर ५ मन १० सेर बोझा उठाया है।

पर संसार के इस व्यक्ति की मृत्यु बड़ी ही दुःखमय हुई। उस सृष्टिकर्ता की लीला विचित्र है। जीवन के विकास काल में ही केवल ३५ वर्ष की अवस्था में वह अद्भुत प्राणी संसार से चल बसा। उसका विकास आधुनिक भार-उत्तोलन प्रथा से (Weight lifting) हुआ था। उसकी पेशियों की नाप इस प्रकार है—

साधारण अवस्था में	सीना	५०″	से ऊपर	वज़न	२ मन २७½ सेर
	गर्दन	१८″	,,	ऊँचाई	५ फ़ी० ९ इंच
	भुजा	१७″	,,	कलाई	७″ के ऊपर
	जंघा	२६″	,,		

अब चलिये ज़रा यूरप के शक्तिसेवियों को देखा जाय। श्रद्धांजलि भेंट करते हुए हम पहले उस महान प्रोफ़ेसर लुई ऐटिला (Professor Louis Attila) का नाम देते हैं, जिसने संसार के सम्मुख सैंडो तथा और कितने ही प्रसिद्ध व्यक्तियों को रक्खा। आधुनिक बारवेल, तथा भार-उत्तोलन प्रथा के वही जन्मदाता थे।

ऐटिला का जन्म बेडेन, (Baden) जर्मनी में २ जून, सन् १८४४ में हुआ था। बाल्यकाल से ही वह शक्ति-सेवी था तथा अपनी पेशियों को बढ़ाने का प्रयत्न किया करता था। उसने भी व्यावसायिक रूप से योरुप और अमेरिका में भ्रमण किया। सन् १८९३ में वह पहले पहल सैंडो को लेकर अमेरिका गया और वहाँ पर एक व्यायामशाला खोली वहाँ उसने बहुतों को शिक्षा दी और स्वयं ८० वर्ष की उम्र तक (१९२४ ई० तक) रहा।

वह कुछ बहुत ही अद्भुत कार्य किया करता था। जिस समय वह जर्मनी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"Baden Sharp shooter's Corps" में भर्ती था, जर्मनी के पूर्व-कैसर के पिता फ्रेडरिक तृतीय ने उससे बंदूक़ों की कसरत दिखाने को कहा। ऐटिला ने बंदूक के बदले एक एक मन चार सेर के छड़ से क़सरतें दिखाईं और सबको चकित कर दिया। ७५ वर्ष की अवस्था में भी ऐटिला अपने सिर के ऊपर २ मन १३ सेर उठा लेता था। यह विचित्र मनुष्य अपने साथ एक छड़ी लेकर चला करता था जिसका वज़न १२½ सेर था। वह बहुत ही भारी बोझों से कसरत करता था। जिस प्रकार मदारी गेंदों से खेल दिखाता है, उसी प्रकार का खेल ऐटिला भारी बोझों से दिखाता था। सबसे अधिक विकास की अवस्था में ऐटिला की नाप यों थी—

ऊँचाई	५ फ़ी० ४ इं०
वज़न	२ मन ७ सेर
साधारण अवस्था में सीना	४६″
कमर	३४″
जंघा	३५″
पैर के गोले (Calf)	१६½″
गर्दन	१७½″

लुई ऐटिला की ही शिक्षा का प्रभाव है कि यूजेन सैंडो (Eugene Sandow), ट्रेविस (Travis), स्ट्रांगफ़ोर्ट (Strongfort), रोलैंडो (Rolandow), कारबेट (Corbett), सीर (Cyr) तथा और भी कितनों का नाम आज संसार में विख्यात हो रहा है। ऐटिला ने भार-उत्तोलन प्रथा द्वारा उन्नति की थी।

जिन पाठकों को ऐटिला की कसरतों से दिलचस्पी मालूम हो वे Klein से पत्र-व्यवहार कर सकते हैं।*

सैंडो का नाम तो आज घर-घर में लिया जाता है। वह कानिसबर्ग, जर्मनी में १९६७ में पैदा हुआ था। उसका असल नाम फ्रेडरिक मुयेलर (Frederick Mueller) था। भीम भवानी की भाँति बचपन में वह भी बहुत दुबला-पतला था। शक्ति प्राप्त करने के लिये उसे बड़ा परिश्रम करना पड़ा था। व्यावसायिक तौर पर उसने भी यूरप, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड तथा भारतवर्ष में भ्रमण किया था।

---

*पूरा पता—

Siegmond Klein, 717, Seventh Avenue Newyork City, Newyork U. S. A.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैंडो यों तो अपने समय का सबसे मज़बूत आदमी नहीं था, पर उसका शरीर ऐसे आनुपातिक रूप में विकसित था कि यह कहना ही पड़ता है कि पूर्ण मानवीय सौंदर्य को प्राप्त होने वाला वह प्रथम पुरुष हुआ है। उसकी कुछ कसरतें बहुत ही विचित्र हुआ करती थीं। सैंडो लेटकर अपने सीने पर ३ टट्टू चढ़ाया करता था। लेखक का विचार है उन सब का वज़न मिलाकर क़रीब-क़रीब १२½ मन के होता रहा होगा। ऐसी ही अवस्था में वह अपने सीने पर एक पियानो, ६ बजानेवालों के साथ रखता था। उसकी एक असाधारण कसरत यह है—वह ज़मीन पर रखी हुई एक १२ वर्ग इंच की रूमाल पर खड़ा हो जाता था। आँखों पर पट्टी बाँध दी जाती थी। पैर की नलियाँ भी कसकर बाँध दी जाती थीं। प्रत्येक हाथ में २८ सेर का बोझ लेकर, वह हवा में शरीर को ऊपर से नीचे घुमा कर उसी रूमाल पर आ खड़ा हो जाता था।

लोहे के एक छड़ को, दोनों सिरों पर दो आदमी बिठाकर वह एक हाथ से सर के ऊपर उठाता था। यह वज़न क़रीब-क़रीब ३ मन ५ सेर के होता था। उसकी दूसरी विचित्र करामात यह थी कि वह एक ऊँची लोहे की कुर्सी पर बैठ जाता था। कुर्सी के पीछे थोड़े इंचों की दूरी पर एक घोड़ा रहता था। सैंडो कुर्सी पर से पीछे झुक कर अपने हाथों से घोड़े को ज़मीन से थोड़ा ऊपर उठाता था। वह ७ मन का बोझा ज़मीन से अपने जंघों तक उठा लेता था। इन विचित्रताओं के अलावा वह ताश के ११२ पत्ते एक साथ रख कर पहले आधे आधे फाड़ता था। फिर आधों को साथ रख कर उनको बीच से फाड़ता। घोड़े की नाल को तोड़ता तथा जंज़ीर व छड़ को बाँह और गर्दन से तोड़ता। वह भी ऐटिला की भाँति एक प्रसिद्ध पराक्रमी था। बाइस-किल-दौड़ में सैंडो बहुत ही विख्यात था। सैंडो इस विकास को कुश्ती, भार-उत्तोलन तथा पेशी-शासन-प्रक्रिया द्वारा प्राप्त हुआ था।

मनुष्य को सुगठित अवस्था में रखने के लिये उसने पहले-पहल डम्बलों और चेस्ट-इक्सपेंडर (Chest Expander) का आविष्कार किया था। लेकिन इतना याद रखना चाहिये कि स्वयं उसने अपना शरीर इन यंत्रों के द्वारा नहीं बनाया था। आदर्श पेशी-विकास को प्राप्त होने के लिए मानसिक दृढ़ता बहुत ही आवश्यक है—सैंडो ने इसे साबित कर दिखाया है। पत्र-व्यवहार द्वारा या खुद शिक्षा देकर सैंडो ने कितने पुरुष स्त्रियों को जीवन-दान दिया। शरीर-साधना की आज जो लहर दुनिया में देख पड़ रही है उसका अधिकांश श्रेय सैंडो को ही है। वास्तव में सैंडो अद्वितीय था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५८ वर्ष की अवस्था को प्राप्त होकर वह बली पुरुष १९२५ में मृत्यु को प्राप्त हुआ। लाखों उसकी मृत्यु पर शोक प्रकट करने वाले थे। लंडन के * हंट महाशय अब उसके छोड़े हुए काम को उत्साहपूर्वक कर रहे हैं।

सबसे अच्छी दशा में सैंडो का नाप इस प्रकार था—

ऊँचाई	५ फी० ७$\frac{3}{4}$ इ०
वज़न	२ मन ११ सेर
साधारण अवस्था में छाती	४५″
भुजा	१७$\frac{1}{4}$″
पूर्व-बाहु (Forearm)	१४″
गर्दन	१८″
जंघा	२५$\frac{1}{4}$″
कलाई	८$\frac{1}{6}$″
पैर के गोले	१६$\frac{3}{4}$″
कमर	३२″

अमरीका में बलशाली पुरुष बहुत हुए हैं। स्थानाभाव के कारण उनमें से केवल दो का विवरण दिया जा रहा है। लायनेल स्ट्रांगफ़ोर्ट (Lioniel strongfort) का नाम सबसे पहले आता है। उसका असल नाम मैक्संगर (Max Unger) है। व्यावसायिक रूप से १९०३-१५ तक उसने अमेरिका और योरप का भ्रमण किया। उसके सभी कार्य विचित्रता से भरे थे। उसमें से एक तो मोटर गाड़ी का खेल था। वह ज़मीन पर केवल हाथ और पैर के बल, (शेष शरीर को बिला ज़मीन से लगाये हुए) टेक कर अपने सीने पर १९ मन का लोहे का बोझ रखता था। उस लोहे के ऊपर से एक मोटर ७ सवारियों के साथ चलाई जाती थी। इन सबको मिलाकर वज़न क़रीब क़रीब ९४$\frac{1}{2}$ मन के हो जाता था।

२६० कार्डों को एक साथ रख कर आधोआध चीरने वाला वह पहला व्यक्ति हुआ है। उसका दूसरा खेल यह था कि लोहे के छड़ में टोकरे लगे होते थे।

* G. W. hunt. C/o The Sandow Institute of Physical Culture "Remo House" Regent Street. London.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक में १ मन ३५ सेर से ऊपर का एक मनुष्य बैठता था। स्ट्रांग फ़ोर्ट इस बोझे को सिर के ऊपर हाथों से उठा लेता था। स्ट्रांग फ़ोर्ट प्रत्येक हाथ में २८ सेर का बोझ लेकर पीछे से कलाबाज़ी किया करता था। प्रति दिन रात्रि के समय जब वह खेल दिखाने लगता तो यह खेल ज़रूर दिखाता—एक हाथ से लगभग ४ मन का बोझ सीधे सिर के ऊपर उठाता। इतना ही नहीं स्ट्रांग फ़ोर्ट एक प्रसिद्ध बाक्सर (मुक्केबाज़) भी है। इसके अलावा कुश्ती भी लड़ता है, तैराक और सिद्धहस्त साइकिल चलाने वाला भी है। व्यावसायिक रूप से तो अब उसने व्यायाम छोड़ दिया है लेकिन इस वक्त अपने पचासवें वर्ष में भी वह उपरोक्त कसरतों को कर दिखा सकता है। नाप-तोल उसकी पहले ही जैसी बनी हुई है। सैंडों की भाँति स्ट्रांग फ़ोर्ट का भी शरीर पूर्ण मानवीय सौंदर्य से परिपूरित है। लुई टुइलन (Louis Tuaillon), मैक्स क्लिंगर (Max Klinger) तथा जोहानेस गोज़ (Johannes Goiz) की भाँति मास्टरों ने स्ट्रांग फ़ोर्ट की मूर्तियाँ बनाई हैं। सेंट लुई में होने वाले अंतर्जगत मेले में इनमें से एक मूर्ति दिखाई गई थी, जिसका नाम "The Athlete" रक्खा गया था। शरीर-साधना-सम्बन्धी बातों में स्ट्रांग फ़ोर्ट विशेषज्ञ माना जाता है। पत्र-व्यवहार या व्यक्तिगत निरीक्षण द्वारा हज़ारों स्त्री पुरुषों को शरीर-साधना की शिक्षा देकर स्ट्रांग* फ़ोर्ट अपने जीवन को सुलभ कर रहा है।

लेखक को पत्र-व्यवहार द्वारा अनुभव हुआ है कि स्ट्रांग फ़ोर्ट असाधारणतः सज्जन है। केवल इतना ही नहीं वह शरीर-तथ्य विद्या, स्वास्थ्य तथा मनोविज्ञान का बहुत बड़ा ज्ञाता है। बर्लिन, प्रेग तथा हारवर्ड के विशेषज्ञों ने उसे 'Perfect' अथवा 'पूर्ण' की उपाधि से विभूषित किया है। स्ट्रांग फ़ोर्ट ने यह उन्नति कुश्ती और भार-उत्तोलन क्रिया द्वारा की है। उसके शरीर की नाप यों है—

गर्दन	१६$\frac{3}{4}$"
भुजा	१६$\frac{1}{4}$"
पैर के गोले	१६"
पूर्व-बाहु	१३$\frac{3}{4}$"
कलाई	७$\frac{3}{4}$"

*Lionel Strongfort C/o The Lionel Strongfort Institute of physical Culture 257, Plane Street Newyork, Newjercy U. S. A.

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधारणतः छाती	४४½″
कमर	३३″
जंघा	२५″
वज़न	२ मन १२ सेर
ऊँचाई	५ फुट, ८″

संसार-विख्यात अमेरिका का दूसरा वीर अर्ल लीडरमैन (Earl Liederman) है। थोड़े वर्ष पूर्व जैसे सैंडो-का नाम घर-घर में प्रचलित था उसी प्रकार आज लीडरमैन का भी है। वह विख्यात बाक्सर, कुश्ती लड़ने वाला तथा भार उठाने वाला है। जुजुत्सू (Jujutsu) में तो वह अद्वितीय ही है। जुजुत्सू और कुश्ती को मिला कर इस कला में वह इतना पूर्ण है कि कितनी बार वह संसार को ललकार चुका है। पर कोई भी उसका सामना नहीं कर सकता। वह कभी अपने को सब से बली पुरुष नहीं कहता। पर हाँ निस्सन्देह उसको सर्वोच्च पहलवानों में स्थान देना ही पड़ता है। व्यावसायिक तौर पर उसने केवल अमेरिका का भ्रमण किया। पर यों योरप में भी अच्छी तरह सफ़र कर चुका है और कितने पहलवानों से उसकी जान-पहचान हो गयी है। लीडरमैन पेशी-शासन-क्रिया में बहुत ही निपुण है तथा विभिन्न तरीक़ों से कलात्मक रूप में शरीर को दिखा सकता है। संसार के सारे भाग में उसके शिष्य मौजूद हैं। क़रीब-क़रीब २,५०,००० मनुष्यों को वह पत्र व्यव-हार अथवा वैयक्तिक निरीक्षण द्वारा शिक्षा दे चुका है। शरीर-साधना की बारीक और ख़ास ख़ास बातों पर उसने पुस्तकें लिखी हैं, जो सर्व सम्मत से अति उत्कृष्ट मानी जाती हैं।

१८ वर्ष की उमर तक लीडरमैन एक दुबला-पतला लड़का था। परन्तु परिश्रम द्वारा आज वह भूमंडल भर में विख्यात हो रहा है। यों तो वह बहुत से चमत्कार पूर्ण खेल दिखलाता है, पर उसका एक हाथ से २ मन ३२ सेर का बोझ सर से ऊपर उठा लेना विशेष उल्लेखनीय है। वरतारा के ११२ पत्तों को आधो आध फाड़ सकता है, लोहे की नाल, जंज़ीर या छड़ तोड़ना तो उसके लिये साधारण बात है। वह एक हाथ के बल पैरों को ऊपर रखते हुए ज़मीन पर स्थिर रह सकता है।

सब से बड़ी बात तो यह है कि लीडरमैन ने अपने ही उदाहरण में यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिखाया है कि पतला-दुबला आदमी भी कितने अधिक पेशी-विकास को प्राप्त हो सकता है।

उसके शरीर की नाप इस प्रकार है—

ऊँचाई	५' ९"
वज़न	२ मन १२ सेर
कलाई	६$\frac{१}{६}$"
गर्दन	१७"
साधारण सीना	४४"
भुजा	१६$\frac{१}{२}$"
पूर्वबाहु	१३$\frac{१}{२}$"
जंघा	२३$\frac{१}{२}$"
पैर का गोला	१५$\frac{१}{४}$"

लीडरमैन* ४३ वर्ष का हो चुका है और अब उसने व्यावसायिक दृष्टि से व्यायाम क़रीब-क़रीब छोड़ दिया है।

जर्मनी शक्तिसेवियों के लिये उतना ही प्रसिद्ध है जितना संसार का कोई अन्य देश। सच बात तो यह है कि योरप में जर्मनी को इसका घर ही समझना चाहिये। सैंडो, एटिला इत्यादि सभी जर्मनी के निवासी थे। इस शताब्दी में जर्मनी का सब से प्रसिद्ध पुरुष मैक्सिक (Maxick) हुआ है।

मैक्सिक २८ जून १८८२ को बवेरिया में पैदा हुआ था। उसके माता पिता बहुत कमज़ोर थे; इसलिए वह बचपन में बहुत दुबला पतला और कमज़ोर था; यहाँ तक कि उसकी हड्डियों में तपेदिक हो गयी थी। ९वें वर्ष तक तो उसकी दशा इतनी ख़राब थी कि डाक्टरों ने कह दिया कि वह अधिक नहीं जी सकता। दसवें वर्ष में एक वार वह सर्कस देखने गया। वहाँ एक खेलाड़ी की करामात देख कर, वह बहुत प्रभावित हुआ। बलवान होने की इच्छा उसके हृदय में बलवती हो उठी। चटपट उसने अपने नगर की व्यायामशाला में नाम लिखा लिया और अनवरत परिश्रम करने लगा। थोड़े ही दिनों में वह अपने साथियों में सब से बलवान गिना

---

*Earle E. Liederman, 305 Broadway, Newyork City U. S. A.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने लगा। वह भारउत्तोलन क्रिया करता था। एक बार प्रतियोगिता में उसने अपने से बड़े बड़े लोगों को हरा दिया। दक्खिनी अफ़्रीका के निवासी ट्राम्प डिगलन (Tromp Diggelen) ने मैक्सिक को संसार के सामने रक्खा। पहले मैक्सिक म्यूनिक में इंजीनियर था, पर फिर व्यावसायिक रूप से व्यायाम करने लगा। म्यूनिक में अपनी तसवीरें खिँचा-खिँचा के वह पेट पालता था। मैक्सिक† ही ने यूरप को पेशी-शासन-प्रक्रिया का पाठ पढ़ाया है। इस कला में आजकल वह सब से निपुण व्यक्ति है। वह एक असाधारणतः बली पुरुष है। दोनों हाथों से सर के ऊपर चार मन वजन उठा लेता है। एक हाथ से २ मन २० सेर उठाता है। पेशा छोड़ कर अब वह शिक्षाप्रदान करने में दत्तचित्त है। उसकी भी उन्नति भारउत्तोलन और पेशी-शासन प्रक्रिया द्वारा हुई है। ५२ वर्ष की अवस्था में भी उसमें युवावस्था की शक्तियाँ मौजूद हैं।

सब से अच्छी अवस्था में उसकी नाप इस प्रकार थी—

ऊँचाई	५' ५"
वज़न	१ मन ३२ सेर
कलाई	८"
गर्दन	१७½"
भुजा	१६" से ऊपर
पूर्व बाहु	१३½"
साधारण छाती	४४"
जंघा	२३"
गोला	१५½"

पश्चिम के लोग यह सोचा करते थे कि संसार के सारे प्रसिद्ध शक्तिशाली व्यक्ति उन्हीं के देशों के रहनेवाले हैं। इस बात में वे कभी-कभी अनुचित गर्व भी दिखाते थे। पर एक मिस्री नवयुवक ने अभी हाल में उनका मद चूर किया है। भारउत्तोलन में उसे सबसे बड़ी इज़्ज़त मिली है उसका नाम सैयद नसीर (Sayaad Nossier) है। उसका जन्म १९०५ में हुआ था। वह एक ऐसे खानदान से संबंधित है जिसमें सदा से लोग बलिष्ट हुआ करते थे। अपने स्कूल के दिनों में वह

† Maxick 14, Cursitor Lane, London E. C. 4,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक खेल में सफलता पूर्वक भाग लिया करता था। उसकी उन्नति और स्फूर्ति का समय यहीं से प्रारम्भ होता है। इसके बाद नसीर जमनास्टिक में लगा। थोड़े दिनों बाद नसीर भार उत्तोलन करने लगा। इसमें उसने इतनी तीव्रता से उन्नति की कि २१ वर्ष की उम्र में वह मिस्र का सर्वोत्तम प्रतियोगी हुआ। इसके बाद वह पहलवानी की तरफ़ से कुछ उदासीन हो गया पर १९२७ में उसकी एक मुहम्मद वैस्यूनी से भेंट हुई। उन्होंने उसे शरीर-तत्व विद्या (Physiology) बतलाना शुरू किया। इस ज्ञान से प्रोत्साहित होकर वह अपनी भार उत्तोलन क्रिया में भी ज़्यादा दत्तचित्त हो गया। यहाँ तक कि १९२८ की प्रतियोगिता में, २३ वर्ष के युवक ने हास्टिन (Hastine) को नीचा दिखा दिया। उस समय उसका वज़न २ मन ११ सेर था और सर के ऊपर हाथों से ३ मन ३७ सेर उठा लेता था।

मिस्र में जाकर वह दिनोंदिन अधिकाधिक उन्नति करने लगा। शरीर का वज़न भी बढ़ कर २ मन २५ सेर हो गया। अक्तूबर १९३० में संसार भर की भार उत्तोलन प्रतियोगिता म्यूनिक में होने वाली थी। इस बार उसका मुक़ाबिला स्ट्रैस बर्जर (Strassburger) और शिलबर्ग (Schilberg) से था। बड़े गहरे मुक़ाबिले के बाद उसने उनको ५½ सेर से हरा दिया। इस बार उसने सर के ऊपर ४ मन ५ सेर उठाया था। हाल ही में ४ मन १९ सेर उठाकर उसने दुनिया का रेकार्ड (लेखा) तोड़ा है। उसकी कसरत का ब्योरा यों होता है:—वह हफ़्ते में सिर्फ तीन दिन कसरत करता है—२ घं० प्रतिदिन। दो दिन बदन तैयार करने वाली कसरतें करता है एक रोज़ केवल भार उत्तोलन। इस नवयुवक भीम की यही कहानी है। भविष्य में देखना है यह वीर क्या-क्या कर दिखाता है। उसकी दैहिक नाप यों है:—

ऊँचाई	५′ ९″
वज़न	२ मन २५ सेर
कलाई	७½″
बाहु	१६½″
गर्दन	१७¾″
साधारण छाती	४७″
फुलाई हुई छाती	४९¼″
पूर्व बाहु	१४½″

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमर	३५″
जंघा	२७″
गोला	१४$\frac{1}{4}$″

एशिया, योरुप, अमरीका और अफ़्रीका के शक्तिशाली व्यक्तियों के बारे में कह कर आस्ट्रेलिया के बारे में भी कुछ उल्लेख कर देना उचित जान पड़ता है। आस्ट्रेलिया में बहुत से तो नहीं हुए हैं, पर नाम रखने के लिये क्लैरेंस वेबर (Clarence Webber) काफ़ी बड़ा हो चुका है। इस शताब्दी के पूर्वार्द्ध काल में वह सर्व-प्रसिद्ध लोगों में रहा है। खेद का विषय है कि उसकी करामातों के बारे में कुछ अधिक मालूम नहीं है। ख़ैर किसी प्रकार हम इतना जानते हैं कि वह भार उत्तोलन, जमनास्टिक इत्यादि करता था। दौड़, खेल-कूद में भी वह बहुत प्रसिद्ध था। वह लगभग ५′ ९″ इंच ऊँचा था और २ मन २ सेर वज़न में था। शरीर उसने कैसे बनाया था यह ज्ञात नहीं। वह अभी हाल में मरा है।

भविष्य में मैं अन्य प्रसिद्ध शक्तिसेवियों के बारे में लिखने का प्रयत्न करूँगा। भारतीयों का विशेष उल्लेख होगा।

अनुवादक—राममूर्तिसिंह 'विशारद'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

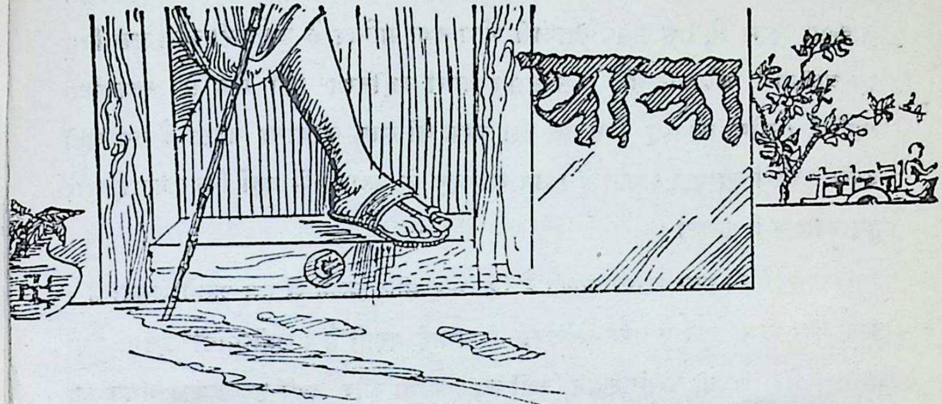

बद्रीनाथ से प्रयाग की यात्रा

यह संसार ईश्वर की एक चमत्कारिक रचना है। वास्तव में इस संसार के निर्माणकर्ता की थाह पाना कठिन है। "जग की दुरंगी माया कहीं धूप है और कहीं छाया" यही संसार में देखने में आता है। कहीं अमीरी है तो कहीं ग़रीबी; कहीं शान्ति है तो कहीं कलह; कहीं सुख है तो कहीं दुःख; कहीं हँसी की खिलखिलाहट तो कहीं रोने की करुण ध्वनि। बस संसार का यही रहस्य है।

तब जून का महीना था, गर्मी थी। मैदान वासी गर्मी की तपन से व्याकुल थे, किन्तु इसी भारत के दूसरे कोने में, गर्मी होते हुए भी न होने के समान थी। हिमालय के गगनस्पर्शी शिखर तब भी बर्फ़ से ढके थे, लोग मस्त थे, आनन्द मनाते थे। देश विदेशों से यात्री-गण, झुंड के झुंड में दुर्गम मार्ग की कठिनाइयाँ झेलते हुए एवं पर्वत-श्रेणियों को पार करते हुए, उसी हिमालय के एक कोने पर स्थित पतित पावनी अलखनन्दा के तट पर पुण्य भूमि बद्रीनाथ के दर्शन के हेतु जाते थे। अस्तु उसी यात्रा का वर्णन मैं पाठकों के सन्मुख रखता हूँ।

बद्रीनाथ हिमालय में स्थित हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है। पर्वत शिखर में स्थित होने से इसकी ख्याति संसार में और भी हो गई है। यह स्थान चारों ओर से पर्वतों से घिरा है, सैनिकों की भाँति ये पर्वत-श्रेणियाँ उसकी रक्षा करती हैं। छः महीने तक यह स्थान बरफ़ से ढका रहता है (अर्थात् अक्टूबर से मई के मध्य तक)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन दिनों में यहाँ एक पक्षी भी दृष्टिगोचर नहीं होता। मई के महीने में जब भगवान के कपाट खुलते हैं, उस समय व्यापारी लोग तथा मन्दिर के कर्मचारी लोग कुछ दिन पूर्व बद्रीनाथ चले जाते हैं। उस समय सारी बद्रीनाथ पुरी हिम से आच्छादित रहती है। लोगों को कई दिन तक इस बरफ को साफ करवाना पड़ता है तब कहीं उनके मकानों का पता लगता है। उन मई जून के महीनों में वहाँ बिना रजाई ओढ़े हुए काम नहीं चलता।

यहाँ की हवा इतनी पतली है कि १-२ मील चलने में दम फूलने लगता है। चारों ओर हिम, जल व पर्वत-श्रेणियाँ दिखलाई पड़ती हैं। कहीं पानी इतना ठंडा है कि कोई आदमी उसमें स्नान नहीं कर सकता और कहीं इस प्रकार गंधक का पानी निकलता है कि जो कि उबलते हुए पानी के समान होता है। उन पहाड़ों पर कोई पेड़ नहीं होते केवल छोटी सी घास दिखलाई देती है। जलाने की लकड़ी बहुत महँगी मिलती है जो कि नित्य ५-६ मील की कठिन चढ़ाई को पार कर 'मार्छा' नामक जाति से पीठ पर लाद कर लाई जाती है। पैदावार यहाँ की आलू और फाफर* है। शेष खाने पीने की चीजें बाहर से आती हैं। यह सब सामान घोड़े बकरियों तथा कुली लोगों की पीठ पर लद कर एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाया जाता है।

सामान बकरियों की पीठ पर लद कर एक स्थान से दूसरे स्थान को पहुँचाया जा रहा है

* एक प्रकार का अनाज जिसकी कि गेहूँ की तरह पसीने के बाद रोटियाँ बनाई जाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामान कुलियों की पीठ पर लद कर एक स्थान से दूसरे स्थान को पहुँचाया जा रहा है

यहाँ नित्य प्रति शाम के समय वर्षा हो जाती है। प्रातःकाल तथा सायंकाल के समय बहुत ठंढक पड़ती है। दिन में थोड़ी बहुत धूप हो जाती है।

यहाँ न मोटर है न गाड़ी। सवारी के लिए घोड़ा या डंडी[1] या झंपान[2] व कंडी[3] की सवारी मिलती है। हम लोग जो उसी प्रान्त के रहने वाले हैं—अपना अपना घोड़ा रख लेते हैं और जब कभी सफर करना होता है तो घोड़े पर सफर करते हैं।

मेरी यात्रा में लगभग १० दिन बीत गये। यों तो मैं आठ ही दिन में यात्रा पूरी कर सकता था, परन्तु मुझे अल्मोड़ा व कानपुर होते हुए आना पड़ा। यदि कोई इस प्रान्त के महाशय बद्रीनाथ से यहाँ आते हैं तो उन्हें १५ दिन से कम नहीं लग सकते, क्योंकि वे उस त्रिकट रास्ते को पार करने में अनेक कठिनाइयाँ पाते हैं, परन्तु हम इसी विकट यात्रा के आदी हैं।

इस यात्रा के भी दो मार्ग हैं। हम लोग सरल मार्ग से आते हैं वह इस प्रकार है—बद्रीनाथ से नन्दप्रयाग, गरुड़, रानीखेत काठगोदाम रेलवे स्टेशन से बरेली होते हुए, और दूसरा रास्ता जो कि अधिकतर साधारण मनुष्यों का है वह बद्रीनाथ से नन्दप्रयाग, मेहलचौरी रामनगर रेलवे स्टेशन व बरेली होते हुए। छोटे

---

[1] व [2] एक प्रकार की बैठने की लकड़ी की कुर्सी ज़िसे चार आदमी उठा कर ले जा सकते हैं।

[3] एक प्रकार की बेत की बनी हुई बैठने की टोकरी जिसे एक कुली पीठ पर लगा कर ले जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रास्ते से केवल १०० मील पैदल चलना पड़ता है और दूसरे रामनगर वाले रास्ते से १६६ मील पैदल चलना पड़ता है। गरुड़ से काठगोदाम तक ११० मील मोटर में यात्रा करनी पड़ती है इसीलिए पहिला मार्ग सरल है जिसका ११० मील मोटर का किराया लगभग ५) पांच रुपया है। बहुत से यात्री हरिद्वार तक पैदल होकर जाते हैं वे अधिकतर पंजाब की ओर के या साधू व हरिद्वार के निवासी होते हैं।

इस यात्रा लाइन में हर एक २-३ मील की दूरी पर यात्रियों के टिकने के लिए स्थान हैं जिन्हें कि **चट्टियाँ** कहते है। यहाँ पर यात्रियों के खाने पीने के लिए प्रत्येक आवश्यकीय सामान मिल जाता है। निर्मल जल के झरने हर एक स्थान पर मिलते हैं। पी० डबल्यू० डी० ने हर एक चट्टियों में नल द्वारा पानी मँगाया है जिसमें कि उनका बहुत सा धन लगा है क्योंकि इतने दूर स्थानों में नल अर्थात पाइपों का जाना बहुत कठिन कार्य है।

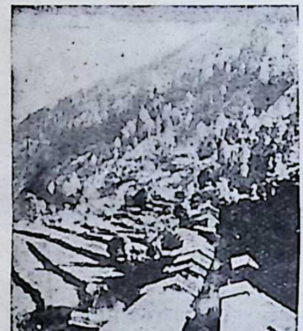

३

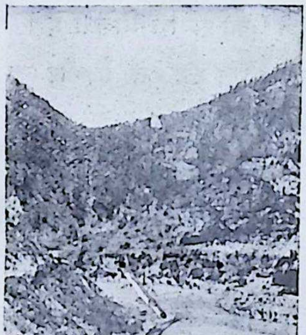

४

नंदप्रयाग नामक छोटे से बाजार के दृश्य

नं० ३—मकान के दोनों कतारों के बीच में पैदल रास्ता जाता है एक किनारे पर सीढ़ी की तरह कुछ खेत हैं व सामने पहाड़ है जिस पर चीड़ के पेड़ लगे हैं।

नं० ४—नंदप्रयाग नामक छोटे से बाजार की पैदल सड़क व मकानों का दृश्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नं० ५—नंदप्रयाग नामक स्थान जहाँ की दो नदियाँ—अलकनन्दा व नन्दाकिनी नदियाँ—मिलती हैं और इन्हीं नदियों के मिलने से प्रयाग कहलाता है। चारों ओर छोटे पहाड़ हैं जो कि चीड़ के वृक्षों से ढके हैं।

५

ज्यों ज्यों हम बद्रीनाथ से नीचे की ओर बढ़ते हैं अधिक तर उतार मिलता है और गर्मी बढ़ती जाती है। साथ ही अलकनन्दा नदी भी बहती चली आती है। बद्रीनाथ के पास यह नदी बहुत दूर तक बरफ की खूब मोटी तह से ढकी रहती है जो कि कहीं कहीं पर पुल का काम देती है। यह नदी बहुत कोलाहल करती हुई मार्ग के समानान्तर बहती जाती है।

पैदावार भी बढ़ती जाती है जैसे ही हम नीचे उतरते जाते हैं, गेहूँ, चांवल, दाल, आलू इत्यादि पैदा होता है। परन्तु ज़मीन पथरीली होने के कारण पैदावार अच्छी नहीं होती। खेत सीढ़ी की भाँति दिखलाई देते हैं। मिट्टी का तेल, कड़ुवा तेल, मसाला इत्यादि यह सब बाहर से घोड़ों के ऊपर लद कर आता है। 'मार्छा' नामक जाति बकरियों पर ऊन व नमक लाद कर इस लाइन में व्यापार करती है। ये लोग ऊनी कपड़े खूब बनाते हैं और यहीं बेच देते हैं। गढ़वाल ज़िले के लोग अधिकतर खेती पर निर्भर हैं और फिर व्यापार पर और अन्त में नौकरी पेशे पर। बद्रीनाथ के कारण वहाँ के लोग सभ्य होते जा रहे हैं। कारण यह है कि भारत के हर एक कोने के लोग यहाँ यात्रा हेतु तथा घूमने की इच्छा से आते हैं। परन्तु जो लोग इस यात्रा लाइन के समीप नहीं रहते हैं वे अभी बहुत पिछड़े हैं व असभ्य हैं। उनकी भी हालत इसी प्रकार है जैसे कि यहाँ के गाँव के वासियों की।

इस यात्रा के वर्णन में मुख्य वर्णन पैदल मार्ग का है न कि रेल व मोटर की यात्रा का। इस पैदल यात्रा में भी बहुत आनंद आता है। चारों ओर घने जंगल, हरी भरी घास दिखलाई देती है। उस ओर से लकड़ी का भी बड़ा व्यापार है। यह लकड़ी काट कर नदियों में बहा दी जाती है और फिर हरिद्वार में निकाली जाती है।

रेल व मोटर की यात्रा में गरमी के कारण बहुत कष्ट होता है। बरेली,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लखनऊ, कानपुर यह सब ही गरम स्थान हैं जहाँ कि हम लोग गरमी के कारण व्याकुल हो जाते हैं।

यही मेरी यात्रा का मुख्य वर्णन है। यहाँ की पैदल यात्रा, व्यापार वा लोगों का रहन सहन ही मुख्य अंग हैं। बद्रीनाथ की यात्रा हर एक प्रकार का यात्री कर सकता है परन्तु काश्मीर जैसे स्थानों में गरीबों की पहुँच नहीं है।

—रमेशचन्द्र नौटियाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक विचित्र स्वप्न

[ले० रमेशचन्द्र सिनहा]

मैं उस लम्बी चौड़ी सड़क के एक किनारे पर भौंचक्का सा खड़ा होकर, चारों तरफ़ देखने लगा। मैंने वैसी सड़क तो वास्तव में स्वप्न में भी नहीं देखी थी। जाने किस पत्थर की बनी, हमारी सड़कों से कई गुना अधिक चौड़ी चमचमा रही थी। दोनों किनारों पर बड़े बड़े, सहस्रों फीट, ऊँचे विशाल भवन खड़े हुए थे उनके दरवाज़े देखकर तो मैं और भी चकित हो रहा था। हमारे दरवाजों से लगभग पैंतीस गुने लम्बे चौड़े तो अवश्य ही रहे होंगे! उन पर बड़ी बड़ी, विचित्र छतें थीं और वे हमारे शाही प्रासादों से भी अधिक सुसज्जित और सुन्दर थे। लगभग प्रत्येक भवन में वायु-यानों की शालाएँ बनी थीं—उनमें कई विचित्र विचित्र रूप के आकाश-यान रक्खे थे। मकानों के निचले भाग खाली, तब भी सुसज्जित थे। उनके चारों ओर बहुत बड़े बड़े दरख़्तों वाले बगीचे थे। सड़क बिल्कुल सुनसान पड़ी थी। किसी प्रकार की भी कहीं चहल-पहल न थी। उस पर गाड़ियों आदि के आने जाने के भी चिन्ह न थे। वह, जैसा कि मुझे बाद में मालूम हुआ, इसलिए न थे कि वह सड़क ही ऐसी बनी थी। प्रत्युत, उनपर कभी गाड़ियाँ दौड़ती ही नहीं थी। वहाँ हमारी तरह गाड़ियाँ होती ही नहीं। वे अधिकतर वायुयानों में घूमा करते हैं। वहाँ के छोटे छोटे बच्चे भी अपने नन्हें नन्हें आकाश-यानों पर विचरा करते हैं। वहाँ की सड़क वाली सवारियाँ जो कि थोड़ी भी थीं, विचित्र रूप की थीं। मैंने अभी तक वहाँ का कोई निवासी नहीं देखा था। मैं विस्मित होकर इन्तज़ार कर रहा था कि कोई आदमी मिले तो इस अनुपम प्रदेश के विषय में कुछ पूछूँ। इतने में मैंने देखा कि बड़ी चीलों की तरह चारों तरफ़ से कई वायुयान आकर मेरे चारों तरफ़ रुक गए। मैं भय से उनकी तरफ़ देखने लगा। एक तो यों ही वहाँ की कठिन शीत से मैं काँप रहा था। अब भय से और भी अजीब दशा हुई। (वहाँ शीत बहुत अधिक पड़ती है। वहाँ के भूमध्य रेखा के के समीपस्थ प्रदेश, हमारे ऊँचे से ऊँचे शैलमालाओं की चोटियों से भी ठंडे रहते हैं। वहाँ का औसत टेम्प्रेचर ४८° फारन हाइट है)। मैंने इतने लम्बे और बलिष्ट आदमी तो कभी न सुने थे। वे हमसे लगभग ३०-३५ गुने अधिक लम्बे तो अवश्य ही होते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। इतने में वे मेरे पास आ गए और एक अजीब मधुर भाषा में कुछ पूछने लगे। मैं पहले तो उन्हें बिल्कुल न समझ पाया, किन्तु जब उनके सभ्य और शीलयुक्त व्यवहार से मेरा डर शीघ्र ही दूर हो गया मैंने उनको समझाया कि मैं पृथ्वी का निवासी था। वास्तव में उनकी भाषा क्लिष्ट न थी। वे बड़े चाव से मेरी पृथ्वी के विषय में भाँति भाँति के प्रश्न करने लगे। अब मैं उनसे खूब हिल मिल गया था। यह विचित्र भूमण्डल मङ्गल था।

मैंने एक लम्ब तड़ङ्ग सफ़ेद बालों वाले बुड्ढे से जिसकी कि कमर कुछ झुक गई थी बातें करते करते पूँछा; "क्यों महाशय, आपकी क्या अवस्था होगी ?"

"मैं चालीस वर्ष का हूँ," मैं तो सहम सा गया। मैंने सोचा कि यह बूढ़ा आदमी अब भी अपने को जवान ही समझे है। उसके इस 'जवानीपन' और पोपले दातों पर मुझे तो हँसी सी आई किन्तु उसके भय से वह ओठों ही तक रह गई।

बाद में मुझे मालूम हुआ कि सचमुच ही वह चालीस वर्ष का था। वास्तव में बात ऐसी है कि मङ्गल का ग्रह-पथ (Orbit) हम से लगभग दुगुना है। और इसी से उसका वर्ष भी हम से दुगुना होता है। वहाँ का वर्ष हमारे ६८६·९८ दिन के बराबर होता है। किन्तु दिन रात हमारी पृथ्वी से कुछ ही अधिक लम्बे होते हैं। वहाँ के दिन की लम्बाई २४ घण्टे, ३७ मिनट और २३ सैकण्ड हैं। वहाँ का वायु मण्डल हमसे बहुत कम घना है और इसीलिए वे इतने लम्बे होते हैं। हम लोग तो वहाँ कुछ मिनट भी जीवित नहीं रह सकते। रात्रि में वहाँ से तारों की सभा दो चन्द्रमाओं से सुसज्जित अति औज्जवल्य-मय दिखती है। वहाँ की रातें बहुत अँधेरी होती हैं। सूर्य वहाँ से बहुत छोटा दीखता था और दिन में भी एक प्रकार का अन्धकार छाया हुआ था। किन्तु वहाँ के निवासियों को उसमें कुछ भी तक़लीफ नहीं होती। वहाँ से सूर्य हमसे लगभग दुगुनी दूरी पर है।

वे सब मुझको कहीं चलने के लिए कहने लगे। मुझे फिर कुछ डर सा लगा। मैंने अपनी घनी विवशता को देखा। एक ने मुझे अपने वायुयान में बैठाया और सब एक तरफ़ को उड़ चले। कुछ ही क्षणों में हम एक विशाल भवन में आ पहुँचे। मैं उतार दिया गया। यह वहाँ का सबसे बड़ा और सुन्दर भवन था। हम सब उन चमचमाते फ़र्शों पर से, उन विशालकाय दरवाजों में से गुज़रते हुए एक बड़े भारी मण्डप में आ पहुँचे। यह हमारी कई फुटबाल फील्ड्स के बराबर लम्बा चौड़ा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113729

उसमें चारों तरफ बड़े बड़े दरवाज़े और. खिड़कियाँ थीं, दीवालों पर अति सुन्दर चित्र टँगे थे और मालूम नहीं कौन कौन सी चीज़ों से वह मण्डप सजा हुआ था मैंने तो सोचा मैं स्वर्ग में हूँ और यह इन्द्रप्रासाद है। बीच बीच में दूर दूर पर बड़ी बड़ी कुर्सियाँ और मेज़ें लगी थीं वे सब उन्हीं पर बैठ गए। मैं भी बैठाया गया। वे सब मुझे भूखा समझ खाने को लाए और मालूम नहीं कौन अजीब सी चीज़ जो कि बहुत थोड़ी भी थी, उन्होंने एक उज्ज्वल थाली में मेरे सामने रख दी। वे सब भी अपनी अपनी मेज़ों पर बैठ कर खाने लगे। मैं खूब भूखा तो था ही वह उतना थोड़ा सा खाना देखकर बहुत घबड़ाया। उससे कहीं अधिक तो मुझे आश्चर्य हुआ कि वे उतने बड़े बड़े आदमी और पाव भर से भी कम खाना! मुझे तो परियों की कहानियाँ याद हो आईं, मैं और भी सहम उठा। बाद में जब उनके बहुत कहने से मैंने खाना शुरू किया तो दो ही कौर में मेरा पेट बिल्कुल भर गया। तब तो मैं और भी चक्कर में पड़ा किन्तु बाद में मुझे मालूम हुआ कि वह घनीकृत भोजन (Condensed food) था। आदमी के शरीर को जिन जिन उपकरणों की आवश्यकता होती है, जैसे— प्रोटीड्स, स्टार्चेज़, विटामिन्स, कार्बोहाइड्रेट्स, आदि। बस उन्हीं को निकाल कर वे सुस्वादित बना लेते हैं, और फिर उसी को खाते हैं और इसीलिए उन्हें कभी शौचादि के लिए भी नहीं जाना पड़ता।

❦ ❦ ❦

उसके बाद हम क्रिकेट खेलने गए। वह फील्ड क्या थी, दो तीन मील लम्बा चौड़ा एक विस्तृत मैदान था। उस पर बीच बीच में लम्बे पेड़ों की तरह खड़े ग्यारह प्लेयर्स फील्डिंग कर रहे थे। मैं भी बीच में एक छोटे से असमर्थ जीव की तरह खड़ा था। वे सब इतनी तेज़ी और जोरों से गेंद फेकते थे कि मैं तो निस्तब्ध सा रह गया। गेंद तो मुझे ठीक से इतनी बड़ी होने पर भी दिखती भी न थी और जैसा कि मुझे अब मालूम हुआ वह केवल इसलिए नहीं इतनी तेजी से फेंक पाते थे कि वे इतने बलिष्ट थे, प्रत्युत वहाँ का गुरुत्व* हमसे कई गुना कम है, और इसी से वे उतनी ही शक्ति से कहीं अधिक तेज़ी से बाल फेंक सकते हैं।

❦ ❦ ❦

---

* Gravity

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ का भूमण्डल भी हमसे भिन्न है। वहाँ के समतल भूभाग में यहाँ वहाँ बड़े बड़े दलदल हैं। पर्वत श्रेणियाँ, झीलें अथवा समुद्र तो वहाँ नाम को भी नहीं हैं न द्वीप ही हैं। किन्तु ठंढे ध्रुवी तथा गरम मरुस्थल बहुत से हैं, क्योंकि एक तो यहाँ पानी बिल्कुल ही नहीं बरसता दूसरे वायु की शुष्कता के कारण एकत्रित जल अति शीघ्रता से वाष्प में परिणत हो जाता है और इस जल भरी वाष्प से जलवृष्टि होने के बजाय हिम-वर्षा होती है।

इस ग्रह की भी धुरी लगभग पृथ्वी ही की तरह और उसी के बराबर सूर्य की ओर झुकी हुई है और इसी से वहाँ के मौसम (जाड़ा, गर्मी, बरसात) भी बिल्कुल हमारी ही तरह थे, वहां के ध्रुव मण्डलों में हमारी ही तरह बरफ जमी हुई है जोकि पिघल जाने पर वृहत् नलों और मशीनों द्वारा नीचे भेजी जाती है, इसको बड़े बड़े जलाशयों में एकत्रित किया जाता है, जहां से सैकड़ों नहरें चारों तरफ़ बहा कर लेजाया करती हैं। इन नहरों की संख्या ६०० से भी अधिक है इन नहरों के किनारों पर बड़े बड़े हरे भरे खेत हैं जिनका कि रंग कुछ नीला मिश्रित हरा सा होता है। यहाँ की वायु में भी एक विचित्रता है। उसमें मालूम नहीं कौन से ऐसे पदार्थ मिले हैं जिससे कि ऐसे कठिन शीत में भी उसमें बरफ पिघलाने की शक्ति रहती है

बस, उससे अधिक मैं कुछ न समझ सका। उनके काम काज रहन सहन हमसे इतने विभिन्न और कदाचित् उच्च हैं कि वे हमारी आकलन शक्ति से बाहर हैं।

[२]

मुझे सांस लेने में अधिक तकलीफ होने लगी तो मैंने मुँह उघारा और देखा कि मैं ओढ़कर सो गया था और मेरी किताब मेज़ पर खुली रक्खी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल" का स्थायी साहित्य

१—भारतवर्ष का भूगोल—यह पुस्तक सारे भारतवर्ष, ब्रह्मा और लंका की यात्रा के बाद लिखी गई है। इसमें सन् १९३१ की मनुष्य-गणना के अंक दिये गये हैं। पुस्तक में २ तिरंगे, ४ चित्र मय नक़शे और १०० से ऊपर एक रंगे नक़शे और चित्र हैं। अब तक भारतवर्ष का कोई भूगोल ऐसी विस्तृत यात्रा के आधार पर नहीं लिखा गया। न कोई भूगोल इतने मौलिक नक़शों और चित्रों से सुसज्जित है। मूल्य केवल २) रु० डाक व्यय।=)

२—भारतीय भाषाएँ—मूल्य ।), इसमें भारतवर्ष की सभी भाषाओं का विषद वर्णन है।

३—संसार-शासन—मूल्य ।), इसमें संसार के प्रमुख देशों की शासन-पद्धति का विवरण है।

४—अफ़ग़ानिस्तान—मूल्य १), इस अंक को पढ़ने से अफ़ग़ानिस्तान का एक संक्षिप्त चित्र आँखों के सामने खिँच जाता है—प्रताप, कानपुर

५—टर्की—मूल्य १), इस अंक में टर्की की प्रायः सभी भौगोलिक और ऐतिहासिक स्थितियों का बड़ा सुन्दर और रोचक संकलन है।

६—ईरान—इस अंक में ईरान देश की स्थिति, भू-रचना, जलवायु, उपज, व्यापार, मार्ग, निवासी, इतिहास, साहित्य, वर्तमान परिस्थिति आदि फ़ारस देश के सभी अंगों पर पूरा पूरा प्रकाश डाला गया है। यह अंग सुन्दर चित्रों और बड़े नक़शों से सुसज्जित है। मूल्य केवल १) रु०।

७—Geographical Questions (For High School Examination)—मूल्य -)॥, इसमें १० वर्षों के हाई स्कूल के प्रश्न-पत्र छपे हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक महाद्वीप, भारतवर्ष और प्राकृतिक भूगोल पर प्रसिद्ध भूगोल विशारदों के चुने हुए प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रति का डाकव्यय आध आना अलग है।

८—वर्नाक्यूलर फाइनल परीक्षा के भूगोल-प्रश्नपत्र और उनके आदर्श उत्तर—मूल्य ॥), इसमें १९२० से १९३१ ई० तक के प्रश्न-पत्र और आदर्श उत्तर दिये गये हैं। परीक्षार्थियों के सुभीते के लिए हर सन् का पूरा पत्र आरम्भ में छापा गया है। इसके बाद प्रश्नों का उत्तर उसी ढंग से दिया गया है जो परीक्षकों को पसन्द है। इस पुस्तक को पढ़कर विद्यार्थी लोग उत्तम श्रेणी के नम्बर सहज ही में प्राप्त कर सकते हैं।

मैनेजर "भूगोल"

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose: Bhugol aims to enrich the geographical section of Hind literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi languag

Contents: Articles are published on varied topics of geographica interest: Current History, Astronomy, Industry and Trade, Survey Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Lif Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answer are regular features. Successive numbers contain serial articles on region and topical subjects so that by preserving a file of Bhugol any teacher o geography can accumulate invaluable reference material.

An index to each volume will be supplied with the April number

Travel Department: The Travel Department of Bhugo annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geo graphy teachers and students to visit regions of special interest in India Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (wit a stamped and addressed envelope).

Use in Schools: The use of Bhugol in connection with the geo graphy instruction in high schools, normal schools, and middle schools, i specially sanctioned by the Educational Departments of the United Pro vinces, Berar, the Central Provinces, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalio and Jaipur.

Correspondence: Editorial communications, exchanges, an books for review, should be addressed to: Pt. Ram Narain Misra, Editor **Bhugol,** Geography Department of Ewing Christian College, Allahaba City.

Business communications, including subscriptions and advertisements should be addressed to: The Manager **Bhugol**, Ewing Christian College Allahabad. Telegrams: 'Bhugol,' Allahabad.

Subscription: Prepaid annual subscription: To any plac served by the Indian Post Office Department, Rs.3. To any other countr in the Universal Postal Union, Rs.5 or *7s. 6d.* or $1.50.

To addresses in India the first copy will be sent by V.-P. P., unles remittance accompanies order. V.-P. P. Fee, 3 annas.

Remittances: Make all remittances by cheque, money order o British Postal Order, payable to the Manager, **Bhugol.**

Rates for Advertisements: Ordinary full one page Rs. 1
3rd page of the cover „ 1
4th page of the cover „ 1

Write to the Manager,
" BHUGOL,"
Ewing Christian College, Allahabad

Printed by S. S. Srivastava, at the Allahabad Law Journal Press, Allahabad
Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B.A.) under the auspices of the Ewing Christian College, Allahabad

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113729

Compiled
1998-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar